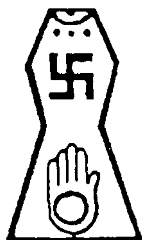
समायिक साधना



श्री किशनलाल-लक्ष्मीदेवी दफ्तरी
के विवाह की
स्वर्ण जयंती पर सप्रेम भेंट।

प्रस्तुति

जीवन के अमूल्य क्षणों के सदुपयोग हेतु पुस्तक एक सशक्त माध्यम है। जिसके द्वारा तत्त्वबोध के साथ-साथ आत्मरंजन का स्वर्णिम प्रभात जाग्रत होता है। पूज्य तपस्वीराज श्री चम्पालालजी म.सा. व अन्य सन्त भगवन्तों के दर्शनलाभ से हमारा परिवार सदा कृपा-पात्र रहा है। हमारे परिवार से दीक्षित दिवंगत साध्वीरत्ना श्री मानकंवरजी म.सा., महासती श्री रतनकंवरजी म.सा, महासती श्री कुसुमकंवरजी म.सा. एवं वर्तमान में महासती श्री करुणाश्रीजी म.सा. ने संयम ग्रहण कर परिवार को गौरवान्वित किया है। पूज्य दादीजी रामीबाई धर्मपत्नी श्री भैरुदानजी दफ्तरी ने परिवार को सदा धार्मिक संस्कारों की ओर उन्मुख किया।

इस वर्ष पूज्य पिताश्री किशनलालजी एवं मातुश्री लक्ष्मीदेवी ने अपने विवाहित जीवन के स्वर्णिम पचास वर्ष पूर्ण कर इक्यावनवें वर्ष में प्रवेश किया है। इस अवसर पर माताश्री की इच्छा कुछ ऐसा करने की थी जिससे परिवार अध्यात्म जगत् में एक कदम और आगे बढ़ सके। इसी प्रेरणा ने इस पुस्तक को मूर्त रूप प्रदान किया है। इस पुस्तक में दैनिक प्रार्थना, प्रतिज्ञा, मुक्तक, दोहे, शिक्षाएँ, प्राचीन गीतिकाएँ आदि अनेक पठनीय सामग्री का समावेश करने का एक अल्प प्रयास इसी भावना के साथ किया गया है कि प्रत्येक साधक अपनी सामायिक साधना को पूर्णता प्रदान कर अपने जीवन में समता भाव का पान कर सके।

श्री किशनलालजी दफ्तरी का पारिवारिक परिचय

पिता-माता	:	स्व. भैरुदानजी एवं स्व. रामी देवी दफ्तरी
भ्राता-भाभी	:	स्व. लालचन्द दफ्तरी
		श्री मोतीलाल - पेमीदेवी दफ्तरी
बहन-बहनोई	:	स्व. चम्पादेवी-स्व. कालूरामजी बोथरा
		स्व. जोरादेवी-स्व. सरदारमलजी पारख
		श्रीमती गंगादेवी - स्व. प्रतापमलजी फलोदिया
पुत्र-पुत्रवधू	:	श्री राजेन्द्र कुमार - बिन्दियादेवी दफ्तरी
		श्री सुरेन्द्र कुमार - संगीता देवी दफ्तरी
पुत्री-दामाद	:	श्रीमती सरोज देवी - श्री सुरेन्द्र कुमार कोचर
		श्रीमती चंदा देवी - श्री किशोर कुमार सुराणा
पौत्र-पौत्री	:	अंकित कुमार, श्रेयांस एवं स्नेहा दफ्तरी
दोहिता-दोहिती	:	रवि कुमार कोचर, ऋषभ, देवेन्द्र सुराणा, प्रियंका कोचर

ससुराल पक्ष

सास-ससुर	:	स्व. गवरादेवी-स्व. फूसराजजी झाबक
भ्राता-भाभी	:	श्री सूरजप्रकाश - श्रीमती मोहिनीदेवी झाबक

हम सभी आपके विवाह की स्वर्णिम जयन्ती पर इन्हीं शुभकामनाओं के साथ मंगल भावना करते हैं कि आपका वरद आशीर्वाद हमारे उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता रहे।

राजेन्द्र - सुरेन्द्र दफ्तरी

सौजन्य -

कंचन सिंटेक्स प्रा. लि.

11 A आर्मेनियन स्ट्रीट

बड़ा बाजार, कोलकाता

फोन नं. 033 - 30222175

ऋषभ सिंटेक्स

9 नं. आर्मेनियन स्ट्रीट

बड़ा बाजार, कोलकाता

फोन नं. 033 - 22358629

अनुक्रमणिका

मंगलाचरण

(सूक्तियाँ-मुक्तक-दोहे)

1. सिद्धाणं, बुद्धाणं पारगयाणं, परंपरपारगयाणं।
लोअग्गमुवगयाणं, णमो सया सव्वसिद्धाणं।।
2. जो देवाणु वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति।
तं देव देव महियं, सिरसा वन्दे महावीरं।।
3. इक्कोवि णमुक्कारो, जिणवरवस्सहस्स वद्धमाणस्स।
संसारसायरावो, तोरइ नरं व नारी वा।।
4. संसार दावानल-दाह-नीरं, सम्मोह धूलि हरणे समीरम्।
मायारसादारण सार-सीरं, नमामि वीरं गिरिसार धीरम्।।
5. जयइ जग जीव जोणी-वियाणओ जग-गुरु जगाणंदो।
जगणाहो जग बंधू, जयइ जगप्पिया महो भयवं।।
6. मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभु।
मंगल सुधर्मा जम्बू जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।
7. सर्व मंगल माङ्गल्यं, सर्व कल्याण कारणम्।
प्रधानं सर्व धर्मानाम्, जैनं जयतुशासनम्।।
8. सत्वेसु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदम्, किलष्टेसु जीवेषु कृपापरत्वम्।
माध्यस्थ भावं विपरीत वृत्तो, सदा ममात्मा विदधातु देवो।।

9. शिवमस्तु सर्व जगतः परहित निरताः भवन्तु भूतगणा।
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोकः।।
10. न वि सुही देवता देवलोए, न वि सुही पुढवी पइराया।
न वि सुही सेठि सेणावइय, एगंत सुही मुणी वीयरागी।।
11. नगरी सोहंति जल मूल बागे, नारी सोहंति पर पुरुष त्यागे।
राजा सोहंता सभा पुराणी, साधु सोहंता अमृत वाणी।।
12. चलंति मेरु चलंति मंदिरं, चलंति तारा रवि चन्द्र मंडलं।
कदापि काले पृथ्वी चलंति, साहु पुरुष वाक्यं न चलति धर्मः।।
13. धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइमं धम्म-सारही।
धम्मारामे रया दन्ते, बंभचेर-समाहिये।।
14. देव-दानव-गंधवा, जक्ख-रक्खस्स-किण्णरा।
बंभयारिं नमं संति, दुक्करं जे करंति तं।।
15. अरहंत सिद्ध पवयण, गुरु थेर बहुस्सुए तवस्सीसु।
वच्छल्लया य तेसिं अभिक्खनाणोवओगे अ।।
16. जिण वयणे-अणुरता, जिणवयणं जे करंति भावेणं।
अमला असंकिलिट्ठा, ते हुंति परित्त संसारी।।
17. एवं खु नाणीणो सारं ज न हिंसई किचणं।
अहिंसा-समयं-चेव, एयावत्तं वियाणिया।।
18. सवणे नाणे य विन्नाणे, पच्चक्खाणे य संजमे।
अण्णहए तवे चेव, बोदाणे अकिरिया सिद्धि।।
19. एगोहं नत्थि में कोइ, णाह मण्णस्स कस्सइ।
एवं अदीण मणासा, अप्पाणुमणु सासई।।
20. एगो में सासओ अप्पा, नाण दंसण संजुओ।
संसा में बहिरा भावा, सव संजोग लक्खणा।।
21. जीवियं नाभिगच्छेज्जा, मरणं नो वि पत्थए।
दुहओ वि न इच्छेज्जा, जीवयं मरणं तहा।।

22. सारं दंसण नाणं, सारं तव-नियम-संजमं सीलं।
सारं जिणवरं धम्मं, सारं सेलेहणा पंडिय मरणं।।
23. कल्लाण कोडि कारिणी, दुग्गइ दुहनिठवणी।
संसारजलही तारणी, एगंत होइ जीव दया।।
24. आरंभे नत्थि दया, महिला संगेण नासइ बम्भं।
संकाए नासइ सम्मत्तं, पव्वज्जाअत्थेग्गहणेणं।।
25. मज्जं विसय कषाया निदांविकहायपंचमी भणिया।
ए ए पंचप्पमाया, जीवा पाडंति संसारं।।
26. लब्भंति विउलाभोए, लब्भंति सुर संपया।
लब्भति पुत्त मित्तं च, एगो धम्मो न लब्भइ।।
27. जरा जाव न पीडेइ, वाही जाव न वड्ढइ।
जीविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे।।
28. असंखयं जीवियमापमायए, जरो वणीयस्स हु णत्थि ताणं।
एयं वियाणाहि जणे पमत्ते, किण्णु विहिंसा अजया गर्हिंति?
जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणिय।
अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतुणो।।
29. अरहन्तोः भगवन्त इन्द्र महिताः सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता।
आचार्या जिन शासनोन्नति कराः पूज्या उपाध्याय का।।
श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा, रत्नत्र्याराधकाः।
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।
30. वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरं बुधाः संश्रिताः।
वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः।।
वीरा तीर्थ मिदं प्रवृत्त मतुलं, वीरस्य घोरं तपोः।
वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयो, श्री वीर ! भद्रं दिशः।।
31. बाह्मी चन्दन बालिका भगवती-राजीमती द्रौपदी।
कौशल्या च मृगावती च सुलसां, सीता सुभद्रा शिवा।।

कुन्ती शीलवती नलस्यदयिता-चुला प्रभावत्यपि।
पदमावत्यपि सुन्दरी दिन मुखे-कुर्वन्तु नो मंगलम्।।

32. अप्पा णई वेयरणी-अप्पा मे कूड़ सामली।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा में नंदणं वणं।।
अप्पा कत्ता विकत्ताय, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुपट्ठिय सुपट्ठियो।।

33. जो सहस्सं सहस्साणं-संगामे दुज्जए जिए।
एग जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ।।
लाभा लाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा।
समो निंदा पसंसासु, तहा माणवमाणवो।।

34. तुभ्यं नमस्त्रि भुवनार्तिहराय नाथः।
तुभ्यं नमः क्षितितलामल भूषणाय।।
तुभ्यं नमः स्त्रिजगतः परमेश्वराय।
तुभ्यं नमो जिन भवोदधि शोषणाय।।

35. तुभ्यं नमो गुरु समर्थ पदे स्थिताय।
तुभ्यं नमो गुण गणैरति शोभिताय।।
तुभ्यं नमोस्तु जिन शासन भास्कराय।
तुभ्यं नमो गणिवराय सु चम्काय।।

36. जयइ पूज्ज बहुस्सुय मुणिंणदो, जयई जिण शासन सिंणगोरा।
जाणाई गुण सायरो जयइ-जयइ समत्थ गणि समण सेट्ठो।।
जिण वयण कल्प रुक्खो, अण्णग्ग सूतत्थ साल विच्छिण्णो।
तप-नियम कुसुम-गुच्छो, सुग्गई फल बन्धनो जयई।।

37. ऐदंयुगीन मुनिपु ह्यखिलेपु सत्सु, प्राप्तं बहुश्रुत पद विमलं तु येन।
ज्ञानादि रत्न चय चञ्चित चेतसं तं, प्राज्ञं समर्थगुरुराजमहं स्मरामि।।

38. नो दृश्यते तव समो मुनि मण्डलेऽस्मिन, गूढार्थ विज्जिन गिरांपरमागमज्ञः।
उत्कृष्ट संयम धरो गुण सागरश्च प्राज्ञं समर्थ गुरुराजमहं स्मरामि।।

39. पीयूष वर्षि नयन द्वय मास्यपद्मं, वाचं विमुञ्चति मधुप्रमिताञ्चयास्य।
ज्ञानचन्द्र गणि गच्छ सरोज सूर्यं, पूज्यं समर्थ गुरुराज महं स्मरामि।।
40. शान्तं नितान्तममतिकान्त मुखं त्वदीय, मालोक्य लोक इह लोकशुचं जहाति।
प्राप्नोति लोक परलोक सुखं समर्थ, पूज्यं समर्थ गुरुराज महं स्मरामि।।
41. शान्तं तपोधन युतं सरल स्वभावम्, व्याख्यायकं खलु विरागरसेन पूर्णम्।
ज्ञानस्य दान करणे सततं प्रवृत्तम, पूज्यं तु चम्पक गुरुं शिरसा नमामि।।
42. बाल्योपि संयम रुचि प्रबलं विरागं, स्वाध्यायशील हृदय सततं प्रबुद्धम्।
तं ज्ञानचन्द्र गणि गच्छ सरोज - सूर्यं, पूज्यं प्रकाश मुनिचन्द्र महं नमामि।।

प्रतिज्ञा-पाठ

मैं जम्बूद्वीप में भारतक्षेत्र के भारत देश का निवासी हूँ। सर्वज्ञ, सर्वदर्शी तीर्थंकर भगवान् ही मेरे सुदेव हैं। जिनेश्वर प्रभु की आज्ञा में चलने वाले पंच महाव्रतधारी निर्ग्रन्थ मुनि-सन्त-सती ही मेरे सुगुरु हैं ! जिनेश्वर प्ररूपित दयामय धर्म ही मेरा सुधर्म है। मुझे अपने अरिहन्त सुदेव, निर्ग्रन्थ सुगुरु और दयामय सुधर्म पर दृढ़ विश्वास है।

ऐसे निर्मल, पवित्र, उज्ज्वल, अजोड़ एवम् अनुपम जैन धर्म पर मुझे श्रद्धा है, धर्म की रक्षा करना ही मेरी सुरक्षा है। मुझे अपने प्राणों से भी अधिक धर्म प्यारा है। यही धर्म निश्चय में कल्याण करने वाला है। हम सब धर्मवीर होंगे।

आज दिन-भर में जो भी संसार संबंधी कार्य करूँगा उसे पराया समझूँगा। धर्म सम्बन्धी जो भी कार्य करूँगा उसे अपना समझूँगा।

मंगलाचरण

1. अविनाशी अविकार परम रस धाम है,
समाधान सर्वज्ञ-सहज अभिराम है।
शुद्ध-बुद्ध अविरुद्ध, अनादि अनंत है,
जगत् शिरोमणि, सिद्ध सदा जयवंत है।।

2. सतत अमृत-झरना झरता जिनके सुलोचन युग्म से!
जिनके मधुर-मधुमय-मृदु-वाणी सुव्रत मुखपद्म से।।
उन ज्ञानचन्द्र गणिन्द्र पंकज-रवि तुल्य ज्योतिमान को।
याद करता हूँ वारम्बार, पूज्य समर्थ गुण खान को।।

3. अति शूरवीर गंभीर-बहुश्रुत-समर्थ के पटधार को।
त्यागी-तपस्वी-ज्ञानी-ध्यानी-योगीश्वर अणगार को।।
व्याखान वाणी छटा निराली-ज्ञान गच्छ सिरताज को।
नमता हूँ वारम्बार पूज्य चम्पक गुरुराज को।।

4. बहुश्रुत 'समर्थ' स्मरण कर, 'चम्पक' लागूं पाय,
वन्दन सब मुनिराज को मेरे वारम्बार।
आगम ज्ञाता श्रुतधर-बहुश्रुत 'प्रकाश',
चरण-शरण लूँ आपकी पूरो मन की आश।।

5. करते सरल रसमय सुयुक्तिक धर्म के उपदेश को।
मुनि आप जैसे आप ही समरथ मिले इस देश को।।

मर्मज्ञ आगम विज्ञ सुज्ञ ज्ञानगच्छ सिरताज को।
नित नमन घेवर 'वीरपुत्र' श्री समर्थ गुरुराज महान् को।।

6. चवदह, पूर्व धार कहिये, ज्ञान चार बखानियें।
जिन नहीं पर जिन सरीखा, एहवा श्री सुधर्मा स्वामी जाणियें।।
मात-पिता-कुल-जाति निर्मल-रूप अनूप बखाणियें।
देवता ने वल्लभ लागे, एहवा श्री जम्बू स्वामी जानियें।।

7. चौबीसमां महावीर, शुरवीर, महाधीर,
वाणी मीठी खाण्ड-खीर, सिद्धार्थ नन्द है।
नागणीसी नार जाण, घर में वैराग्य आण,
जोग लियो जग भाण, छोड़िया मोह फन्द है।।
चवहद हजार संत, तार दिया भगवन्त,
कर्मो का किया अन्त, पाम्या सुखकन्द है।
भणे कवि 'चन्द्रभाण', सुणो हो विवेकवान,
महावीर धरिया ध्यान, उपजे आनन्द है।।

8. त्रिभुवनपीड़ा हरणहार हो, तुमको मेरा नमस्कार,
जग के उज्ज्वल अलंकार, प्रमाण तुम्हें मेरा हर बार।
तीन जगत् के नाथ आपके चरणों में जावूँ बलिहार,
भवसागर के शोषणकर्ता तुम्हीं को वन्दन बारम्बार।।

9. अरिहन्ता शरणं मुझने होइजो, आतम् शुद्धि करवा,
सिद्धा शरणं मुझने होइजो, राग द्वेष ने हरवा।
साहू शरणं मुझने होईजो, संयम शूरा बनवा,
धम्मं शरणं मुझने होइजो, भवोदधि थी तरवा।।

व्याख्यान की समाप्ति पर

1. दया सुख री बेलड़ी, दया सुख री खान।
अनंत जीव मुक्ते गया, दया तणोफल जाण।।
2. हिंसा दुख री बेलड़ी, हिंसा दु:ख री खान।
अनन्त जीव नरके गया, हिंसा तणो फल जाण।।
3. जिम सुणो तिम ही कहो, तो पहुँचो निर्वाण।
कई एक हिरदे राखजो, थांने सुणिया रो परणाम।।
4. साधुजी भाव समुचे कह्या, कोई मत लीजो ताण।
राग-द्वेष मत राखजो, थांने सुणिया रा परमाण।।

षट्-द्रव्य-जामे

1. षट्-द्रव्य-जामे कह्या भिन्न-भिन्न, आगम सुणत बखान,
पंचास्ति काया नव पदार्थ, पाँच भाख्या ज्ञान।
2. चरित्र तेरह कह्या जिनवर, ज्ञान-दर्शन प्रधान,
जो शास्त्र नित भवियन, आण शुद्ध मन ध्यान।।
3. चौबीस तीर्थंकर लोक माहीं, तारण तिरण जहाज।
नव वासुदेव प्रतिवासुदेवा, बारह चक्रवर्ती जान।
4. बलदेव नव सब हुआ त्रेसठ, घणा गुणों की खान,
जो शास्त्र नित सुणो भवियन, आण शुद्ध मन ध्यान।
5. चार देशना दीवी हो जिनवर, कियो परउपकार
पाँच अणुवत तीन गुणव्रत, चार शिक्षा धार।
6. पाँच संवर जिनेश भाख्या, दया धर्म प्रधान,
जो शास्त्र नित सुणो भवियन, आण शुद्ध मन ध्यान।
7. और कहाँ लग करूँजी वर्णन, तीन लोक प्रमाण,

सुणत पाप पलाय जावे, पावे पद निर्वाण।
8. देव विमानिक मांहे पदवी, कही पंच परधान,
जो शास्त्र नित सुणो भवियन, आण शुद्ध मन ध्यान।।

चौपाई प्रारम्भ करते समय

1. पंच परमेष्ठी को ध्याऊँ, वाणी की महिमा नित गाऊँ,
गुरु के चरणों चित्त लाऊं, कहूँ कथा
2. है सब बात कर्मों की, ध्यान दे सुणजो,
भविजन ध्यान दे सुणजो, ध्यान देकर के तुम सुणजो।
3. ज्ञान हृदय मांही धरजो, कर्म को कोई मती करजो,
ध्यान दे सुणजो, मेरी जान ध्यान दे सुणजो।।

चौपाई की समाप्ति पर

1. तीरथ करता-दुरित हरता-इन्द्र सारे सेव हैं,
त्रिलोक्य स्वामी-मोक्षगामी सोही हमारे देव हैं।
2. महाव्रतधारी-आत्मधारी जीव षट् प्रतिपालता,
गुरुदेव मोटा दिया जो ओठा दोष सगला टालता।
3. सब जीव रक्षा एह परीक्षा-धर्म जिनकुं जाणिये,
जहाँ होत हिंसा-नहीं है संसा अधर्मने पहचानिये।
4. एह तीन रत्न करो जतन, शुद्ध चित्त सुधारिये,
प्रभु शरण लेवो, धर्म सेवो, थाय से कल्याण थे।
5. शक्ति सारूँ त्याग वारू, करो निज हित आण ये,
कहे वक्ता सुणोश्रोता, ग्रन्थ नो छो सार ये।।।

प्रतिक्रमण के बाद क्षमापना पाठ

टेक-वन्दन श्री गुरुराज को (श्री तपस्वीराज को), खमाऊँ संघ समाज को।

1. गुरु गौतम अणगार महान, गणधर सर्व गुणों की खान।
गुरु चम्पक अणगार महान, तपस्वी संत गुणों की खान।।
मन-वच-तन कर आपको, खमाऊँ संघ समाज को।।वन्दन श्री.।।1।।
2. दूर होय दैनिक दुष्कर्म, रमे हृदय में निर्मल धर्म।
पावे जिससे मोक्ष को, खमाऊँ संघ समाज को ।।वन्दन श्री.।।2।।
3. गुरु ही तारण-तिरण जहाज, कोटि कोटि वन्दन तपस्वी राज।
गुरु ही तारण-तिरण जहाज, कोटि-कोटि वन्दन सब मुनिराज।।
माफ करो अपराध को, खमाऊँ संघ समाज को।।वन्दन श्री.।।3।।

शिक्षा-सूत्र

सूक्तियाँ

1. **दीवेव धम्मं समियं उदाहु** :- संसाररूपी समुद्र में डूबते हुए प्राणी को धर्म एक द्वीप के समान आश्रय स्थान है, अतः मनुष्य मात्र का कर्तव्य है कि वह उस धर्म की यत्न से रक्षा करे। धर्म की रक्षा ही आत्म-रक्षा है और धर्म का नाश ही आत्मा का पतन है।
2. **दाणाण सेट्ठे अभयप्पयाणं** :- दान के अनेक प्रकार हैं, जैसे-अन्नदान, वस्त्रदान, मकान का दान आदि, किन्तु उन सब में 'अभयदान' अर्थात् जीवनदान की सबसे श्रेष्ठ दान है, क्योंकि जगत् में जीवन ही सबसे प्यारी वस्तु है।
3. **तव्वेसु वा उत्तम बम्भचेर** :- तपस्याओं में ब्रह्मचर्य सबसे उत्तम तप है। ब्रह्मचर्य से विपरीत अब्रह्मचर्य अर्थात् दुराचरण सबसे निकृष्टतम पाप है और सब पापों का जनक है।
4. **सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति** :- असत्य वचन को त्यागना और सत्य बोलना अच्छा है। उसमें भी निरवद्य वचन अर्थात् पर पीड़ा से वर्जित वचन बोलना ही उत्तम है।
5. **वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते** :-धन की विपुल राशि से कदापि आत्म-त्राण नहीं हो सकता, आत्म-त्राण के लिए सदा

अप्रमादी बनकर आत्म-भाव में विचरण करना ही आत्म-रक्षा का उपाय है।

6. **भारण्ड पक्खी चरे पमत्ते** :- आत्म-त्राण चाहने वाले मनुष्यों को भारण्ड पक्षी की तरह सदा अप्रमत्त रहना चाहिए अर्थात् प्रमाद का त्याग करना चाहिए।

7. **कड्डाण कम्माण न मोक्ख अत्थि** :- निकाचित कर्मों के बिना भोगे छुटकारा नहीं होता इसलिए चिकने (गाढ़) कर्मों का बन्धन हो जाए, इसके लिए मुमुक्षु आत्माएँ सदा सावधान रहें।

8. **छंदं निरोहेण उवेइ मोक्खं** :- स्वच्छन्दता को रोकने से जीव मोक्ष का अधिकारी बनता है। स्वच्छन्दता जहर के समान घातक है। स्वच्छन्दता की अपेक्षा माता-पिता व गुरुजनों के अधीन रहना सुखकारक है। अतः प्रत्येक मनुष्य को अपने शिष्टजनों के अनुशासन में रहना चाहिए।

9. **इच्छाहु आगास समा अणंतिया** :- इच्छाएँ आकाश के समान अनंत हैं, उनका अंत धन आदि का संग्रह करके नहीं किया जा सकता ! असंग्रह बुद्धि सुख एवं सन्तोष का कारण है।

10. **कंखे गुणे जाव शरीर भेउ** :- जब तक शरीर का भेद अर्थात् नाश न हो तब तक भव्यात्माओं को गुण-संग्रह करते रहना चाहिए। गुणों का संग्रह ही वास्तविक अमिट सम्पत्ति है। भौतिक सम्पत्ति तो अंत में विनाशशील है।

11. **सन्निहि च न कुवेज्जा** :- मुमुक्षुओं को किसी वस्तु का संचय नहीं करना चाहिए। संचय करना दुःखों का मूल है। पक्षीगण भी दूसरे दिन के लिए संग्रह नहीं करते, उनसे मनुष्यों को शिक्षा लेनी चाहिए। संग्रह-बुद्धि विद्रोह का कारण है।

12. लाभोत्ति न मज्जेजा :- इष्ट वस्तु का लाभ होने पर मद न करो।

13. अलाभो त्तिण सोयए :- इष्ट वस्तु का लाभ न होने पर शोक न करें।

14. बहुपिलद्दुण णिहे :- वस्तु का अधिक मात्रा में लाभ होने पर भी उसका संग्रह न करें।

15. जेममाइयं मति जहाति ममाइयं :- जो परिग्रह की बुद्धि का त्याग करता है, वही परिग्रह का त्याग कर सकता है।

16. तुच्छ गिलाइ वत्तए :- साधना-शून्य पुरुष साधना-पथ का निरूपण करने में ग्लानि का अनुभव करता है।

17. इत्त कम्म परिण्णाय सव्वसो :- दुःख से मुक्ति के लिए पुरुष कर्म का सब प्रकार से विनाश करें।

18. दुव्वसु मुनि अणाणाए :- आज्ञा का पालन नहीं करने वाला मुनि संयम-धन से दरिद्र होता है।

19. एयंपास मुनि महब्भये :- हे मुनि ! तूं देख ये भोग महाभयंकर है।

20. णालपास :- तू देख ! ये भोग अतृप्ति की आग बुझाने में समर्थ नहीं हैं।

21. संति मरणं संपेहाए भेउर धम्मं संपेहाए :- अप्रमाद शान्ति है और प्रमाद मृत्यु है, यह देखने वाला प्रमाद कैसे कर सकता है ?

22. एगोऽहं नत्थि मे कोई नामन्नस्स कसइ :- मैं अकेला हूँ, न मेरा कोई है, न मैं किसी का हूँ।

23. सत्यान्नास्ति परो धर्म :- सत्य के बराबर दूसरा कोई धर्म नहीं है।

24. खंति सुरा अरहन्ता :- तीर्थंकर देव क्षमा करने में शूरवीर होते हैं।

25. **खण मित्त दुक्खा बहुकाल सुक्खा** :- थोड़ी देर दुःख सहन करके कर्मक्षय होने पर मोक्ष का अक्षय सुख देने वाला 'तप' दुःख-रूप नहीं, सुख-रूप ही है। दुःख सहन किये बिना सुख की प्राप्ति नहीं होती। कोई भी सुख, दुःख सहन किए बिना प्राप्त नहीं होता है।

26. खणमित्त दुक्खा बहुकाल दुक्खाः :- संसारी सुख काम-भोगादि क्षणिक सुख देने वाले हैं, उल्टे बहुत काल तक नरक और तिर्यंच के दुःख देने वाले हैं।

27. लोहो सत्वं विणासणो :- लोभ सभी सद्‌गुणों का विनाश करने वाला है।

28. जहा लाहो तहा लोहो, लाहो-लोहो पवड्ढइ :- ज्यों-ज्यों लाभ में वृद्धि होती जाती है, त्यों-त्यों लोभ में वृद्धि होती जाती है, बल्कि लाभ से ही लोभ की वृद्धि होती है। इस प्रकार तृष्णा का खड्डा कभी भरता नहीं है।

29. धम्मो सुदस्स चिट्ठई :- धर्म शुद्ध हृदय में ठहरता है, पवित्र हृदय ही धर्म का आधार है।

30. तक्का जत्थ न विज्जई-मई तत्थ न गाहिया :- तर्क उस दशा का वर्णन नहीं कर सकता और न मति उस दशा का अनुभव ग्रहण कर सकती है।

31. जागरह ! णरा निच्चं जागरह माणस्स बड्ढते बुद्धि :- मनुष्यो ! जागो। निद्रा का त्याग करो। जो जागता है उसकी बुद्धि भी जागती है। उसके विकास की अनन्त संभावनाएं सामने खड़ी रहती हैं। राजस्थानी में भी कहावत है- **सोवे सो खोवे, जागे सो पावे।**

32. **सव्वजीव रक्खण दयट्ठयाए पावयं भगवया सुकहियं** :- संसार के चर और अचर, सभी जीवों की रक्षा और दया (अनुकम्पा) की भावना से भगवान् प्रवचन देते हैं।

33. **सुई धम्मस्स दुल्लहा** :- धर्मशास्त्रों का सुनना भी बहुत दुर्लभ है। वस्तुतः संसार को सन्मार्ग पर ले चलने का सारा श्रेय ध र्मशास्त्र को जाता है।

34. **कामे कमाहि कमियं खु दुःखम्** :- कामनाओं को जीत लो, दुःख सारे दूर हो जाएंगे।

35. **कहं जाणाई कल्लाणं ?** :- कल्याण के मार्ग को कैसे जाना जाता है ?

सोचा जाणाई कलाणं :- सुनने से कल्याण के मार्ग को जान सकते हैं।

कहं जाणाई पावगं ? :- पाप के मार्ग को कैसे जान सकते हैं ?

सोचा जाणाई पावंग :- सुनने से पाप के मार्ग को जान सकते हैं।

उभयोपिकहं जाणे ? :- दोनों प्रकार के मार्ग को कैसे जाना जाता है ?

उभयपि जाणाई सोच्चा :- दोनों प्रकार के मार्गों को सुनने से ही जाना जाता है।

कल्याणं णच्चा किं करे ? :- कल्याण के मार्ग को जानकर क्या करें ?

जं सेयं तं सम्मायरे :- जिससे आत्मा का उद्धार हो ऐसा कार्य करें।

36. **न कम्मुणा कम्मखंवेतिबाला, अकम्मुणा कम्म खवेंति धीरा** :- अज्ञानी जीव कर्मबन्धजनक क्रिया करते हैं, इसलिए

वे अपने कर्मों को क्षय नहीं कर सकते, किन्तु धीर एवं पण्डित पुरुष अकर्मक पराक्रम (संवर-निर्जरा) के द्वारा कर्मों को नष्ट करते हैं।

37. **जे गुणे से आवेट्टे जे आवेट्टे से गुणे** :- जो शब्दादि है वही संसार है और जो संसार है वही शब्दादि विषय है।

38. **कम्मुण्णा बंभणो होई कम्मुणा होई खत्तिओ** :- जन्म से कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र होकर नहीं आता।

39. **वइस्ससो कम्मुणा होई सुद्धो हवइ कम्मुणा** :- वर्ण-व्यवस्था मनुष्य के अपने स्वकृत कर्म के द्वारा होती है। कर्म से ही व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शुद्र कहलाता है।

40. **संति निव्वाण माहियं** :- कषायों की शान्ति ही निर्वाण है, मोक्ष है।

41. **खंति सेविज्ज पंडिये** :- क्षमा को धारण करने वाला ही पण्डित मुनि होता है।

42. **उवसमेण हणं कोहं** :- क्रोध को क्षमा के द्वारा जीतो।

43. **अहे वयइ कोहेणं** :- क्रोध करने वालों को अधोगति ही मिलती है।

44. **कोहं असच्चं कुव्वेज्जा, धारेजा पियमप्पियं** :- सभी तरह के प्रिय एवं अप्रिय वचनों को सहन करके क्रोध को निष्फल कर दें।

मुक्तक संग्रह

1. मन की समाधी के बिना, साधना का सुमन खिल नहीं सकता।
   'सम्यक्-ज्ञान' के बिना आत्मा का अंधेरा हिल नहीं सकता।।
2. वृक्ष बीज में छुपा हुआ है, देखो अन्तरमन से।
   नर में नारायण सोया है, जागेगा चिन्तन से।।
3. अपना शव अपने कन्धों पर, कौन उठाये मनुष्य भटकता।
   अपना 'पौरुष' भूल, पराये विश्वासों पर जो लटकता।।
4. मानव तन पाकर भी जो नर, जीवन उच्च बना न सका।
   समझो 'चिन्तामणी' पाकर, निज रंकत्व मिटा न सका।।
5. देवलोक में नहीं सुधा है, सुधा मिलेगी धरती पर।
   मधुर भाव के सुधा-पान से, तृप्ति मिलेगी जीवन-भर।।
6. धन के बिना संगीत नहीं मिलता, दिल के बिना मीत नहीं मिलता।
   धर्म के बिना शान्ति चाहने वालों, दूध के बिना नवनीत नहीं मिलता।।
7. चाय की लाय में आज लाखों जल रहे हैं,
   चाय पर चाय पीकर किसी तरह चल रहे हैं।
   'एक कप टी' न मिले तो सब-कुछ बेकार है,
   सुस्त हुए ऐसे जैसे बिना पेट्रोल की कार है।
8. हिम्मत हर गाफिल को गतिमान बना देती है,
   हिम्मत हर निर्बल को बलवान बना देती है।

हिम्मत गर चाहे तो पत्थर को पानी कर देती है,
हिम्मत हर मुश्किल को आसान कर देती है।।

9. स्थिरता के बिना ध्यान नहीं होता,
उदारता के बिना दान नहीं होता।
ग्रेजुएट बनने की इच्छा रखने वालों,
नम्रता के बिना ज्ञान नहीं होता।।

10. कहती हैं घटायें कि बरसात आयेगी,
कहती हैं घटायें कि बहार आयेगी।
कहती है घड़ी की टिक्-टिक् हमें,
नादान तेरी भी एक दिन मौत आयेगी।।

11. शादी के पहले करता था आराम,
पर मैम ने कर दिया जीना हराम।
सोचा था शादी के बाद बनूँगा बादशाह,
पर मैम ने कर दिया जोरू का गुलाम।।

12. पत्थर से ले टक्कर उसे नादान कहते हैं,
किनारों से ले टक्कर उसे तूफान कहते हैं।
इनसानों से टकराना कोई बहादुरी नहीं,
बुराइयों से ले टक्कर उसे इनसान कहते हैं।।

13. जंगलों को नहीं जंगलीपन को खत्म करो,
पशुओं को नहीं पशुता को खत्म करो।
अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारने वालों,
जीवनदायी पर्यावरण पर अब नहीं सितम करो।।

14. मृत देह पर सजीव फूल निछावर होते हैं,
जगत् को हँसाने वाले स्वयं ही रोते हैं।
कब होगा खत्म सिलसिला शोषण का,
सबको खिलाने वाले भूखे ही सोते हैं।।

15. पेट में भोजन पच गया तो शक्ति कोई दूर नहीं,
जीवन में यदि धर्म रम गया तो मुक्ति कोई दूर नहीं।
परन्तु बेपरवाह से खाया और धर्म का ढोंग दिखाया,
तो मान के चलो अस्पताल और पाताल दूर नहीं।।

16. खाना तो ऐसा खाना कि बार-बार खाना न पड़े,
पीना तो ऐसा पीना कि बार-बार प्यास न लगे।
जाना तो वहाँ जाना जहाँ से वापस न आना पड़े,
मरना तो ऐसा मरना कि बार-बार मरना न पड़े।।

17. रत्न-त्रय की त्रिवेणी तपस्वीराज हैं,
हर समय सत्य की शोध ही काज है।
दूर हैं द्वन्द्व से, दम्भ-पाखण्ड से,
संघ के ताज हैं, संघ को नाज है।।

18. विचक्षण विरल है वीतरागी,
नयन सादगी-सरलता-सहजता के सुमन हैं।
निस्पृही-निराकुल प्रतिपल सजग हैं,
आश्चर्य 'चम्पक' को कोटि-कोटि नमन हैं।।

19. जलधर के समागम से चातक प्रमुदित हो जाते हैं,
सूर्य की किरणों से 'पंकज' विकसित हो जाते हैं।
'चम्पक' गुरुदेव का वरद हस्त सिर पर टिकते ही,
हम सबके चेहरे एकदम पुलकित हो जाते हैं।।

20. 'चम्पक' गुरु हमारा है, प्राणों से भी प्यारा है,
नन्द सती की सतियों का, छोटा-सा यह नारा है।
'समरथ' गुरु की नैया है, 'चम्पक' गुरु खिवैया है,
आँख मीच कर बैठ जाओ, निश्चय ही किनारा है।।

21. गुरु 'चम्पक' एवं 'प्रकाश' की जोड़ी जग में एक निराली है,
पूर्व रूप से अर्पित है, दिल में छाई रहती हरियाली है।

नयी जिज्ञासा जिनके प्रतिपल उजागर होती है,
उनके एक-एक चन, मानो पकवानों की थाली है।।

22. छत्तीस मसाले कूट के डाले, नमक बिना वह शाक नहीं।
कितने ही सुन्दर हों गावणिये, पर कण्ठ बिना वो राग नहीं।।

23. खावे घणो पर पचे कोनी,
सुणे तो घणो पण जँचै कोनी।
आज री शिक्षा रो कई केणो,
उपदेश तो घणो ही है पण रुचै कोनी।।

24. बिजली को कैद कर लिया इन बल्बों ने,
पानी को कैद कर लिया इन नलकों ने।
गुठली को पैक कर दिया इन फलों ने,
आत्मा को पैक कर दिया इन कर्मजालों ने।।

25. पका हो खेत तो बरसात बुरी लगती है,
घर में पड़ी लाश तो बारात बुरी लगती है।
कोई माने या ना माने, यह तुम्हीं जानो,
दिल में अगर दर्द हो तो हर बात बुरी लगती है।।

26. दूध में मलाई का, शादी में शहनाई का, बहनों में भाई का।
यजमानों में नाई का, बहुत बड़ा महत्त्व होता है।।

27. मिठाई में 'घेवर' का, भाभियों में 'देवर' का स्त्रियों में 'जेवर' का।
मकान बनाने में 'लेबर' का, बहुत बड़ा महत्त्व होता है।।

28. जूते में 'बाटा' का, लोहे में 'टाटा' का, भोजन में 'आटा' का।
सब्जियों में 'बटाटा' का, बहुत बड़ा महत्त्व होता है।।

29. दौड़ में फर्राटे का, नींद में खर्राटे का, बजट में घाटे का।
ध्यान में सन्नाटे का, बहुत बड़ा महत्त्व होता है।।

30. फलों में 'आम' का, महफिलों में 'जाम' का, दफ्तरों में 'काम' का।
घर में 'आराम' का, बहुत बड़ा महत्त्व होता है।।

31. अपनी आय में संतोष होना चाहिए,
अपने दोषों पर अफसोस भी होना चाहिए।
यौवन की उन्नत धारा में बहने वालों,
जोश के साथ तुम्हें होश भी होना चाहिए।

32. वह पुत्र किस काम का, जो पिता का विनय नहीं करता,
वह सूत्र क्या काम का, जो आत्मा का तिमिर नहीं हरता।
सब ग्रन्थों की और सिद्धान्तों की, आवाज यही है कि,
वह शिष्य किस काम का, जो गुरु-आज्ञा नहीं मानता।

33. बुजुर्गों में 'राय' का, सर्दियों में 'चाय' का, डेरी में 'गाय' का।
पहली तारीक को 'आय' का, बहुत बड़ा महत्त्व होता है।।

34. घरों में 'सफाई' का, बीमारी में 'दवाई' का, कपड़ों में 'सिलाई' का।
रिश्तों में 'जँवाई' का, बहुत बड़ा महत्त्व होता है।।

35. कोर्ट में 'टाई' का, दाल में 'घुटाई' का, पहाड़ में 'ऊँचाई' का।
ध्यान में 'गहराई' का, बहुत बड़ा महत्त्व होता है।।

36. व्यापार में 'नीति' का, व्यवहार में 'रीति' का, सम्बन्धों में 'प्रीति' का।
दुनिया में 'निधि' का, बहुत बड़ा महत्त्व होता है।।

37. फिल्मों में 'ऐक्टर' का, खेतों में 'ट्रैक्टर' का, एल्जब्रा में 'फेक्टर' का।
जीवन में 'करेक्टर' का, बहुत बड़ा महत्त्व होता है।।

38. जीवन में 'धर्म' का, बहू में 'शर्म' का, शरीर में 'चर्म' का।
सिद्धान्तों में 'कर्म' का, बहुत बड़ा महत्त्व होता है।।

39. बीटी में 'हीरे' का, जीमण में 'सीरे' का, बहनों में 'बीरे' का।
बगार में राई और 'जीरे' का, बहुत बड़ा महत्त्व होता है।।

40. तूफान से नाव निकाल सके, वही तो सच्चा मांझी है,
शीतल चाँदनी फैला सके, वही तो सच्चा शशी है।
पैसों के तो जगत् में बहुत यार मिल जाते हैं,
लेकिन मुसीबतों में जो साथ दे, वही सच्चा साथी है।।

41. वह संगठन संगठन नहीं, जिसमें फूट है,
वह व्यापार व्यापार नहीं, जिसमें लूट है।
प्रामाणिकता की पूजा हर जगह होती है,
वह धर्म धर्म नहीं, जिसमें झूठ है।।

42. जो अपनी पहचान करा दे, वह ज्ञान है,
जो उलझे हुए को सुलझा दे, वह ध्यान है।
जो प्रतिपल मिलता है, आदमी औरों से,
जो अपने को मिला दे, वह निर्वाण है।

43. धर्म नहीं है जो आपस में लड़ना सिखलाये,
कर्म नहीं है जो स्वार्थ का पाठ पढ़वाये।
सच्चा धर्म-कर्म वही है, मेरी नजरों में,
जो हर जगह स्नेह-प्रेम का अटूट झरना बहाये।।

44. प्रकृति के सौंदर्य को 'कश्मीर' कहते हैं,
दिखाये रण में कौशल, उसे 'रणवीर' कहते हैं।
मिटादे कर्म-शत्रुओं को, अपने मानव-जीवन से,
ऐसे अनमोल रत्न को ही हम 'महावीर' कहते हैं।।

45. अँधेरा हटाया जाने के लिए 'दीपक' को जलाया जाता है,
भूषण को बनाने के लिए 'कंचन' को जलाया जाता है।
सत्य सड़क पर ढूँढ़ने से तुमको नहीं मिलेगा,
उसको पाने के लिए देह को 'तपस्या' में मिलाया जाता है।।

46. महावीर-बुद्ध-ईसा सभी ने हिंसा का विरोध किया,
नानक-राम-कृष्ण ने भी पशुओं को सन्मान दिया।
सभी प्राणी जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता,
परन्तु 'जीओ और जीने दो' पर हमने कभी ध्यान नहीं दिया।।

47. दुर्गति में गिरते प्राणी को केवल एक धर्म बचाता है,
स्वर्गापवर्ग देता उसको जो नर इसको अपनाता है।

मनुष्य-जन्म सुत दारा द्रव्य, हर एक को यह मिल जाता हैं,
दुर्लभ सत्संग अरु धर्म-श्रवण, फिर बोध बीज का पाता है।।

48. अर्थ के लिये दूसरों को निगलना अच्छा नहीं है,
प्रलोभन में फँसकर धर्म से फिसलना अच्छा नहीं है।
जीवन में संघर्ष के बादल उमड़ सकते हैं,
मगर संकट की घड़ियों में धर्म से डिगना अच्छा नहीं है।।

49. माँगने से मिलता तो भिखारी 'धनवान' हो गये होते,
माँगने से मिलता तो हम पहले 'आजाद' हो गये होते।
सच तो यह है कि आजकल माँगने से 'मौत' भी नहीं मिलती,
नहीं तो राम-राम रटने वाले तोते भव-पार हो गये होते।।

50. आज तो सच्चाई कड़वे नीम-सी लगती है,
सद्गुण-वर्णनों से मात्र पुस्तकों की शोभा बढ़ती है।
मानव जीवन में हो गया आदर्शों का अभाव,
देख पाशविक कृत्य आज मानवता डरती है।।

51. नारी को मत समझो अबला वह तो 'वीर' है,
है कोमल हृदय पर वक्त पर शमशीर है।
समझकर कमजोर मत करो जुल्म उस पर,
नारी के कारण ही तो दुनिया की तस्वीर है।।

52. बढ़ो मत आगे तक इतने कि कफन बदनाम हो जाये,
जलाओ हाथ मत ऐसे कि हवन बदनाम हो जाए।
भला 'दुल्हन' जली कैसे, सुहागी सेज शय्या पर,
जलाओ मत किसी का घर कि होली बदनाम हो जाए।।

53. सोने को जैसे भी साँचे में ढालो ढल जाएगा,
कच्चे गारे को भी चाहे जैसा ढालो ढल जाएगा।
अभिभावक के हाथ में है, बनाना-बिगाड़ना
छोटे बालक को कल्पना जैसे ढालो ढल जाएगा।।

54. चकाचौंध बाहर की उजाला नहीं ज्वाला है,
विवेक और सद्गुणों को इसने भस्म कर डाला है।
जेठ की दुपहरी में क्यों देख रहे 'सूरज' को,
नयन की ज्योति यह तुम्हारी, वह खत्म करने वाला है।।

55. अकर्मण्य व्यक्ति कभी 'पुरुषार्थी' नहीं होता है,
'परमार्थी' व्यक्ति कभी स्वार्थी नहीं होता है।
आत्म-सिद्धि का ही 'लक्ष्य' है, तो भेद की दीवारें क्यों?
सच्चा 'आत्मार्थी' कभी मतार्थी नहीं होता है।।

56. आज प्रेम-पीयूष में मोह का शराब मिला हुआ है,
प्रेम की सुहानी धरा पर, स्वार्थ का अन्धा कुआँ है।
बेचारा प्रेम फंसा हुआ, कहीं कपट में काँटों में,
कहीं पर प्रेम सिर्फ वासना का जहरीला धुआँ है।।

57. मनुष्य और मनुष्यत्व का आलम्बन है 'अहिंसा',
सब धर्मों का सार और प्राण है 'अहिंसा'।
प्रश्न आत्म-शान्ति का हो या विश्व-शान्ति का,
तमाम समस्याओं का समाधान है 'अहिंसा'।।

58. धरती को खतरा है बचा लो, बचा लो,
राष्ट्र को खतरा है, इसे भी बचा लो।
सभी बच जाएंगे, स्वतः विनाश से,
हे इन्सानों ! सिर्फ 'अहिंसा' बचा लो।।

59. इनसान जिन्दे जल रहे, लुट रही बालाएँ,
धधक रही चहुँ ओर प्रतिशोध की ज्वालाएँ।
बुझा लें हम आग मैत्री के पानी से,
क्षमा के स्नेह से 'अहिंसा' के दीप जलाएँ।।

60. पुण्य-पाप का जिसने खोला नहीं खाता है,
सुरा-पान करता वह अभक्ष्य भी खाता है।

सत्य और सदाचार के अभाव में आदमी,
जीवन का हरा-भरा उपवन सुखाता है।।

61. स्वर्ण तपने पर ही, विशुद्ध 'कुन्दन' बनता है,
मारने पर कुल्हाड़ी दे सौरभ, वह 'चन्दन' होता है।
धन्य है उन कषाय-मुक्त साधकों को,
चरणों में जिनके देवों का भी वन्दन होता है।।

62. लक्ष्यहीन-दिशाहीन यात्राओं पर खूब गया,
रसना-वासना और विलास में डूब गया।
प्रभो ! अब सत्पथ दो और 'सम्यक्दृष्टि' भी,
दृश्यमानजड़ पुद्गल देख-देखकर ऊब गया।

63. भावना से बड़ा भगवान नहीं होता,
कल्पना से बड़ा पाषाण नहीं हो सकता।
देवों की तरह पूजे जाते तो बहुत देखे हैं,
लेकिन हर सन्त 'चम्पक' नहीं हो सकता।।

64. बिना चाँद के चाँदनी को खिलते नहीं देखा,
बिना स्नेह के दीप को जलते नहीं देखा।
बिना बादल भूमि प्यासी, प्यास को बुझते नहीं देखा,
बिना तेरे ज्ञानदान के अय गुरुवर ! जन्म बिगड़ते देखा।।

65. क्रूर सभ्यता पर मैंने दृष्टिपात किया है,
लहलहाती फसल पर हिमपात हुआ है।
कभी न करो ऐसा घिनौना कृत्य मानवों,
'गर्भपात' ने मानवता पर वज्रपात किया है।।

66. क्या रखा है पर-निन्दा में, निन्दा करना निपट सरल है।
आत्मावलोकन करने वालों, उत्तम मानव बहुत विरल है।।

67. पैर फिसल जाये तो संभलना मुश्किल है,
कलंक लग जाये तो धुलना मुश्किल है।

हार गया एक बार मानव-जीवन को तो,
पुन: मानव-जीवन मिलना मुश्किल है।।

68. नाड़ी तंत्रों को चलाने वाला श्वास होता है,
तीस दिनों को सँजोने वाला 'मास' होता है।
किन्तु धनवान प्राय: यह नहीं समझ पाते कि,
दान करने से ही, लक्ष्मी का वास होता है।।

69. विषय-भोग में, खान-पान में, मर्यादा से बाहर मत जा।
मर्यादा में रहता पानी, करता है उपकार जगत् का।

70. पुण्य-पाप निर्जरा बन्ध के, शुद्ध और सही खाते खोलो।
सच्चे मन से बिना फीस ही 'सद्गुरु' से आर्डर करवालो।।

71. रहा होगा अतीत, विषाद और हर्ष का,
पथ हो प्रशस्त अब भविष्य के उत्कर्ष का।
वर्तमान में जीने का संकल्प लेकर,
करें स्वागत - 'अभिनन्दन' नव वर्ष का।।

72. 'आलस्य' किसी का आदर्श नहीं होता है,
'संघर्ष' के बिना कभी हर्ष नहीं होता है।
उन्नति का महान शत्रु है 'प्रमाद' मित्रों,
प्रमादी जीवन के लिये नया वर्ष नहीं होता है।।

73. हार को जीत में बदलने की कला सीखो,
रुदन को गीत में बदलने की कला सीखो।
अगर जिन्दगी की असलियत को पाना है,
तो वैर को 'मित्रता' में बदलना सीखो।।

74. समभाव आत्मा का 'स्वभाव' होता है,
भव - भ्रमण का कारण विभाव होता है।
धन का 'अभाव' बुरा है मगर,
अभाव से ज्यादा बुरा 'विभाव' होता है।।

75. कुपात्र को कभी दान मत करो,
आर्त व रौद्र ध्यान मत करो।
उचित है आत्म-सम्मान की रक्षा,
लेकिन कभी 'अभिमान' मत करो।।
76. शाश्वत सत्य की धरा पर 'अहिंसा' चलती है,
अनेकांत की छाँव में 'अहिंसा' फलती है।
'अहिंसा' ही देती है समता, प्रेम व भाईचारा,
है विवेक की तीली से 'अहिंसा' की ज्योत जलती है।।
77. परिवार और समाज में 'सहनशील' बनो,
जीवन के संग्राम में 'कर्मशील' बनो।
सत्य और प्रेम की महक ही जीवन में,
मृदुभाषी, शालीन और 'विवेकशील' बनो।।
78. हवा को देखा नहीं, सिर्फ एहसास किया है,
साधकों के ठोस अनुभव पर विश्वास किया है।
भौतिक विज्ञान से असंभव है आत्मा का अन्वेषण,
भेद-विज्ञान से आत्मा का स्पष्ट आभास किया है।।
79. तलवार की नोकों से इतिहास बदल जाते हैं,
पतझड़ के मौसम में 'मधुमास' बदल जाते हैं।
होती है गुरुवर जब तेरे मुख से अमृत-वर्षा,
भव्य प्राणियों के जीवन बदल जाते हैं।।
80. जल के बिना कपड़ों की धुलाई नहीं होती,
रंग के बिना मकान की रंगाई नहीं होती।
कर्म के कुकृत्यों से अनुरंजित चेतनों,
संयम के बिना आत्मा की सफाई नहीं होती।।
81. चढ़ा नशा शराब का, करे बिना बात तकरार,
सदा शरारत सूझती, उलट-पुलट व्यवहार।

सुध-बुध-खोकर किसी दिन कर बैठा उत्पात,
कत्ल किया इनसान का, रँगे खून से हाथ।।

82. जुर्म करने के साथ हो गई मस्ती दूर,
अब पछताये होत क्या, आदत से मजबूर।
बर्तन-भाण्डे बिक गये, खेती और मकान,
पत्नी, बच्चे भटक रहे, जीवन नरक समान।।

83. आपसी स्वभाव डूबा, घृणा-द्वेष के गर्त में,
वैमनस्य ही है सबसे आगे, हिंसा की गर्त में।
सौम्य शान्तिप्रिय धरती, खून की प्यासी बनी,
जिन्दगी भी आज यारों, मौत की दासी बनी।।

84. धर्मान्धता की ज्वाला से हर शहर वीरान बना,
इनसान अपने हाथों, अपनी मौत का सामान बना।
बेशर्मी की हो गई हद, भूले सब शर्म और लाज को,
क्या हो गया हमें, हमारे देश और समाज को।।

85. स्वजन मित्रों के लिए 'क्षमा' फूलों का हार है,
दुर्जन दुष्टों के लिये 'क्षमा' शस्त्र का प्रहार है।
सद्गुणों के लिये 'क्षमा' मंगल द्वार है,
तो दुर्गुणों को रोकने के लिये 'क्षमा' चीन की दीवार है।।

86. मुक्ति का द्वार मानव-तन ही है, मानव ही पाप हटाता है,
हां केवल-ज्ञान का अधिकारी वह पूर्ण अमर पद पाता है।
मनुष्य भव चौपाटी पर, यह आवागमन मचाता है,
जब तक पंचम गति न मिले, तब तक शान्ति नहीं पाता है।।

87. अत्यन्त परिश्रम से जिसको, उत्तम साधन मिल जाते हैं,
सत्कार्य में उनको नियत करे, वे श्रेष्ठ पुरुष कहलाते हैं।
करता जो आत्मा की रक्षा, जाग्रत् वही कहलाता है,
जो इसको उच्च बनाता है, वह जन्म सफल कर जाता है।।

88. तू ही तेरा शत्रु है और मित्र भी तेरा तू ही है,
सुखदाता तेरा तू ही है, दुःखदाता तेरा तू ही है।
पाप-दृष्टि सर्वत्र सदा ही विकृत मार्ग अपनाता है,
ओ मूर्ख ! मौत खड़ी सिर पर, क्यों घोर नरक में जाता है।।
89. विजयी हो तो अन्त समय नहीं चूके यही जीतना है,
यदि अन्त समय में चूक गया तो दुःख में दिवस बिताना है।
ज्ञान सहित यदि क्रिया करे तो 'आवागमन' मिटाती है,
अज्ञान क्रिया करने से आत्मा, सद्गति कभी न पाती है।।
90. अज्ञानी होकर मच्छर की तरह इधर-उधर, भिन-भिनाता 'आदमी',
मोहवस भौंरों की तरह फूलों पर मँडराता 'आदमी'।
भाँति-भाँति से जिन्दगी जीते हैं, भिन्न-भिन्न 'आदमी',
चातुर्य से तितली की तरह पुष्पों की मकरन्द लेताहै 'आदमी'।।
91. एक छोटा-सा काँटा रोक सकता है चलते राहगीर को,
एक छोटी-सी चिंगारी नष्ट कर सकता है इस विश्व मन्दिर को।
एक छोटी-सी कमी भी इन्सान का पतन कर सकती है,
एक छोटी-सी जुबां कत्ल करा सकती है, इस दुर्लभ शरीर को।।
92. जूठा पात्र केसर-कस्तूरी से नहीं, मैली राख से उज्ज्वल होता है,
स्वर्ण का घड़ा नहीं, मिट्टी का घड़ा ही शीतल जल देता है।
मूल्यवान और सौन्दर्यवान से ज्यादा अच्छा गुणवान होता है,
पल्लवित संगमरमर में नहीं, कीचड़ में ही कमल होता है।।
93. जोगी की जोगाई गई, साधु की सिद्धाई गई,
बड़ों की बड़ाई गई, रूप जाय अंग से।
ज्ञानी का ज्ञान जाय, मानी का मान जाय,
ध्यानियों का ध्यान जाय, शूरा जाय जंग से।।
94. घर की रिद्धि जाय, लोगों में प्रतीति जाय,
बुद्धि का विनाश थाय, विकल हो मन से।

संजम को मार जाय, ज्ञान को ऊच्चार जय,
ऐसा सब जात है, 'परनारी' के संग से।।

95. अध्ययन से आत्मा को शक्ति मिला करती है,
प्रार्थना से परमात्मा की भक्ति मिला करती है।
स्वाध्याय अकेले का साथी है सच्चा,
इसी प्रकार आत्मा की कलियाँ खिला करती हैं।।

96. एक ईंट से मकान नहीं बनता,
एक खम्भे से पाल नहीं तनता।
चाहे कितनी ही औषधि इस्तेमाल कर लो,
पर चिन्ता छोड़े बिना शरीर नहीं पनपता।।

97. जब आत्मा पर विश्वास नहीं, परमात्मा पर कब लाओगे,
यों ही संभ्रांत बने रहकर, भव-सिन्धु में गोते खाओगे।
अज्ञान-क्रिया करने वाला, जितना उल्टे रास्ते पर है,
वाचाल-शुष्क ज्ञानी भी तो, उतना उल्टे रास्ते पर है।।

98. वास्तविक रूप समझे बिना, जो कुछ कठिन क्रिया की जाती है,
अज्ञान-कष्ट वह क्रिया कभी, संसार घटा नहीं पाती है।
समदृष्टि को सम्यक्त्व विषम दृष्टि को विषम लखाता है,
जैसा चश्मा हो आँखों पर, वैसा ही रंग दिखाता है।।

99. प्राणातिपात और मृषावाद, चोरी, व्यभिचार पहिचानों,
परिग्रह-क्रोध मान-माया अरु लोभ-राग-ईर्ष्या जानो।
कलह-कलंक-चुगली-निन्दा, है रति-अरति लख लेना,
और कपट-झूठ-मिथ्यादर्शन यह पाप अठारह तज देना।।

100. अंकुरित होने के पहले बीज 'फूल' जाता है,
धन ज्यादा होने पर आदमी 'फूल' जाता है।
बीज फूल कर तो 'फल' देता है मगर,
आदमी फूलकर सब-कुछ 'भूल' जाता है।।

101. अन्धा वह है जो सत्य नहीं देखता है,
बहरा वो है जो सत्य नहीं सुनता है।
गूँगा वह है जो सत्य नहीं बोलता है,
जिसने सत्य को जाना वही परिपूर्ण होता है।।

102. धन बुद्धि और पुरुषार्थ से कमाया जाता है,
दान सत्कार्यों में व सुपात्र को दिया जाता है।
स्वार्थ-त्याग के तपस्वी होते हैं विरले ही,
अनासक्ति से ही अपरिग्रह को जीता जाता है।।

103. 'सामायिक' अनुपम आनन्द का नन्दन वन है,
जिसमें खिलते सत्य के सुरभित सुमन हैं।
समता की शीतल बहार बहती सतत जहाँ,
वहाँ तनावमुक्त निरासक्त बनता जीवन है।।

104. बीत गया जो उसको छोड़ो, वर्तमान से नाता जोड़ो,
समय न अपना व्यर्थ गंवाओ, मेहनत से जी को न चुराओ।
आज का काम न कल पर टालो, करना है सो अभी संभालो,
अगले पल को किसने देखा, घड़ लो स्वयं भाग की रेखा।।

105. चकाचौंध वैभव विलास सब, स्वर्ण-रजत की नौका है,
कभी नहीं यह तिरा सकेगी, सावधान यह धोखा है।
संयम-विनय-तपस्या-समता त्राणदायी काष्ठ की नौका है,
शीघ्र ही आश्रय ले लो इसका स्वर्णिम अनुपम मौका है।।

106. दारू-बीयर, पीकर आदमी जहर बन गया,
जानवर खाकर आदमी जानवर बन गया।
बेहद आतंक और हिंसा के ताण्डव में,
समूचा देश ही मानो 'मुर्दाघर' बन गया।।

107. 'सत्संग' परमहितकर औषध और आत्मरोग का नाशक है,
समता-शान्ति-विवर्द्धक है, और आत्मज्ञान प्रकाशक है।

अपनी मर्जी माफिक चलता, वह घोर अनर्थ कमाता है,
बिन ज्ञानी का सत्संग किये, यह जीव सत्पथ नहीं पाता है।।

108. ऐसा कौन जगत् में प्राणी, भूल नहीं जिससे होती,
ऐसी आँख कहाँ दुनिया में, हँसती और नहीं रोती।
'संवत्सरि' की यही प्रेरणा, अपने अंतर में झाँको,
ओरों की भूलों को भूलो, 'क्षमा' स्वयं औरों से माँगो।।

109. 'पयुर्षण-पर्व' हमें जगाने आता है,
'पयुर्षण-पर्व' राह पर हमें लगाने आता है।
एक साल के बाद जीवन-द्वार पर यह,
आत्मा की मोह-नींद को भगाने आता है।।

110. मोक्ष को पाना हो, तो संयम पालना सीखो,
घर को स्वर्ग बनाना हो, तो जहर का घूँट पीना सीखो।
समाज में स्थान पाना हो, तो काम करना सीखो,
यदि दूसरों को वश में करना हो, तो मीठा बोलना सीखो।।

111. जब भी बोलो प्रेम-क्षमा की वाणी बोलो,
गाँठ न बाँधो, राग-द्वेष की गाँठें खोलो।
वैर-विरोध सदा जीवन में दुःख देते हैं,
कभी कषायों का जीवन में रस न घोलो।।

112. पास में विपुल धन, हीरे-पन्ने-माणक-मोती हैं,
फिर भी लालसा, और पाने के सपने सँजोती है।
पेट की भूख तो दो रोटी से मिट जाती है,
पर मन की भूख, जीवन-भर शान्त नहीं होती है।।

113. ज्ञान का विकास ही वास्तव में प्रकाश है,
आत्मा का विकास ही वास्तव में विकास है।
धन का विनाश कोई विनाश नहीं,
चरित्र का विनाश ही सर्व-विनाश है।।

114. अपार धन तेरे पास, अनंत बली आत्मा,
क्यों माने दु:ख ही दु:ख, क्यों कहे गरीब हूँ,
कषाय को छोड़ दे, स्वस्थ हो जायेगा,
संतोष को धार ले, सुखी बन जायेगा,
विषयों से दूर भाग, आसक्ति छोड़ दे,
कमलवत् जीवन बन मोक्ष पा जायेगा।।

115. आज सबको नाम की चिन्ता है, काम की नहीं,
आज सबको दाम की चिन्ता है, ईमान की नहीं।
पानी में उतरे बिना, कब आता है तैरना, दास्तों !
आज सबको आराम की चिन्ता है, राम की नहीं।।

116. जो दे न सके सुगन्ध, वह फूल ही क्या ?
मिले न रोशनी जिससे वह चिराग ही क्या ?
जीने को तो सभी जीते हैं इस जमाने में,
जो न काम आ सके, इनसान के वो इनसान ही क्या ?

117. नामपट्ट बदल गये, पर व्यवस्था नहीं सुधरी,
टोपियाँ बदल गईं, पर खोपड़ियाँ नहीं सुधरी।
प्रवचन बहुत सुने, पर विचार नहीं सुधरे,
व्रत-नियम बहुत किये, पर व्यवहार नहीं सुधरे।।

118. चाय तैयार है, पीने के समय नहीं,
कपड़ा तैयार है, मगर सीने के लिये समय नहीं।
आज आदमी की लाइफ इतनी बिजी हो गई,
वह जीना चाहता है, मगर जीने के लिये समय नहीं।।

119. कार में रफ्तार के साथ ब्रेक चाहिये,
घूमती हुई सुई के साथ चीर-रेखा भी चाहिये।
प्रगति के लिये केवल दौड़ ही अपेक्षित नहीं,
जीवन में क्रिया के साथ विवेक चाहिये।।

120. एक-एक ईंट के सहयोग से महल खड़ा होता है,
एक-एक मिट्टी के कण से पूर्ण घड़ा होता है।
जीवन में आये उतार-चढ़ाव से घबराओ मत,
एक-एक घूँट को पीने वाला, सबसे बड़ा होता है।।

121. संसार को चलाने के लिए 'लक्ष्मी' चाहिये,
व्यापार को चलाने के लिये पूँजी चाहिये।
दीपक को जलाने के लिये भरपूर तेल चाहिये,
वैसे ही 'मोक्ष' को पाने के लिये संयम और तप चाहिये।।

122. खर्च दीखता है कमाई नहीं,
फीस दीखती है पढ़ाई नहीं।
दाग दीखता है धुलाई नहीं,
बुराई दीखती है भलाई नहीं।।

123. समाचार कम अखबार बहुत हैं,
व्यवहार कम उपचार बहुत हैं।
वादों के अंबार से महल नहीं बनते,
आचार कम हैं मगर प्रचार बहुत है।।

124. बाग महक जाता है एक ही फूल से,
हाथी सज जाता है एक ही झूल से।
क्यों न कितनी भी प्रतिष्ठा प्राप्त कर लो,
पर बात बिगड़ जाती है एक ही भूल से।।

125. क्षमा धर्म से बढ़कर कोई धर्म नहीं है,
क्षमा बिना शुभ कर्म कोई शुभ कर्म नहीं है।
'खामेमि सव्वे जीवा' का सार यही है,
क्षमा करो इससे बढ़कर कोई धर्म नहीं है।।

हितोपदेशी दोहे

1. परमेष्ठी पावन चरण, नित नम धर शीश।
ज्ञान-ज्योति जागे हिये, दो वर जिन-जगदीश।।
2. जो-जो सीखा ज्ञान है, रखना चाहो याद।
हमेशा गिनते रहो, ऐसा करो अभ्यास।।
3. सिद्ध सदा सन्मुख रहे, अरहन्त देव पवित्र।
तीन देव रक्षा करे, ज्ञान-दर्शन-चारित्र।।
4. दो धोला दो सांवला, दो नीला, दो लाल।
सोलह जिनवर सोहन वर्णा, वन्दूँ बारम्बार।।
5. कुदरत को नापसन्द है सख्ती जबान में।
इसलिये दी नहीं, हड्डी जबान में।।
6. मूरख वैद्य, लोभी गुरु, न्यायहीन सरकार।
'खूब' कहे इन तीन से, कभी न होत सुधार।।
7. सम्यक् दर्शन अंक है, और क्रिया सब शून्य।
अंक जतन कर राखजो, शून्य-शून्य दस गुणाय।।
8. ज्ञानी से ज्ञानी मिले, करे ज्ञान की बात।
मूरख से मूरख मिले, थापा-मुक्की-लात।।
9. जैसा अन्न-जल खाइये, तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिये वाणी तैसी होय।।
10. समझा-समझा एक है, अणसमझा सब एक।
समझा सोई जानिये, जांके हृदय विवेक।।

11. बोली तो अनमोल है, जो कोई जाने बोल।
हिये तराजू तोलकर, तब मुख बाहिर खोल।।
12. बारह भूलिया, चौदह चुका, नहीं जाने नव का नाम।
गाँव ढिंढोरो पीटियो, श्रावक म्हारो नाम।।
13. चित्त चन्देरी मन मालवे, हियो हाडोती जाय।
पलंग बिछायो आगरा, पोढ्या दिल्ली जाय।।
14. धर्म सहित मरणो भलो, मरिया अमरज होय।
धर्म बिन मरिया थका, मरण ज अन्ते होय।।
15. अपनी प्रत्यक्ष देखकर कैसा होत है दर्द।
वैसे ही परनारी का, दु:खी होत है मर्द।।
16. तब तक जोगी जग गुरु, जब तक रह उदास।
जब जोगी आशा करे, जग गुरु जोगी दास।।
17. अरे जीव भव-वन-विसे तेरा कौन सहाय।
जिनके कारण पच रहा, ते तो तेरा नाय।।
18. संसारी को देख ले, सुखी न एक लगार।
अपना पीछा छोड़ दे, मत रेख सिर पर मार।।
19. काया ऊपर थांहरे, सबसे अधिकी प्रीत।
या तो पहले सबन में, देसी दगो न चीत।।
20. मन-मतंग वश करण को, ज्ञानांकुश चित्त धार।
क्षमा-थम्भ से बाँधले, लज्जा साँकल डार।।
21. जैन धर्म में देखलो, गुण लारै है पूजा।
निगुणा ने पूजै तिकै, मत छै दूजा।।
22. काहे को भटकत फिरे, मोक्ष जावण के काज।
राग-द्वेष को छोड़ दे, सरल भया उपाय।।
23. बहु भंगिया कई काम के, बोले नहीं विचार।
हणत पराई आत्मा, जीभ चले तलवार।।

24. वे साधु वे श्राविका, तू वेश्या मैं भाँड।
थारै-म्हारै भाग का, पत्थर पड़सी रांड।।
25. भले भलाई ना तजे, षट्रस तजे न आम।
असली तो अवगुण तजे, गुण तो तजे गुलाम।।
26. महाव्रत मोती सारखा, कोटि जतन कर राख।
टूटा-फूटा नहीं काम का, इम भाखे भगवान्।।
27. जिनवाणी शुद्ध भाव से, सुणियाँ जावै पाप।
उदक रहे नहीं छाब में, तो पिण होवे साफ।।
28. नमे तो आंबा-आमली, नमे तो दाड़म-दाख।
एरण्ड बिचारा क्या नमे उसकी ओछी जात।।
29. दान-शील-तप-भावना, मार्ग मोक्ष के चार।
प्रथम स्थान है 'दान' का, चन्दन करो विचार।।
30. जो देता है सो पाता है, बस दिया-लिया रह जाता है।
जो मुट्ठी बाँधे आता है, वो हाथ पसारे जाता है।।
31. पूर्वजन्म का किया मिला, अब करो वही फिर पाओगे।
अब गफलत बीच रहे तो, मित्र बहुत पछताओगे।।
32. दिया नहीं दान जब घर में सामान था।
भजा नहीं राम, जब घर में आराम था।।
33. दे तो भावे भावना, ले तो करे संतोष।
वीर कहे रे गोयमा, दोनों जाने मोक्ष।।
34. चिड़ी-चोंच भर ले गई, नदी न घटियो नीर।
दान दियाँ धन ना घटे, कह गये दास 'कबीर'।।
35. 'तुलसी' जग में आयके, कर लीजे दो काम।
देने को टुकड़ा भला, लेने को हरि नाम।।
36. अपने हित जो देत है, सकल दिसा के लोग।
परहित में जो देत हैं, बहुत प्रशंसा योग।।

37. तन पवित्र कर-सेवा कियां, धन पवित्र कियां दान।
मन पवित्र हरि ध्यान धर, होवे त्रिविध कल्याण।।
38. काम छता ही काम रा, क़ाम बिना बेकाम।
मारवाड़ रा मुसद्दिया, थांने किणविध मिलसी राम।।
39. साधू रहे सावधान, संग्रह करे न पाव धान।
जो लावे तो ले चुका, बासी रहे न कुत्ता खाय।।
40. माया मरी न मन मरा, मर-मर गये शरीर।
आशा-तृष्णा ना मरी, कह गये दास 'कबीर'।।
41. धरती अकन कुंवारियां, वर किये कई लाख।
मुसलिम सो तो गड़ गये, हिन्दू हो गये राख।।
42. जगती तल में स्थान कई, है ना ऐसा कोय।
जन्म-मरण इस जीव ने, जहाँ न कीना होय।।
43. जन्म संग मृत्यु लगा, मृत जन्मे अरु नाय।
अजन्मा मरता नहीं, कर यत्न नहीं जन्माय।।
44. जिन-वाणी औषध पीयां, जन्म-मरण मिट जाय।
फिर अंकुर उगे नहीं, जड़ा-मूल से जाय।।
45. जन्म मरण के रोग को, जो तूं मेटा चाय।
शरण गहो जिन-वैद्य की, इण सम दूजा नाय।।
46. कोड़ जन्म का पुण्य, उदय होत एक संग।
मिटती मन की मलिनता, तब भावत सत्संग।।
47. उस सुख पर शिला पड़ो, जो प्रभु नहिं आवे याद।
बलिहारी उस दुःख की, जो हर्षे मिलावे हाथ।।
48. जो दीखे नैन से, सो सब विणस्या जाय।
ताको जो अपना कहे, सो मूरख सिर राय।।
49. जितने तारे गगन में, इतने दुश्मन होय।
पुण्य प्रबल जब होत हैं, बात न बाँको होय।।

50. सबसे बढ़कर प्रेम है, उससे उतरता नेम।
जहाँ प्रेम अरु नेम है, वहाँ कुशल अरु क्षेम।।

51. क्षण में राव का रंक बने और रंक का क्षण में राव।
चार गति चौबीस दण्डक में क्षण में भिन्न-भिन्न रूप बनाव।

52. कुण्डा मांही रत्न कहीजे, भलो पाँच मोआरो।
इण भव में नहीं चेतोला तो, परभव मुण्डो कालो।।

53. चार मिलिया चौसठ खुलिया, बीस मिलिया कर जोड़।
तन से तन मिलीया, फूल्या सात करोड़।।

54. चार कोस ग्रामान्तरे, खर्ची बान्धे लार।
परभव निश्चय जावणो, वृथा जन्म मत हार।।

55. घड़ी-घड़ी को देखकर, कर घड़ी का उपयोग।
घड़ी-घड़ी नहीं आयेगा, फिर ऐसी घड़ी का योग।।

56. क्रोधी तो कुढ़-कुढ़ जले, जिम-जिम उठे झाल।
क्षमावंत मन में सुखी, जाने मिश्री पीवी घोल।।

57. देता गाली एक है, पलटत होय अनेक।
जो गाली देवे नहीं, रहे एक की एक।।

58. आपा जहाँ है आपदा, चिन्ता जहाँ है क्षोभ।
ज्ञान बिना यह ना मिटे, जालिम मोटा रोग।।

59. वचन-रत्न मुख-कोटड़ी, होंठ-कपाट जड़ाय।
पहराय बत्तीस है, रखे परवश पड़ जाय।।

60. खाया सो तो खो दिया, दीया चाले सत्थ।
'जसवंत' घर पोढारिया, माल पराया हत्थ।।

61. दूध फटा घी कहाँ गया? मन फटा गई प्रीति।
मोती फटा कीमत गई, तीनो की एक ही रीति।।

62. चाह गई चिन्ता मिटी, मनवा बेपरवाह।
जिसको कुछ नहीं चाहिये, सो ही शहंशाह।।

63. भटक भरा भेदू बिना, कौन बतावे धाम।
चलते-चलते जुग गये, पाव कोस पर गाम।।
64. भेदू लीना साथ में, दीना पंथ बताय।
क्रोड़ वर्ष का पंथ था, पल में पहुँचा आय।।
65. कंकर-पत्थर जो चुगे, जिन्हें सतावे काम।
माल-मसाला जो खावे, जांकी जाने राम।।
66. सचित्त त्याग-अचित्त रख, उत्तरासन कर जोड़।
कर एकाग्रह चित्त को, सब झंझट को छोड़।।
67. नारी संग जीवन गया, द्रव्य गया मद्यपान।
प्राण गये कुसंग से, तीनों गये नादान।।
68. मीठा बोलो नम चलो, सबसे रखो स्नेह।
कितने दिन का जीवणा, कितने दिन की देह।।
69. पाँव बिगड़े बूंट से, दुकान बिगड़े लूंट से।
घर बिगड़े फूट से, इज्जत विगड़े झूठ से।।
70. गधे लड़ते लातों से, कुत्ते लड़ते दाँतों से।
मूरख लड़ते हाथों से, चतुर लड़ते बातों से।।
71. हरड़े बेहरड़े आँवला, और बड़ों का बोल।
पहले तो कड़वा लगे, पीछे होत अमोल।।
72. धन दे तन की राखीये, तन दे रखिये लाज।
धन दे, तन दे, लाज दे, एक धर्म के काज।।
73. एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध।
'तुलसी' संगत साधु की, मेटे कोटि अपराध।।
74. वाणी ऐसी बोलिये, मन का आपा खोय।
ओरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।।
75. फिकर सबको खा गई, फिकर सवका पीर।
जो फिकर का फाका करे, उसका नाम फकीर।।

76. चार कोश का माण्डला, बहे वाणी का घोरा।
भारीकर्मी जीवड़ा, बठे ही रह गया कोरा।।
77. सुख चाहे तो धर्म कर, धर्म ही सुख का मूल।
पापे सुखनी वांछना, यही है गहरी भूल।।
78. बिना बिचारे जो करे, सो पीछे पछताय।
काम बिगाड़े आपणो, जग में होत हंसाय।।
79. सोच करे सो सुघड़ नर, कर सोचे सो फूड़।
सोच कियां सुख नूर है, किया सोचा मुख धूड़।।
80. प पा से परिचय घणो, द दा से दिल दूर।
ल ला लव लागी रहे, न ना रहे हुजूर।।
81. बड़ों-बड़ों को देखकर, लघु न दीजे डार।
काम पड़े जब सुई का, क्या करे तलवार।।
82. धीरज से धोखा टले, रहे शरीर भी मस्त।
तामस कभी न ऊपजे, धीरज बड़ी है वस्त।।
83. जिससे परभव सुधरता, इस भव में कल्याण।
वही धर्म है परम हित, यह आगम फरमान।।
84. सम्यग्दर्शन सूर्य का, हो सर्वत्र प्रकाश।
ज्ञान-ध्यान-चारित्र से, विकसे जैन समाज।।
85. हाड बढ़ा हरि-भजन कर, द्रव्य बढ़ा कुछ देय।
अकुल बढ़ी उपकार कर, जीवन का फल लेय।।
86. मिश्री घोली झूठ की, ऐसे मित्र हजार।
जहर पिलावे साँच का, वो विरले संसार।।
87. मित्र ऐसा कीजिये, जैसे लोटा डोर।
गलो फँसावे आपणो, लावे नीर झकोर।।
88. भाग्य बिना ना मिले, भली वस्तु का जोग।
जब दाखां पाकण लगी, काक कण्ठ भयो रोग।।

89. सन्त मिले सब दुःख गया, सुख का पाया तीर।
वचन सुनत ही मिट गई, जन्म-मरण की पीड़।।
90. जगत् मरण से डरत है, मुझ मन बड़ो आनन्द।
कब मरसां कब भेंटसां, पूर्ण परमानन्द।।
91. क्रोध-मान माया-लालच, ये चार मोक्ष के बाधक हैं।
क्षमा-सरलता-संतोष-नम्रता, ये चार मोक्ष के साधक हैं।।
92. आहार शरीर उपधि, पच्चक्खुं पाप अठारह।
मरण पाऊं तो वोसिरे, जीऊं तो आगार।।
93. जैसे ज्वर के उदय से, भोजन की रुचि जाय,
वैसे पाप-कर्म के उदय से, धर्म नहीं सुहाय।।
94. लोहे से सोना बने, वह रसायन मत सीख,
नर से नारायण बने, वह रसायन सीख।।
95. ईर्या-भाषा-ऐषणा, ओलख जो आचार,
गुणवंत साधु देखने, वन्दजो बारम्बार।।
6. तीन मनोरथ धारकर, छोड़ असार संसार।
निवृत्ति-संयम-संलेखणा, ये अनंत है सार।।
97. काल करे सो आज कर, आज करे सो अब,
पल में प्रलय होएगा, फेर करेगा कब।।
98. आज करे सो काल कर, काल करे सो परसों।
इतनी जल्दी क्यों करता, अभी तो जीना बरसों।।
99. मधुर वचन है औषधि, कटुक वचन है तीर।
श्रवण द्वार से संचरे, साले सकल शरीर।।
100. मुरकी तो भगवान् की, हलुकर्मी ने लागे।
अन्तस में वैराग्य होय तो, उमाही घर त्यागे।।
101. भूखे-प्यासे दुःखी जनों पर, तरस न खाया।
कभी भी उनकी बुरी दशा पर, अश्रु न बहाया।।

102. माथो दुःखे मिरच चबाते, देवे उकाली ताव ने।
और रोग ने औषध लागे, औषध नहीं लागे एक स्वभावने।।

103. किया न सच्चा प्रेम किसी से मानी होकर।
बना जाति का कंटक, मैं नर जीवन पाकर।।

104. दाता दुःख भले दीजिये, पण बुद्धि दीजे साथ।
दुःख ने सुखकर मानसां, हीये राखजो हाथ।।

105. धनवान को आगे रखे, गरीब को रखे दूर,
साधु वो मत जाणजो, रोटियाँ तणा मजूर।।

106. घणी औषधि बिगाड़े तन, बिना भाव तो खावे अन्न,
पर-धन देखी बिगड़े मन, ये तीनों ही मूरख जन।।

107. रहे न कौड़ी पाप की, ज्यों आवे त्यों जाय,
लाखों को धन पायके, मरे न कफन पाय।।

108. विनय सहित गुरु से पढ़े, सब दोषों को टाल।
घो-चि-पू-लि-नित करे, ज्ञान चढे तत्काल।।

(घो-घोखना, चि-चितारना (चिन्तन करना) पू-पूछना, लि-लिखना)

जिनदेव के चरणों में

अगर जिनदेव के चरणों में, तेरा ध्यान हो जाता ।
तो इस संसार सागर से, तेरा उद्धार हो जाता।।अगर।।टैर।।
1. न होती जगत में ख्वारी, न बढ़ती कर्म बीमारी।
जमाना पूजता सारा, गले का हार हो जाता।।अगर।।1।।
2. रोशनी ज्ञान की खिलती, दिवाली दिल में लहलाती।
हृदय मन्दिर में भगवन् का, तुझे दीदार हो जाता ।।अगर।।2।।
3. परेशानी न हैरानी, दशा बन जाती मस्तानी।
धर्म का प्याला पी लेता, तो बेड़ा पार हो जाता ।।अगर।।3।।
4. जमीं का विस्तरा होता, वह चादर आसमाँ बनता।
मोक्ष गद्दी पे फिर प्यारे, तेरा अधिकार हो जाता।।अगर।।4।।
5. चढ़ाने देवता तेरे, चरण की धूल मस्तक पर।
अगर जिनदेव की भक्ति में, मन एकतार हो जाता।।अगर।।5।।
6. 'राम' जपता अगर माला का, मनका एक भक्ति से।
तो तेरा घर ही भक्तों के लिये, दरवार हो जाता।।अगर.6।।

अरहन्त प्रभु का शरणा लेकर

1. 'अरहन्त' प्रभु का शरणा लेकर, क्रोध भाव को दूर करें।
क्षमा भाव से शान्ति धर कर, मीठा ही व्यवहार करें। ।।1।।
2. 'सिद्ध' प्रभु का शरणा लेकर, मान बड़ाई दूर करें।
विनीत भाव से छोटा बनकर, लघुता का व्यवहार करों।।2।।
3. 'आचार्य' का शरणा लेकर, झूठ-कपट का त्याग करें।
सीधा-सच्चा रहना अच्छा, जीवन सारा सरल वने।।3।।
4. 'उपाध्याय' का शरणा लेकर, खोटी तृष्णा दूर करें।
जरूरत से ज्यादा लक्ष्मी, अपना क्या कल्याण करे।।4।।

5. 'मुनियों' के चरणों में गिरकर, अपना उद्धार करें।
मूल कषायों को क्षय करके, वीतराग पद प्राप्त करें।।5।।

अरहन्त जय-जय, सिद्धप्रभु जय-जय

1. अरहन्त जय-जय, सिद्ध प्रभु जय-जय।
साधु जीवन जय-जय, जिन-धर्म जय-जय।।1।।
2. अरहन्त मंगल, सिद्ध प्रभु मंगल।
साधु-जीवन मंगल, जिन-धर्म मंगल ।।2।।
3. अरहन्त उत्तम, सिद्ध प्रभु उत्तम।
साधु जीवन उत्तम, जिन-धर्म उत्तम ।।3।।
4. अहन्त शरणं, शरणं।
साधु जीवन शरणं, जिन-धर्म शरणं ।।4।।
5. चार शरण दुःख हरण जगत में, और न शरणा कोई होगा।
जो भव्य प्राणी करे आराधन, उसका अजर-अमर पद होगा।। 5।।

अरहन्त के अनुयायी हैं

1. 'अरहन्त' के अनुयायी हैं, 'अंहिंसा' धर्म हमारा है।
सब जीवों से प्रेम करें हम, ईर्ष्या द्वेष निवारा है।।टेर।।2।।
2. 'सिद्ध' प्रभु के अनुयायी हैं, 'सत्य-धर्म' मन भाया है।
सत्य ही बोलें सत्य ही तोलें, जीवन में सत्य समाया है।।
अरहन्त।।2।।
3. 'आचार्य' के अनुयायी हैं, 'अचौर्य-व्रत' को धारा है।
परधन को हम कभी न छुवे, चौर्य कर्म नहीं प्यारा है।।
अरहन्त।।3।।
4. 'उपाध्याय' के अनुयायी हैं, जीवन उच्च बनायेंगे।
पर-वनिता 'माता अरु भगिनी', जग में सुशील कहायेंगे।।
अरहन्त।।4।।

5. 'मुनियों' की सेवा करते हैं, दौलत जिनने ठुकराई है।
हम लोभ-लालच में फंसे हुए हैं, आयु व्यर्थ गंवाई है।।
अरहन्त।।5।।

6. इस शुभ दिन से हम करें प्रतिज्ञा, 'संतोष' जीवन में लायेंगे।
नीति-न्याय-मय जीवन होकर, सुखी सकल वन जायेंगे।।
अरहन्त।।6।।

आत्मा रे दाग लगाइजे मती

1. आत्मा रे दाग लगाइजे मती, उजली ने मैली बनाइजे मती।
आत्मा है थारी असली सोनो, सोने में खोट मिलाइजे मती।।
आत्मा।।1।।

2. आत्मा है थारी अमृत री कूपी, अमृत में जहर मिलाइजे मती।
आत्मा है थारी ज्ञान री दीवड़ी, फूँक मारने इणने वुझाइजे मती।।
आत्मा।।2।।

3. आत्मा है थारी ज्ञान री गुदड़ी, पाप रो खोल चढाइजे मती
आत्मा है थारी ज्ञान री पावड़ी, मुक्ति चढ़ीजे ने पाछो आइजे मती।।
आत्म।।3।।

आने वाले आयेंगे

आने वाले आयेंगे, जाने वाले जायेंगे,
प्रभु गुण गायेंगे, वो तिर जायेंगे ।।टेर।।

1. पुण्य पुष्प खिला है, मानव देह मिला है,
लाभ जो उठायेंगे, वो तिर जायेंगे।।आने.।।1।।

2. त्याग-तप करना है, जीवन सुधारना है,
नीद जो उड़ायेंगे, वो तिर जायेंगे।। आने.।।2।।

3. पाप-कर्म छोड़ दे, मन को तू मोड़ले,
वीरता जो लायेंगे, वो तिर जायेंगे।।आने.।।3।।
4. क्रोध कभी नहीं करना, मान-माया हरणा,
लोभ जो हटायेंगे, वो तिर जायेंगे।।आने.।।4।।
5. देख धन फूला है, मोह माँही भूला है,
जो उसे ठुकरायेंगे, वो तिर जायेंगे।।आने.।।5।।
6. अनमोल वक्त मिला, खीचन का भाग्य खिला,
संत ये जगायेंगे, वो तिर जायेंगे।।आने.।।6।।

प्रार्थना की शुद्ध प्रणाली

इक प्रार्थना की है, शुद्ध यह प्रणाली 2
सब मिल के आवो बैठें, है शुद्ध यह प्रणाली 2।। टेर।।
1. लाइन बांध करके, अतिशान्त-दान्त बनके।
गंभीर स्वर से गावो, है शुद्ध यह प्रणाली 2 ।।1।।
2. सब की ड्रेस हो खादी, पोशाक भी हो सादी।
एक साथ वन्दना हो, है शुद्ध यह प्रणाली 2 ।।2।।
3. सब विश्व के हैं भाई, नहीं भेद-भाव कोई।
नहीं पंथ-भेद यहाँ पर, है शुद्ध यह प्रणाली 2 ।।3।।
4. सब टेमोटेम आवो, शुद्ध संगठन दिखावो।
तत्त्व सीखो सिखावो, है शुद्ध यह प्रणाली 2 ।।4।।
5. जो-जो हो वाद जग में, सबको मिटावो अब तुम।
मनुष्यता दिखावो है शुद्ध यह प्रणाली 2 ।।5।।
6. दया-दान से बढावो, धर्म यह कल्पवृक्ष।
खावो मधुर फल फिर, है शुद्ध यह प्रणाली 2 ।।6।।
7. सबका भला करो तो, होगा भला तुम्हारा।
कहते गुरु 'अमोलक', है शुद्ध यह प्रणाली 2 ।।7।।

उठ भोर भई

1. उठ भोर भई टुक जाग सही, भज वीर प्रभु, भज वीर प्रभु ॥
टेर ॥1॥
2. जग जाग उठा तू सोता है, अनमोल समय यह खोता है।
तू काहे प्रमादी होता है, भज वीर प्रभु, भजं वीर प्रभु ॥2॥
3. यह समय नहीं है सोने का, है वक्त पाप-मल धोने का।
अरु सावधान चित्त होने का, भज वीर प्रभु, भज वीर प्रभु ॥3॥
4. तू कौन कहाँ से आया है, अब गमन कहां मन लाया है।
टुक सोच यह अवसर पाया है, भज वीर प्रभु, भज वीर प्रभु ॥4॥
5. रे चेतन चतुर हिसाब लगा, क्या खाया खरचा लाभ हुआ।
निज ज्ञान जमा तू संभाल लिया, भज वीर प्रभु-भज वीर प्रभु॥5॥
6. गति चार चौरासी लाख रुला, ये कठिन-कठिन शिव राह मिला।
अब भूल कुमार्ग विषे मत जा, भज वीर प्रभु, भज वीर प्रभु॥6॥

उठ जाग मुसाफिर

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहां जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है ॥ टेर॥
1. टुक नींद से अंखियाँ खोल जरा, ओ गाफिल प्रभु से ध्यान लगा।
यह प्रीत करन की रीत नहीं, प्रभु जागत है, तू सोवत है॥1॥
2. अनजान ! भुगत करनी अपनी, ओ पापी पाप में चैन कहां ?
जब पाप की गठरी शीश धरी, फिर शीश पकड़ क्यों रोवत है॥2॥
3. जो काल करे सो आज ही कर, जो आज करे सो अब कर ले।
जब चिड़िया चुग गई खेत सभी, फिर पछताये क्या होवत है॥3॥

प्रभु मार्गनी महिमा

(तर्ज-तेरे बिना भी क्या जीना)

हो प्रभु जी तारा मार्गनी महिमा 2 पापी पावन बने ऽऽऽ······।।
देवो तुझने नमे, शरण बिना सुख मिले ना······ हो प्रभु जी······।।
टेर।।

1. दृष्टि जैनी हंती विषधारी, ऐवा चण्डकोशिक ना बन्या उपकारी।
अर्जुन माली ने लीधो उभारी, ऐवा अनेकोनी आत्मा तारी।।
करुणाकारी 2ऽऽऽ जीवों ने सुखकारी, वाणी बिना सुख मिले ना।।
हो प्रभु जी।।1।।

2. ज्ञान प्रभुजी निर्मल तांरु लोकालोक माँ प्रकाश करनारू।
इन्द्र भूतिना गर्व ने गाली, राख्यु गणधर पद आपनारू।
त्रिपट्टी तार नारी 2ऽऽऽ कर्मों ने काप नारी, ज्ञान बिना सुख मिले ना।।
हो प्रभु जी।।2।।

3. शूरवीरता थी प्रभु ए सह्य, सूर संगमना उपसगो ने ।
खीला खोड़यां भरवाड़े कोंने, प्रभु जी रह्य मकम ध्याने।
समता ने धार नारा 2ऽऽऽ, क्षमा विसरनारी, क्षमा बिना सुख मिले ना।।
हो प्रभु जी।।3।।

4. भव भ्रमण भटक्यो स्वामी, धर्म बिना बन्यो संसार कामी।
संयम मार्ग ना शरणे आवी, 'उत्तम' त्याग वैराग्य ने पामी।
सिद्धि मनोहारी 2ऽऽऽ साधना से मलनारी, संयम बिना, सुख मिले ना।।
हो प्रभु जी।।4।।

प्रार्थना

करो रक्षा विपति से न ऐसी प्रार्थना मेरी,
विपत से भय नहीं खाऊँ प्रभु यह प्रार्थना मेरी ।। टेर।।

1. मिले दुःख ताप की शान्ति न ऐसी प्रार्थना मेरी,
सभी दुःख से विजय पाऊँ प्रभु यह प्रार्थना मेरी।।1।।
2. मदद पर कोई आजावे न ऐसी प्रार्थना मेरी,
न टूटे आत्मबल डोरी प्रभू यह प्रार्थना मेरी।।2।।
3. उठाले भार तूं मेरा न ऐसी प्रार्थना मेरी,
बनूं समर्थ उठाने में प्रभु यह प्रार्थना मेरी।।3।।
4. बढ़े धन-धान्य-परिवार न ऐसी प्रार्थना मेरी,
रहूँ समभावी संतोषी प्रभु यह प्रार्थना मेरी।।4।।
5. मिले सब मंत्र-तंत्रादि न ऐसी प्रार्थना मेरी,
खिले शक्ति से भक्ति प्रभु यह प्रार्थना मेरी।।5।।
6. सुखी दिन में भजूँ तुझको दुःख की अँधेरी रात्रि में,
न आवे तुम प्रति शंका, प्रभु यह प्रार्थना मेरी।।6।।

गुरुवन्दन

गुरुवर वन्दन अनुमति दो, चरण-कमल में आश्रय दो........
।। टेर।।

1. पाप क्रियाएँ तज आये, सचित द्रव्य भी तज आये
यथाशक्ति विधि-वन्दन लो, चरण-कमल में आश्रय दो
......गुरुवर.।।1।।
2. मस्तक चरणों में धरते, दोनों हाथों से छूते।
कष्ट हुवा हो क्षमा करो, चरण-कमल में आश्रय दो
......गुरुवर.।।2।।
3. अहो रात्रि क्या शुभ बीता, संयम में न रही वाधा।
सुखशाता का उत्तर दो, चरण-कमल में आश्रय दो
......गुरुवर.।।3।।

. जो अपराध हुवे हमसे, दूर हरें मन-वच-तन से।
निष्फल आशातना क्षमा करो, चरण-कमल में आश्रय दो
......गुरुवर.॥4॥

. हम हैं भूलों के सागर, पर हैं आप क्षमा-सागर।
'पारस' हम सबका उद्धार करो, चरण-कमल मे आश्रय दो
......गुरुवर.॥5॥

गुरुवन्दन

गुरुदेव तुम्हें नमस्कार बार-बार है,
श्रीचरण-शरण से हुवा जीवन सुधार है॥
गुरु.॥ टेर॥

. अज्ञान तम हटाके ज्ञान-ज्योति जगादी,
दृढ़ आत्मज्ञान में अखण्ड दृष्टि लगादी।
उपदेश सदाचार सकल शास्त्र सार है,
गुरुदेव तुम्हें नमस्कार बार-बार है॥1॥

2. विधीयुक्त सिर झुकाकर कर रहे वन्दना,
अब हो रही मंगलमयी सद्भाव सम्पादना।
माधुर्य से मिटा रही मन का विकार है,
गुरुदेव तुम्हें नमस्कार बार-बार है॥2॥

3. यह है मनोरथ नित्य रहें सन्त चरण में,
अन्तिम समय समाधि-मरण चार शरण में।
यह 'सूर्यचन्द्र' मोक्ष मार्ग में विहार है,
गुरुदेव तुम्हें नमस्कार बार-बार है॥ 3॥

गरु भज, गुरु भज मनवा

गुरु भज गुरु भज गुरु भज मनवा, गुरु भजां गुणवान पासी।
गुरुने ध्यावार गुरु ने जावार, तू भी गुरु सम बण जासी॥ टेर॥

1. 'सिद्ध' प्रभु है सिद्धशिला पर, कुण देख्या देखण जासी।
गुरु-चरण की शरण लेयतो सिद्धशिला दौड़ी आसी।।
गुरु.।।1।।

2. महाविदेह 'अरहन्त' विराजे, इण भव तो नहीं मिल पासी।
गुरुदेव की कृपा हुई तो, तू खुद 'अरहन्त' बण जासी।।
गुरु.।।2।।

3. प्रभु के रूठियां गुरु-श्रण है, झट सुमार्ग बतलासी ।
गुरु रूठियां नहीं ठौर जगत् में, गुरु सूठ्यां प्रभु मिल जासी।।
गुरु.।।3।।

4. गुरु तात गुरु भ्रात गुरु ही देव, गुरु-शरण जो तू पासी।
इण-भव रिद्ध-सिद्ध पग पासी, परभव शिव सुख बरतासी।।
गुरु.।।4।।

5. गुरु-निर्ग्रन्थ मिलिया पुण्य योग से, ये अवसर फिर कब आसी।
'जीत' पकड़ ले चरण गुरु का, बिना तार्यां नहीं तिर पासी।।
गुरु.।।5।।

चाँदनी फीकी पड़ जावे

चाँदनी फीकी सी पड़ जावे, चमक तारां री उड़ जावे।
म्हारा महावीर तेज सामने सूरज शरमावे।। टेर।।

1. त्रिशलादेवी लाडला जी सिद्धार्थ का लाल वीरजी सिद्धार्थ का लाल।
गर्भ, आवतां रतन बरसिया-2 दुनिया हुई निहाल।।
चाँदनी.।।1।।

2. ऐरावत चढ़ इन्द्र आवियो, जन्म लेवण पाण वीरजी जन्म लेवण पाण।
पाण्डशिला पर न्हावण करायो-2 शक्ति अलौकिक जाण।।
चाँदनी.।।2।।

3. ओ संसार असार जाण कर संयम लीनो धार वीरजी, संयम लीनो धार।
भरी जवानी दीक्षा लेकर कियो धर्म प्रचार।।
चाँदनी.।।3।।

4. केवलज्ञान उपनियोजी, घातीकर्म ने जीत वीरजी घाती कर्म ने जीत।
समवसरण की शोभा भारी-2 सुर नर गावे गीत।।
चाँदनी ।।4।।

5. कार्तिक वद अमावस शुभ-दिन मोक्ष पधा रिया आप वीरजी मोक्ष पधरिया आप।
दीया दीप दिवाली घर-घर-2 अनुपम थारी छाप।।
चाँदनी ।।5।।

जय बोलो महावीर स्वामी की

जय बोलो महावीर स्वामी की, घट-घट के अन्तर्यामी की।।

1. जिसने जगती का उद्धार किया, जो आया शरण वो पार किया।
जिस पीर सुणी हर प्राणी की, जय बोलो महावीर स्वामी की।।1।।

2. जो पाप मिटाने आया था, जिसने भारत को आन जगाया था।
उस त्रिशलानन्दन ज्ञानी की, जय बोलो महावीर स्वामी की।।2।।

3. हो लाख बार प्रणाम तुम्हें, हे वीर प्रभु भगवान् तुम्हें।
मुनि दर्शन मुक्तिगामी की, जय बोलो महावीर स्वामी की।।3।।

धर्म-साधना

(तर्ज-जरा सामने तो आवे छलिये...)

जरा साधना धर्म की करिये, सच्ची साधना से होवे बेड़ा पार है।
भवसागर से तिर जाये आतमा, यही मानव जीवन का सार है।।
टेर।।

1. चारगति में भटकत-भटकत, काल अनन्ता खोया रे।
जन्म-जन्म दु:ख सहे, धर्म का, फिर भी बीज न बोया रे।
खूब बढ़ाये पाप-विकार हैं, कर पाया न आत्म-विचार है।।
जरा.।।1।।

2. जीवन की अनमोल ये घड़ियाँ, मानव सफल बनाजा रे।
जिनवाणी की गंगा प्यारी, न्हाकर पाप बुझाजा रे।
नहीं आये समय हर बार है, ज्ञानी चेतो समय की पुकार है।।
जरा.।।2।।

3. तीन लोक में सार धर्म है, जिनवर ने फरमाया है।
निर्ग्रन्थ गुरु की शरण धार ले, शुद्ध सन्त कहलाया है।
कहे 'कुमुद' हमें सुनो सार है, करो साधना जगत् में सार है।।
जरा.।।3।।

जय जय जय भगवान्

1. जय जय जय भगवान्, जय जय जय भगवान्।
अजर अमर अखिलेश निरंजन, जयति सिद्ध भगवान्।।
जय.3।।1।।

2. अगम अगोचर तू अविनाशी, निराकर निर्भय सुखराशी।
निर्विकल्प निर्लेप निरामय, निष्कलंक निष्काम।।
जय.3।।2।।

3. कर्म न काया मोह न माया, भूख न तिरखा रंक न राया।
एक स्वरूप अरूप अगुरु-लघु, निर्मल ज्योत महान।।
जय.3।।3।।

4. हे अनंत हे अन्तर्यामी, अष्ट गुणों के धारक स्वामी।।
तुम बिन दूजा देव न पाया, त्रिभुवन में अभिराम।।
जय.3।।4।।

5. गुरु निर्ग्रन्थों ने समझाया, सच्चा प्रभु का रूप बताया।
तुझमें मुझमें भेद न पावूं, ऐसा दो वरदान।।
जय.3।।5।।

6. 'सूर्यभानू' है शरण तुम्हारी, प्रभु मेरी करना रखवारी।
अब तुम में ही मिल जाऊँ मैं, ऐसा दो वरदान।।
जय.3।।6।।

शिव-स्थान, हमारा

जहाँ जन्म जरा और मरण नहीं, वह शिव स्थान हमारा है।।
टेर।।

1. चाहने की लगन अगर निजधर की, तो पर-गुण में क्यों डोल रहे।
भगवान् भजन के अमृत में क्यों, क्रोध-लोभ-विष घोल रहे।।
शान्ति खोज में भटक रहा, भव अटवी में बनजारा है।।
जहाँ.।।1।।

2. अनादिकाल से भ्रमण किया, जिसकी न आदि कोई कह सकता।
चतुराई कितनी ही करलो, कर्मों का फल नहीं रुक सकता।
समदृष्टिपन जो नहीं पाया, तो व्यर्थ कष्ट तप धारा है।।
जहाँ.।।2।।

3. आये थे वो गये सभी, तीर्थंकर-चक्री और हरि।
वैभव-दौलत को और कुटुम्बी क्या, प्यारी देही भी रही धरी।
तुझको भी यहाँ से जाना है, क्या जीवन को कुछ भी सुधारा है।
जहाँ।।3।।

जिनवर जग उद्योत करो

जिनवर जग उद्योत करो, भव-सागर से पार करो।।टेर।।

1. ऋषभादिक-महावीर सभी, चौबीसी विसरूँ न कभी।
मम मुख गुणगण नित उचरो, भवसागर से पारा करो।
जिनवर.।।1।।

2. तुम हो कर्म-अरि जयकर, तुम गंभीर ज्यों सागरवर।
मिथ्या मल मम दूर करो, भवसागर से पार करो।।
जिनवर.।।2।।

3. तुमने रज मल धो डाला, जरा-मरण का दुःख टाला।
मुख पर भाव प्रसन्न धरो, भवसागर से पार करो।।
जिनवर.।।3।।

4. तीन लोक करे सुमरन, स्तवन सदा और नित्य नमन।
मुझमें बोधि-लाभ भरो, भवसागर से पार करो।।
जिनवर.।।4।।

5. तुम चन्द्रों से भी निर्मल, तुम सूर्यों से उज्ज्वल।
'पारस' सिद्धि शीघ्र वरो, भवसागर से पार करो।।
जिनवर.।।5।।

जो भगवती त्रिशला तनय

1. जो भगवती त्रिशला-तनय, सिद्धार्थ कुल के भान हैं।
लिया जन्म क्षत्रिय कुण्ड में, प्रियनाम श्री वर्धमान है।।1।।
2. जो स्वर्णवर्ण प्रलंब-भुज, सरसिज-नयन अभिराम है।
करुणा सदन मर्दन मदन, आनन्दमय गुणधाम है।।2।।
3. जो अनंतज्ञानी है प्रभु, और अनंत शक्तिमान है।
किस मुख से गुण वर्णन करूं, मेरी तो एक जवान है।।3।।
4. योगीन्द्र मुनिन चिन्तन निरत, जिनाकि की आठों याम है।
उन वर्द्धमान जिनेश को, मेरे अनेक प्रणाम हैं।।4।।

प्रभुवर ऐसी भक्ति दो

(तर्ज–चाँदी की दीवार)

जिह्वा पर हो नाम तुम्हारा, प्रभुवर ऐसी भक्ति दो।
समभावों से कष्ट सहूँ बस, मुझमें ऐसी शक्ति दो।।टेर।।

1. किन जन्मों मे कार्य किये थे, आज उदय वो आये हैं।
कष्टों का कुछ पार नहीं, जो मुझ पर ये मंडराये हैं।।
जिह्वा.।।1।।

2. डिगे न मन मेरा ममता से, चरणों में अनुरक्ति दो।
कायिक दर्द भले बढ़ जावे, किन्तु मन में क्षोभ न हो।।
जिह्वा.।।2।।

3. आर्तध्यान न आवे मन में, दुःख–दर्दों को पी जावूँ।
दीन भाव नहीं आवे मन में, प्रभु ऐसी शुभ अभिव्यक्ति दो।।
जिह्वा.।।3।।

4. ध्यान लगा लूं प्रभु चरणों में, हँस–हँस कर मैं जी जावूँ।
रोने से ना दर्द मिटे यह, पावन चिन्तन शक्ति दो।।
जिह्वा.।।4।।

5. महावेदना भले सतावे, ध्यान तुम्हारा ना छोड़ूँ।
जीवन की अन्तिम सांसों तक, अपनी समता न छोड़ूँ।।
जिह्वा.।।5।।

6. भले न तन दे साथ जरा भी, मन साधना में अनुरक्त रहे।
कभी न मांगूँ तुमसे प्रभुवर, कष्टों से मुझे मुक्ति दो।।
जिह्वा.।।6।।

7. जीवन की हर सांस तुम्हारे, चरणों की भक्ति में रहे।
रहे समाधि अविचल मेरी, शान्ती की अभिव्यक्ति दो।।
जिह्वा.।।7।।

तारो-तारो-तारो, निज आत्मा ने तारो रे

तारो तारो तारो, निज आत्मा ने तारो रे,
मिनख जमारो आयो हाथ में..... तारो.।।टेर।।

1. हिंसा - झूठ चोरी जारी लोभ लालच छोड़ो रे,
मनड़ा ने मोड़ो माया मोह सूं-तारो.।।1।।

2. वैर-जहर-झगड़ा-राड़ आपसी मिटावो रे,
जिन-गुण गावो, चित्त चाव सूं...तारो.।।2।।

3. ध्यान जिनराज में थे स्नेह लगावो रे,
लाभ कमावो सत्संग सूं...तारो.।।3।।

4. मीठा मीठा ज्ञान ध्यान आत्म में रमावो रे,
सटके सिधावों शिवलोक में....तारो....।।4।।

5. ज्ञानी बण मायली, आंखियां सु जोवो रे,
सोवो मती भव-नींद में ....तारो...।।5।।

6. जागण रो मौको सुगुरु जगावे रे,
धर्म सुणावे जिनराज को....तारो....।।6।।

7. अमृत समान मीठो धर्म सुणावे रे,
अमर बणावे इण जीव ने ....तारो....।।7।।

8. 'अमर' बणा गुरु सिखड़ी सुणावे रे,
जोधाणे में छाई रंगरली रे.....तारो......।।8।।

कर्मों का जाल

1. दुनिया के चराचर जीवों पर, कर्मों ने जाल बिछाया है।
क्या साधु ग्रहस्थ, क्या बाल वृद्ध,
बस कोई न बचने पाया है।।दुनिया.।।टेर।।1।।

2. अति शुभ कर्मों के आने से, सन्तों का समागम मिलता है 2।।
यह समय नदी की धारा है, जिसमें सब बह जाया करते हैं।।
दुनिया।।2।।

3. यह समय बड़ा तूफान प्रबल, पर्वत झुक जाया करते हैं 2।।
लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं, जो इतिहास बनाया करते हैं।।
दुनिया ।।3।।

उत्कृष्ट मंगल

1. धम्मो मंगल महिमा निलो धर्म समो नहीं कोय,
धर्म थकी नमे देवता धर्मे शिवसुख होय।। टेर।।
जीव दया नित पालिये संजम सतरे प्रकार,
बारा भेदे तप तपे, धर्म तणो यह सार।।
धम्मो.।।1।।

2. जिम तरुवर ने फूलड़े भ्रमरो रस लेवा जाय,
तिम संतोषे आत्मा फूल ने पीड़ा नहीं थाय।।
धम्मो.।।2।।
इण विध जावे गोचरी, बेहरे सुझतो अहार,
ऊँच-नीच-मध्यम कुले, धन-धन ते अणगार।।
धम्मो.।।3।।

3. मुनिवर मधुकर सम कह्या नहीं तृष्णा नहीं लोभ,
लांध्यो भाड़ो देवे देह ने, अणलांध्यां संतोष।।
धम्मो.।।4।।
अध्ययन पहले दुम पुप्फिये, सखरा अर्थ विचार
पुण्य कलश, शिष्य जेतसी, धर्मे जय-जयकार।।
धम्मो।।5।।

नर नारायण बन जायेगा

नर नारायण बन जायेगा, जो आत्मज्योति जगायेगा,
नर नारायण बन जायेगा।। टेर

1. पापों के बन्धन टूटेंगे, विषयों से नाते छूटेंगे,
जब सोया सिंह जगायेगा।। नर.।।1।।

2. घट-घट में सोया एक ईश्वर है, जागेगा वो ज्ञानीश्वर है,
सब जन्म-मरण मिट जायेगा।। नर.।।2।।

3. बादल के पीछे दिनकर है, कर्मों के पीछे ईश्वर है,
जो उसकी ज्योत जगायेगा।। नर.।।3।।

4. गुरु के चरणों में जा करके, श्रद्धा के पुष्प चढा करके,
कहे 'कुमुद' जो अमृत पायेगा।।4।।

पंच परमेष्ठि-धुन

पंच परमेष्ठी भज भगवान्, सब मिल गाओ मंगल गान।। टेर।।

1. अतिशय ज्ञानी श्री अर्हिन्त, सुर-नर वन्दित पूज्य महंत।।
शमन सभी संकट संताप, रिद्धि-सिद्धि-सुमरन सत जाप।।
पंच परमेष्ठी.।।1।।

2. वन्दूं श्री आचार्य महन्त, गण नायक गुण गण राजन्त।
उपाध्याय आगम विद्वान, पढे पढावे दे सद्ज्ञान।।
पंच परमेष्ठि.।।2।।

3. साधु सकल संयम शृंगार, जग जीवन के वे हितार।
गुरु गण-महिमा अगम-अपार, ज्ञान-सूर्य-वत जगदाधार।।
पंच परमेष्ठी.।।3।।

प्रभु भज, प्रभु भज, प्रभु भज प्राणिड़ा

प्रभु भज, प्रभु भज-प्रभु भज, प्राणिड़ा, एक दिन पिंजरो पड़ जासी।
करना होय सो करले प्राणी, फेर करण ने कब आसी।। टेर।।

1. बन की बकरी बन में रहती, आयो क़साइड़ो ले जासी।
छोकी-छोकी पत्तियां चुगले बकरड़ी, फेर चरण ने कब आसी।।
प्रभु भज.।।1।।

2. लकड़ी काटता लकड़ी बोली, तू ही खातीड़ा म्हारो संग-साथी।
छोकी-छोकी लकड़ी काटले खातीड़ा, एक दिन म्हारे संग जलजासी।।
प्रभु भज.।।2।।

3. माटी खोदता माटी बोली, तूं ही कुम्मार म्हारो संग-साथी।
छोकी-छोकी माटी खोदले कुम्हारड़ा, एक दिन माटी में मिल जासी।।
प्रभु भज.।।3।।

4. कलियाँ तोड़ता कलियाँ बोली, तू ही मालीड़ो म्हारो संग-साथी।
छोकी-छोकी कलियाँ तोड़ ले मालीड़ा, एक दिन म्हारे ज्यूं खिर जासी।।
प्रभु भज.।।4।।

5. कहत 'कबीर' सुनो भई साधो, अपनी करनी आप जासी।
राम-नाम को सुमिरन करले, कट जावे जन्म-मरण की फाँसी।।
प्रभु भज.।।5।।

प्रभु भजले रे भाया

प्रभु भजले रे भाया प्रभु भजले, जरा सो, जरा सो केणो म्हारो मनले
तू प्रभु भजले रे भाया.....।। टेर।।

1. मोह-माया में झूम रह्यो तू, कर रह्यो थारी-म्हारी।
ज्ञान-धर्म की बात केवे तो, लागे थाने खारी रे।।
भाया प्रभु भजले.।।1।।

2. मुट्ठी बन्धियो आयो जगत् में, हाथ पसारियां जासी।
दया-धर्म की कर ले कमाई, आहिज आड़ी आसी रे।।
भाया प्रभु भजले.।।2।।
3. जवानी री अकड़ाई में, टेढ़ो-टेढ़ो चाले।
पण थने नहीं इतरी मालुम, काई होसी काले रे।।
भाया प्रभु भजले.।।3।।
4. छोटी-मोटी वणी रे हवेलियां, अठे पड़ी रह जासी।
दो गज कफन रो टुकड़ो आखिर, थारो साथ निभासी।।
भाया प्रभु भजले.।।4।।
5. तू है पावणो भूल मती ना, चार दिनां रो भाई।
काल-काकाजी आवेला थारो, कण्ठ पकड़ ले जासी रे।।
भाया प्रभु भजले.।।5।।
6. 'वाल-मण्डल' केवे रे भायला, यो मोको नहीं फिर आसी।
प्रभु-भजन नहीं कियो वावला, फिर पीछे पछतासी रे।।
भाया प्रभु भजले।।6।।

भक्ति-भावना तर्ज-सावन का महीना

भक्ति में मनवा हो जाओ रस वोर,
मयूरा रे नाचे जैसे मेघों का सुन शोर.....। टेर।।
1. मीरा ने विष का था प्याला पीया, सीता ने अग्नि में था ध्यान किया।
विष अग्नि का देखो, चला ना कुछ जोर.....मयूरा रे नाचे।।1।।
2. भक्ति से गौतम केवल पद पाया, चन्दना ने दिव्य-दान दीप जलाया।
मुक्ति में जाने की, भक्ति है सच्ची डोर....मयूरा रे नाचे।।2।।
3. हनुमान की थी राम पे भक्ति, ध्रुव-प्रहलाद में इसकी ही थी शक्ति।
भक्ति का महिमा पे करो, तो जरा गोर....मयूरा रे नाचे।।3।।

4. भक्ति की सरिता में झूम-झूम बहता, उज्ज्वल लहरों में तल्लीन रहता।
भक्ति की ज्योति से मिलेगी, दिव्य ठौर.....मयूरा रे नाचे।।4।।

भावना दिन-रात मेरी

भावना दिन-रात मेरी, सब सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील का, प्रचार घर-घर द्वार हो।। टेर ।।

1. शान्ति अरु आनन्द का, हर एक घर में वास हो।
वीरवाणी पर सभी, संसार का विश्वास हो।।भावना.।।1।।
2. रोग अरु भय-शोक होवे, दूर सब परमात्मा।
कर सके कल्याण ज्योति, सब जगत् की आत्मा।।भावना.।।2।।
3. गुरुजनों के चरणों में, दृढ़ प्रीति अरु उल्लास हो।
काम अरु क्रोधादि दुष्टों, का सर्वसंहार हो।।भावना.।।3।।
4. ज्ञान अरु विज्ञान का, सब विश्व में प्रचार हो।
सब जगत् के प्राणियों का, धर्म में संचार हो।।भावना.।।4।।
5. आचार्य देवों के विचारों, का जगत् में मान हो।
'दासदेवी' को गुरु की, शान पर अभिमान हो।।भावना.।।5।।

श्री महावीर-प्रार्थना

महावीर प्रभु के चरणों में, श्रद्धा के कुसुम चढ़ायें हम।
उनके आदर्शों को अपना, जीवन की ज्योत जगायें हम।।टेर।।

1. तप-संयम मय शुभ साधन से, आराध्य-चरण आराधन से।
बन मुक्त विकारों से सहसा, अब आत्म-विजय कर पायें हम।।1।।
2. दृढ़ निष्ठा नियम निभाने, हो प्राण बलि प्रण पाने में।
मजबूत मनोबल हो ऐसा, कायरता कभी न लायें हम।।2।।
3. यश-लोलुपता पद-लोलुपता, न सताये कभी विकार व्यथा।
निष्काम स्व-पर कल्याण काम, जीवन अर्पण कर पायें हम।।3।।

4. गुरुदेव शरण में लीन रहें, निर्भीक धर्म की वाट वहें।
अविचल दिल सत्य-अहिंसा का, दुनिया को सुपथ दिखायेंहम।।4।।
5. प्राणी-प्राणी सह मैत्री सजे, ईर्ष्या-मत्सर-अभिमान तजे।
कथनी-करनी इकसार वना, तुलसी ! तेरा पथ पायें हम।।5।।

जिनवाणी का झरना

यह जिनवाणी का झरना, प्यासे की प्यास वुझाता।
यह परम अन्न का प्याला, भव-भव की भूख मिटाता।। टेर।।
1. स्वामी सुधर्मा नीर पिलाया, जम्बू का जीवन सरसाया।
वह अपूर्व आनन्द पाता, भव-भव की भूख मिटाता।।यह.।।1।।
2. गुरु हमारे 'चम्पक' पूज्यवर, शान्त-दान्त-गंभीर तपोधर।
गुरु भक्ति-राह दिखाता, भव-भव की भूख मिटाता।।यह.।।2।।

मिलता है सच्चा सुख

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान् तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल-पल क्षण-क्षण, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।टेर।।
1. चाहे अग्नि में मुझे जलना हो, चाहे कांटों पर भी चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता.।।1।।
2. चाहे वैरी सव संसार वने, चाहे जीवन मुझ पर भार वने।
चाहे मौत गले का हार वने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता.।।2।।
3. चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अन्धेरा हो।
पर मन नहीं डग-मग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता.।।3।।

4. मेरी जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस काम ये आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता.।।4।।

ले लो शान्ति प्रभु रो नाम

ले लो शान्ति प्रभु रो नाम, जिनवर शान्ति-शान्ति रो धाम।
धोलो दिल रा पाप तमाम, बेगी मुक्ति मिलसी 2।।टेर।।

1. नहीं है जीवन का विश्वास, अचानक रुक जावेला श्वांस।
पूरी हुई न किणरी आस, मन री मन में रह जासी 2।।
ले लो०।।1।।

2. बांधो मत कर्मों का भार, सुनकर जिनवाणी को सार।
जग में भरियो दु:ख अपार, आखिर जाणो पड़सी 2।।
ले लो०।।2।।

3. कोई मत करजो प्रमाद, करलो ब्रह्मचक्री ने याद।
ले लो नर भव को शुभ स्वाद, सूरज निश्चय ढळसी ।।
ले लो०।।3।।

4. छोड़ो सगळा आर्तध्यान, करलो समता रस रो पान।
जग में होनहार बलवान, टाल्यों नहीं टलसी।।
ले लो०।।4।।

5. चेतन ले लो शरणा चार, सांचो ओ ही है आधार।
बाकी स्वार्थ भरियो संसार, थारो कोई नहीं है।।
ले लो०।।5।।

6. अरहन्त-सिद्ध-साधु-अणगार, सांचो धर्म हिया में धार।
वो ही करसी बेड़ो पार और चारों नहीं है 2।।
ले लो०।।6।।

7. जीवड़ा होकर रह सचेत, ऐ चारों सूं राखो हेत।
नहीं तो चिड़िया चुगसी खेत, कोई रखवालो नहीं है।।
ले लो०।।7।।

8. थारे पग-पग पर लूटाक, थाँ पर रह्यो निशाना ताक।
ऐ चारों ने साथे राख, कोई पतियारो नहीं है 2।।
ले लो०।।8।।

9. ये है त्राणों का भी त्राण, ये है प्राणों का भी प्राण।
वो ही करे क्रोड़ कल्याण, थारो-म्हारो नहीं है 2।।
ले लो०।।9।।

महावीर-वन्दन

वन्दन हम करते मंगलमय महावीर स्वामी को।
संघ-शिरोमणि-शासन-नायक प्रभु अन्तर्यामी को।।वन्दन०।।टेर।।

1. वर्द्धमान गुण-खान जिनेश्वर, जीवन-प्राण सहारे।
तीर्थंकर निर्ग्रन्थ-हिन्तंकर, सन्मति देव हमारे।।
त्रिशला-नन्दन-त्रिभुवन मण्डन, धन्य परमधामी को।।वन्दन०।।1।।

2. जिन चरणों में गीतमादि ने विद्या-मद-विसराया।
जिन चरणों में सब इन्द्रों ने, अपना-शीश-झुकाया।
उन चरणों में बलि बलि जाऊँ, धन्य मोक्ष-गामी को।।वन्दन०।।2।।

3. समवशरण में पशु-पक्षी भी, सहज शत्रुता भूले।
दिव्य भव्य सुर नर-मुनिगण, सब आत्म गुणों में झूले।।
शरणागत म लेकर सेवक, 'सूर्यचन्द्र' नामि को।।वन्दन०।।3।।

सकलमंगल

सकल ही मंगलों में जो, प्रथम मंगल गिने जाते।
प्रभु मैं पंच परमेष्ठी, नमूं अतिप्रेम से उनको।।टेर।।

1. श्री अरिहन्त जिन जीते, जिन्होंने राग-द्वेषादिक।
ज्ञान केवल अनन्ता है, नमूं अतिप्रेम से उनको।।सकल०।।1।।
2. दूसरे सिद्ध परमेश्वर, किया है भस्म कर्मों को।
विराजे मुक्ति पद में जो, नमूं अतिप्रेम से उनको।।सकल०।।2।।
3. पाँच आचार का पालन, स्वयं करते-कराते हैं।
वे हैं आचार्य परमेष्ठी, नमूं अतिप्रेम से उनको।।सकल०।।3।।
4. पढ़ाते जो उपाध्याय, सकल सिद्धान्त शिष्यों को।
ज्ञान के दान में रत हैं, नमूं अतिप्रेम से उनको।।सकल०।।4।।
5. लोक में जो मुनिश्वर हैं, जगत् की मोह-माया तज।
लगे हैं आत्म-शोधन में, नमूं अतिप्रेम से उनको।।सकल०।।5।।
6. मन्त्र नवकार है प्यारा, हमारा बोलकर उसको।
'अमर' पद प्राप्त करने को, नमूं अतिप्रेम से उनको।।सकल०।।6।।

समता थी दर्द सहुं

समता थी दर्द सहुं प्रभु एवु बल दीजे,
म्हारी भक्ति सांची होय तो आटलु फल दीजे।।टेर।।
1. कई भव मा बांधेला, म्हारा कर्मों जाग्या छे।
काया ना दर्द रूपे, म्हने पीडवा लाग्या छे।।
आ ज्ञान रहे ताजू, एव सांचन जल दीजे।।
समता०।।1।।
2. दर्दो नी आ पीड़ा सेवा थी मटसे नहीं,
कल्पात करूं तो पिण, आ दुःख तो घटसे नहीं।।
दुरध्यान नथी करवुं, एवु निश्चय बल दीजे।।
समता०।।2।।
3. आ काया अटकी छे नथीं थाता तुझ दर्शन,
ना जाई सकुं सुणवा ने गुरुनी वाणी पावन।।

उपाश्रय जावा नुं, फरी ने अंजल दीजे।।
समता०।।3।।

4. नहीं थाती धर्म-क्रिया-ऐनो रंज घणो मनमां,
हैथूंतो तो झंखे छे, पण शक्ति नथी तनमा।।
म्हारी होश पूरी थावे, एवु शुभ अवसर दीजे।।
समता०।।4।।

5. छोने आ दर्द बधे, हूँ मौत नहीं माँगूं,
वली छेला श्वास सुघी, हूं धर्म नहीं त्यागुं।।
रहे भाव समाधिनो, एवु अन्तिम पल दीजे।।
समता०।।5।।

धर्म करो मेरे धर्मप्रेमियो

सुबह गई और शाम हुई, फिर रात गई और दिन निकला।
सुबह-शाम के चक्कर में ही, जीवन का रथ जाय चला।।टेर।।

1. धर्म करो मेरे धर्मप्रेमियो, धर्म किया भव-भव तिरसी।
धर्म करन्तां चढे रसायन, तू तीर्थंकर बन जासी।
कर्म काटकर धर्म-शिखर पर, चढ़कर करले काम भला।।
सुबह गई०।।1।।

2. एक-दो पल नहीं लक्ष-कोटि नहीं, अरब-खरब पल बीत गये।
अति विशाल सागर के जैसे, कोटि-कोटि पल बीत गये।।
पर्वत जैसा बलशाली भी, एक दिन ओले जैसा गला।।
सुबह गई०।।2।।

3. आज करे सो करले रे भाई, कल की पक्की आश नहीं।
जीवन चल रहा तरल पवन-सा, पर इसका विश्वास नहीं।।
मौत के दाव के आगे किसी की, चलती नहीं है कोई कला।।
सुबह गई०।।3।।

विश्व गगन का रविशि शशि बनरे, रवि–शशि नहीं तो तारा बन।
तारा नहीं तो दीपक बनकर तू, उज्ज्वल उजियारा बन।।
'केवलमुनि' चमके चहुँ दिशि में, करले कोई काम भला।।
सुबह गई०।।4।।

साधना के पथ

(तर्ज–भावभीनी वन्दना)

साधना के शुद्ध पथ पर, चरण ये गतिमान हों अब।
बन्धनों की तोड़ कारा, मुक्ति का संगान हो अब।।टेर।।
हम सभी विज्ञानमय हैं, हम सभी आनन्दमय हैं।
हो प्रकट निज रूप ऐसा, सत्य का संधान हो अब।।साधना०।।1।।
चीज जो बाहर निहारी, मांगते बनकर भिखारी।
है भरा भण्डार अपना, क्यों रहें अनजान हो अब।।साधना०।।2।।
ज्ञान की आराधना की, धर्म की समुपासना की।
वासना के चक्र में क्यों, भटकते बेभान हो अब।।साधना०।।3।।
क्रोध की सत्ता मिटावें, कुटिलता भी क्यों सतायें।
लोभ पर अंकुश लगे, निर्बल स्वयं अभिमान हो अब।।साधना०।।4।।
ध्यान प्राणायाम आसन, वृत्तिरोधन के हैं साधन।
कर सतत अभ्यास इनका, हम स्वयं भगवान् हों अब।।साधना०।।5।।

धर्म बिन जिन्दगी बेकार है

साधना ही शान्ति का आधार है,
धर्म बिन यह जिन्दगी बेकार है।।टेर।।
दूसरों के दोष को हम देखते,
क्या नहीं खुद दोष के भण्डार हैं।।साधना०।।1।।

2. भोग ही क्या जिन्दगी का लक्ष्य है,
त्याग से ही व्यक्ति का उद्धार है।।साधना०।।2।।

3. अन्त हो इच्छा पाप भी आता नहीं,
कामना से जल रहा संसार है।।साधना०।।3।।

4. दूसरों की देख उन्नति क्यों जलें,
पर असूया निज पतन का द्वार है।।साधना०।।4।।

5. शान्त निष्प्रिय सन्तजन रहते सदा,
जागरूकता तेरा आधार है।।साधना०।।5।।

साधो मन का मान त्यागो

साधो मन का मान त्यागो, साधो मन का मान त्यागो।।टेर।।

1. काम-क्रोध संगत दुर्जन की, ताते अहनिस भागो।।साधो०।।1।।
2. सुख-दुःख दोनों सम करी जानो और मान, अपमाना।।साधो०।।2।।
3. हर्ष-शोक रहे अतीता, तिन जग तत्त्व पिछाना।।साधो०।।3।।
4. अस्तुति-निन्दा दोऊ त्यागो, खोजो पद निर्वाना।।साधो०।।4।।
5. जन नानक यह खेल कठिन है, कोऊ गुरु मुख जानो।।साधो०।।5।।

निकल गई सारी जिन्दगी

(तर्ज-पड़ियो पांनी में.....)

सोते-सोते ही निकल गई सारी जिन्दगी.....
सारी जिन्दगी रे भाया सारी जिन्दगी.....।।सोते०।।टेर।।

1. जन्म लेते ही सबसे पहले तूने रुदन मचाया,
आंख्यां भी तो खुल नहीं पाई, भूख-भूख चिल्लाया।।
खाते-खाते ही निकल गई सारी जिन्दगी......
सोते-सोते ही......।।1।।

2. धीरे-धीरे बढ़ा बुढ़ापा, डगमग-डगमग डोले काया,
सब-के-सब रोगों ने देखो, डेरा खूब जमाया।।
रोगों-रोगों में निकल गई सारी जिन्दगी......
सोते-सोते ही......।।2।।

3. जिसको तू अपना समझा है, वह दे बैठा धोखा,
प्राण जाने पर जल जायेगा, यह गाड़ी का खोखा।।
खोखा ढोते ही निकल गई सारी जिन्दगी......
सोते-सोते ही......।।3।।

4. स्वर्ग-नरक का झगड़ा झूठा, परभव किसने देखा,
मुक्ति की है कोरी कल्पना, किसने जाकर देखा।।
शंका-शंका में निकल गई सारी जिन्दगी......
सोते-सोते ही......।।4।।

5. प्रभु-भजन तो कर नहीं पाया, हाय-हाय ही कीना,
आज करूंगा कल करूंगा, बहुत वर्ष है जीना।।
बातों-बातों में गुजर गई सारी जिन्दगी......
सोते-सोते ही......।।5।।

6. भाई से झगड़ा, पति से झगड़ा, सास-ससुर से झगड़ा,
भला-बुरा कुछ भी नहीं सोचा, किया सभी से रगड़ा।।
रगड़ों-रगड़ों में गुजर गई सारी जिन्दगी......
सोते-सोते ही......।।6।।

सिद्ध-स्तुति

सेवो सिद्ध सदा जयकार, जासे होवे मंगलाचार।।टेर।।

1. अज-अनिवासी-अगम-अगोचर, अमल-अचल अविकार।।
अन्तर्यामी त्रिभुवन-स्वामी, अमित शक्ति भण्डार।।सेवो०।।1।।

2.. कर पण्द्व-कमद्व अठ-गुण, युक्त-मुक्त संसार।
पायो पद परमेष्ठि तास, पद बन्दूं बारम्बार।।सेवो०।।2।।
3. सिद्ध-प्रभु को सुमिरन जग में, सकल सिद्धि-दातार।
मनवांछित-पूरण सुर-तरु सम, चिन्ता चूरणहार।।सेवो०।।3।।
4. जपे जाप योगीश रात-दिन, ध्यावे हृदय मंझार।
तीर्थंकरहूं प्रणमे उनको, जब होवे अणगार।।सेवो०।।4।।
5. सूर्योदय के समय भक्तियुक्त, स्थिरचित्त दृढ़ता धार।
जपे सिद्ध यह जाप तास घर, होवे रिद्धि अपार।।सेवो०।।5।।
6. सिद्धस्तुति यह पढ़े भाव से, प्रतिदिन जो नरनार।
सो दिव शिव-सुख पावे निश्चय, बना रहे सरदार।।सेवो०।।6।।
7. 'माधव-मुनि' कहे सकल संघ में, बढ़े हमेशा प्यार।
विद्या-विनय-विवेक समन्वित, पावे प्रचुर प्रचार।।सेवो०।।7।।

फेरो एक माला

सुबह और शाम की, प्रभुजी के नाम की,
फेरो एक माला हो, हो फेरो एक माला।।टेर।।

1. सकल सार नवकार मंत्र है, परमेष्ठि की माला,
नरकादिक दुर्गति का सचमुच, जड़ देती है ताला।
कर्मों का जाला, मिटे तत्काला..... ।।फेरो एक माला।।1।।
2. सुदर्शन और सीताजी ने, फेरी थी यह माला,
शूली का सिंहासन हो गया, शीतल हो गई ज्वाला।
शील जिसने पाला, सच्चा है रखवाला..... ।।फेरो एक माला।।2।।
3. सुमरण करके श्रीमती ने, नाग उठाया काला,
महाभयंकर विषधर था वो, बनी फूल की माला।
धर्म का प्याला, पीयो प्यारे लाला..... ।।फेरो एक माला।।3।।

4. द्रोपदी का चीर बढ़ाया, दुःशासन मद गाला,
मैना-सुन्दरी श्रीपाल का, जीवन बना विशाला।
सुभद्रा जो महिला, चम्पा द्वार खोला..... ।।फेरो एक माला।।4।।
5. राजदुलारी बालकुमारी, देखो चन्दनबाला,
महाभयंकर कष्ट उठाया सिर मुण्डा था मूला।
तपस्या का तेला, सब दुःख ढेला..... ।।फेरो एक माला।।5।।
6. समय बीतता जाये मित्रो, जीवन सफल बनालो,
सद्गुरु के चरणों में आ, परमेष्ठि ध्यान लगालो।
गुण गावे भोला, 'हरिऋषि' बोला..... ।।फेरो एक माला।।6।।

पूरण पापी जीव

हूँ पूरण पापी जीव ! पाप को भारो, पाप को भारो,
कर्मों को दोष नहीं, दोष सभी है म्हारो।।टेर।।
1. मैं बांध्या कर्म सो उदय होन की रीति, होन की रीति,
नहीं छोड़े मूल और ब्याज करेला फ़जीति।।
हूँ हँस-हँस लायो कर्मों सूं कर्ज उधारो, कर्ज उधारो.....
कर्मों को दोष.....।।1।।
2. जो पीवे भंग तो लहर अवश्य ही आवे,अवश्य ही आव,
जो करे चोरी वो सजा निश्चय पावे।
म्हारी पापा तन को लाख, लाख धिक्कारो, लाख धिक्कारो
कर्मों को दोष.....।।2।।
3. केई क्रोड़ भवो रा लेणा अतराई लागे, अतराई लागे,
कर्मों सूं डरतो जीव कहां जा भागे।
दुःख ही दुःख में खो दियो रे, मनुष्य जमारो, मुष्य जमारो,
कर्मों को दोष.....।।3।।

4. होगा सो होगा इण में मीन न मेखो रे, मीन न मेखो,
अरहन्त देव अब दया दीन की देखो।
प्रभु 'श्रमण हजारीमल' कहे कर्ज उतारो रे, कर्ज उतारो,
कर्मों को दोष.....।।4।।

हे भन्ते ! हम पे दया रखना

हे भन्ते ! हम पे दया करना और किसी से आस करें क्या ?
जग झूठा नाता......हे भन्ते.....।। टेर।।

1. देव हमारे श्री अरहन्त गुरु हमारे निर्ग्रन्थ सन्त,
धर्म हमारा दया अहिंसा, भव भव में दातार.....हे भन्ते।।1।।
2. धर्म ही मुझको तारणहारा, धर्म ही मुझको प्राणों से प्यारा,
सिवा धर्म के किसी के आगे झुके नहीं माथा.....हे भन्ते।।2।।
3. चारों तरफ है घोर अन्धेरा देता नहीं है शरण अनेरा
ढूंढते आया शरणा दे दो दया करो दातार.....हे भन्ते।।3।।
4. चम-चम-चम-चम ज्यूं चंदा-हीरे का हर कोना दमके,
धर्म ध्यान से चेतन मेरा ज्योतिर्मयदातार.....हे भन्ते।।4।।

हे प्रभु वीर दया के सागर

1. हे प्रभु वीर! दया के सागर, सब गुण-आगर ज्ञान उजागर।टेर।।
जब तक जीऊं हँस-हँस जीऊं, सत्य-अहिंसा का रस पीऊँ।
ज्ञान सुधारस अमृत पीऊँ, हे प्रभु वीर! दया के सागर.....।1।।
2. छोड़ूं लोभ घमण्ड बुराई, चाहूँ सबकी नित्य भलाई।
जो भी करना अच्छा करना, फिर दुनिया में किससे डरना....।
हे प्रभु!मेरा मन हो सुन्दर, वाणी सुन्दर, जीवन सुन्दर हे प्रभु वीर..।।2।।

श्री जिनेश्वर देव की

श्री जिनेश्वर देव की दृढ़ शक्ति मेरे पास हो,
जिन-प्ररूपित तत्त्व पर मेरा अटल विश्वास हो।।टेर।।
त्यागमय जीवन बनाया, त्याग कर संसार को,
ऐसे गुरुओं की चरण-सेवा का नित अभ्यास हो।।श्री०।।1।।
मद्य मांस शिकार जुआ चोरी परनारी विषय
स्वप्न में भी इनके सेवन की नहीं अभिलाष हो।।श्री०।।2।।
सत्य सेवा तप क्षमा संतोष उच्च विचार हो,
व्याप्त इस जीवन के उपवन में सदैव सुवास हो।।श्री०।।3।।
धर्ममय आजीविका हो, मधुरतम व्यवहार हो,
आचरण की शुद्धता से पूर्ण आत्मविकास हो।।श्री०।।4।।
वीतरागों का बताया मार्ग ही सन्मार्ग हो,
इसपे चलने में लगा प्रत्येक श्वासोच्छ्वास हो।।श्री०।।5।।

जय-जयकार पर्युषण

(तर्ज-काहि मचावे शोर पपैया)

जय-जय-जय-जयकार पर्युषण, जय-जय-जयकार।।टैर।।
स्वागत-स्वागत पर्व तुम्हारा, लो अभिनन्दन आज हमारा।
वन्दन सौ-सौ बार पर्युषण, जय-जय-जय जयकार।।1।।
सब पर्वों का तू है राजा, तुझसे उन्नत जैन समाजा।
हम तुम पर बलिहार पर्युषण, जय-जय-जयकार..... ।।2।।
तीर्थंकर भी तुम्हें मनाते, सुर-नर-किन्नर सब गुण गाते।
महिमा अपरम्पार पर्युषण, जय-जय-जय-जयकार..... ।।3।।
सकल संघ की सेवा पल-पल, बहे शान्ती का झरना निर्मल,
पाले शुद्धाचार पर्युषण, जय-जय-जय-जयकार..... ।।4।।

5. चाहे त्रस या स्थावर प्राणी, चाहे मित्र हो या दुश्मन जानें।
आतम सम व्यवहार पर्युषण, जय-जय-जय-जयकार.... ॥5॥
6. मैत्री का संदेश सुहाना, भूलो अपना और बेगाना।
सबसे प्रीत अपार पर्युषण, जय-जय-जय-जयकार॥6॥
7. आवो हम सब मिल आराधें, मैत्री भावना दृढ़तर साधें।
सफल करें त्योहार पर्युषण.....जय-जय-जय-जयकार॥7॥

हो भवि-भाव विशुद्ध-से

(तर्ज-पारसनाथ सहाई जांके)

हो भवि-भाव विशुद्ध-से तुम तो, पर्व पर्युषण साधो रे॥ध्रुव॰॥

1. पाप पर्व आराध्या हरषे, तेथी जगत पसारो रे।
अब तो कर लो धर्माराधन, तेथी खेवो पारो रे॥
हो भवि-भाव॰॥1॥
2. हिंसा-झूठ-अदत्त ही छोड़ो, छोड़ो विषय-विकारो रे।
परिग्रह क्रोध मान माया तज, लालच दूर निवारे रे॥
हो भवि-भाव॰॥2॥
3. राग-द्वेष-कलह को तजके, अभ्याख्यान निवारो रे।
चुगली पर-अपवाद निवारी, आतम ने उजवारो रे॥
हो भवि-भाव॰॥3॥
4. रति-अरति माया-मृषा नो, करदो मूल से टारो रे।
और मिथ्या-दर्शन ही तजिये, होवे पूर्ण सुधारो रे॥
हो भवि-भाव॰॥4॥
5. इण विध पर्व-आराधन् कीना, होसी जीव सुधारो रे।
चतुर्विध श्रीसंघ री या अरजी, तन-मन से अवधारो रे॥
हो भवि-भाव॰॥5॥

पर्व पर्युषण आ गये

(तर्ज–जीया बेकरार है)

आरम्भ पाप निवारिये, नियम व्रत धारिये।
पर्व पर्युषण आ गये, जीवन सुधारिये।।ध्रुव०।।

1. आठ दिनों में धन्धा करने, बाहर गांव मत जाना जी।
रात्रि में भोजन नहीं करना, हरी सब्जी नहीं खाना जी।।
आरम्भ०।।1।।

2. सामायिक संवर पौषध में, और प्रतिक्रमण भी कीजे जी।
मानव तन उत्तम कुल पाये, लाभ इसी का लीजे जी।।
आरम्भ०।।2।।

3. सब जीवों की रक्षा करना, नशा–व्यसन छिटकाना जी।
प्रेम से धर्मध्यान करना सब, सेवा खूब बजाना जी।।
आरम्भ०।।3।।

4. मित्रो एक भी वस्तु को नहीं, धुलवाना रंगवाना जी।
आत्मा के कीचड़ को धोना, ज्ञान का रंग चढ़ाना जी।।
आरम्भ०।।4।।

5. पर्व–दिनों में तपस्या करलो, ब्रह्मचर्य को धारो जी।
झूठ न बोलो ब्लेक करो मत, निन्दा–चुगली टारो जी।।
आरम्भ०।।5।।

6. जग के मोह से मुखड़ा मोड़ो, धर्म से प्रीति जोड़ो जी।
बहिनो ! पीसना–कूटना आदि, घर–धन्धों को छोड़ो जी।।
आरम्भ०।।6।।

7. जैन धर्म की करो उन्नति, झगड़े सभी मिटावो जी।
'केवल मुनि' मधुमय बन करके, प्रेम रंग बरसा जी।।
आरम्भ०।।7।।

वैगा होइजो तैयार अवसर आया है

(तर्ज–वो दिन धन होसी.....)

वैगा होईजो तैयार अवसर आयो है,
चूका चोरासी मांय अवसर आयो है।।टेर।।

सब पर्वों में पर्व शिरोमणि पर्युषण अवधार.......
अवसर आयो है।।1।।

दया पालजो प्राणी मात्र की, दे शिक्षा हितकार.......
अवसर आयो है।।2।।

संवर–पौषध करो सामायिक, दया व्रत दिल धार.......
अवसर आयो है।।3।।

आवश्यक करना दोनों वक्त में, करो सभी चौविहार......
अवसर आयो है।।4।।

रात्रि–भोजन लीलोती त्यागो, शील रतन अवधार.......
अवसर आयो है।।5।।

तपस्या की झड़ी लगा दो, होवे संघ जयकार.......
अवसर आयो है।।6।।

धर्म–ध्यान का ठाट लगावो, जपो मंत्र नवकार.......
अवसर आयो है।।7।।

आठ दिवस तक हिलमिल सोधो, सब ही नर और नार....
अवसर आयो है।।8।।

उत्तम करणी हेतु मिला है, 'रतन' नर अवतार.......
अवसर आयो है।।9।।

गजसकुमाल मुनि

(तर्ज-जय बोलो महावीर स्वामी की)

जय-जय हो गजसकुमाला की, धन्य क्षमाधर्म रखवाला की।।
जय०।।

1. वसुदेव का नन्दन प्यारा है, श्री नेम पे संयम धारा है।
दृढ़ प्रतिज्ञा पालन वाला प।1।।
2. श्मशान में जाकर ध्यान धरा, सोमिल ने देखकर कोप किया।
समता के सागर वाले की, जय-जय हो गजसकुमाला की।।2।।
3. सिर पर मिट्टी का पाल बना, अंगारे उस पर रखे घने।
षट्काया के प्रतिपाला की, जय-जय हो गजसकुमाला की।।3।।
4. खिचड़ी सम खद-बद करता है, कर क्षमा मुक्ति मुनि वरता है।
'मुनि पुष्कर' के प्राणधारा की, जय-जय हो गजसकुमाला की।।4।।

धन-धन मुनि गजसकुमाल

धन-धन मुनिवर ! गजसकुमाल, जन्म-मरण दुःख दीना टाल।।
टेर।।

1. बालक वय में संयम लीनो, सब जग जाणियो इन्द्रजाल।।
धन-धन०।।1।।
2. आज्ञा ले श्री नेमनाथ की, मुक्ति-महल मन कियो कृपाल।।
धन-धन०।।2।।
3. महाकाल श्मशान में जाकर, तरु-तल ध्यान कियो सुविशाल।।
धन-धन०।।3।।
4. पूरब भव को वैर संभाली, कोप्यो धीरज मुनि नैन-निहाल।।
धन-धन०।।4।।
5. इत-उत पेखी मृतिका लायो, मस्तक ऊपर बांधी पाल।।
धन-धन०।।5।।

6. झग झगता खेर ना खीरा, सिर पर धरिया सोमिल वाल।।
धन-धन०।।6।।

7. मन कर से भी सोमिल ऊपर, द्वेष न आयो परम दयाल।।
धन-धन०।।7।।

8. मेरु-शिखर-जिम दृढ़ ध्यान में, केवल-ज्ञान हुवो तत्काल।।
धन-धन०।।8।।

9. प्रवल वेदना सही ऋषीश्वर, समता कर मेटि मन-जाल।।
धन-धन०।।9।।

10. कर्म खपावी मुक्ति सिधाया, फिर सुख पायो अति रसाल।।
धन-धन०।।10।।

11. 'किसनलाल' कहे वेकर जोड़ी, मुझ वन्दन होजो त्रिकाल।।
धन-धन०।।11।।

डरना भी क्या कष्टों से

डरना भी क्या कष्टों से, महापुरुषों का नारा है।
विपदाओं के माध्यम से, कर्मों का किनारा है।।डरना०।।टेर।।

1. 'गजसकुमाल' मुनि, राह निकट की चुनी।
आजादी ली हँस के गुणी, शीश पे अंगारे हैं।।डरना०।।1।।

2. धन्य-धन्य खंदकजी, सही कैसे होगी व्यथा।
चर्म किया तन से जुदा, आखिरी संथारा है।।डरना०।।2।।

3. धर्मरुचि की दया, एक तन गया सो गया।
जहर पिया नागश्री दिया, सर्वार्थ में सिद्धाया है।।डरना०।।3।।

4. जहर दिया महारानी, राजा परदेशी पी गया।
विघटन पाप का किया, रोग को निवारा है।।डरना०।।4।।

5. दुःख है विचारों से, अवधूतों ने जान लिया।
अव्यावाध सुख ही सदा, निर्लिप्तों को प्यारा है।।डरना०।।5।।

धर्म–दलाली

दलाली धर्म की रे म्हारा सतगुरु दीवी रे बताय।
दलाली धर्म की म्हारा ज्ञानी गुरु दीवी रे बताय।।टेर।।

1. पाप–दलाली जगत् मेंरे, करी अंनती बार।
धर्म–दलाली ना करी रे, तिण थी जीव खुवार।।दलाली०।।1।।
2. करी दलाली धर्म की रे, देखो कृष्ण मुरार।
गोत्र तीर्थंकर बांधियो रे, साध्या है आत्म काज।।दलाली०।।2।।
3. जाणी विनाश ही नगरनो रे, तुरंत ही कृष्ण मुरार।
पडह दिरायो नगर में, सांभल जो नर नार।।दलाली०।।3।।
4. जाणी विनाशी नगरनोरे, जो ले संयम भार।
राजा ईश्वर तलवर मण्डवी, श्रेष्ठी राजकुमार।।दलाली०।।4।।
5. रानी आदि जो ले तेहने, आज्ञा म्हारी धार।
पिछलानी वली जान जोरे, करंसु सार–संभार।।दलाली०।।5।।
6. पद्मावती गौरी गन्धारी लक्ष्मणा सुसीमा जाण।
जाम्बवती सत्यभामा रुक्मणि अग्रमहिषी आठ।।दलाली०।।6।।
7. साम्बकुमार नी भार्या दो वलि मूलश्री। मूलदत्ता
दसे प्रवर्जित हुईनेम पेपाय, आज्ञा श्री कृष्ण की।।दलाली०।।7।।
8. नवद्वारों नी द्वारका रे, देही आपणी थासी नास।
कोई भवि प्राणी चेत, जो रे, जो होवे सिद्धनी आस।।दलाली०।।8।।

देवकी रानी का झूरना

इम झूरे देवकी राणी, या तो पुत्र बिना बिलखानी रे....
इम झुरे.......।।टेर।।
मैं तो सातों नन्दन जाया, पिण एक न गोद खिलाया रे....
इम झुरे.......।।1।।

घरे पालणो नहीं बंधायो, नहीं मधुर हालरियो गायो रे....
इम झुरे.......॥2॥
घुंघर चुखनी नहीं वसाया, झूमर पण नहीं बंधाया रे....
इम झुरे.......॥3॥
नहीं गहणा-कपड़ा पेराया, नहीं झगल्या-टोपी सिवाया रे....
इम झुरे.......॥4॥
नहीं काजल आँख अंजाया, नहीं स्नान करीने जिमाया रे....
इम झुरे.......॥5॥
नहीं गाल दांमणा दीधा, वलि चाँद-सूरज नहीं कीधा रे...
इम झुरे.......॥6॥
नहीं स्तनपान कराया, रूठा ने नहीं मनाया रे....
इम झुरे.......॥7॥
मैं तो कड़िया नहीं उठाया, नहीं अंगुलि पकड़ चलाया रे...
इम झुरे.......॥8॥
छू-छू करी नहीं डराया, नहीं गुदगुदिया पाड़ हंसाया रे....
इम झुरे.......॥9॥
नहीं मुखपे चुम्बन दीधा, नहीं हर्ष वारणा लीधा रे...
इम झुरे.......॥10॥
नहीं चक्री-भँवरा रमाया, नहीं गुलीया गेंद वसाया रे...
इम झुरे.......॥11॥
मैं तो जन्म तणा दुःख देखिया, गया निष्फल जन्म अलेख्या रे...
इम झुरे.......॥12॥
मैं तो पूरा पुण्य नहीं कीधा, तिणथीं सातों पुत्र विछोवा लीना रे...
इम झुरे.......॥13॥
गले हाथ नजर दे धरती, आँखां आँसू भर झुरती रे...
इम झुरे.......॥14॥

पग–वन्दन कृष्ण पधारे, माताजी को उदास निहारी रे....
इम झुरे.......।।15।।
'अमिरिख' कहे किम दुःख पावो, माताजी मुझे फरमावो रे......
इम झुरे.......।।16।।

सेठ सुदर्शन–माता–संवाद

(तर्ज–मन डोले मेरा तन डोले)

1. मन हरषे, मेरा तन सरसे, मैं जावूँ प्रभु के द्वार रे
पाऊँ दर्शन मंगलकारी.......मन हरषे.......।।टेर।।

सुदर्शन 2. करुणासागर जग–हितकारी, प्रभुजी आज पधारे, राजगृही
के बाहर बन में, जग के भव्य सहारे।।
हे माता, जग के भव्य सहारे।
दर्शन को, पदकंज फरसन को, मैं जाऊँ प्रभु के द्वार
रे, पाऊँ दर्शन मंगलकारी.......मन हरषे।।1।।

माता 3. मत मचले, वन्दन यहीं करले,
मेरे वत्स सुदर्शन लाल रे, प्राण हरे रे अर्जुनमाली....
घट–घट के भावों को जाने, प्रभुजी है उपकारी,
नमन करें स्वीकार यहीं से, वे प्रभु महिमाधारी.....
हो बेटा वे प्रभु महिमाधारी।।
हम आकुल बेबस–व्याकुल, वे
देख रहे सब हाल रे–प्राण हरे रे अर्जुनमाली...मतमचले।।2।।

सुदर्शन 3. प्रभुजी देखे मैं नहीं देखूं, यह दुविधा है भारी,
दर्शन करलूं, वाणी सुणलूं, हरलूं मोहं खुमारी,
हो माता मोह खुमारी।।
क्यों घर में बैठा रहूं डर में, छू चरण अभय करूँ वहार रे,
पाऊँ दर्शन मंगलकारी.....मन हरषै.....।।3।।

1. पूछा वीर से कहो करूँ क्या, देओ राह बताय,
जिम सुख होवे तिम करोस रे, यों वीर दीयो फरमाय।।धन्य०।।1।।
2. तहत उच्चारी बन्दन कीनो, मन में सोचे जाय।
बेले-बेले करूँ तपस्या, देऊँ कर्म खपाय।।धन्य०।।2।।
3. राजगृही नगरी के अन्दर, लोग रहे घबराय।
मुनि वेष में आता देखी, और अचंभो पाय।।धन्य०।।3।।
4. मुख पे मुहपत्ति रजोहरण कर गोचरी घर-घर जाय।
लेतां देख्या भोजन पारणे, लोग क्रोध में आय।।धन्य०।।4।।
5. मारे ताड़े गाली सुणावे, भोजन मिलता नाय।
दिया परीषह जनता ने तब, समता भाव रहाय।।धन्य०।।5।।
6. मुनिवर सोचे अनर्थ कीनो, कुटुम्ब मार अपार।
दिये न वैसे दुःख इन्होंने, क्षमा हृदय में धार।।धन्य०।।6।।
7. हुए न हुए पूर्ण पारणे, वर्ष यों अर्ध बिताय।
वीर गुण करते धिक्क् आत्मा, प्रगट्यो केवल-ज्ञान।।धन्य०।।7।।
8. धन्य-धन्य है वीर प्रभु को, अर्जुन ने दीनो तार।
गुरु प्रसादे 'सागर' वन्दन, करता बारम्बार।।धन्य०।।8।।

धन्य अर्जुन माली 2

टेर धन्य अर्जुनमाली क्षमा तपधारी तारी आत्मा।।टेर।।
1. श्री वीर प्रभु पे संयम लेकर, हो गये शुद्ध अणगार।
बेले-बेले करे पारणा, षट्काया प्रतिपाल जी।।धन्य०।।1।।
2. उन हीज राजगृही के अन्दर, फिर रहे घर-घर-द्वार।
देख मुनि को बहु नर-नारी, बोले बिगर विचार।।धन्य०।।2।।
3. रे रे निर्लज दुष्टी पापी, अधर्मी ठग दुःखदाय।
पेट भरण के काज आज यों, माथो लियो मुंडाय जी।।धन्य०।।3।।

माता 4. धर्मकार्य में पहला साधन तन क्यूं यूं ही हारे,
दया हमारी कर एकाकी, वल्लभ लाल हमारे हो
बेटा वल्लभ लाल हमारे।।
मैं जननी, तेरी यह पत्नी, सुनकर पाती दुःख अपार रे,
प्राण हरे रे अर्जुनमाली.......मत मचले।।4।।

सुदर्शन 5. यह तन जिसका पहला साधन, उसी लिये जुट जाये,
ममता तजकर फिक्र करो मत, दुःख सारे टल जाये,
हो माता दुःख सारे टल जाये।
ले दया सहारा लाल तुम्हारा रच देगा पूर्ण सुखी संसार
रे, पाऊं दर्शन मंगलकारी-मन हरषै।।5।।

माता 6. कायर हैं हम जावो बेटा, जन-जन के पथ खोलो,
रोती हूँ पर कहती मन से वीर की जय-जय बोलो,
हो बेटा वीर की जय-जय बोलो।।
दुःख हरना प्रभु, रक्षा करना, लेना तेरा भक्त संभाल रे
जय-जय होवे वीर तुम्हारी।। मत मचले।।6।।

कवि 7. मन हरषे जीवन तव सरसे, पहनो बेटा जय शुभ माल रे,
जय-जय होवे वीर तुम्हारी।।टेर।।
धन्य सुदर्शन निर्भय होकर, प्रभु दर्शन को जाते,
अर्जुन माली के कार्य सुधरते, पुरजन सुखी बन जाते,
नगर के संकट सब टल जाते।।
यों 'अर्जुन' अणु सेठ सुदर्शन, दिल में अभय अहिंसा धार रे,
पाये दर्शन मंगलकारी।। मन हरषे मेरा तन....।।7।।

धन्य अर्जुन मुनिवर

(तर्ज-चम्पक सेठ की.....)

धन्य अर्जुन मुनिवर दीक्षा लेइने चाल्या गोचरी।।टेर।।

4. कोई कहे पितु- मातु-पुत्र को, मार्या इण चाण्डाल।
बहिन-बहनोई-भुवा-भाणजी, भ्रात-भगिनी-नार जी।।धन्य०।।4।।
5. कइक लकड़ी-पत्थर करीने, कईक डंडों से मारे।
कइक लगावे कुत्ता-काटणा, फिर बोले मुख से गाल जी।।धन्य०।।5।।
6. मुनि समता रस सहे परीषह, नहीं तन क्रोध लगार।
वे सब सच्चे हैं नर-नारी, मैंने किया है संहार जी।।धन्य०।।6।।
7. बिन भुगत्या बदला नहीं छूटे, ज्ञानी वचन है खास।
तप क्षमा भण्डार मुनिजी, समभावे सहे त्रास जी।।धन्य०।।7।।
8. षट्मासा तक कर्म बांधिया, ते षट्मास मंझार।
शुभ परिणाम भावना भावत, आवत गुण उजवार जी।।धन्य०।।8।।
9. असण-पाण कोई वक्त मिले नहीं, सिर देवे कोई फोड़ी।
धर्म शुक्ल बहु ध्यान ध्याय कर, अष्ट कर्म दिया तोड़ी।।धन्य०।।9।।
10. 'केवल' ले मुनि गये मोक्ष में, अनंत गुणों के धानी।
षट्मासा लग संयम पाली, सिद्ध अवस्था पामी जी।।धन्य०।।10।।

ऐवन्ता मुनिवर

ऐवन्ता मुनिवर ! नाव तिराई बहता नीर में।।टेर।।

1. पोलासपुरी नगरी को राजा, विजयसेन भूपाल।
श्रीदेवी के अंग उपन्या, रे, ऐवन्ता कुमार हो।।ऐवन्ता०।।1।।
2. बेले-बेले करे पारणा, गणधर पदवी पाया।
भगवंता की आज्ञा लेइने, गोतम गोचरी आया जी।।ऐवन्ता०।।2।।
3. खेल रहा था खेल कुँवरजी, देख्या गोतम आता।
घर-घर मांहीं फिरे हींडता, पूछे इसड़ी बातां जी।।ऐवन्ता०।।3।।
4. अशनादिक लेवण के काजे, निर्दोषन हम वहरा।
अंगुलि पकड़ी कुँवर ऐवन्ता, लाया गोतम लार जी।।ऐवन्ता०।।4।।

5. माता कहे अहो पुण्यवंता, भली जहाज घर आणी।
हर्ष-चित्त उदार भाव से, बहराया अन्न पाणी जी।।ऐवन्ता०।।5।।
6. लारे-लारे चाल्या कुँवरजी, भेट्या मोटा भाग।
भगवंता की वाणी सुण ने, आयो मन वैराग्य जी।।ऐवन्ता०।।6।।
7. घर आई माता सूं बोले, अनुमति की अरदास।
बात सुणी माता पुत्र की, आयो मन में हास जी।।ऐवन्ता०।।7।।
8. तूं कांई समझे साधपणा में, बाल्या अवस्था थोंरी।
उत्तर ऐसा दिया कुँवरजी, माता कहे बलिहारी जी।।ऐवन्ता०।।8।।
9. मोच्छव करीने संजम लीनो, हुवा बाल अंणगार।
भगवंता रा चरण भेटिया, धन्य ज्यांरो अवतार जी।।ऐवन्ता०।।9।।
10. वरसा काल वरसिया पीछे, मुनिवर ढरड़े जावे।
पाल बांध पानी में पातर, नाव जाणी तिरावे जी।।ऐवन्ता०।।10।।
11. नाव तिरे म्हारी नाव तिरे, इम मुख सूंशब्द उचारे।
साधां के मन शंका उपनी, किरया लागे थाने जी।।ऐवन्ता०।।11।।
12. भगवंत भाखे सब साधां से, भति करो निस-दिव।
हीलणा-निन्दा मती करो कांई, चरमशरीरी जीव हो।।ऐवन्ता०।।12।।
13. शासनपति रा वचन सुणी ने, सब ही शीष चढ़ाया।
ऐवन्ता री हुण्डी सिकरी, आगम मांही गाया हो।।ऐवन्ता०।।13।।
14. सवंत उगणीसे साल छियाली, भीलवाड़ा शहर मुंजार।
'रत्नचन्दगी' गुरु प्रसादे, गायो हीरालाल हो।।ऐवन्ता०।।14।।

दस-पच्चक्खाण

तप समो नहीं जगत में जी, सुख तणो दातार।।टेर।।

1. दस पच्चक्खाणे जीती, बड़ो कांई पासे सुख अपार।
करतां एक नवकारसी जी, सौ वर्ष नरक रा निवार।।
तप समो०।।1।।

2. बीजूं पौरसी वर्ष सहसनी, कांई साढ पौरसी दस-हजार।
पुरीमढ़ लक्ष एक वर्षनो जी, एकासणां दस लक्ष धार।।
तप समो०।।2।।
3. नीवी तोड़े क्रोड़ वर्षनो जी, कांई दस क्रोड़ एकलठाण।
सौ क्रोड़ एकल दत्त दहे जी, आयम्बिल सहस्स क्रोड जाण।।
तप समो०।।3।।
4. सहस दस क्रोड़-उपवास में ये जी, कांई छट्ठ तणो तप धार।
लख-कोटि वर्ष खपाइये जी, अट्ठम कोटि दस लाख टार जी।।
तप समो०।।4।।
5. कोटा-कोटी वर्ष ने जी कांई, दसम भस्म करे कर्म।
मुनिराज कहे तप कीजिये जी, पामे सहु शिव सुखस्थान जी।।
तप समो०।।5।।

काली रानी

(तर्ज-मनाऊँ मैं तो श्री अरहन्त महंत..........)

काली हो रानी सफल कियो अवतार,
थे तो पाम्या हो भवदधि पार।।टेर।।

1. कोणिकराय नी छोटी माता, श्रेणिक नृप नी नार।
वीर जिनंद की वाणी सुणने, लीनो संजम भार हो।।
काली हो०।।1।।
2. 'चन्दनबाला' जैसी मिली गुराणी, नित-नित नमे चरणार।
विनय करी ने भणी अंग इग्यारा, निर्मल बुद्धि अपार हो।।
काली हो०।।2।।
3. समिति-गुप्ति शुद्ध संयम पालत, चढ़ी है परिणामों की धार।
आज्ञा लइने निज गुरणी की, तपस्या मांडी है सार हो।।
काली हो०।।3।।

4. शरीर-शक्ति जाणी आराध्यो, रत्नावली तप नो हार।
चार लड़ी सम्पूर्ण कीनी, आठमें अंग अधिकार हो।।
काली हो०।।4।।

5. पाँच वर्ष तीन मास दो दिन, कम लागो इतनो काल।
धन्य महासती तप आराध्यो, वन्दन बारम्बार हो।।
काली हो०।।5।।

6. मुनि 'नन्दलाल' तणा शिष्य गायो, शहर बिलाड़ा मझार।
ऐसी सती का सुमरण सेती, वरत्या है मंगलाचार हो।।
काली हो०।।6।।

तज तन-नेह तपस्या कीजे

(तर्ज-दौड़ दड़ा-दड़ रमत्या रे साधू)

तज तन-नेह तपस्या कीजे, उभय लोक सुखकारी, हाँ रे उभय.....।
इच्छा रोक जोही तप करता, उनकी जाऊँ बलिहारी हो.....।।टेर।।

1. नरक मांही क्षुधा अनंती, आगम कहत पुकारी रे।
फेर पशु योनि में देखो, अथवा रांक भिखारी रे।।
तज तन-नेह।।1।।

2. बिन इच्छा नहीं लाभ अनुपम, जो सही अनंती बारो।
पण्णत्ति में प्रभु फरमावे, जोवो नैन पसारी रे।।
तज तन-नेह।।2।।

3. अन्न गिलाय काले साधु जो, दे कम्मस ने टारी रे।
नैरयिक उतना ही जानो, सके न सौ मां टारी रे।।
तज तन-नेह।।3।।

4. चउत्थ क्षमा नहीं खमे सहस्स में, इम छट्ठ मेलंत संभारी रे।
अट्ठम का नहीं खपे क्रोड़ तक, क्रोड़ा-क्रोड़ अगारी रे।।
तज तन-नेह।।4।।

5. सूको जटिल गठिल अरु चिकनो, केशव न्याय लो धारी रे।
नरक करम इम जाण श्रमण पे, लो सामली न्याय विचारी रे।।
तज तन-नेह।।5।।

तपस्या घणी कठिन छे

(तर्ज-कैसो जोग मिल्यो छे रे)

तपस्या घणी कठिन छे रे, तपस्या घणी कठिन छे रे।
अन्न त्याग मन को वश करणो, घणो कठिन छे रे।।टेर।।

1. दिन में खावे निशि में खावे, खावे सांझ-सवेरे।
कलह मचावे तपे-तपारे, जो हुवे कुछ दे रे।।तपस्या०।।1।।
2. अन्न पेट में पड़ियो बिना, कुम्हलावे कोमल मुख।
काचो पाको कुछ गिणे नहीं, भूंण्डी बेरन भूख।।तपस्या०।।2।।
3. नाचे-कूदे बात बणावे, सूंघे सखरा फूल।
एक टैम अन्न नहीं मिले तो, जाय राग-रंग भूल।।तपस्या०।।3।।
4. बिस्तर बेचे शस्तर बेचे, बर्तन बेची खावे।
जिम-तिम करीने पेट भरे पण, भूखो रह्यो न जावे।।तपस्या०।।4।।
5. महामुनि नन्दलाल तणा शिष्य, जोड़ करी रतलाम।
ताको धन्य तपस्या करके, मन को रखे मुकाम।।तपस्या०।।5।।

तप बड़ो संसार में

तप बड़ो संसार में, जीवा उज्ज्वल थावे रे।
कर्म रूप ईंधन जले, शिव रमणी सिधावे रे।।टैर।।

1. तप सूं रूप पावे घणो, पावे सुर अवतारो रे।
रिद्धि-सिद्धि सुख सम्पदा, पामे लील भण्डारो रे।।तप०।।1।।
2. तप सूं रोग दूर टले, विघ्न सहु मिट जावे रे।
तप सूं देवता सेवा करे, वलि लक्ष्मी घर आवे रे।।तप०।।2।।

3. खरो खजानो तप माल रो, कोइक पुण्यवंत पावे रे।
दुर्गति जाता ने टाले सही, शिव रमणी सिधावे रे।।तप०।।3।।

4. राजा आदर देवे घणो, ज्यारो सगला नर धारो रे।
लोक-भाषा ऐसी कहे, ज्यारो तपस्या में सूरो रे।।तप०।।4।।

5. पोते जो तपस्या करे, ज्यांरी आण बहु माने रे।
सेवक आण लोपे नहीं, आवागमन सूं छूटे रे।।तप०।।5।।

6. अज्ञानपणे जो तपस्या करे, तो भी निष्फल नहीं जावे रे।
ज्ञान सहित तपस्या करे, वे तो शिव रमणी सिघावे रे।।तप०।।6।।

7. करता एक नवकारसी, सौ वर्ष नरक सूं घूटै रे।
इण पच्चक्खाण में नफो छणो, जन्म-मरण सूं घूटै रे।।तप०।।7।।

8. तपस्या कीनी महावीरजी, कर्मा ना दल कटिया रे।
धन्ना मुनीश्वर तप तपियो, हुवा मुक्ति का गामी रे।।तप०।।8।।

9. अर्जुनमाली तप तपियो, मुनिवरमेघ कुमार रे।
राजा परदेसी तपस्या कीनी, पाया अमर विमानो रे।।तप०।।9।।

10. बेले-बेले कियो पारणो, गणधर गोतम स्वामी रे।
खंधक मुनि तप तपियो, हुवा मुक्ति का गामी रे।।तप०।।10।।

11. आठ राणी श्रीकृष्ण की, बाह्मणी चन्दनबाला रे।
तेवीस श्रेणिक ने सुन्दरी, काटिया कर्म ना जाला रे।।तप०।।11।।

12. तोड़िया कर्म चण्डाल ने रे, काया सूं तपस्या करी रे।
आसोज तेपन चौमासे, 'जेठ' मुनि कहे तप सारो रे।।तप०।।12।।

तपस्या कर लीजो

(तर्ज-बाजरा री पाणन.......)

मुगतपुरी में जाणो वे तो, तपस्या कर लीजो।
'क' म्हारो केणो मानो, भाई-बहिनां आज सुण लीजो।।टेर।।

1. खाता-खाता उमर थारी, बीतगी सारी।
'क' नहीं धापणो आयो रे, केऊं इण वारी।।
आज सुण लीजो।।1।।

2. तपस्या करता जीवड़लो, मुगत्यां में जावे।
'क' साँची केऊँ ओ साथीड़ा, घणो सुख पावे।
आज सुण लीजो।।2।।

3. काम-क्रोध सूं होवे मैली, भोली आत्मा।
'क' पाछी तपस्या रूपी नीर में, थां धोलो आत्मा।।
आज सुण लीजो।।3।।

4. लाडू जलेबी गुलाबजामुन, खादा मोकला।
'क' खादा भुज्या-मुसरी, सीयाले में दाल ढोकला।।
आज सुण लीजो।।4।।

5. घणी तरह की चीजां में, मन में जानलो।
'क' लेवो रसिक रसना जीत, म्हारो केणो मानलो।
आज सुण लीजो।।5।।

सब पर्वों का ताज संवत्सरी

(तर्ज-जब तुम्हीं चले परदेश......)

सब पर्वों का ताज, पुण्य दिन आज,
संवत्सरी आई, सब लो हर्ष मनाई। ।। टेर।।

1. चौरासी लाख जीवा योनि से, जो वैर किया मन-वच-तन से।
भूलो वह और लो, मैत्री भाव वधाई।।आज संवत्सरी आई०।।1।।

2. जो जान-बूझकर पाप किया, या अनजाने अतिचार हुवा।
लो दण्ड और दो, मिच्छाम् दुक्कडं भाई।।आज संवत्सरीआई०।।2।।

3. अरिहन्त सिद्ध आचार्यश्री, उपाध्याय मुनि महासतियांजी।
श्रावक-श्राविका इन सबसे लो खमाई।।आज संवत्सरी आई०।।3।।

4. जो क्षमता और शुद्धि करता, वह प्राणी आराधक बनता।
आराधक की गति होती है सुखदायी।।आज संवत्सरी आई०।।4।।
5. यह पर्व नित्य नहीं आता है, पाले वो मुक्ति पाता है।
'केवल' कहते 'पारस' अपना नरमाई।।आज संवत्सरी आई०।।5।।

संवत्सरी आया पर्व महान

धन्य-धन्य है दिवस आज का, सुनो सभी इनसान,
संवत्सरी आया पर्व महान्।
राग-द्वेष को त्यागके सारे, गावो प्रभु गुणगान,
संवत्सरी आया पर्व महान्।।

1. गुरु चरणों में सारे आके, विनय से अपना शीश झुकाके।
रगड़े-झगड़े सभी मिटाके, अपने दिल को साफ बनाके।।
प्राणी-मात्र से मिलकर सारे, मांगो क्षमा का दान।।
संवत्सरी आया०।।1।।
2. यह पर्व उद्धार करेगा, नवजीवन संचार करेगा।
जो जन इसको प्यार करेगा, उसके सब संताप हरेगा।
इस पर्व से मिलेगा तुझको, मुक्ति का वरदान।।
संवत्सरी आया०।।2।।
3. भेद-भाव को दूर निवारो, जागो वीरो उठो विचारो।
जीती बाजी व्यर्थ न हारो, मिलकर आज प्रतिज्ञा धारो।
'जैन धर्म' का तन-मन-धन से, करेंगे हम उत्थान।।
संवत्सरी आया०।।3।।
4. पापों के सब बन्धन तोड़ो, मोह और ममता को छोड़ो।
विषयों से मन अपना मोड़ो, सच्चा प्रभु से नाता जोड़ो।।
'चन्द्रभूषण' जीयो और जीने दो, यही वीर फरमान।।
संवत्सरी आया०।।4।।

जब प्राण तन से निकले

ऐसा समय हो प्रभुजी, जब प्राण तन से निकलें।।टेर।।

1. शुद्ध आत्मा हो मेरी, मुनिराज मेरे सन्मुख, उपदेश दे रहेहों।
रागादि दोष सारे मेरे बदन से निकलें।।
ऐसा समय हो प्रभुजी।।1।।

2. सातों व्यसन तजकर मैं क्रोध मान छोड़ूं।
माया और लोभ मेरे पावन हृदय से निकलें।।
ऐसा समय हो प्रभुजी।।2।।

3. बुरा यह भाव दिल से प्रेमी कुमार जिनके।
नवकार रटते-रटते सोऽहं का ध्यान धरते।।
ऐसा समय हो प्रभुजी।।3।।

अहिंसा के दूत

(तर्ज-हम दर्द का अफसाना लिख रहे हैं.........)

'अहिंसा' के दूत हैं हम कुछ करके दिखा देंगे।
'महावीर' के सैनिक हैं, हिंसा को मिटा देंगे।।टेर।।

1. हृदय-भवन में जिनके घनघोर है अंधेरा।
क्रोधादि शत्रुओं का जिनमें लगा है डेरा।।
हम ज्ञान के चमकीले वहाँ दीप जला देंगे.......
अहिंसा.......।।1।।

2. राष्ट्रों की जातियों की मिट जायेगी लड़ाई।
हँस-हँस गले मिलेंगे भाई से जैसे भाई।।.......
घर-घर में प्रेम का वो सन्देश सुना देंगे.......
अहिंसा.......।।2।।

3. भारत को विश्व सारा सिर अपना झुकायेगा।
अध्यात्म-गुरु इसको फिर अपना वनायेगा।।

इस देश का वो प्यारा हम नकशा बना देंगे.......
अहिंसा.......॥3॥

4. सुनते नहीं दुनिया में कोई भी गरीबों की।
कोई न दया करता है दीन पशुओं की॥
'जीओ स्वयं और जीने दो' का पाठ पढ़ा देंगे......
अहिंसा.......॥4॥

5. आत्मा अजर-अमर है फिर किस से हम डरेंगे।
कोई भी शक्ति हो हम 'केवल' विजयी बनेंगे।
देवी दया के प्रेमी हम लाखों को बना देंगे......
अहिंसा.......॥5॥

आ चादर थारे कर्मों की

(तर्ज -अ ब ब स री ल ड ली.....)

आ चादर थारे कर्मों की काळी पड़ जासी रे।
हंस-हंस ने क्यों बांधे कर्म याने कठे छुड़ासी रे॥आ चादर॥टेर॥

1. ब्रह्मचर्य ने छोड़ आज क्यों, व्यभिचार में डोले रे।
असल रतन ने छोड़ अरे, तू पत्थर ने क्यों मोले रे॥
हिवड़े री खिड़की नहीं, तो दुखःड़ो पासी रे॥
आ चादर॥1॥

2. सबसूं मीठो बोल जगत् में, कड़वो क्यूं तू बोले रे।
अमरत के प्याले में क्यों तू, बूंद जहर की घोले रे॥
भलो-बुरो करियोड़ो थारे, आडो आसी रे॥
आ चादर॥2॥

3. धर्म-कर्म को भरो खजानो, खर्च कियों नहीं खूटे रे।
मिटे कर्म जंजाल यो झगड़ो, जन्म-मरण को छूटे रे।

माता- छोटा सूं मोटो कियो, क्यों अव छिटकाय जी।
जम्बू- है मतलब का संसार, लेसों संयम भार।।इजाजत०।।3।।

4. माता- राजा-पाट धन-धान्य, कमी कोई नांय जी।
जम्बू- है सब बेकार माता, संग चाले नांय जी।
माता- संग आठ नार थारे, म्हलां के मांय जी।
जम्बू- दीयो ज्ञान एक रात, दीनी समजाय जी।
माता- संयम का छोड़ विचार, जम्बू राजकुमार।।इसो कांई।।4।।

5. जम्बू- निश्चय लीनी धार माता, संयम की मन मांय जी।
माता- एकाएकी लाल बेटा, छोड़ कठे जाय जी।
जम्बू- छोड़ मोह-जाल-माता, किणरा बेटा किणरी मांय जी।
माता- राज-सुख भोग पीछे, लीजो संयम जाय जी।
जम्बू- नहीं इण बातों में सार, लेस्यां संयम भार।।इजाजत०।।5।।

6. माता- संयम खाण्डा की धार जम्बू, कहूं समझाय जी।
जम्बू- आज्ञा देवो प्रेम से तो, मुश्किल कछु नांय जी।
माता- पंच महाव्रत पालणा, चलणो जीव बचाय जी।
जम्बू- पाँचों सुख समान माता, लेस्यां निभायजी।
माता- मैं भी हूँ तैयार, जम्बू राजकुमार।।इसो कांई।।6।।

7. कवि- पांच सौ अरु सताइस, संग लोगा आय जी।
पुत्र-पिता-माय संग, आठों नार धाय जी।
संसार असार जाण, लीनी दीक्षा जाय जी।
समज झूठा संसार, लीनो संयम भार।।इजाजत०।।7।।

ओ मिनख जमारो पाय

ओ मिनख जमारो पाय, लावो लेलीजो जी ले लीजो।
हाय-भाय झिक-झिक छोड़ो रे अणूति, जोड़ो ज्ञान ध्यान सूं प्रीत,
गुरु-गुण नित-नित गाय।।टेर।।

1. तपस्वी राज श्रुतधर की जोड़ी, दर्शन से सुख पाय जी।
गुरु वचनामृत का पीले रे प्याला, कष्ट सभी मिट जाय जी।
ओ जीवन है जंजाल, गुरु है अलबेला जी अलबेला।।
ओ मिनख०।।1।।

2. दिन उगे उगोड़ो सूरज, सांझ ने ढल जावेला।
चार दिनों री चाँदणी, फेर अंधेरी आवेला।।
थारे जीवन ने पहचान, जगत है परछाई परछाई।।
ओ मिनख०।।2।।

3. नश्वर एक दिन काया थारी, मिट्टी में मिल जावेला।
बांधी मुट्ठी आयो रे बन्दे, हाथ पसारे जावेला।
तू करले आत्मकल्याण, मोह में मती फंसो जी मती फंसो।।
ओ मिनख०।।3।।

4. माँ-बाप और बेटा-बेटी स्वार्थ रो संसार है।
नाम प्रभु रो रटले रे बन्दे, बाकी सब बेकार है।
तू जीवन ज्योत जगाय, परभव सुख पासो जी, सुख पासो।।
ओ मिनख०।।4।।

निन्दा निज दोषोंतणी........

1. निन्दा निज दोषोंतणी कीजे बारम्बारो रे।
किया खेद अशुभ कृत्य नो, लहे वैराग्य अपारो रे।।निन्दा०।।1।।

2. अपूर्व करण गुणश्रेण ने, वलि पामी कर्म खपावे रे।
परनिन्दा किंधा थका, अफल जमारो जावे रे।।निन्दा०।।2।।

3. नहीं सोचे निज मन विषे, इम किम तो जस थावे रे।
दोष गही दुनिया विषे, तू जस राखण धावे रे।।निन्दा०।।3।।

4. परनी तज निजनी करो, एह प्रभु आदेशो रे।
जो पा लेगा प्रेम से तो, निश्चय शिव-पद लेसो रे।।निन्दा०।।4।।

संभलके रहना कदम-कदम पर

(तर्ज-कहनी है एक बात..)

कहनी है इक बात आज, संयम ले रहे सितारों से।
संभलके रहना कदम-कदम पर, आते हुये विकारों से।।टेर।।

1. कदम बढ़ाती हो अब बहनो, भिड़ने को अंगारों से।
उड़े पताका जिन शासन की, गूंजे नभ जयकारों से।
तपस्वी गुरु के पथ पर बढ़ती, हो तुम सुविचारों से।
संयम लेना चरण मिलाना, है खाण्डा की धारों से।।
संभलके रहना०।।1।।

2. भूख-प्यास सर्दी-गर्मी से, निन्दा या मनुहारों से।
संयम के व्रत-नियम सभी, जीवन-पर्यन्त निभा लेना।
निरस-सरस मिले जो-कुछ, सब दोष टालकर खा लेना।
कर्म काटकर ऊँची गति, पाने को साज सजा लेना।।
संभलके रहना०।।2।।

3. राग-द्वेष की जंजीरों से, जीवन मुक्त बना लेना।
कई प्रयोजन आयेंगे, सजधज कर नयी बहारों से।
पंच-महाव्रत लेती हो, हिंसा को दूर भगाना है।
झूठ-चोरी-मैथुन जीवनभर, कभी नहीं अपनाना है।।
संभलके रहना०।।3।।

4. संग्रह वृत्ति छोड़ तुम्हें, अपरिग्रही बन जाना है।
रात्रि-भोजन तुमको अब, जीवन-भर नहीं खाना है।
चमक उठेगा जीवन-दर्शन, ज्ञान-चारित्र-तप धारों से।
अहो उत्तम कुल की कन्याओ, शिक्षाएँ तुम सुन लेना।।
संभलके रहना०।।4।।

5. पाप अठारह तज करके, सब कर्म-मैल धो लेना तुम।
गुरु-गुरुणी की सेवा में, निस-दिन तत्पर रहना तुम।

समिति-गुप्ति धारण करके, निज जन्म सफल कर लेना तुम।
अभिनन्दन स्वीकार करो, 'मोती' नर नारी सारों से।।
संभलके रहना०।।5।।

कर्मों की सारी माया

(तर्ज-एक दिल के टुकड़े हजार हुए.....)

कर्मों की सारी माया है, कोई दुःखी बना कोई सुखी बना।
'जैसा किया वैसा पाया है', कोई दुःखी बना कोई सुखी बना।।टेर।।

1. 'सुचिण्णा कम्मा, सुचिण्णा फलं', 'भविस्सई देवाणुप्पिया'।।
भगवान् ने फरमाया है, कोई दुःखी बना कोई सुखी बना।।
कर्मों०।।1।।

2. कोई लाल पलंग पर सोता है, फूलों की सेज बिछाकरके।
कोई फटा टाट नहीं पाता है, कोई दुःखी बना कोई सुखी बना।।
कर्मों०।।2।।

3. कोई राजा कोई भिखारी है, कोई राणी कोई पणिहारी है।
कोई दासी-दास कहाया है, कोई दुःखी बना कोई सुखी बना।।
कर्मों०।।3।।

4. कोई ऊँचे महलों में रहता है, झोंपड़ा किसी को नहीं मिला।
कोई मान-प्रेम-यश पाया है, कोई दुःखी बना कोई सुखी बना।।
कर्मों०।।4।।

5. कोई राव रंक बन जाता है, कोई रंक राव बन जाता है।
नाचे जिस तरह नचाया है, कोई दुःखी बना कोई सुखी बना।।
कर्मों०।।5।।

6. लक्ष्मी वैभव खुशियाँ 'केवल', सुबाहु के सन्मुख आई।
जिसने शुभ पुण्य कमाया है, कोई दुःखी बना कोई सुखी बना।।
कर्मों०।।6।।

उपदेशी

1. क्या हुआ यदि भगवान् को तुमने जल का लोटा डाला।
पर किसी तड़फते प्यासे को घर से निकाला।।1।।
2. इनसानों की तृप्ति करना, श्रद्धा से और मान से।
नहीं भूखा भगवान् तुम्हारे फल-मेवा-मिष्टान्न का।।2।।
3. बस भूखा इनसान ही है हकदार तुम्हारे दान का।
इनसानों की झोली भरना प्रेम-भरे वरदान से।।3।।

क्या तन मांजता रे

(तर्ज-सामा कीजो जी........)

क्या तन मांजता रे, एक दिन माटी में मिल जाना।।
1. माटी ओढ़न माटी पेहरन, माटी का सिरहाना।।टेर।।
माटी का तो महल बनाया, जिसमें भ्रमर लुभाना।।क्या तन०।।1।।
2. माटी मांही जीव लुभायो, ज्यों दीवा में बाती।
बस्ती नगरी छोड़ चलेगा, कोई न होगा साथी।।क्या तन०।।2।।
3. धन भी जायेगा, तन भी जायेगा, जावे मूल-मूल खासा।
लाखों मोहरों की सूरत जायेगी, जंगल होगा वासा।।क्या तन०।।3।।
4. दस भी जाना, बीस भी जाना, जाना वर्ष पच्चासा।
अन्त काल का क्या विश्वासा, पण मरने की आसा।।क्या तन०।।4।।
5. दस भी जोड़ीया बीस भी जोड़ीया, जोड़िया लाख पचासा।
अरब-खरब-बहुतेरा जोड़िया, संग चले नहीं मासा।।क्या तन०।।5।।
6. दमड़ी सेती महल बनाया, तू जाने घर मेरा।
पकड़ काल जब झपट देवेगा, होगा बन में डेरा।।क्या तन०।।6।।
7. कण्ठी-डोरा-मोती पहरिया, पहनी रेशमी चोली।
कन्दोरो सोने को पहनियो, लेगा अंत में खोली।।क्या तन०।।7।।

क्या मान-गुमान करना.......

काईं रे गुमान करे जीवड़ा, मान करेला गुमान करेला,
तो नीच गति मोहें जाय पड़ेला।।टेर।।

1. जन्म-मरण-भव भटकत आयो, तो नरभव रत्न अमोलक पायो।।
काईं रे गुमान०।।1।।

2. अमरपति मन आस करत है, तो मनुष्य जन्म बिन नांही तरत है।।
काईं रे गुमान०।।2।।

3. कुटुम्ब के कारण पाप कमावे, तो हीरो फेंकने काग उड़ावे।।
काईं रे गुमान०।।3।।

4. मान करीने मन मांहे फूले, तो सायबी पायी ने सायब भूले।।
काईं रे गुमान०।।4।।

5. आठमो चक्री मान में आयो, तो मरने सातमी नरक सिधायो।।
काईं रे गुमान०।।5।।

6. सोने-केरा कोट समुद्र सी खाई, तो हरि-सुत कुंभकरण-सा भाई।।
काईं रे गुमान०।।6।।

7. कुटुम्ब-कबीलों ने लाखों ही नाती, तो जा घर न दीवाने नाहीं बाती।।
काईं रे गुमान०।।7।।

8. अल्प रिद्धि देखीने अकड़ावे, तो धूप सुबह की सांझ कहां जावे।।
काईं रे गुमान०।।8।।

9. हाय-हाय-कर धन कमावे, तो लखपति लकड़ी रे माहीं जावे।।
काईं रे गुमान०।।9।।

10. म्हारो-म्हारो कर रह्यो गेलो, तो अंत समय तू तो जासी अकेलो।।
काईं रे गुमान०।।10।।

11. हाट हवेली ने बाग लगायो, तो कंद-मूल-मद-मांस जो खायो।।
काईं रे गुमान०।।11।।

12. काल ने बाण लगायो, रै दौड़ी, तो मात-पिता अलगा हुआ छोड़ी।
काईं रे गुमान०।।12।।

13. पच-पच मर गयो पाप में पाजी, तो जोर काईं करे मुल्ला ने काजी।।
काईं रे गुमान०।।13।।

14. 'पन्नालाल' कहे जो सुख चावो, तो मान महीपति ने जीत भगावो।।
काईं रे गुमान०।।14।।

नरवीर

(तर्ज-दु:ख है ज्ञान की खान मनवा.......)

कभी न हो दिलगीर मनवा, कभी न हो दिलगीर।
सुख-दु:ख हैं जीवन के साथी, कभी भीर कभी छीर।।मनवा०।।टेर।।

1. सत्यवादी हरिश्चन्द्र कहायो, पृथ्वीपति अमीर।
दिन पलट्या जद दुनिया पलटी, भर्‌यो नीच घर नीर।।मनवा०।।1।।

2. राज-पाट-धन-धाम हार गयो, जुआ में नल-बीर।
महाराया जो काल कहायो, बण गयो आज फकीर।।मनवा०।।2।।

3. तीन खण्ड का नाथ कृष्णजी, पुरुषोत्तम बलवीर।
बन-बन भटक्या अन्त समय में रह्यो न जल में सीर।।मनवा०।।3।।

4. रावण सरीखा लंका खोई, धुजी कंस समसीर।
सन्मुख लखता गोपियन लूटी, वही अर्जुन वही तीर।।मनवा०।।4।।

5. बड़ा-बड़ा री या गत होवे, संभल देख पद पीर।
तन-कपड़ो वैरी हो जावे, जब पलटे तकदीर।।मनवा०।।5।।

6. प्राण-प्यारी नार न पूछे, काहे होत अधीर।
पुत्र कहे नहीं पिता हमारा, बहन कहे नहीं वीर।।मनवा०।।6।।

7. होनहार होकर ही रहवे, टले न कर्म-लकीर।
कायर बन क्यों हिम्मत खोवे, काहे बहावे नीर।।मनवा०।।7।।

8. सुख नहीं रह्यो तो दुःख क्यों रहसी, होसी अंत अखीर।
हिम्मत रख संभल बढ़ आगे, धारण कर मन धीर।।मनवा०।।8।।
9. एक दिन 'जीत' अवश्य वो आसी, चढ़ भक्तांरी भीर।
देरी है अंधेर नहीं है, प्रभु-गुण गा नर-वीर।।मनवा०।।9।।

पियो प्रभु के नाम का

(तर्ज-ब्याव बींदणी......)

कुटुम्ब कबीलो माल खजानो, नहीं कणी रे काम रो।
भक्ति में आवो तो प्यालो, पीओ प्रभु रे नाम रो।।टेर।।
1. मालिक के घर मोटी बहियाँ, यमराज पाथी खोले।
झूठ कपट और सांच ने भाया, कांटे रे मांही तोले।।
जावे जवानी आवे बुढ़ापो 2, अन्त समय नहीं काम रो।।
भक्ति में आवो०।।1।।
2. धनवाला यों मन में जाणे, मो दुनिया में हो राजा।
चार दिनां री जोर जवानी, बाजे रे सारा बाजा।।
पपी जावे धर्मी जावे 2, सच्चो सुख प्रभु-नाम रो।।
भक्ति में आवो०।।2।।
3. 'महिला मण्डल' कहे सुणलो बातों में उमर जावे रे।
'राजेन्द्र' कहे ये मनख जमारो, बार-बार नहीं आवे रे।।
सीख मानले भक्ति करले 2, खरचो नहीं छदाम रो।।
भक्ति में आवो०।।3।।

करनी काली है

(तर्ज-रेशमी सलवार कुर्ता........)

कैसे हो कल्याण करनी काली है,
नहीं होगा भुगतान हुण्डी जाली है।।टेर।।

1. तू तन का काला धब्बा, धोता ले फौरन पानी।
तेरे मन पर कितने काले, धब्बों की पड़ी निशानी,
क्यों न निकाली है।। नहीं होगा।।1।।

2. तेरा बिगड़ा पड़ा है इन्जन, गाड़ी किस तरह चलेगी।
दीपक में तेल खतम है, बत्ती किस तरह जलेगी,
बुझने वाली है।। नहीं होगा।।2।।

3. तेरे अन्दर जान नहीं है, कैसे फिर देह चलेगी।
तेरी नैया फूट रही है, कैसे फिर पार लगेगी,
डूबने वाली है।। नहीं होगा।।3।।

4. नकली हुण्डी को जला दे, इस मन को शुद्ध बनाले।
पी 'धन' ज्ञानामृत प्याले, क्यों मरता प्यास बुझाले
सुगुरु गुणशाली है।। नहीं होगा।।4।।

धम्मं शरणं गच्छामि

घबरावे जब मन अनमोल, चित्त हो जावे डांवाडोल।
तब मानव तू मुख से बोल, धम्मं शरणं गच्छामि।।टेर।।

1. अरहंत शरणं गच्छामि, सिद्धे शरणं गच्छामि,
साहु शरणं गच्छामि।।तब०।।1।।
ऋषभ शरणं गच्छामि, शान्ति शरणं गच्छामि,
पारस शरणं गच्छामि।।तब०।।2।।

2. गोतम शरणं गच्छामिं, सुधर्मा शरणं गच्छामि,
जम्बू शरणं गच्छामि।।तब०।।3।।
सुदेव शरणं गच्छामि, सद्गुरु शरणं गच्छामि,
जिनवाणी शरणं गच्छामि।।तब०।।4।।

वीर प्रभु आजा

(तर्ज-रुम-झुम वरसे बादरवा....)

घोर अधर्मी बादलवा, दुःख की घटाएँ छाई।
वीर प्रभु आजा आजा, वीर प्रभु आजा।।टेर।।

1. झूठ-कपट-छल-छिद्र जगत् में छा गए, छा गए।
ऐसे में हे स्वामी बताओ कहाँ गये, कहाँ गये।
निस-दिन ध्यान लगाऊँ रे, तू ही मन भाया रे,
दरश दिखाजा।।आजा०।।1।।

2. जब-जब कष्ट पड़ा भारत पर आये थे, आये थे।
देकरके सुज्ञान सुमार्ग बताये थे, बताये थे।
है 'जीन' भंवर में नैया रे, तुम बिन डूबी जावे,
पार लगाये रे।।आजा०।।2।।

चली-चली रे उमर तेरी

(तर्ज-चली-चली रे पतंग मेरी चली रे)

चली-चली रे उमर तेरी चली रे,
चली विषयों के संग, रंग तृष्णा के रंग।
मोह ममता में बन रहा छली रे,
चली-चली रे उमर तेरी चली रे।।टेर।।

1. तेरा बचपन हुआ कहानी, आई मदभरी मस्तानी।
यह भी प्रतिदिन जा रही है छिन छिन,
तो करे नहीं कोई बात भली रे।।चली०।।1।।

2. जिसके लिये पाप कमाया, वह धन नहीं साथ में आये।
प्राणी जाये खाली हाथ, कुछ रहे नहीं साथ,
जब मुरझाये जीवन-कली रे।।चली०।।2।।

3. 'केवल' मुनि समझ सयाना, एक श्वांस व्यर्थ न गंवाना।
कर पर-उपकार, कहे ज्ञानी बार-बार,
तुझे घड़ी बड़ी अनमोल मिली रे।।चली०।।3।।

चादाँनी ढल जायेगी

(तर्ज-झूँठी जग माया रे.......)

चादाँनी ढल जायेगी, काया जल जायेगी,
माया बिरलासी रे.... जाग अविनासी रे.....।।टेर।।

1. वीतराग वाणी है, सतगुरु ज्ञानी है,
कद-कद पासी रे जाग अविनासी रे।।1।।

2. दया धर्म धारले, ममता ने मारले,
शिवसुख पासी रे, जाग अविनासी रे।।2।।

3. राम-कृष्ण-महावीर-ईसा-बुद्ध-नानक-पीर,
सब मिल जासी रे, जाग अविनासी रे।।3।।

4. रास्ते अनेक हैं, सबका घर एक है,
बिरला ही पासी रे, जाग अविनासी रे।।4।।

5. प्रेमभरी भक्ति हो, सद्गुणों की शक्ति हो,
'जीत' नित पासी रे, जाग अविनासी रे।।5।।

चेत चेतनिया

चेत चेतनिया गुरु चेतावे, फिर अवसर कब आयेगा।
हीरा जैसा जन्म गवां दिया तो फिर पीछे पछतायेगा।।टेर।।

1. 'खींचन' गाँव के धर्मप्रेमियों, अनुपम अवसर आया है।
चिन्तामणि-सा नरतन पाया, अद्भुत धर्म को पाया है।
समय चूक जायेगा भैया, फिर पीछे पछतायेगा।।चेत०।।1।।

2. नाम आपका 'समरथ' जैसा, गुण भी आप में मिलते थे।
सेवा विनय क्षमा आदि में, स्थान अनुपम रखते थे।
महागुणी-गुणानुरागी, जगमंग जोत जगाई थी।।चेत०।।2।।
3. ज्ञान मिलेगा, ध्यान मिलेगा, पाप से तू बच जायेगा।
कष्ट कटेगा फन्द मिटेगा, भवसागर तिर जायेगा।
निर्लोभी सन्तन को पाकर, तू खुद प्रभु बन जायेगा।।चेत०।।3।।

चेतन रे तूं ध्यान आरत क्यूं ध्यावे.......

चेतन रे तूं ध्यान आरत क्यूं ध्यावे, तू तो नाहक कर्म बंधावे।।
1. जो-जो भगवंत भाव देखिया, सो-सो ही बरतावे।।टेर।।
घटे-बढ़े नहीं रंच मात्र जामे, काहे कू मन डुलावे।।चेतन०।।1।।
2. चिन्ता-अग्नि जलत शरीरा, बुद्धि बल बिणसावे।
शोकातुर बीते दिन-रैनी, धर्म-ध्यान घट जावे।।चेतन०।।2।।
3. सुख में निद्रा रात में नहीं आवे, अन्न-उदक नहींभावे।
पहरण-ओढन चित्त नहीं चावे, तो राग-रंग नहीं सुहावे।।चेतन०।।3।।
4. सुख नहीं रेयो तो दुःख किम रहसी, यो भी तोगुर्रावे।
कर्म बांध्या सो तो भुगत्यांई सरसी, क्यों आतम ने दण्डावे।।
चेतन०।।4।।
5. बिन भुगत्यां कबहु नहीं छूटे, अशुभ उदय जबआवे।
साहुकार शिरोमणि सोही, हँस-हँस कर्ज चुकावे।।चेतन०।।5।।
6. प्रभु सुमरण और तपस्या करता, दुष्कृत रज झड़ जावे।
'जेठ' कहे समता रस पीता, तुरन्त ही आनन्द आवे।।चेतन०।।6।।

शिवपुर की रेल

चालो शिवपुर रेल खड़ी रे तैयार है, हाजर रे तैयार है।।टेर।।

1. सीधी सड़क चली शिवपुर को, देव-मनुष्य दोय आड़ा।
जहाँ जावे वोही ले जावे, पवन-पतंग चली रेलगाड़ी।।चालो०।।1।।

2. सत्तावन संवर का डब्बा, बोले अमृत वाणी।
सतरह संयम माल भरियो है ना रे, बरत की जड़ी रे किवाड़ी
हां-हां......।।चालो०।।2।।

3. तीन योग का चोकी पहरा, चार कषाय कटारी।
अट्ठाईस स्टेशन बनिया, सास-उसास की मील लगाई
हां-हां......।।चालो०।।3।।

4. रात-दिवस दो इंजिन जोतिया; डबल अग्नि लगाई।
कर्म कोयला मांहे नोखो, चरण-करण की कुंजी लगाई
हां हां......।।चालो०।।4।।

5. ब्रह्म-जोत की चिराग लगाई, नहीं पवन संचारी।
केवल-ज्ञान केवल-दर्शन, क्षायक समकित जोत उगवाई
हां-हां......।।चालो०।।5।।

6. दया-धर्म का टिकट कटाया, सतगुरुजी उपकारी।
कोई हर उत्तम पास कटावे, मोक्ष कैलास की ऐश है भारी
हां-हां......।।चालो०।।6।।

7. शील-संयम की सीटी लगाई, आगे होत हुसियारी।
पंच महाव्रत चोखा पालो, खरची लेनी खर्च विचारी
हां-हां......।।चालो०।।7।।

8. राग-द्वेष दोई चोर-लुटेरा, करत बिखेरो भारी।
साहुकारी में धाड़ो पाड़ी, चेतन बाबू खड़े रे पिछाड़ी,
हां-हां......।।चालो०।।8।।

9. नाड़ी तार जबाबी पको, आगे होत हुसियारी।
सावद्य कर संगकर सूतो, चेत रे मूरख हुवा रे खरावी
हां-हां......।।चालो०।।9।।

10. दर्शन की दूरबीन लगाई, जल-थल देख सिपाही।
प्रभु नाम की तोप लगाई, मोह मिथ्यात्व को दूर हटाई,
हां-हां......।।चालो०।।10।।

11. धर्मी-धर्मी गया मोक्ष में, पापी पाप सेवारे।
मोह नींद में सूतो मूरख, चुको स्टेशन नर-भव जावे,
हां-हां......।।चालो०।।11।।

12. आवो भाई करो बिछायत, बैठन की छबि न्यारी।
कहत जड़ाव जैपुर मांही, भवि जीवो थे राखजो हुसियारी
हां-हां......।।चालो०।।12।।

पुण्य-वेला

(तर्ज-रात-भर का है यह अंधेरा......)

चार दिन का यहाँ बस है मेला, झूठी दुनिया का झूठा झमेला।।टेर।।

1. तूने नरतन अमोलक जो पाया, विषय-भोगों में काहे मन गमाया।
लाद चलाता क्यों पापों का ठेला।।चार०।।1।।

2. यह ठाट पड़ा सब रहेगा, साथ तेरा नहीं कोई देगा,
जाना तुझको है जग से अकेला।।चार०।।2।।

3. धर्म-पूंजी जहां में कमाले, जीवन अपना तू सफल बनाले;
आई-आई है 'यश' पुण्यवेला।।चार०।।3।।

चेतन-चेतो रे

चेतन चेतो रे प्राणी, आयो के आयो थारो काल।।टेर।।

1. भोजन भात परोसिया, थारो धरियो रे वेला थाल।।

।।

2. लाखों रो लेखो नहीं थारे, धरियो रेवे धन-

०

3. बाप-दादा बैठा रह्या, उठ चाले जवान अरु बाल।।

चेतन चेतो रे०।।3।।

4. आगे-पीछे जावणो, तू छोड़ जगत् जंजाल।।

चेतन चेतो रे०।।4।।

5. श्रमण हजारीमल कहे, बांधो-बांधो रे धर्म की पाल।।

चेतन चेतो रे०।।5।।

दीक्षार्थी की अभिलाषा

चौ-गति बन्धन काट-काटकर संयम की
ले वाट मोक्ष मुझे जाना है 3।।टेर।।

1. सतावीस गुण युक्त साधु बन जाऊँ,
साधु बन जाऊं, साधु बन जाऊँ।
बावन अनाचार टाल-टालकर,
कम करूँ कर्मों का भार।।
मोक्ष मुझे जाना है 3।।चौ-गति०।।1।।

2. बारह गुण युक्त अरिहन्त बन जाऊँ,
अरिहन्त बन जाऊँ अरिहन्त बन जाऊँ।
घान-घाती कर्म चार-चार मैं
तोड़ू एक ही साथ।।
मोक्ष मुझे जाना है 3।।चौ-गति०।।2।।

3. योग निरोध करके, अष्ट गुण पाऊँ,
अष्ट गुण पाऊँ, मैं तो सिद्ध बन जाऊँ।
अघाती कर्म काट-काटकर,
झट हो जाऊँ भव से पार।।
मोक्ष मुझे जाना है 3।।चौ-गति०।।3।।

4. भावना मेरी सफल बनाऊं,
सफल बनाऊँ, मैं तो सफल बनाऊँ।
गुरु भगवन्त के साथ-साथ,
मैं चढ़ जाऊँ मुक्ति-मीनार।।
मोक्ष मुझे जाना है 3।।चौ-गति०।।4।।

कर्मों की मार

(तर्ज-जरा सामने तो आ ओ छलिये......)

जरा कर्म देखकर करिये, इन कर्मों की बहुत बुरी मार है।
नहीं बचा सकेगा परमात्मा, फिर औरों का क्या एतबार है।।टेर।।

1. बारह घड़ी तक बैलों को बांधा, छींका लगा दिया खाने का।
बारह मास तक ऋषभ प्रभु को, आहार मिला नहीं दाने का।
इस युग के प्रथम अवतार है, बिन भोग्या न छूटे लार है।।
नहीं०।।1।।

2. त्रिपृष्ट वासुदेव के भव में, दास के कानों में सीसा डाला।
कर्म निकाचित बांधा वीर ने, तीर्थंकर थे पर ना टला।
खड़े ध्यान में वन के मंझार है, दिया कानों में खीला डार है।।
नहीं०।।2।।

3. सौतेली मां बन सौत के सुत सिर, बाटिया चढ़ाके प्राण हरा।
निनाणु लाख भवों के बाद में, गजसकुमाल बन कर्ज भरा।।
चढ़ा सोमिल को क्रोध अपार है, डाले सिर पर धधकते अंगार है।।
नहीं०।।3।।

4. किसी को लूटे, किसी को मारे, काम करे अन्यायी का।
जैसा करणी वैसी भरणी, लेखा है राई-राई का।
नहीं छोटे-बड़ों को दरकार है, चाहे करले तू जतन हजार है।।
नहीं०।।4।।

5. पग-पग पे संयम रख तू वचन पे, बोले तो बोल भलाई का।
धर्म से प्रीत कर, कर्मों को 'जीत' कर, बन जा पथिक शिव राही का।
यह दुःख-सुख-भरा संसार है, यहाँ कर्मों का ही व्यापार है।।
नहीं०।।5।।

जरा सामने तो आओ सेठजी

(तर्ज-जरा कर्म देखकर करिये......)

1.. जरा सामने तो आओ सेठजी, वह गुड़ की जलेबी क्या भाव है।
यहाँ बिक न सकेगा घी डालडा, खाने वालों की तबीयत खराब है।।1।।
2. वर्तमान की सासुओं को देखो, जरा शर्म नहीं करती हैं।
धर्म-स्थानक का बहाना बनाकर, बहुओं की बातें करती हैं।।2।।
3. वर्तमान की बहुओं को देखो, जरा शर्म नहीं करती हैं।
काम-काज का बहाना बनाकर, जेठों से बातें करती हैं।।3।।
4. वर्तमान के लड़कों को देखो, जरा शर्म नहीं करते हैं।
कॉलेज का बहाना बनाकर, लड़कियों से बातें करते हैं।।4।।

जम्बूस्वामी-प्रभवस्वामी संवाद

जम्बू क्यों थे वैराग्य जचाय लियो,
छते सुखों से चित्त पलटाय लियो।।टेर।।
प्रभव- आठ रम्भा कनक कम्भा हू बहू देवांगना,
पूर्व पुण्य के उदय से तुझे मिली अर्धांगिना।
भोगी भोग से दिल क्यूं संकुचाय लियो।।
जम्बू क्यों थे वैराग्य०।।1।।
टेर प्रभव परभव का डर क्यों भुलाय गयो,
भोगी कैसें जगत में भुलाय गयो।।

जम्बू- तन अशुचि का भरा, दुर्गंध अंग अपार है,
क्षणिक सुख के कारणे दुख का खुला भण्डार है।
मधु बिन्दु को रस सुणाय दिया।।
प्रभव परभव का डर क्यों०।।2।।

प्रभव- माता-पिता को वृद्धपन में, छोड़ देना ठीक क्या।
जन्म दे मोटा किया अब दिल जलाना ठीक क्या,
कैसा हृदय कठोर किया।।जम्बू०।।3।।

जम्बू- जगत्वासी जीव सब ही गत सम्बन्धी हो चुके,
एक ही भव मित्रवर्ग नाता अठारह हो चुके।
मूरख वृथा क्यों जाल बिछाय रह्यो।।
प्रभव परभव डर क्यों०।।4।।

प्रभव- नर जन्म भी निष्फल हो यदि पुत्र न हो जिस घरे,
वेदों में यह वाक्य है, नर कुगति में जा पड़े।
तेने क्या सुगति का उपाय किया।।
जम्बू क्यों थे वैराग्य०।।5।।

जम्बू- किस मूढ़ ने बहका दिया बोले वचन अविचार के,
पुत्र क्या सुगति करे जो मार दिया तलवार से।
ऐसे महेश्वरदत्त का न्याय दिया।।
प्रभव परभव डर क्यों०।।6।।

प्रभव- ऐश की अशरत करे जवानी की वसर,
वृद्धपण में जोग लेना इस असर पर ध्यान धर।
पछतावेगा सुख को गमाय दिया।।
जम्बू क्यों थे वैराग्य०।।7।।

जम्बू- कहां गई अक्कल तेरी फांस में डाले किसे,
हिण पुरुषार्थी पुरुष को पालन मुश्किल दिसे।
प्यारे तूं भी समझ क्यों लुभाय रह्यो।।
प्रभव परभव डर क्यों०।।8।।

कवि- प्रभव मिल पाँच सौ और आठों स्त्रियाँ,
मात-पिता-जम्बू सकल संयम लेइ शुद्ध किया।
सब ही स्वर्ग मुगत में सिधाय गया।।
जम्बू क्यों थे वैराग्य०।।9।।
सुगण श्रोता समझ लो कुछ सार नहीं संसार में,
मेवाड़ी 'चौथमल' आ मंगलगढ़ बाजार में।
जिनवाणी का रंग वर्षाय दिया।।
प्रभव परभव डर क्यों०।।10।।

जरा तोल के तो मीठा बोलो

(तर्ज-जरा सामने तो आ ओ छलिये.......)

जरा तोल के तो मीठा बोलो, कड़वा बोलने में कुछ भी न सार है।
मर जाता एक दिन आदमी, नहीं जाती वचन की मार है।।टेर।।

1. सुई से काटा फौरन निकलता, कुवचन न किन्तु निकलता है।
चाकू का घाव तो मिटता दवा से, यह तो हमेशा जलता है।
खोता वर्षों का पल में प्यार है, जहाँ मैत्री थी वहाँ अब खार है।।
जरा०।।1।।
2. होकर जो अन्धा गुस्से में आदमी, चाहे सो आता बक जाता।
खुलती है आँखें तब दिल रोता, लेकिन न फिर कुछ हो सकता।
मरे एक वचन से चार है, सारे घर का हो गया संहार है।
जरा०।।2।।
3. मीठे वचन में दमड़ी न लगती, कड़वे से हीरे नहीं मिलते।
अमृत के बदले फिर इस जबां से, कह दो हलाहल क्यों झरते।
जीभ रत्नों का भारी भण्डार है, होंठ दोनों ही पहरेदार है।।
जरा०।।3।।

4. एक-एक वचन से महाभारत हुआ है, इतिहास साक्षी देते हैं।
पढ़के या सुणके धारण जो करते, वे ही तो लाभ कुछ लेते हैं।
सीख 'धन' की बड़ी सुखकार है, मानो-मानो तो बेड़ा पार है।।
जरा०।।4।।

मतलब की यारी

1. जगत् में मतलब की यारी रे, जगत् में मतलब की यारी।।टेर।।
मात-तात-भगिनी-सुत बान्धव, क्या प्रीतम प्यारी।।
2. मतलब बिन छाछ न घाले, क्या खारी-खारी।
मतलब हुये जब न्यात जिमावे, कर नव-नव त्यारी।।
3. खाण्ड गाले जब आंगण माही, आफूसी क्यारी।
वक्त पड़े जब यूं उठ बोले, भुगतो थे थांरी।।

धर्म की गठरी

(तर्ज-जरा सामने तो आ ओ.........)

जरा धर्म की गठरी बांधो, मौत मस्तक पे हो रही सवार है।
आता-आता ही श्वांस रुक जाएगा, इस श्वांस का न कुछ एतबार है।।
टेर।।
1. आने के बाद मौत कुछ भी न होगा, यो ही तड़फ मर जाओगे।
मन की मुरादें मन में रहेगी, पूरी न तुम कर पाओगे।
बांधो पानी से पहले पाल है, सुखी बनने का यदि खयाल है।।
जरा०।।1।।
2. कल पर धर्म को बिल्कुल न छोड़ो, कल क्या पता क्या हो जायेगा।
बदले में राज्य के बनवास हो गया, रघु भी समझने न पायेगा।
औरों का फिर क्या सवाल है, प्रभु भक्ति ही जग में सार है।।
जरा०।।2।।

3. जीवन की जो पल बीत जाती, वापस न फिर वो आ सकती।
आती को पकड़ो जाने लगेगी, फिर तो न पकड़ी जा सकती।
धर्म करने का अवसर उदार है, प्यारे प्रभुजी ही तारणहार है।।
जरा०।।3।।

4. माता के तुल्य पर नारी को समझो, मिट्टी सा समझो तुम पर धन।
आत्मा के तुल्य सब जीवों को समझो, शिक्षा सुनाता मुनि 'धन'।
ज्ञान सुनने का फिर यही सार है, कुछ ले लो तो बेड़ा पार है।।
जरा०।।4।।

दुनिया का झूठा प्यार

(तर्ज-जरा सामने तो आ ओ......)

जरा होश में तो आ अरे पगले, शानी दुनिया का झूठा प्यार है।
क्यूं भूला है तू परमात्मा ! तेरा जीवन तो बस दिन चार है।।टेर।।

1. बदली उमड़ी है झरने को, जो आया है जाने को।
डाली-डाली बोल रही है, फूल खिले मुरझाने को।
अथ और इति दो द्वार है, सभी करते इन्हीं को पार है.....
जरा होश।।1।।

2. नित्य देखते हैं सूरज को, चमक-चमक कर ढलता है।
अंधियारे का साथी दीपक, जल-जल करके बुझता है।
सुन ! उषा में, सन्ध्या में प्यार है, बनने-मिटने का नाम संसार है।
जरा होश।।2।।

3. इन्द्रधनुष से विविध रंगों में, अपनेपन को खोना है।
मृग तृष्णा या अपनी छाया, पकड़-पकड़ कर रोना ना।
'केवल मुनि' प्रभु नाम सार है, प्रभु भक्ति करे तो बेड़ा पार है।
जरा होश।।3।।

मेरी आत्मा की आवाज

(तर्ज-जरा सामने तो आ ओ......)

जरा ज्ञान को तूं पा ओ बन्दे, जिन्दगी का यही एक राज है।
यों मिल न सकेगा परमात्मा, मेरी आत्मा की यही आवाज है।।टेर।।

1. भटक-भटक कर नर-तन रतन यह, तू ने अमोलक पाया।
लेना हो सो ले-ले मुसाफिर, हाथ यह मौका अब आया।
तेरी जग में बड़ी ओकात है, तू तो देवों का भी सरताज है।।
जरा ज्ञान०।।1।।

2. कीड़े-मकोड़ों की तरह घिसटना, इनसान तेरा काम नहीं।
रंग-रंगीली इस दुनिया में, पल-भर को आराम नहीं।
फिर नीचे को क्यों तेरा ध्यान है, जब ऊँची तेरी परवाज है।।
जरा ज्ञान०।।2।।

3. चार दिनों की चमक-चादाँनी, फिर अंधेरी रात यहाँ।
आज चलो चाहे काल चलो, बस रहने की झूठी बात यहाँ।
फिर सोया क्यों लम्बी तान है, जब मौत रही सिर पर गाज है।।
जरा ज्ञान०।।3।।

4. कोरी बात से बात बनेगी, ऐसा कभी ना हो सकता।
जो आम खाना चाहेगा वो तो, पेड़ बबूल ना बो सकता।
सीधी-सादी खरी यह बात है, बस हाथ में तेरे तेरी लाज है।।
जरा ज्ञान०।।4।।

5. धर्म की करणी से तू है गाफिल, इधर कहे और उधर चले।
जीवन की मंजिल मिलती वहाँ पर, ज्ञान का दीपक जहाँ जले।
जब माया पे तेरा हाथ है, फिर काहे पे तुझको नाज है।।
जरा ज्ञान०।।5।।

जावणो दुनिया सूं राखो खटको

जावणो दुनिया सूं थोड़ो राखो खटको,
क' भायों माथा सु पापां की पोट परी पटको।।टेर।।

1. दुनिया है मतलब री इणमें मत अटको,
क' राखो राखो रे प्रभु रा नाम केरो खटको।।जावणो०।।1।।
2. बीती सो तो बीती अब मती भटको,
क' भायां फोड़ दो जहर सूं भरियोड़ो मटको।।जावणो०।।2।।
3. कीचड़ है कीचड़ री आड़ी, मत पटको,
क' पहुँचे नावड़ली किनारे, दो जोरों सूं झटको।।जावणो०।।3।।
4. भटकिया घणो तू मन्दिर-मस्जिद-मठ को,
क' अब खोल दो दरवाजो 'कमल' घट को।।जावणो०।।4।।

मोह को छोड़ दिया

जाने ये कैसे लोग हैं, जिनने मोह को छोड़ दिया।
घर-गृहस्थी के बन्धन को, इन लोगों ने तोड़ दिया.....
जाने ये....।।टेर।।

1. धन्य है आपंको 'खुशालचन्दजी' रुक्मणी के जाया।
पिता 'हिन्दुमलजी' बाफना कुल चमकाया।
सत्य 'अहिंसा' की राहों पर, चलना ठान लिया।।
जाने ये०।।1।।
2. धन्य है तुमको गंगाबाई, भूरी की सन्तान।
पिता 'माणकजी' ओस्तवाल कुल जाण।
पतिव्रता नारी तुम सच्ची, साथ में संयम धार लिया।।
जाने ये०।।2।।

3. पूनम चाँद-सी ज्योति तेरी, मुखड़े पे मुस्कान।
बालि उमर में संयम लेना, लिया 'प्रकाश' ने ठान।
पिता 'खुशाल' माता 'गंगा' का रोशन नाम किया।।
जाने ये०।।3।।

4. स्वारथ की जंजीरें तोड़ी, मोह को त्याग दिया।
पण्डित 'समरथ' की सेवा में रहना ठान लिया।
कर जोड़ी 'मेगेसदास' ने गाना यह गाय दिया।।
जाने ये०।।4।।

जिन्होंने जग त्याग दिया

जिन्होंने जग त्याग दिया रे, हम तो 'चम्पक' गुरु के हैं दास।।
जिन्होंने जग त्याग दिया रे, हम तो निर्ग्रन्थ मुनियों के दास।।टेर।।

1. प्राणी-मात्र को दुःख नहीं देते, समझे आत्म समान।
जिनके दिल में सदा दया का, झरना झरता झर-झर महान्।।
जिन्होंने०।।1।।

2. मिथ्या-वचन कभी नहीं बोले, निकले चाहे प्राण।
मधुर सत्य के द्वारा करते, निज-पर का कल्याण।।
जिन्होंने०।।2।।

3. अकल्पित वस्तु कभी न लेते, नहीं बढ़ाते हाथ।
भगवन् वीर-वचन की गाथा, रखते हैं निस-दिन साथ।।
जिन्होंने०।।3।।

4. पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन, करते सभी प्रकार।
विषयों की आशा नहीं जिनको कर सकती सविकार।।
जिन्होंने०।।4।।

5. कौड़ी मात्र को पास न रखते, सब धन धूलि समान।
किन्तु ज्ञान की अक्षय निधि से, पूरे हैं धनवान्।।
जिन्होंने०।।5।।

6. बिना खेद की कठिन तपस्या, करते हैं निष्काम।
सदा कर्मशत्रु के दल से, करते हैं संग्राम।।
जिन्होंने०।।6।।

7. हर्ष–शोक नहीं लाते मन में, सुख–दुःख एक समान।
चंचल चित्त को वश में करके, करते हैं निर्मल ध्यान।।
जिन्होंने०।।7।।

8. भिक्षा द्वारा विधि से लेते, निर्दूषण आहार।
रूखा–सूखा भोजन पाकर, रहते हैं मुदित अपार।।
जिन्होंने०।।8।।

9. मरणान्तिक उपसर्गों से भी, भय नहीं करे लगार।
काल शत्रु पर विजय मत हो, करते हैं हँस–हँस वार।।
जिन्होंने०।।9।।

10. बिना सवारी पैदल चलते, नंगे पांव विहार।
चाहे सर्द ठण्ड गर्म हो, करते निडर विहार।।
जिन्होंने०।।10।।

11. कहें कहाँ तक, जिनके गुण हैं अपरम्पार।
'अमर' कहे जिनकी भक्ति से, होता है बेड़ा पार।।
जिन्होंने०।।11।।

धर्म की गंगा में.....

धर्म की गंगा में हाथ धोय लेनी रे,
चानणो हुओ है मोती पोय लेनी रे।।

1. धर्म कल्पवृक्ष है तू चाया फल तोड़ले,
धर्म काम कुंभ है मनचाया लाडू फोड़ ले।
कामधेनु दूध ताजा दोय लेनी रे।।
चानणो हुओ है मोती पोय लेनी रे।।धर्म.।।1।।

2. अमर बनावे धर्म अमृत समान है,
मोक्ष पहुँचावे धर्म अमर विमान है।
एक बार देख जरा जोय लेनी रे।।
चानणो हुओ है मोती पोय लेनी रे।।धर्म.।।2।।

3. मुट्ठी बांधे आवणो हाथ पसारे जावणो,
जैसो बीज बोवणो, वैसो ही फल पावणो।
धर्म वालो बीज बोय लेनी रे।।
चानणो हुओ है मोती पोय लेनी रे।।धर्म.।।3।।

सती चन्दनबाला

(तर्ज-जिया बेकारा है, छाई बहार है...)

जिया बेकरार है, हृदय की पुकार है,
आजाओ महावीरजी तेरा इंतजार है।। टेर।।

1. राजकन्या हूं दधिवाहन की, महलों की मतवाली हो,
महलों की मतवाली हो।
तीन दिवस से पड़ी अकेली,
मैं कर्मों की मारी हो, मैं कर्मों का भारी हो।
कोई न पूछणहार है, किसी का ना प्यार है।
आजावो महावीरजी।।1।।

2. हाथपाँव में बेड़ी पड़ रही, सिर मुण्डित है सारा हो,
सिर मुण्डित है सारा हो।
नहीं अंग पर चीर-कच्छा से,
लज्जा का निवारा हो लज्जा का निवारा हो।
भूख भी अपार है, दिखता नहीं आहार है।।
आजावो महावीरजी।।2।।

3. उड़दों के ही दिये बाकुले, यही भावना भाई हो,
यही भावना भाई हो।
तेले का है आज पारणा,
आवे कोई मुनिराई हो, आवे कोई मुनिराई हो।।
सुपात्र सत्कार है, देऊँ यह आहार है।
आजावो महावीरजी।।3।।

4. इतने ही में आप पधारे, रोम-रोम हर्षाया हो,
रोम रोम हर्षाया हो।
उसी समय फिर वापस फिर गये,
दुखिया दिल दुखया हो दुखिया दिल दुखाया हो।।
बहती अश्रुधार है, तेरा ही आधार है।।
आजावो महावीरजी ।।4।।

5. हुआ अभिग्रह पूर्ण आँसू जब,
हुए सति के जारी हो हुए सति के जारी हो।
लिया प्रभु ने आहर गगन में, बजी दुंदुभि भारी हो।।
बजी दुंदुभि भारी हो।।
'चन्दनबाला' नार है "जाति" हुआ उद्धार है।।
आ जावो महावीर जी 5।।

जिनेश्वर वीर और उनके शिष्य याद आते हैं

(तर्ज-कभी सुख है कभी दुःख है....)

जिनेश्वर वीर और उनके शिष्य अब याद आते हैं।
हर्ष धरते भजन गाते बड़ों को सिर झुकाते हैं।। टेर।।

1. दसा कौशिक अंगूठे में, बहायी दूध की धारा।
क्षमा का बोध दे तारा, प्रभु वे याद आते हैं।। जिनेश्वर.।।1।।

2. गये आनन्द श्रावक घर, भूल तत्क्षण क्षमाने को।
जो चवदह पूर्वी होकर भी, वे गोतम याद आते हैं।। जिनेश्वर.।2।
3. पिता बिछुड़ा सिधाई माँ, बिकी और भोंयरे डली'
न फिर भी धैर्य त्यागा, वो चन्दना याद आती है।। जिनेश्वर ।।3।
4. देव मिथ्यात्वधारी के, कठिन परीषह सहे तीनों।
तथापि व्रत न खण्डा, वो कामदेव याद आते हैं।। जिनेश्वर.।।4।
5. जो स्त्री जाति की होकर, विलक्षण प्रश्न करती थी।।
ज्ञान चर्चा की रसिका, वो जयंति याद आती है।। जिनेश्वर.।।5।
6. कहे 'केवल' अरे 'पारस' बना, अपना जीवन इन-सा।
यही है सार सुनने का, कि हम भी याद बनते हैं।। जिनेश्वर ।।6।।

माल खरीदो त्रिशलानन्दन की.....

तुम माल खरीदो त्रिशलानन्दन की खुली दुकान जी।। टेर.।

1. शास्त्र रूपी भरी बहु पेटियां, मुनिवर बने बजाज जी।
भांति-भांति का माल देखलो, कर अपना मन राजी हो।।
तुम माल खरीदो.।।1।।
2. जिनवाणी को मीटर सोचो, जरा फरक मत जाण।
माप-माप सतगुरु देवे छे, मत कर खेंचाताण जी।।
तुम माल खरीदो.।।2।।
3. जीव-दया की मलमल भारी, शुद्ध मन सूं समकित लीजो।
डबल-झीण समता-तणो-सरे, चावो सो कह लीजो।।
तुम माल खरीदो.।।3।।
4. ममता को बन्दा गल भारी, साड़ी ले संतोष।
ऐसो कर व्यापार जिससे, चेतन पावे मोक्ष जी।।
तुम माल खरीदो.।।4।।

5. खुशी होवे तो सौदो लेवो, नहीं झगड़ा को काम।
मन होवे तो मोल ले जावो, नहीं मांग म्हें दाम जी।।
तुम माल खरीदो.।।5।।
6. माल बिके छे थोड़ो जिनसू, खर्च पूरो नहीं चाले।
आवेला कोई उत्तम प्राणी, माल उणोरे पल्ले जी।।
तुम माल खरीदो.।।6।।
7. माल बिके तो रेणो होसी, सुणजो भविजन बाला।
भरिया खजाना कदियन खूटे, सतगुरु सिर पर हाथ जी।।
तुम माल खरीदो.।।7।।
8. संवत 1936 साल में, अम्बाला चौमासो।
'करण मुनि' उपदेश सुणायो, मोक्ष जावण री आश जी।।
तुम माल खरीदो.।।8।।

तूं बारे-बारे क्यूं भटके

थने धीरे-से समझाऊँ थाने छाने से समझाऊँ।
थने मीठी मीठी वाणी सुणाऊँ रे चेतनियां।। टेर।।
1. आत्म धन सूं तू भरपूर, फिर भी किसा नशा में चूर।
लाखीणो ओ जन्म गमावे रे चेतनियाँ।।
तू बारे-बारे क्यूं भटके।।1।।
2. बाहर-घर में घणो उजालो, आत्मा में घोर अंधियारो।
ज्ञान-दीप से जगमग ज्योति, जगाले रे चेतनियाँ।।
तू बारे-बारे क्यूं भटके।। 2।।
3. इण शरीर की भूख मिटावे, भांत-भांत का भोजन खावे।
आत्मा री भूख क्यान, मिटसी रे चेतनियाँ।।
तू बारे बरे क्यू भटके।।3।।

4. ठण्डा जल सूं रोज नहावे, खुशबू ही को तेल लगावे।
बढ़िया-बढ़िया कपड़ा पहनावे रे चेतनियाँ।।
तू बारे-बारे क्यूं भटके।।4।।

5. मखमल री गादी पर सोवे, घणा-घणा सुख तन ने देवे।
झूठी-साची गप्पां बठे, लगावे रे चेतनियाँ ।।
तू बारे-बारे क्यूं भटके।।5।।

6. मोटर गाड़ी चढ-चढ़ घूमे, नाटक-सिनेमा नित का देखे।
झूठी-मस्तियों में पागल, बन जावे रे चेतनियाँ।।
तू बारे-बारे क्यूं भटके।।6।।

7. आत्मा की निर्मलता चावे, साचो सपनो प्राणी पावे।
कंचन-सम जीवन, चमकाले रे चेतनियाँ।।
तू बारे-बारे क्यूं भटके।।7।।

मौजीरामजी की मौज

(तर्ज-आयो आयो....)

देखो, देखो माल-मसाला, नित खावे रे,
खुशियां तो माना मौजीराम जी ।। टेर।।

1. अजमेर को सोहनहलवो, जयपुर को मिश्रीमावो रे।
रसगुल्ला मंगावे बीकानेर का, खुशियां तो मनावे
मौजीरामजी.।।1।।

2. नयाशहर की तिलपट्टी, और फीणी पालीवालो री।
पेठा तो चावे रे आगरा शहर का, खुशियां तो मनावे
मौजीरामजी.।।2।।

3. मावा री कचोड़ी मीठी, जोधपुर सूं आवे रे।
पूड़िया तो मंगावे सरवाड़ की, खुशियाँ तो मनावे
मौजीरामजी.।।3।।

4. कलाकन्द तो नाथद्वारा रो, भुजिया माधांपुर का।
सेवां तो मंगावे रतलाम की, खुशियाँ तो मनावे
मौजीराम जी.।।4।।

5. मोतीचूर तो मदनगंज को, घेवर बढ़िया ताजा रे।
इमरत्यां मंगावे भिलवाड़ा की, खुशियां तो मनावे
मौजीरामजी.।।5।।

6. खाता-खाता, बिगड़ीयो हाजमो।
पेचिस ज्योंने होगई रे, दस्तां तो लागे रे दिन-रात का।।
खुशियां तो मनावे मौजी रामजी.।।6।।

7. सभी होत गिरवा लाग्या।
मूंढो हो गयो खाली रे, चिड़ियां रो दीखे जैसे घोसलो।।
खुशियां तो मनावे मौजीरामजी.।।7।।

8. धन भी खरच्यो तन भी बिगड़ियो, लाभ हाथ नहीं आयो रे
थोड़ा ही दिनों में बण गयो डोकरो।।
खुशियां तो मनावे मौजीरामजी.।।8।।

9. 'रंगमुनि' तो गावे, थाने साँची ही सुणावे रे।
तपस्या सूं सुधरेला थांरी आत्मा।।
खुशियां तो मनावे मौजीरामजी.।।9।।

नर-भव निकमो गमाय दियो रे

(तर्ज-एक परदेशी मेरा...)

नर-भव निकमो गमाय दियो रे, प्रभु भजवा को लावो नायं लियो रे।।
टेर।।

1. जिका बात सुणियां जीव मुक्ति पद पावे,
ऐसी बाता थारे दाय नहीं आवे।

तूं तो इसक-मिसक, माहीं रीझ रयो रे।।
नर-भव निकमो।।1।।

2. खेल-तमासा मांही सारी रात खोवे,
घड़ीयाल मांहे चले बार-बार जोवे।
हाल सामायिक पूरी नहीं हुई रे।।
नर-भव निकमो.।।2।।

3. पगड़ी झुकावे छेलो टेढ़ो-टेढ़ो चाले,
जवानी रा जोर मांहे मुच्छां बट घाले।
हाय रे जोबनियो, दगो देय गयो रे।।
नर-भव निकमो.।।3।।

4. फुटरी दीखावा मुख पान-बीड़ो खावे,
हरजस छोड़ गेलो होली जस गावे।
इण उमर में काम आइज फेर कियो रे।।
नर-भव निकमो.।।4।।

5. काम पड़ियो हिण पुणियो, जीव परो मारे।
देखो म्हारो बालो झूठो जैन नाम धरावे।
उजली आत्मा ने जीव मेलो कियो रे।।
नर-भव निकमो.।।5।।

6. पर की लुगाई तोय हाय थने भाई,
उठे थारी डूब गई सारी चतुराई।
यूं टेढ़ी नजर क्यों जोय रह्यो रे।।
नर-भव निकमो.।।6।।

7. मानो चाहे मती मानो मैं तो यूं ही कैसों।
जाहिर में उपदेश आच्छो मैं तो इयां ही देसो।
दाय पड़े सोही सज्जन धार रह्या रे।।
नर-भव निकमो.।।7।।

क्रोध शैतान है

(तर्ज–छोड़ बाबुल का घर....)

क्रोध दुःख खान है, क्रोध से हान है।
क्रोध छोड़ो अनुज, क्रोध छोड़ो मनुज।। टेर।।

1. गुस्सा पागल बना देता इसान को,
क्रोध झटपट भुला देता ईमान को।
क्रोध हैवान है, क्रोध शैतान है।

2. क्रोध चण्डाल से वढ़कर चण्डाल है,
जिस पे चढ़ता वह बनता बेहाल है।
खोटी यह बातें हैं, नर्कों की निशानी है।।

3. क्रोध त्यागे क्षमा–धर्म आदरे 'कीर्ति',
भारी हो विश्व पूजा करे।
पाता सद्ज्ञान है बनता भगवान है।।

नर–भव तारो रे

नर–भव तारो रे, आलस में मती हारो रे।। नरभव तारो रे।। टेर।।

1. आर्य देश उत्तम कुल मांही, आय लियो अवतारो रे।
आयु दीर्घ इन्द्रिया पूरण अव तो जिनवाणी धारो रे।।
नर–भव.।।1।।

2. एकेन्द्रिय आदि के अन्दर, भमियो जीव अण्यारो रे।
अवसर उत्तम अति मिलियो, अव तो काम सुधारो रे।।
नर–भव।।2।।

3. नरक मांही जद जाय उपनो, दुःख से कियो विचारो रे।
अब जो मनुष्य–भव पावूं तो, कस्सु निस्तारो रे।।
नर–भव.।।3।।

4. वनस्पति में छेदन-भेदन, या कियो भुरतो थांरो रे।
कोई तो जीवड़ा गिट गया तोने, फिर निकल्या मल-के द्वारे।।
नर-भव.।।4।।

5. दु:ख सोचे जीव चार गति नो, तुरंत टले अंहकारो रे।
जिनवाणी हृदय में वसियां, होवे दु:ख सूं न्यारो रे।।
नर-भव.।।5।।

निन्दा निवार

निन्दा ने परी रे निवार, निन्दा सूं जीव जावे नारकी रे।
लीजो लीजा प्रभुजी रो नाम, मुक्तियाँ सूं आवे पालकी रे।। टेर।।

1. एक माता रे चार, चारों री कणी न्यारी-न्यारी रे।
एक राजा रो दीवान, दूजो हीरों रो पारखी रे।
तीजो बाणिये री हाट, चौथो ढोवे भारी रे।
मत दीजो माताजी ने दोष, कर्मों री गति न्यारी-न्यारी रे।।
निन्दा.।।1।।

2. एक गऊ रे बछड़ा चार, चारों री गति न्यारी-न्यारी रे।
एक सूरज रो साण्ड, दूजो शिवजी रो नान्दियों रे।
तीजो घाणी रो बैला, चौथो तो ढोवे पाणी रे।
मत दीजो गऊ माताजी ने दोष, कर्मों री गति न्यारी-न्यारी रे।।
निन्दा.।।2।।

3. एक मही रे बर्तन चार, चारों री गति न्यारी-न्यारी रे।
एक में दही रो बिलोय, दूजे में घी डालसी रे।
तीजे में ठण्डो नीर, चौथे में जावे भोमिका रे।
मत दीजो कुंभार ने दोष, कर्मों री गति न्यारी-न्यारी रे।
निन्दा.।।3।।

4. एक बेल रे तुम्बा चार, चारों री गति न्यारी-न्यारी रे।
एकज पीलो रोश, दूजो तो खींचे धारियां रे।
तीजो काणो रोश, चौथो तो छोड़े बेल ने रे।
मत दीजो बेलड़ी ने दोष, कर्मों री गति न्यारी-न्यारी रे।।
निन्दा.।।4।।

कोई नहीं तेरा

(तर्ज-तुम्हीं मेरे मन्दिर....)

नोटों के वण्डल आलीशान बंगले, कोई नहीं तेरा, कोई नहीं तेरा।।
टेर।।

1. बहुत प्यार करके पापों को पाले,
रखता तिजोरी पे ताले पे ताले।
मौत के आने पे, चला होठ मल-मल।।
कोई नहीं तेरा.।।1।।

2. कंचन-सी काया में, यौवन की लाली,
चहकता फिरे दशा है मतवाली।
उजड़ा चमन और उड़ गई बुलबुल।।
कोई नहीं तेरा.।।2।।

3. दुनिया में रहती है भलाई-बुराई,
यही संग आये जो यहाँ पे कमाई।
बच के निकल फँस ना वदियों के दल-दल।।
कोई नहीं तेरा.।।3।।

4. महकते गुणों के सुमन अव सजा ले,
भक्ति की जो से जो जगा।
'कुमुद' सत्य सेवा को अपना ले पल-पल।।
कोई नहीं तेरा.।।4।।

लघु प्रतिक्रमण

(तर्ज- देख तेरे संसार की हालत.....)

नित्य शाम को जीवन खाता खोलो करो विचार,
श्रावक यह तेरा आचार।
मोक्ष मार्ग में कदम बढ़ाये कितने दो या चार
कर ले बारम्बार विचार ।। टेर।।

1. जो शुभ निश्चय किये सवेरे कितने पूर्ण हुए वो तेरे।
विघ्न देख घबराया, या डटकर रहा तैयार।।
श्रावक.।।1।।

2. कितने कार्य किये पुण्यों के, कितने कार्य किये पापों के।
देख तोल कर पुण्य-पाप को, किधर है कितना भार।।
श्रावक.।।2।।

3. कितने अवगुण त्यागे तूने, कितने सद्गुण धारे तूने।
तू-तू मैं-मैं व्यर्थ लगाकर, अथवा की तकरार।।
श्रावक.।।3।।

4. कितना संग किया गुणियों का, कितना लाभ लिया मुनियों का।
या खेल-तमाशे ठट्ठी-हँसी में, मस्त रहा बेकार।।
श्रावक.।।4।।

5. मानव जीवन सफल बनाले, इस नर-तन से लाभ उठा ले।
लक्ष चौरासी योनी में, यह मिले न बारम्बार।।
श्रावक.।।5।।

6. संवर करले तप आदरले, पुण्य कमाले पाप खपाले।
'केवल' कहते 'पारस' सुन रे, यह जीवन दिन चार।।
श्रावक.।।6।।

पइसो प्यारो रे

पइसो प्यारो रे ! दुनिया में लागे मोहनगारो रे।। टेर।।

1. पइसा से नर प्यारो लागे, जो काजल से कारो रे।
अजब चीज दुनिया में पैसो, कहे जग सारे रे।।
पइसो प्यारो रे.।।1।।

2. पइसा खातिर परमेश्वर की, सौ-सौ सोगन खावे रे।
प्राणप्यारी ने छोड़ पुरुष प्रदेशां जावे रे।।
पइसो प्यारो रे.।।2।।

3. पइसा से दुनिया दे आदर, आगे आप पधारो रे।
निर्धन ऊभो टुक-टुक जोवे, लागे खारो रे।।
पइसो प्यारो रे.।।3।।

4. पइसा आगे पतो न लागे, जो परमेश्वर आवे रे।
महादेव और पार्वती ने ओ बाहर कढ़ावे रे।।
पइसो प्यारो रे.।।4।।

5. काणा-खोड़ा-लूला-बोळा ने ओ पइसो परणावे रे।
बिना पैसा से छैल-छबीलो, नार न पावे रे।।
पइसो प्यारो रे.।।5।।

6. पइसा ने धूल बराबर समझे, वो नर ज्ञानी रे।
नाथ मुनि शिष्य 'चौथमल' कहे भवि हित आणी रे।।
पइसो प्यारो रे.।।6।।

सुधर्मा सेवा में

(तर्ज-म्हारो मन पीवर जावा में.....)

प्रभवा से जम्बू फरमावे, जग सारो झूठो दरसावे।
है सुख संयम लेवा में, के म्हारो मन सुधर्मा सेवामें।। टेर।।

1. तुम कहता मत त्यागो नारी, मैं समझूं आ फूस की क्यारी।
नहीं दीखता सुख घर रेवा में, म्हारो मन सुधर्मा सेवा में।।
प्रभवा.।।1।।

2. काम-भोग में जो ललचावे, मनुष्य-जन्म वृथा ही हारे।
थारो कईं बिगड़े केवा में, के म्हारो मन सुधर्मा सेवा में।।
प्रभवा.।।2।।

3. मात-पिता कुटुम्ब और न्याति सब स्वार्थ का है साथी।
नहीं राचूं कुटुम्ब जो ऐवा में, के म्हारो मन सुधर्मा सेवा में।।
प्रभवा.।।3।।

4. संयम की जो देवे आड़ी, कर्म अन्तराय बांधे गाढ़ी।
तू क्यों रहे ढेला देवा में, के म्हारो मन सुधर्मा सेवा में।।
प्रभवा.।।4।।

5. सुन प्रभव भी हुवो वैरागी, आप संग कुंवरजी थासु त्यागी।
रहे 'चौथमल' गुण गेहा में, के म्हारो मन सुधर्मा सेवा में।।
प्रभवा.।।5।।

चेतन चेतो रे

प्राणी आयो के थारो काल, चेतन चेतोरे।। टेर।।

1. भोजन मात परोसिया, थारो धरियो रेवेला थाल।।चेतन.।।1।।
2. लाखों रो लखो नहीं, थारो धरियो रेवेला धनमाल।।चेतन.।।2।।
3. बाप-दादा बैठा रह्या, उठ चाल्या जवान अरु बाल।।चेतन.।।3।।
4. आगे-पीछे जावणो, तू छोड़ जग-जंजाल।।चेतन.।।4।।
5. 'श्रमण हजारीमल-कहे, बांधो-बांधो धर्म री पाल।।चेतन.।।5।।

मत करना अभिमान

बच्चा मत करना अभिमान, एक दिन निकल जायेगा प्राण।। टेर।।

1. रावण की सम्पत्ति को देखो, फिरत लंक में हुण्डी।
रामचन्द्रजी का लगा झपट्टा, घुस गई दस मुण्डी।।
बच्चा।।1।।
2. दुर्योधन का क्या बल देखो, बारह हजार हाथी।
जब भीमसेन की लगी गदा, तो तन की हो गई माटी।।
बच्चा.।।2।।
3. छः बालक को कंस ने मारा, मस्त हुआ मथुरा में।
मार दिया जब बाल कृष्ण ने, मिला राज धूलन में।।
बच्चा.।।3।।
4. कहे 'मच्छन्दर' सुन भाई 'गोरख', बार-बार नहीं आवे।
नहीं शरणा साधु का वो नर, फिर-फिर गोता खावे।।
बच्चा.।।4।।

मोक्ष में जावा दो

भग जावो रे कर्म सब दूर, मोक्ष में जावा दो, जावा दो।
थाँ दु:ख दिया भरपूर, म्हुं थाने कर दूंगा चकचूर ।। टेर।।
1. क्षमा सेवा की खीचड़ी, मोय खावा दो, खावा दो।
काई ज्ञान समुंद्र माय, अब मोहे नाहवा दो, नाहवां दो।।
भग.।।1।।
2. धर्म-ध्यान सुहामणो, मोय ध्यावा दो, ध्यावा दो।
कांई मुक्ति की भरपूर भावना, भावा दो, भावा दो।।
भग.।।2।।
3. चारित्र चिन्तामणि मोंय, आवा दो, आवा दो।
काई तप की तापना देय, आत्मा-तावा दो, तावा दो।
भग.।।3।।

4. नवकार मंत्र में गुण घणा, मोय गावा दो, गावा दो।
काई श्रमण 'हजारीमल' ने सदा सुख पावा दो, पावा दो।।
भग.।।4।।

भोला जिन्दगी में दाग लगाइजे मती

भोला जिन्दगी में दाग लगाइजे मती,
अब कर्मों रो बन्ध बढ़ाइजे मती।।टेर।।

1. जिण धरती पर जन्म लिया है, उण देश रो द्रोही कहलाइजे मती।।
भोला.।।
2. जिण जाती रो लाल कहावे, उण जाति रो मान घटाइजे मती।।
भोला.।।
3. कुल-मर्यादा में सदा चालणो, कुल रे तू कलंक लगाइजे मती।।
भोला.।।
4. मात-पिता की सेवा करजे, छोड़न अलग हो जाइजे मती।।
भोला.।।
5. भाई-भाई मिल घर में समझजे, कचेड़ियों में न्याय कराइजेमती।।
भोला.।।
6. उमर पक्यां पर समता धरजे, बुढ़ापे में ब्याह रचाइजे मती।।
भोला.।।
7. बुड्ढा संग कन्या रो विवाह मत करजे, बेटी ने बेचने खाइजेमती।।
भोला.।।
8. धन रा भूखा जात ने बिगाड़े, तो छोरा रा डोरा गिनाइजे मती।।
भोला.।।
9. पंचों के सन्मुख पाग बंधा कर, गोद लेय नट जाइजे मती।।
भोला.।।

10. पंच-चौधरी हो न्याय ही करजे, लाडुवों पर नीयत डुलाइजेमती।
भोला.॥

11. समय देख नया नियम बणाजे, तू बाड़ाबन्दी चलाइजे मती॥
भोला.॥

12. जमा करावे कोई न्याति री रकमां, धर्मादे री रकम खाइजे मती॥
भोला.॥

13. धर्म स्थानक री चाबिया लेयने, रक्षक रो भक्षक हो जाइजे मती॥
भोला.॥

14. स्थानक-उपासरा रो मालिक बनने, नरका रा बन्ध बढ़ाइजे मती॥
भोला.॥

15. धर्म-गुरु संघ सेवा करजे, आपस में फूट पटकाइजे मती॥
भोला.॥

16. स्वार्थवस खोटा मत करजे, पाप री कमाई कदेइ खाइजे मती॥
भोला.॥

17. जिन्दगी है थारी बादला री बिजली, मोती पोवणो भूल जाइजे मती॥
भोला.॥

18. जिन्दगी है थारी क्षणभंगुर-सी, इण ने प्रमाद में लगाइजे मती॥
भोला.॥

19. जिन्दगी है फूल-सी, सौरभ लुटाइजे, भूलकर भी अपजस लाइजेमती॥
भोला.॥

20. जिन्दगी मिली है नर-तन मांही, भोगों में तन-मन फसाइजे मती॥
भोला.॥

21. 'जीत' तू पग-पग संभल चालजे, कोरा उपदेश ही सुणाइजे मती॥
भोला.॥

भोळा भूल मतीना जाजे रे

(तर्ज-ढोला ढोल मजीरा......)

भोळा भूल मतीना जाजे रे!
मदभरीयो जोबिनियो थारो, ढळतो लाजे रे।। टेर।।

1. नीच ठिकाणे उपजियो रे, कियो सूधलो आहार।
हाड़-मांस रा डील रो, थूं करतो रहे सिणगार।। भोळा.।।1।।
2. गोरी-गोरी चामड़ी री, थानो मन में ऐंठ।
पतो नहीं है थोड़ा दिन में, व्हैला अग्नि भेंट।। भोळा.।।2।।
3. तरह-तरह सिणगार करे, तूं धोवे साफ शरीर।
ऐंठ बजारां निकले ज्यूं, सबसे बड़ो अमीर।। भोळा.।।3।।
4. थोड़ा दिन री पामणी या, यौवन री झलकार।
ई में अन्धो व्हे जासी तो, जासी जमारो हार।। भोळा.।।4।।
5. जीव-देही दोई भिन्न है, रे कर आतम रो ज्ञान।
देह नष्ट हो जावसी रे, फिर क्यों करता अभिमान।। भोळा.।।5।।
6. सतगुरु रो शरणो पकड़ रे, सीख हिया में मान।
साची-साची 'कुमुद' कहे, तू भजले रे भगवान्।। भोळा.।।6।।

तीन मनोरथ

(तर्ज-कभी सुख है, कभी दुःख है......)

मनोरथ तीन उत्तम ये, जिनेश्वर नित्य भाता हूँ।
कृपा की आश रखता हूँ, सफल हो ! शीघ्र चाहता हूँ।।टेर।।

1. परिग्रह पाप का दलदल, फँसा हूँ फँसता जाता हूँ।
घटे थोड़ा-बहुत प्रतिदिन, बड़ा ही कष्ट पाता हूँ।। मनोरथ.।।1।।
2. प्रमादी गृहस्थ जीवन है, अधूरी धर्म करणी है।
बनूँगा कब मुनि मुझमें, न ऐसी शक्ति पाता हूँ।। मनोरथ.।।2।।

3. मोक्ष की लगन है पूरी, न कोई अन्य आशा है।
देह छूटे समाधि से, अंत शुभ भाव चाहता हूँ।। मनोरथ.।।3।।
4. दीन हूँ दीनता करता, देवता! दान तू करता।
मनोरथ पूर्ण सब करना, चरण तेरे पकड़ता हूँ।। मनोरथ.।।4।।
5. कहे 'पारस' सुनो केवल, विरुद अपना निभाना तुम।
कहूँ अब और आगे क्या ? न खोजे शब्द पाता हूँ।। मनोरथ।।5।।

मन मोयो रे पावापुर

मन मोयो रे पावापुर नगर सुहामणो रे।। टेर।।

1. श्रमण भगवन् श्री वीर पधारिया रे, विनवे यूं हस्तीपाल राय रे।। मन.।।
2. चरम चौमासो स्वामी अठे करो रे, म्हारे है सूझती एक साल रे।। मन.।।
3. भक्तों की देखी भगवन् भावना रे, कीनो पावापुर चातुर्मास रे।। मन.।।
4. चरण सेवा में गोतम गणधरां रे, रहता नित प्रभुजी रे पास रे।। मन.।।
5. अवसर जाणी निर्वाण को रे, गोतम ने देख्या मोह मांय रे।। मन.।।
6. देवशर्मा ने प्रतिबोधवा रे, भेजियो गोतम ने समझाय रे।। मन.।।
7. कीनो संथारो समता भाव सूं रे, सोलह प्रहर वाणी वरसाई अमृत धार रे।। मन.।।
8. अठारह देशों रा राजा आवियारे, लीनो दो दिन रो पौषध सार रे।। मन.।।

9. कार्तिक अमावस आधी रात में, रे उत्तराध्ययन करता व्याख्यान रे॥
मन.॥
10. चौथा आरा रा छेला अवसर में रे, प्रभुश्री पायो पद निर्वाण रे॥
मन.॥
11. देव-देवी ने सुरपति आविया रे, कीनो रत्नों को खूब उद्योत रे।
मन.॥
12. अंधीयारो भाग्यो चमक्यो चानणो रे, चहुं दिशा में जगमगस जोत रे॥
मन ॥
13. रत्न पालकी में बैठाविया रे ज्यारे मोतियों री चहुं दिशा माल रे॥
मन.॥
14. निर्वाण महोत्सव कीना ठाट सूं रे, चरम तीर्थंकर इण काज रे॥
मन.॥
15. खबर सुणी ने गोतम चिन्तवे रे, मुझने क्यूं दूरा मेलिया भगवान् रे॥
मन.॥
16. ज्ञान विचारी ने मोह हटाविया रे, पायो गोतमजी केवल-ज्ञान रे॥
मन.॥
17. देव-दुंदुभि बाजी लोक में रे, हुवो चहुं दिस खूब प्रकाश रे॥
मन.॥
18. पर्व 'दीपावली' जदसूं चल रही रे, ज्ञानदीप जलावो खूब दुःखनास रे॥
मन.॥

मन दोषों की खान है

मन दोषों की खान है मन से ही कल्याण है।
मन को वश में करना सीखो, यही बड़ा विज्ञान है॥ टेर॥

1. मन का यह मतवाला घोड़ा, बेकाबू हो भटक रहा।

कभी समुंद्रों पार दौड़ता, कभी गगन में लटक रहा।।
कभी तो नादान है, कभी बना शैतान है।। मन.।।1।।

2. चित्त नाम की बड़ी नदी की, दो धारायें बहती हैं।
कभी पाप का गन्दा पानी, कभी पुण्य जल देती हैं।
मन से नरक प्रयाण है, मन से ही निर्वाण है।। मन.।।2।।

3. तन की और वचन की शुद्धि, मन से ही हो जाती है।
मन में ही जब मैल भरा तो, शुद्धि कहाँ रह पाती है।।
मन का पाप महान है, सबका यही निदान है।। मन.।।3।।

यह कहानी है श्रमण महावीर की

(तर्ज-निर्बल से लड़ाई बलवान की........)

महाक्रोधी से लड़ाई महाधीर की, यह कहानी है श्रमण महावीर की
।।टेर।।

1. अष्ट कर्मों को मिटाने, आत्म ज्योत को जगाने,
भगवान् वर्धमान तप कर रहे।
कभी जंगल उद्यान कभी शून्य श्मशान,
शान्त एकान्त में ध्यान घर रहे।
मन अमल-विमल तन मेरु-सा अचल,
नहीं परवाह करे दु:खपीर की।।यह.।।1।।

2. राजग्रही के निकट चण्डकोशिक विकट,
एक नाग रहे नित्य फुफकारता।
उससे डरे पशु-पंछी डरे नर-नारी पंथी,
नहीं किसी की शक्ति से वह हारता।
सर्प देता है व्यथा जानी प्रभु ने कथा,
चले समझाने गति ले समीर की।।यह.।।2।।

3. वह नाग अतिकाला विषधर मतवाला,
खड़ा बांबी पे प्रभु को देख जल रहा।
उसने फन फैलाया, झूम-झूम लहराया,
कई बार धरती से उछल गया।
तेज आँखों से निहार, दंश लिया कर वार,
पीड़ा हुई जैसे विषबुझे तीर की।।यह.।।3।।

4 दयासिन्धु मुस्कराए, उसपे द्वेष नहीं लाए,
बोले बन्धु नागराज! शान्त, शान्त हो
क्रोध त्याग दो सुजान, क्षमामृत करो पान,
जीवन बिगड़े पंथ भ्रान्त हो।
सुन प्रभु के उद्‌गार , किया नाग ने उद्धार,
'केवल मुनि' शान्ति धारी हिमवीर की।।यह .।।4।।

मत खावो लीलोती

मन खावो लीलोती, बदलो नहीं छूटे पर-भव भोगवे।।टेर।।

1. कांदा-लसण-गाजर-मूला जमीकंद की जात।
'जीव' अनंता कहा जिनवरजी, मत करजो कोई घातजी।। मत खावो।।1।

2. बोर अभक्ष्य कहा वैद्यक में, और लटां पड़ जावे।
लगे मांस का दोष जिसी में, जाणत फिर किम खावेजी।। मतखावो।।2।।

3. खरबुजा और काकड़ी-दाड़म-नींबू मांय।
बीज घणा और लटा उपजे, अणदेख्या ही खायजी।। मत खावो ।।3।।

4. तोरूं भिण्डी-गोभी-नागर-बेल, पता बहु खाया।
तृप्त नहीं हुवे जीवड़ोस रे, श्री जिनवर फरमाया जी।। मतखावो।।4।।

5. बिन मर्यादा रस्ते चलता, खेत देख बलि जावे।
खेती वालो जंग मचावे, ले सोटो धमकावे जी।। मत खावो।।5।।

6. घोला दिन रो धाड़ो पाड़े, रात पड़िया फिर जावे।
राज-कचेड़ी जाय पुकारे, चोर-अन्यायी थावेजी।। मत खावो।।6।।

7. सुण उपदेश राखो मन दृढ़ता, धारो व्रत अरु नेम।
अभयदान दे सुधारो राखो धर्म सूं प्रेमजी।। मत खावो।।7।।

8. उगणीसे सितंतर खण्डप 'संतोग'।
मुनि उपकार ऋषि मोतीलाल 'कहे',
हरी खाने का त्याग करो नर-नार जी ।। मत खावो.।।8।।

म्हारा आलीजा भरतार

(तर्ज-म्हाने जयपुर रो लहरियो)

म्हारा आलीजा भरतार, म्हारा हिवड़ै रा हार।
म्हारी प्रीतडली ने मत छिटकाइजो हो जम्बूजी 2,
हिल-मिल संग जाणो ।। टेर।।

1. म्हारी गुणवंती नार, आपां लेवां संयम भार।
थाने मुक्तियां रा मेला में लेन चालूँ ए सजनी।। हिल.।।1।।

2. म्हाने परणी लाया लार, अबे छोड़ो निराधार।
म्हारे हथलेवे रो वचन निभाइजो हो जम्बूजी 2।। हिल.।।2।।

3. चालो-चालो म्हारे लार, म्हे भी ले जावें ने तैयार।
थांने एकलड़ी नहीं छोड़ूँ वचन पालूँ ए सजनी 2।। हिल.।।3।।

4. नाजुक है जवानी थारी, वाली उपरीया म्हारी।
थोड़ी जवानि ढलवा दो, सयंम लीजो हो जम्बूजी 2।। हिल.।।4।।

5. प्यारी जवानी दीवानी, नदी पूर को ज्यों पानी।
ढलता घणी देर नहीं लागे, ए सजनी 2।। हिल.।।5।।

6. नहीं वालुड़ा खेलाया, नहीं दूध म्हों पिलाया।
नहीं सावणिये रा झूला ही झुलाया हो जम्बूजी2।। हिल.।।6।।

7. प्यारी यो है मायाजाल, जाणो सपनो रो खचाल।।
थांने मुक्तियाँ रा झूला में, झुलाऊँ ए सजनी 2।। हिल.।।7।।
8. थांने कुणी तो भरमाया, सांचा प्रेम ने तोड़ाया।
म्हारे बादलिया ज्यूं नेणा पानी, बरसे हो जम्बूजी 2।। हिल.।।8।।
9. स्वामी सुधर्मा समझायो, ज्ञान अनमोल सुणायो।
म्हारा हिवड़ा में गहरो रंग छायो ए सजनी 2।। हिल.।।9।।
10. म्हारा सजन साजनिया, बोली आठों ही कामणियां।
प्रीति जोड़ो रे बादीला, काया कलपे हो जम्बूजी 2।। हिल.।।10।।
11. बोले जम्बूजी कुमार, सुनलो चन्दावदनी नार।
धन-यौवन-काया में, कांई रीझे ए सजनी 2।। हिल.।।11।।
12. म्हारा रसिया रसिक, म्हाने भली दीनी सीख।
म्हाभी संयम लेवा ने, साथे चालों हो जम्बूजी 2।। हिल.।।12।।

शादी रचा के क्या करूँ

(तर्ज-मेरे लिए जहान में...........खानदान)

माता! मेरी तू ही बता, शादी रचके क्या करूँ?
रहना नहीं सदा यहाँ घर बसाके क्या करूँ।। टेर।।

1. भोलीभाली किशोरियाँ, स्वप्नों के महल सज रहीं।
आशाएँ उनकी तोड़कर उनको रुलाके क्या करूँ ? ।।1।।
2. एक दिन भी माँ ! मुझे नहीं दुनिया के खेल खेलना।
सेहरा बंधाके क्या करूँ, कंगन बंधाके क्या करूँ ? ।।2।।
3. मिट्टी के इस शरीर पर, शृंगार करके क्या करूँ ?
कपड़े पहिनके क्या करूँ ? भूषण सजाके क्या करूँ ? ।।3।।
4. जो ढलने वाला रूप है, पिछले प्रहर की धूप है।
मुरझाने वाला फूल है, उस पे लुभाके क्या करूँ ? ।।4।।

5. दुनिया के झूठे ऐश में, दुनिया के झूठे प्यार में।
फंसकर अमूल्य रत्न-सा, नर-तन गँवा के क्या करूँ ? ।।5।।
6. 'केवल' जहाँ प्रभु बसे, मेरी वह नगरी दूर है।
रैनबसेरा है जहाँ प्रभु को भुलाके क्या करूँ ? ।।6।।

सुखी न मिलियो एक भी

मैं तो ढूँढ्यो रे सहु जग माँय, सुखी न मिलियो एक भी ।। टेर।।
1. हाट-हवेली भरिया खजाना, भोगण वालो नांय।
भाटो-भाटो देव मनावे, पुत्र के बिना झूरे माय।। सुखी.।।1।।
2. पइसो पायो नाम कमायो, करे सवाई बात।
कँवर साहब कपूता जन्म्याँ, बापूजी रोवे दिन-रात।। सुखी.।।2।।
3 पदमण मिली दयालु घर में, सेठ न लावो लेय।
मिल कर्कसा नार कर्म सूं, खावे ना खावण देय।। सुखी ।।3।।
4. छप्पर-पलंग है महल-मालिया, जाली झरोखादार।
बिना कंथ के झूरे कामनी, खारा लागे रे घर-बार।। सुखी.।।4।।
5. करी कमाई लक्ष्मी पाई, बंगला मोटर-कार
बिना नार के लगे अलूणा, छोड़ गई रे मंझधार।। सुखी.।।5।।
6. देह मिली देवां-सी सुन्दर, रोग न छोड़े लार।
क्रोड़पतियां ने खाता देखिया, पालक की सब्जी लूखो आहार।। सुखी.।।6।।
7. पलटन-सी वढ़ रही है घर में, पर आमदनी नांय।
कोई कै कन्या चार कुंवारी, कोई कमावा नहीं जाय।। सुखी.।।7।।
8. एक उदर का जाया लड़े नित, कोई के बहु परिवार।
कोई कंवारा कोई दुःखियारा, कोई दीवाल्या कर्जदार।। सुखी.।।8।।
9. धन-वैभव-पद पायो ऊँचो, नहीं बोलन को ढंग।
कवि-पण्डित-लेखक-ज्ञानी ने, पइस्या सूं देख्या तंग।।सुख.।।9।।

10. कोई के कांई कमी है घर में, कोई के कांई दुःख।
इण संसार समुंद्र मांही, दुःख तो घणो ने थोड़ो सुख ।। सुखी.।।10।।

11. इण जगती सूं जो मुख मोड़िया, लाग्या धर्म के पंथ।
मन ने जीत्या 'जीत' जगत् में, सांचा सुखी है निर्गन्थ।। सुखी.।।11।।

मौत की हवा का झोंका

मौत की हवा का झोंका इक आयेगा।
जिन्दगी का वृक्ष तेरा टूट जायेगा। टेर।।

1. अड़ोसी-पड़ोसी कई खुशियाँ मनायेंगे।
प्रेमी लोग कई आँख आँसू भी बहायेंगे।
हँसें चाये रोयें, तीर छूट जायेगा।
जिन्दगी का वृक्ष तेरा टूट जायेगा।। मौत.।।1।।

2. बिल्ली के मुँह में चढ़ी चुहियों का जोर क्या?
बगुले के मुँह में चढ़ी मछली की दौड़ क्या?
लगत ही चोट घड़ा फूट जायेगा।
जिन्दगी का वृक्ष तेरा टूट जायेगा।। मौत.।।2।।

3. जन्मधारी कोई भी न आज तक अचल रहा।
चला कोई चल पड़ेगा, पथ सदा चल रहा।।
क्या करेगा यदि खर्चा खूट जायेगा।
जिन्दगी का वृक्ष तेरा टूट जायेगा। मौत.।।3।।

4. रास्ते के वास्ते सामान कुछ तो जोड़ले।
भौतिक सुखों में भया मुख तू मोड़ले।
राजसी महलों में प्रभु को नहीं पायेगा।
जिन्दगी का वृक्ष तेरा टूट जायेगा।। मौत.।।4।।

5. पैसे के वास्ते प्रभु को जो भूलता।
कोई एक पैसा छोड़ प्रभु पद झूलता।

'धन्ना मुनि' ज्ञानभरा गीत गायेगा।
जिन्दगी का वृक्ष तेरा टूट जायेगा।। मौत.।।5।।

मेरा मान न बन नादान

(तर्ज-तेरे द्वार खड़ा भगवान्......)

मेरा मान न बन नादान, अरे कर ले रे करणी।
तेरा होगा बड़ा रे कल्याण, कि एक दिन पायेगा तू निर्वाण।।टेर।।

1. लाख चौरसी योनी भंवर में, समय अनंत गँवाया।
प्रबल पुण्य से दुःख उठाते, यह मानव-तन पाया।
अब चेत जरा रे इनसान, थोड़ा तो कर ले धर्म और ध्यान।।
अरे.।।1।।

2. भाई-बहन मां-बाप देख रे, तेरे यह नाति अठारह।
मृत्यु आयेगी जब तेरे सिर, कोई न बचावणहारा रे।
है काल बड़ा रे बलवान, घड़ी-भर भजले जरा भगवान्।।
अरे.।।2।।

3. देह-महल-धन-धान्य-बाग में, मस्त बना मतवारा।
मान जिसे तू कहे तू मेरा, वह झूठा जग पसारा रे।
है चार दिनों का तू मेहमान, झोली में भरले जरा सामान।।
अरे.।।3।।

4. छोड़ अरे जंजाल जगत् का, ले ले जिनन्द प्रभु का सहारा।
तीन लोक में 'पारस' कहता, धर्म ही तारणहारा रे।
कर दान-शील-तप-भाव सुन ले, गुरु 'केवल' फरमान।।
अरे.।।4।।

यह मीठा प्रेम का प्याला

यह मीठा प्रेम का प्याला, कोई पीयेगा किस्मत वाला।। टेर।।

1. प्रेम गुरु है, प्रेम है चेला, प्रेम धर्म है, प्रेम है मेला।।
प्रेम की फेरो माला, कोई फरेगा किस्मत वाला।। यह.।।1।।
2. प्रेम बिना प्रभु भी नहीं मिलते, मन के क्लेश कभी नहीं टलते।
प्रेम करे उजियारा, कोई करेगा किस्मत वाला।। यह.।।2।।
3. प्रेमी सबके कष्ट मिटावे, लाखों से दुराचार छुडावे।
प्रेम में हो मतवाला, कोई होवेगा किस्मत वाला।। यह.।।3।।
4. प्रेमी सुख मुक्ति का पावे, नरकों में हरगिज नहीं जावे।
प्रेम का पंथ निराला, कोई चलेगा किस्मत वाला।। यह.।।5।।
5. प्राणी मात्र का प्रेम मन्त्र है, जीवन का बस एक तन्त्र है।
प्रेम धर्म है आला, कोई पायेगा किस्मत वाला।। यह.।।6।।

यदि भला किसी का कर न सको तो

यदि भला किसी का कर न सको तो, बुरा किसी का मत करना।
अमृत न पिलाने को घर में तो, जहर पिलाते भी डरना।। टेर।।
1. यदि सत्य मधुर न बोल सको तो, झुठ कठिन भी मत बोलो।
यदि मौन रखा सबसे अच्छा, कम से कम विष मत घोलो।।
यदि.।।1।।
2. बोलो तो पहले तुम तोलो, फिर मुख ताला खोला करना।
यदि घर न किसी का बांध सको तो, झोंपड़िया न जला देना।।
यदि.।।2।।
3. यदि मरहम-पट्टी कर न सको तो, खार नमक न लगा देना।
यदि दीपक बनकर जल न सको तो, अन्धकार भी मत करना।।
यदि.।।3।।
4. यदि फूल नहीं बन सकते तो, कांटे बनकर न बिखर जाना।
मानव बनकर सहला न सको तो, दिल भी किसी का दुखाना ना।
यदि.।।4।।

5. यदि देव नहीं बन सकते तो, दानव बनकर भी मत मरना।
यदि सदाचार अपना न सको, तो पापों में मत पग धरना।।
यदि.।।5।।

6. किन्तु न कभी शैतान बनो, और कभी न तुम हैवान बनो।
'मुनि पुष्प' अगर भगवान् नहीं तो कम से कम इनसान बनो।।
यदि.।।6।।

सतगुरू नाम ठिकाना है

1. यह संसार कागज की पुड़ीया, बूंद पड़े धूड़िल जाना है।
यह संसार कांटे की बाड़ी, उलझ-उलझ मर जाना है।।1।।
2. यह संसार झाड़ और झांखर, आग लगे जलि जाना है।
कहत 'कबीर' सुनो भई साधो, सतगुरु नाम ठिकाना है।।2।।

सट्टेबाज अपनी पत्नी से

(तर्ज-सर जो तेरा चकराए....)

लोग तुझे बहकाये, तू बात में आ जाए।
जल्दी से जल्दी दे-दे नगदी, काहे घबराए 2।। टेर।।

1. रुपये लगे न पाई, मुफ्त में हो कमाई।
दो घाटे के फेर-बदल में चाटे दूध-मलाई।
सुन-सुन-सुन, अरे ओ री सुन, इस धन्धे में बड़े-बड़े गुण।
बाबाजी से फीचर लाया क्यों ना आजमाए।।
काहे.।।1।।

2. घर मालिक का झगड़ा, कर्जदार का रगड़ा।
एक दिन में सब फंदा छूटे, पड़े दाव जो तकड़ा।
सुन-सुन-सुन, अरे ओरी सुन, इस धन्धे में बड़े-बड़े गुण।

बाबाजी से फीचर लाया क्यों ना आजमाए।।

काहे.।।2।।

3. लाऊँ 'फोर्ड' गाड़ी, नई सिल्क की साड़ी।
साड़ी पहन कर ऐसी लगेगी, जैसे हो नई लाडी।
सुन-सुन-सुन, अरे ओ री सुन, इस धन्धे में बड़े-बड़े गुण।
बाबाजी से फीचर लाया, क्यों ना आजमाए।।

काहे.।।3।।

4. क्या स्टुडेण्ट क्या मास्टर ? क्या पेसेन्ट क्या डॉक्टर ?
'केवलमुनि' सब सट्टा करते क्या किस और क्या मिस्टर?
सुन-सुन-सुन, अरे ओ री सुन, इस धन्धे में बड़े-बड़े गुण।
बाबाजी से फीचर लाया क्यों न आजामए।।

काहे.।।4।।

जिनजी का प्याला

(तर्ज-आने वाले कम की तुम.....)

ले लो रे कोई जिनजी का प्याला, आवाज लगाऊँ में गली-गली
जिनवाणी के हीरे-मोती, फेंक रहे गुरु गली-गली।। टेर।।

1. दौलत के दीवानों सुन लो, एक दिन ऐसा आयेगा।
धनदौलत और माल खजाना, पड़ा यहीं रह जायेगा।
कंचन काया माटी होगी, चर्चा होगी गली-गली।।

ले लो रे.।।1।।

2. मित्र-प्यारे सगे-सम्बन्धी, एक दिन तुझे भुलायेंगे।
कल तक जो अपना कहते थे, अग्नि में तुझे सुलायेंगे।
जगत् सराय दो दिन की है, आखिर होगी चलाचली।।

ले लो रे.।।3।।

5. यदि देव नहीं बन सकते तो, दानव बनकर भी मत मरना।
यदि सदाचार अपना न सको, तो पापों में मत पग धरना।।
यदि.।।5।।

6. किन्तु न कभी शैतान बनो, और कभी न तुम हैवान बनो।
'मुनि पुष्प' अगर भगवान् नहीं तो कम से कम इनसान बनो।।
यदि.।।6।।

सतगुरू नाम ठिकाना है

1. यह संसार कागज की पुड़ीया, बूंद पड़े धूड़िल जाना है।
यह संसार कांटे की बाड़ी, उलझ-उलझ मर जाना है।।1।।
2. यह संसार झाड़ और झांखर, आग लगे जलि जाना है।
कहत 'कबीर' सुनो भई साधो, सतगुरु नाम ठिकाना है।।2।।

सट्टेबाज अपनी पत्नी से

(तर्ज-सर जो तेरा चकराए....)

लोग तुझे बहकाये, तू बात में आ जाए।
जल्दी से जल्दी दे-दे नगदी, काहे घबराए 2।। टेर।।

1. रुपये लगे न पाई, मुफ्त में हो कमाई।
दो घाटे के फेर-बदल में चाटे दूध-मलाई।
सुन-सुन-सुन, अरे ओ री सुन, इस धन्धे में बड़े-बड़े गुण।
बाबाजी से फीचर लाया क्यों ना आजमाए।।
काहे.।।1।।

2. घर मालिक का झगड़ा, कर्जदार का रगड़ा।
एक दिन में सब फंदा छूटे, पड़े दाव जो तकड़ा।
सुन-सुन-सुन, अरे ओरी सुन, इस धन्धे में बड़े-बड़े गुण।

बाबाजी से फीचर लाया क्यों ना आजमाए।।
काहे.।।2।।

3. लाऊँ 'फोर्ड' गाड़ी, नई सिल्क की साड़ी।
साड़ी पहन कर ऐसी लगेगी, जैसे हो नई लाडी।
सुन-सुन-सुन, अरे ओ री सुन, इस धन्धे में बड़े-बड़े गुण।
बाबाजी से फीचर लाया, क्यों ना आजमाए।।
काहे.।।3।।

4. क्या स्टुडेण्ट क्या मास्टर ? क्या पेसेन्ट क्या डॉक्टर ?
'केवलमुनि' सब सट्टा करते क्या किस और क्या मिस्टर?
सुन-सुन-सुन, अरे ओ री सुन, इस धन्धे में बड़े-बड़े गुण।
बाबाजी से फीचर लाया क्यों न आजामए।।
काहे.।।4।।

जिनजी का प्याला

(तर्ज-आने वाले कम की तुम.....)

ले लो रे कोई जिनजी का प्याला, आवाज लगाऊँ में गली-गली
जिनवाणी के हीरे-मोती, फेंक रहे गुरु गली-गली।। टेर।।

1. दौलत के दीवानों सुन लो, एक दिन ऐसा आयेगा।
धनदौलत और माल खजाना, पड़ा यहीं रह जायेगा।
कंचन काया माटी होगी, चर्चा होगी गली-गली।।
ले लो रे.।।1।।

2. मित्र-प्यारे सगे-सम्बन्धी, एक दिन तुझे भुलायेंगे।
कल तक जो अपना कहते थे, अग्नि में तुझे सुलायेंगे।
जगत् सराय दो दिन की है, आखिर होगी चलाचली।।
ले लो रे.।।3।।

3. जिसको अपना कह कर बन्दे, क्यों इतना इठलाता है।
छोड़ देंगे सभी विपित्त पर कोई साथ न जाता है।
दो दिन का है चमन खिलौना, मुरझायेगी कली-कली।।
ले लो रे.।।3।।

4. क्यों करता है तेरी-मेरी, तजदे इस अभिमान को।
झूठे धन्धे छोड़दे बन्दे, जपले प्रभु के नाम को।।
आया समय फिर ना मिलेगा, पछतायेगा गली-गली।।
ले लो रे.।।4।।

तीन मनोरथ

(तर्ज-कोरो काजळियो....)

वो दिन धन्य होसी, जद करसूं धर्म-विचार।। टेर।।

1. एक जीव के कारणे कियो आरंभ बेशुमार।।
वो दिन धन्य.।।1।।

2. परिग्रह की सीमना नहीं, कांई दिन-दिन बढ़े अपार।
वो दिन धन्य.।।2।।

3. धर्म-ध्यान निपजे नहीं, नहीं कीनो पर उपकार।।
वो दिन धन्य.।।3।।

4. आरम्भ-परिग्रह छोड़ने, निवृत्त होसूं जिण वार।
वो दिन धन्य।।4।।

5. भव-भव में भटकत फिरियो, कांई चौरासी मंझार।।
वो दिन धन्य.।।5।।

6. साधु या श्रावकपणो, नहीं कीनो मैं अंगीकार।।
वो दिन धन्य.।।6।।

7. ब्रह्मचर्य व्रत पाल सूं, कांई बणसु जद अणगार।।
वो दिन धन्य.।।7।।

8. पंचमहाव्रत धारके, कांई वणसू जद अणगार।।
वो दिन धन्य.।।8।।
9. अन्त संथारो धारसूं, अठारह पाप परिहार।।
वो दिन धन्य.।।9।।
10. अरहन्त-सिद्ध-साधु-केवली, ऐ चारों शरणाधार।।
वो दिन धन्य.।।10।।
11. सब ही जीव खमावसूं, कांई खमसूं बारम्बार।।
वो दिन धन्य.।।11।।
12. शुद्धभावे पण्डितमरण, कांई करसूं देह विसार।।
वो दिन धन्य.।। 12।।
13. तीन मनोरथ एह कहया, जो नित चिंते नर-नार।।
वो दिन धन्य।। 13।।
14. इण भव परभव जीव के, कांई खर्ची बांधे लार।।
वो दिन धन्य.।।14।।
15. 'जीतमल' की विनती, कांई सुणजो जगदाधार।।
वो दिन धन्य.।।15।।
16. तीन मनोरथ पूरजो, म्हारे होसी मंगलाचार।।
वो दिन धन्य. ।।16।।

सगळा ठाट अठे रह जासी

सगळा ठाठ अठे रह जासी, बांस रो बणसी मांचलियो।
जीव अकेली जासी साथे, देसी खाण्डो तावणियों।।टेर।।
1. घट में थारे सांस हुए जद, गण थांरा सगळा गासी।
कोई काको-बाबो कहने, खीर-खाण्ड-रोटी लाता।
सांस निकालते, आँख बदलते, झट मंगवासी खापणियो।।
सागळा.।।1।।

3. जिसको अपना कह कर बन्दे, क्यों इतना इटलाता है।
छोड़ देंगे सभी विपित्त पर कोई साथ न जाता है।
दो दिन का है चमन खिलौना, मुरझायेगी कली-कली॥
ले लो रे.॥3॥

4. क्यों करता है तेरी-मेरी, तजदे इस अभिमान को।
झूठे धन्धे छोड़दे बन्दे, जपले प्रभु के नाम को॥
आया समय फिर ना मिलेगा, पछतायेगा गली-गली॥
ले लो रे.॥4॥

तीन मनोरथ

(तर्ज-कोरो काजळियो....)

वो दिन धन्य होसी, जद करसूं धर्म-विचार॥ टेर॥

1. एक जीव के कारणे कियो आरंभ वेशुमार॥
वो दिन धन्य.॥1॥

2. परिग्रह की सीमना नहीं, कांई दिन-दिन वढ़े अपार।
वो दिन धन्य.॥2॥

3. धर्म-ध्यान निपजे नहीं, नहीं कीनो पर उपकार॥
वो दिन धन्य.॥3॥

4. आरम्भ-परिग्रह छोड़ने, निवृत्त होसूं जिण वार।
वो दिन धन्य॥4॥

5. भव-भव में भटकत फिरियो, कांई चौरासी मंझार॥
वो दिन धन्य.॥5॥

6. साधु या श्रावकपणो, नहीं कीनो मैं अंगीकार॥
वो दिन धन्य.॥6॥

7. व्रह्मचर्य व्रत पाल सूं, कांई बणसु जद अणगार॥
वो दिन धन्य.॥7॥

8. पंचमहाव्रत धारके, कांई बणसु जद अणगार।।
वो दिन धन्य.।।8।।

9. अन्त संथारो धारसूं, अठारह पाप परिहार।।
वो दिन धन्य.।।9।।

10. अरहन्त-सिद्ध-साधु-केवली, ऐ चारों शरणाधार।।
वो दिन धन्य.।।10।।

11. सब ही जीव खमावसूं, कांई खमसूं बारम्बार।।
वो दिन धन्य.।।11।।

12. शुद्धभावे पण्डितमरण, कांई करसूं देह विसार।।
वो दिन धन्य.।। 12।।

13. तीन मनोरथ एह कहया, जो नित चिंते नर-नार।।
वो दिन धन्य।। 13।।

14. इण भव परभव जीव के, कांई खर्ची बांधे लार।।
वो दिन धन्य.।।14।।

15. 'जीतमल' की विनती, कांई सुणजो जगदाधार।।
वो दिन धन्य.।।15।।

16. तीन मनोरथ पूरजो, म्हारे होसी मंगलाचार।।
वो दिन धन्य. ।।16।।

सगळा ठाट अठे रह जासी

सगळा ठाठ अठे रह जासी, बांस रो बणसी मांचलियो।
जीव अकेली जासी साथे, देसी खाण्डो तावणियों।।टेर।।

1. घट में थारे सांस हुए जद, गण थांरा सगळा गासी।
कोई काको-बाबो कहने, खीर-खाण्ड-रोटी लाता।
सांस निकालते, आँख बदलते, झट मंगवासी खापणियो।।
सागळा.।।1।।

2. लाख-करोड़ कमावण सारू, कितरा खोटा कर्म किया।
परमेश्वर की सौगन्ध खाकर, कूड़ा खाता सांच किया।
आँख बदलते, सांस निकलते, आसी दूजो खावणियो।।
सगळा.।।2।।

3. गोरी-गोरी काया थारी, तू देखे निरखण लागे।
सोना-चाँदी रा गहणा सू नश्वर देह ने तू ढांके।
आँख बदलते, सांस निकलते, माटी होसी जोबनियो।
संगळा.।।3।।

4. नहीं छोड़ेला कपड़ा-लत्ता, मेख दान्त री ले लेसी।
थारे ही जायोड़ो थारे, तन ने लांपो दे देसी।
धुओं हुवेला, राख बणेला, नहीं बचेला तातणियो।।
सगळा.।।4।।

5. गुरुदेव चेतावे थाने, शुद्ध धर्म ने थे धारो।
पाप कर्म ने सगळा छोड़ो जिण से होवे भव पारो।
सुवह-शाम लो, प्रभु नाम लो, सफल बणेला जीवणियो।।
सगळा।।5।।

जैन धर्म जय पावे

(तर्ज-यह मीठा प्रेम का प्याला....)

सर जावे तो जावे, मेरा जैन धर्म जय पावे।। टेर।।

1. धर्म के खातिर 'महावीर' स्वामी, कानों में खील ठोकावे।।
मेरा जैन धर्म.।।1।।

2. धर्म के खातिर ' पारस' स्वामी, जलता नाग बचावे।
मेरा जैन धर्म.।।2।।

3. धर्म के खातिर 'गौतम' स्वामी, घर-घर अलख जगावे।।
मेरा जैन धर्म.।।3।।

4. धर्म के खातिर 'सेठ सुदर्शन' सूली पर चढ़ जावे।।
मेरा जैन धर्म.।।4।।
5. धर्म के खातिर 'हरिश्चन्द्र' राजा, भंगी-कर बिक जावे।
मेरा जैन धर्म.।।5।।
6. धर्म के खातिर ' मोरध्वज' नृप, सुत पर आरा चलावे ।।
मेरा जैन धर्म.।।6।।
7. धर्म के खातिर 'जम्बू' स्वामी, सुख-वैभव छिटकावे।।
मेरा जैन धर्म.।।7।।
8. धर्म के खातिर 'मुनिवर' सारे, नंगे पैर धावे।।
मेरा जैन धर्म.।।8।।

संयम सुखकारी

संयम (दीक्षा) सुखकारी, जिन-आज्ञा अनुसार।
धन्य पाले जे नर-नार ।। टेर।।
सुखकारी आनन्दकारी धन्य जाऊँ मैं बलिहार।। संयम.।। टेर।।
1. कर्म-मैल ने शीघ्र हटावे, आतमना गुण सब प्रकटावे
जन्म-मरणना दुःख मिटावे, होवे परम कल्याण।। संयम.।।1।।
2. संयमना गुण प्रभु खुद गावे, हलुकर्मी जीवां मन भावे।
हुलस भाव से उठ अपनावे, मोह-ममता को मार।। संयम.।।2।।
3. परम औषधी संयम जाणो, तीन लोकनो सार पिछाणो।
शुद्ध संयम हृदय में आणो, अनुपम सुखनी खाण।। संयम.।।3।
4. त्याग रिद्ध संयम अनुरागे, जिन (प्रभु) आज्ञा ने राखे आगे।
निश-दिन संयम में चित्त लागे, धन्य-धन्य वे अणगार।।संयम.।।4।।
5. काम-कषाय को तज हुलसाई, निन्दा-विकथा दी छिटकाई।
तप-सयंम में लीन सदाई, धन जेनों अवतार।। संयम.।।5।।

दुःखमी आरो पाँचमो

सांभल हो गोतम! दुःखमो आरो तो होसी पांचमो ।। टेर।।

1. मोटा नगर होसी गामड़ा, गांवड़ा रा होसी रे मसान।
ऊँचा कुल रा छोरा-छोकरी, दीसेला दास समान।।
सांभल.।।1।।

2. राजा तो होसी जम सारखा, लालची होसी प्रधान।
ऊँचा तो कुल री नारियाँ, लाज-शरम देसी छोड़।।
सांभल.।।2।।

3. पुत्र-पितानो कहणो नांही मानसी, शिष्य-गुरु अविनीत।
ऊँचा कुल री केई नारियाँ, दीसेला वेश्या समान।।
सांभल.।।3।।

4. मिथ्यात्वी सूर बहुत पुजावसी, एक धर्म तणो भेद।
देवता रा दर्शन दुर्लभ पामसो, विद्या बहु जासी विच्छेद।।
सांभल.।।4।।

5. ब्राह्मण तो होसी धन का लोभिया, हिंसा में बतासी बहु धर्म।
केई मिथ्यात्वी होसी मानवी, मुश्किल निकलेगा ज्यांरो भ्रम।।
सांभल.।।5।।

6. वंश अनारज सुखिया होवसी, दुःखिया तो होसी सज्जन लोग।
काल-दुष्काल पड़सी अति घणो, उन्दर-सर्पादिक होसी थोक।
सांभल.।।7।।

7. अन्न में सरसाई थोड़ी होव-सी, आउखो पावेला पूरो नाय।
चौमासा लायक क्षेत्र साधु ने, थोड़ा मिलेला भारत मांय।।
सांभल.।।7।।

8. साधु-श्रावक री पडिमा-विच्छेद जावसी, शिष्य गुरु रा अविनीत।
गुरु चेला ने थोड़ा पढावसी, मुश्किल निभेला ज्यांरी प्रीत।।
सांभल.।।8।।

9. कुमाणस-क्लेशी घणा होवसी, अल्प होसी न्यायवंत।
हिन्दू राजा नीचा बाजसी, म्लेच्छ होसी बलवंत।।
सांभल.।।9।।

10. नीच कुल रा राजा बणसी, करसी खोटा-खोटा न्याय।
ज्यांरे घर में लोह लाधसी, सो धनवन्त कहलाय।।
सांभल.।।10।।

11. संवत् उगणीसे वर्ष इगेसठ, चित्तौड़ गढ चौमास।
गुरु 'नन्दलाल' तणा शिष्य जोड़ियो, अल्प कियो रे समास।।
सांभल.।।11।।

क्यों गर्व करे रे गेला

क्यों गर्व करे रे गेला, थोरी देह रेत में ठेला।। टेर।।

1. धन दौड़-दौड़ किया भेला, संग चले नहीं अधेला।। क्यों.।।1।।
2. यौवन में नार मिलेला, आखिर में वा दगो देवेला।। क्यों.।।2।।
3. थांने सतगुरु देवे हेला, करणी सूं नाव तिरेला।। क्यों.।।3।।

आधुनिक मंगलिक

1. सोना मंगलम्, चांदी मंगलम्, रुपया मंगलम, नारी मंगलम्।
2. पुत्र लोगुत्तमा, धन्धा लोगुत्तमा, तिजौरी लोगुत्तमा, दुकान का ग्राहक लोगुत्तमो।।
3. सासू शरणं पज्जामी, ससुरा शरणं पज्जामी, साला शरणं पज्जामी, साली शरणं पज्जामी।
4. इंकमटैक्स आफिसर का शरणा, रिश्वत का शरणा, काका का शरणा, नाना का शरणा।।
5. ये सब शरणा सुख करना और शरण नहीं कोई होगा, ये सब शरणा आदरे तो धनवान हो जावे।।

6. ये शरणा में अमृत बसे, सब सुखना भण्डार, नारी-गुरु ने आदरे, तो मनवांछित सुख दातार।।

स्व मा शान्ति पर मा अशान्ति

स्व मा शान्ति पर मा अशान्ति, स्व मा छे सुखनु धाम।
प्रभुजी म्हारे नथी जावूं परना ठाम।। टेर।।

1. कंचन ने कामिनी मां सुखनु लेश नहीं नाम।
पुद्गल पाछल पागल जीवों, गति मां फरे बेफाम।
प्रभुजी.।।1।।

2. समकितनी प्राप्ति स्व मा विचारे, पर मा मिथ्यात्वना फेर।
दुःख राडुंगर परना विचरे, स्व मा छे सुखनी लहर।।
प्रभुजी.।।2।।

3. आगमवाणी ए उपदेशो, पर मा जाशो राम-भक्ति योगे।
स्व मा ठहरवूं, उत्तमनु ए काम।।
प्रभुजी.।।3।।

कषाय-त्याग

(तर्ज-आओ लोगों तुम्हें दिखाये झांकी हिन्दुस्तान की)

सुनलो जैनों कान लगाकर, वाणी तारणहार की।
छोड़ो क्रोध-लोभ-मद-माया, गलियां नरक-द्वार की।
हित की बात है, हित की बात है।। टेर।।

1. क्रोध-गुस्से से तन निर्बल बनता, लोही विषमय बन जाता।
तेज चला जाता आंखों का, ज्ञानरहित मन बन जाता।
अकल न जाने कहाँ जाती है, ज्ञानी और गंवार की।।
सुनलो. ।।1।।

2. मान-मानी के सब दुश्मन बनते, कोई मित्र न बनता है।
कोई उसकी बात न माने, साथ न कोई देता है।
फिर भी कहता हम हैं चौड़े, संकड़ी राह बाजार की।।
सुनलो. ।।2।।

3. माया-औरों के लिये जाल बिछाता, मगर वही उसमें फंसता।
औरों के लिए गड्ढा खोदे, मगर वही उसमें गिरता ।
सच कहता हूँ जग में माया, जननी दुःख अपार की।।
सुनलो.।।3।।

4. लोभ-पूज्य पिता से लड़ता लोभी, भाई की हत्या करता।
केवल नश्वर धन के खातिर, दुनिया से दंगा करता।
लोभ पाप का बाप न करता, परवाह अत्याचार की।।
सुनलो.।।4।।

5. कवि-इसको त्यागे वे भविजन, भवभव में सुख पायेंगे।
जन्म, जरा और मरण मिटाकर, शिवनगरी में जायेंगे।
'पारस' कहना सुनलो जैनों, गुरु 'केवल' अनगार की।।
सुनलो.।।4।।

धन्ना-सुभद्रा संवाद

(तर्ज-मन डोले मेरा मन डोले.....)

सुन सजनी, सच्ची कह कथनी, तेरा मुखड़ा आज उदास।
क्यों यह बहती आँसू-धार है 2।। सुन. ।। टेर।।

1. धन्ना - शालिभद्र-सा जिसके भाई, उसके भाग्य सवाये 2।
फिर भी अचरज होता मुझको, नयन-नीर क्यों आये।
हो सजनी नयन-नीर क्यों आये।
कह सजनी सच [illegible] मुखड़ा [illegible]स रे।
क्यों [illegible] है 2 [illegible]।।

2. सुभद्रा - भैया ने वैराग्य रंग में काम-भोग बिसराया।
नितप्रति एक भाभी छिटकाता, योग उसे मन भाया।
हो स्वामी, योग उसे मनभाया।
समझाया समझ न पाया, सुन स्वामी आज उदास यूँ।
यह बहती आँसू-धार है 2।। सुन.।।2।।

3. धन्ना - कायर सुन री तेरा भाई एक-एक नारी छोड़े।
सिंहनी जाया शूरवीर तो, एक साथ मुँह मोड़े।
हो सजनी, एक साथ मुँह मोड़े।
जो करना, वह धीरे करना, यह तो अबला रीत री।
यह पुरुषों की रीत नहीं 2।। सुन.।।3।।

4. सुभद्रा - कह दिखलाना सहज है स्वामी, उसमें जोर न आये।
वह जननी का सच्चा जाया, जो करके दिखलाये।
हो स्वामी, जो करके दिखलाये।
धन-जन को दुल्हन-बंधन को सब त्याके सयंम धारना।
कोई बच्चा का खेल नहीं 2 ।।सुन.।।4।।

5. धन्ना - ठीक समय पर तूने सजनी सोता सिंह जगाया।
ले आज बतादूँ मेरी माँ ने कैसा दूध पिलाया।
हो मुझको कैसा दुध पिलाया।
नारी को, दुनियादारी को, यह चला मैं ठोकर मारके।
अब संयम पाल दिखाऊंगा 2।। सुन।।5।।

6. सुभद्रा - स्वामी-स्वामी कहाँ जाते हो, ह ँसी को साँच नाने।
फिर से ऐसा नहीं कहूँगी, मानो-मानो-मानो।
हो स्वामी, एक बार बस मानो।
यह तेरी चरणों की चेरी, इसे करदो क्षमा प्रदान।
तुम मत यों छोड़ चले जाना 2।। सुन.।।6।।

7. धन्ना - वचन-बाण का घायल सूरा, लौट कभी ना आये।
चाहे हो बलिदान प्राण का, अपनी टेक निभाये।
हो भगिन, अपनी टेक निभाये
जाऊंगा बस अब जाऊंगा, मैं कठिन तपस्या धारके।
अब मोक्ष-महल ही जाऊंगा 2।सुन.।।7।।

8. कवि - प्रणपालक अहो शूर-शिरोमणि, धन्य है धन्ना तुमको
इतिहास तुम्हारा पढ़-पढ़ होता, गर्व हमारे दिल को।।
हो धन्ना, गर्व हमारे दिल को।।
यह रमनी, धन्य तेरी जननी, जिसने जना है तुझ-सा पूत।
रे 'पारस' तुझ पर बलि जाये 2।सुन.।।8।।

सुबह का भूला

(तर्ज-राजा हो या रंक हो, नहीं दया किसी पे.....)

सुबह के भूले शाम को भी घर जो लौट आ जाते हैं।
वीर कहे रे गोयमा, फिर वो भूले नहीं कहाते है।। टेर।

1. 'अरणक' मुनि माता से जगे, जब भोगों ने बेभान किया।
'रहनेमि' को गुफा बिच फिर, राजुल ने सद्ज्ञान दिया।
'आसाढ़भूति' गिर संयम् से, वापिस सुपथ लग गये।
'बाहुबलि, भी ब्राह्मी और सुन्दरी के वचन से जाग गये।
'गोतम' गणधर भी आनन्द श्रावक को तुरन्त खमाते हैं।।
वीर.।।1।।

2. तृष्णा देख अनंत 'कपिल' ने, मिलता वैभव त्याग दिया।
वचन सुने 'कोशा' वेश्या के, त्याग, भद्र मुनि जागा था।
सैकड़ों का हत्यारा 'अंर्जुन' छः महीने में अमर हुआ।
'दर्शानभद्र' ने लोच किया तो, इन्द्र ने आ चरण छुआ।

'वासवदत्ता' वेश्या को भी संत सुमार्ग लगाते हैं।।
वीर.।।2।।

3. पूर्वभव सुन वीर प्रभु से 'मेघ मुनि' झट गये संभल।
सती 'चन्दना' के आँसू पर, गया वीर का अभिग्रह फल।
'सन्तकुमार' चक्रवर्ती झट निज स्वरूप पहचान लिया।
'नन्दनमणिकार' भाव दर्श से, देवत्व तत्त्व को प्राप्त किया।
पुत्र-मोह में फँसी 'गोतमी' जिसको बुद्ध जगाते हैं।।
वीर.।।3।।

4. 'इलाची' मोहे नटवी पर, मुनि दर्शन ने जगा दिया।
'नंदीषेण' ने मोह त्याग, सेवा में जीवन लगा दिया।
'विमलशाह' और 'श्रीदेवी' ने पुत्र-लालसा को त्यागा।
'श्रीमती' का संग पाकर भी, आर्द्र रहे थे वैरागी।
'चन्द्र प्रद्योतन' से शत्रु को, 'उदयन' राय खमाते हैं।।
वीर.।।4।।

5. आश्चर्य तुम संत बने हो, तारण-तिरण कहाते हों।
गिरे हुऐ को गले लगाते, या शिला सरकाते हो।
महावीर ने चण्डकोशिक सर्प का भी उद्धार किया।
तुमने किसी को तारा या घर-घर में विष फुंकार दिया।।
आग लगाने वाले भी मिट्टी में मिल जाते हैं।।
वीर.।।5।।

6. घृणा पापों से करो, पापी को कभी न धुतकारो रे।
'संघे शक्ति कलोयुगे' को हृदय मांय उतारो रे।
दीवारों को खड़ी करो तो 'स्वच्छन्दता' पन पाओगे।
संस्कृति का ढोला पीटकर, शिथिलाचार बढ़ावोगे।।
पतितोद्धारक वही 'जीत' जो प्रेम से गले लगाते हैं ।।
वीर.।।6।।

बड़ी साधु-वन्दना

1. नमूं अनन्त चौबीसा, ऋषभादिक महावीर।
इण आर्य क्षेत्र मां घाली धर्म नी सीर।। ।।1।।

2. महा अतुल वली नर, शूरवीर ने धीर।
तीरथ प्रवर्तायी, पहुंच्या भवजल तीर।। ।।2।।

3. सीमंधर-प्रमुख-जघन्य तीर्थंकर बीस।
छै अढ़ी द्वीप मां जयवन्ता जगदीश।। ।।3।।

4. एक सौ ने सित्तर, उत्कृष्ट पदे जगीश।
धन्य मोटा प्रभुजी, तेहने नमाऊँ शीश।। ।।4।।

5. केवली दोय क्रोड़ी, उत्कृष्ठ नव क्रोड़।
मुनि दोय सहस्र क्रोड़ी,उत्कृष्ठ नव सहस्र क्रोड।। 5।।

6. विचरे विदेह में, मोटा तपस्वी घोर।
भावे करी वन्द, टाले भवनी खोड़। ।।6।।

7. चौबीसे जिन ना, सघला ये गणधार।
चौदह सौ ने बावन, ते प्रणमूं सुखकार। ।।7।।

8. जिन-शासन नायक, धन्य श्रीवीर जिनन्द।
गौतमादिक गणधर, वर्ताव्यो आनन्द। ।।8।।

9. श्री ऋषभदेव ना भरतादिक सौ पूत।
वैराग्य मन आणी, संयम लियो अद्भुत। ।।9।।

10. केवल उपजाव्यू कर करणी करतूत।
जिन-मत दीपावी, सघला मोक्ष पहूँत। ।।10।।

11. श्री भरतेश्वरनो हुआ पटोधर आठ।
आदित्य जसादिक पहुंच्या शिवपुर वाट। ।।11।।

12. श्री जिन अन्तर ना, हुआ पाट असंख्य।
मुनि मुक्ति पहुंच्या, टाली कर्म नो वंक। ।।12।।

13. धन्य कपिल मुनिवर, नमि नमूं अणगार।
जेने तत्क्षण त्याग्यो, सहस्र रमणी परिवार। ।।3।।
14. मुनिवर हरिकेशी चित्त मुनिश्वर सारे।
शुद्ध संयम पाली पाम्या भव नो पार। ।।14।।
15. वलि इषुकार राजा, घर कमलावती नार।
भग्गू ने जशा, तेहना दोय कुमार। ।।15।।
16. छये छती ऋद्धि छाँडी ने, लीधो संयम भार।
इण अल्प काल माँ, पाम्या मोक्ष द्वार।। ।।16।।
17. वलि संयती राजा, हिरण आहिड़े जाय।
मुनिवर गर्द माली, आण्यो मार्ग ठाय।। ।।17।।
18. चारित्र लेईने भेट्या गुरु ना पाय।
क्षत्रीराज ऋषीश्वर, चर्चा करी चित्त लाय।। ।।18।।
19. वलि दशे चक्रवर्ती राज्य रमणी ऋद्धि छोड़।
दशे मुक्ति पोहच्या कुल ने शोभा चहोड़। ।।19।।
20. इण अवसर्पिणी मां आठ राम गया मोक्ष।
बलभद्र मुनिश्वर गया पंचम देवलोक। ।।20।।
21. दशार्णभ्रद राजा वीर बांद्या धरीमान।
पछी इन्द्र हटायो दियो छहकाय अभयदान। ।।21।।
22. कर कण्डु प्रमुख चारे प्रत्येक बुद्ध।
मुनि मुक्ति पहुंच्या जीत्या कर्म महाजुद्ध ।। 22।।
23. धन्य मोटा मुनिवर मृगापुत्र जगीश।
मुनिवर अनाथी जीत्या राग ने रीश । ।।23।।
24. वलि समुन्द्रपाल मुनि राजमती रहनेम।
केशी ने गोतम पाम्या शिवपुर क्षेम। ।।24।।
25. धन्य विजयघोष मुनि जयघोष वलि जाण।
श्री गर्गाचार्य पहुंच्या छे निर्वाण । ।।25।।

26. श्री उत्तराध्ययन मां जिनवर कर्‌या बखाण।
शुद्ध मन से ध्यावो मन मां धीरज आण। ।।26।।
27. वलि खंदक संन्यासी, राख्यो गोतमस्नेह।
महावीर समीपे पंचमहाव्रत लेह। ।।27।।
28. तप कठिन करीने झोंसी अपणी देह।
गया अच्युत्त देवलोके चवी लेसे भव-छेह। ।।28।।
29. वलि ऋषभदत्त मुनि सेठ सुदर्शन सार।
शिवराज ऋषीश्वर धन्य गांगेय अणगार। ।।29।।
30. शुद्ध संयम पाली, पाम्या केवल सार।
ये चारे मुनिवर पहुंच्या मोक्ष मँझार। ।।30।।
31. भगवन्त नी माता धन्य, धन्य सती देवानन्दा।
वलि सती जयंती छोड़ दिया घर फन्दा। ।।31।।
32. सति मुक्ति पहुंच्या वली ते वीरनी नन्द।
महासती सुदर्शना, घणी सतियों ना वृन्द। ।।32।।
33. वलि कार्तिक सेठे पड़िमा वही शूरवीर।
जीम्यो मोरा उपर तापस बलती खीर।। ।।33।।
34. पछी चारित्र लीधो मित्र एक सहस्र आठ धीर।
मरी हुओ शकेन्द्रच्यवी, लेसे भव तीर। ।।34।।
35. वलि राय उदायन, दियो भाणेजा ने राज।
पछी चारित्र लेइने, सार्‌या आत्मकाज। ।।35।।
36. गंगदत्त मुनि आनन्द, तिरण-तारण री जहाज।
कुशल मुनि रोहा, दिया घणां ने साज। ।।36।।
37. धन्य सुनक्षत्र मुनिवर, सर्वानुभूति अणगार।
आराधक होई ने, गया देवलोक मंझार। ।।37।।
38. चवी मुक्ति जासे, वलि सिंह मुनिश्वर सार।
बीजा पण मुनिवर, भगवती ।२। ।।38।।

39. श्रेणिक ना बेटा, मोटा मुनिवर मेघ।
तजी आठ अंतेउरी, आण्यो मन संवेग। ।।39।।

40. वीर पे व्रत लेइने, बान्धी तपनी तेग।
गया विजय विमाने, चबी लेसे शिव वेग। ।।40।।

41. धन्य थावच्चापुत्र, तजी बत्तीसे नार।
तेनी साथे निकल्या, पुरुष एक हजार। ।।41।।

42. शुकदेव संन्यासी, एक सहस्र शिष्य लार।
पंच शय सु शैलक, लीधो संयम भार। ।।42।।

43. सर्व सहस्र अढाई, घणा जीवों ने तार।
पुंडरीक गिरी उपर कीया पादोगमन संथार। ।।43।।

44. आराधक हुई ने कीधो खेवो पार।
हुआ मोटा मुनिवर, नाम लियाँ निस्तार। ।।44।।

45. धन्य जिनपाल मुनिवर, दोय धन्ना हुआ साध।
गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जासे आराध। ।।45।।

46. श्री मल्लिनाथ ना छह मित्र, महाबल प्रमुख मुनिराय।
सर्व मुक्ति सिधाव्या, मोटी पदवी पाय। ।।46।।

47. वलि जितशत्रु राजा, सुबुद्धि नामे प्रधान।
पोते चारित्र लेइने, पाम्या मोक्ष निधान। ।।47।।

48. धन्य तेतली मुनिवर, दियो छकाय अभयदान।
पोटिला प्रतिबोध्या, पाम्या केवलज्ञान। ।।48।।

49. धन्य पाँचे पांडव, तजी द्रोपदी नार।
स्थवि नी पासे, लीधो संयम भार। ।।49।।

50. श्री नेम वन्दन नो एहवो अभिग्रह कीध।
मास-मासखमण तप शत्रुंजय जई सिद्ध। ।।50।।

51. धर्मघोष तणा शिष्य, धर्मरुचि अणगार।
कीड़ियो की करुणा, आणी दया अपार। ।।51।।

52. कड़वा तुम्बा नो, कीधो सगलो आहार।
सर्वार्थसिद्ध पहुंच्या, चवी लीधो भव पार। ॥52॥
53. वलि पुंडरिक राजा-कुंडरिक डिगियो जाण।
पोते चारित्र लेइने ने घाली धर्म मा हाण। ॥53॥
54. सर्वार्थसिद्ध पहुंच्या चवी लेसे निर्वाण।
श्री ज्ञातासूत्र मां जिनवर कर्या बखाण। ॥54॥
55. गौतमादिक कुंवर सगा अठारह भ्रात।
सर्व अन्धक वृष्णि सुत, धारणी ज्योरी मात। ॥55॥
56. तजी आठ अन्तेउरी, काढी दीक्षा नी बात।
चारित्र लेइने, कीधो मुक्ति नो साथ। ॥56॥
57. श्री अनिक सेनादिक, छहो सहोदर भाय।
वसुदेव ना नन्दन, देवकी ज्यारी माय। ॥ 57॥
58. मद्दिलपुर नगरी, नाग गाहावई जाण।
सुलसा घर वधिया, सांभली नेमिनी वांण। ॥58॥
59. तजी बत्तीस-बत्तीस, अन्तेउरी निकल्या छिटकाय।
नल कुबर सामाणा, भेट्या श्री नेमि ना पाय। ॥59॥
60. करी छठ-छठ पारणा, मन में वैराग्य लाय।
एक मास संथारे, मुक्ति विराज्या जाय। ॥60॥
61. वली दारुक सारण, सुमुख-दुमुख मुनिराय।
वलि कुँवर आना दृष्टि, गया मुक्तिगढ़ मांय। ॥61॥
62. वसुदेवना नन्दन, धन्य धन्य गजसुकुमाल।
रूपे अतिसुन्दर, कलावन्त वय बाल। ॥62॥
63. श्री नेम समीपे, छोड़यो मोह जंजाल।
भिक्षुनी पड़िमा, गया मसाण महाकाल। ॥63॥
64. देखी सोमिल कोप्यो, मस्तक बाँधी पाल।
खेराना खीरा, सिर ठविया असराल। ॥64॥

65. मुनि नजर न खण्डी, मेटी मन नी झाल।
परीषह सहीने, मुक्ति गया तत्काल। ।।65।।

66. धन्य जाली-मयाली, उवयालादिक साध।
शाम्ब ने प्रद्युम्न, अनिरुद्ध साधु अगाध। ।।66।।

67. वलि सत्यनेमि दृढ़नेमि, करणी कीधी निर्बाध।
दशे मुक्ति पहुँच्या, जिनवर वचन आराध। ।।67।।

68. धन्य अर्जुनमाली, किया कदाग्रह दूर।
वीर पे व्रत लेईने, सत्यवादी हुआ शूर। ।।68।।

69. करी छठ-छठ पारणा, क्षमा करी भरपूर।
छह मास मांही, कर्म किया चकचूर। ।।69।।

70. कुँवर अइमुत्ते, दीठा गौतम स्वाम।
सुणी वीर नी वाणी, कीधो उत्तम काम। ।।70।।

71. चारित्र लेईने, पहुंच्या शिवपुर ठाम।
धुर आदि मकाई, अन्त अलक्ष मुनि नाम। ।।71।।

72. वलि कृष्ण रायनी, अग्रमहिषी आठ।
पुत्र-बहू दोय, संच्या पुण्य ना ठाठ। ।।72।।

73. यादव कुल सतियां, टाल्यो दुःख उच्चाट।
पहुंची शिवपुर मां, ए छे सूत्र नो पाठ। ।।73।।

74. श्रेणिक नी रानी, काली आदिक दस जाण।
दशे पुत्र वियोगे, सांभली वीरनी वाण। ।।74।।

75. चन्दनबाला पै, संयम लेई हुई जाण।
तप करी देह झौंसी पहुंच्या छे निर्वाण। ।।75।।

76 नंदादिक तेरह श्रेणिक नृपनी नार।
सघली चन्दनबाला पे लीधो संयम भार। ।।76।।

77. एक मास संथारे, पहुंची मुक्ति मंझार।
यो नेवुँ जणानो, अंतगढ मा अधिकार। ।।77।।

78. श्रेणिकना बेटा जालयादिक तेबीस।
वीर पे व्रत लेइने, पाल्यो विश्वाबीस। ।।78।।
79. तप कठिन करीने पूरी मन जागीश।
देवलोके पहुंच्या मोक्ष जासे तजी रीश। ।।79।।
80. काकन्दी नो धन्नो, तजी बत्तीसे नार।
महावीर समीपे, लीधो संयम भार। ।।80।।
81. करी छठ-छठ पारणा आयेम्बिल उज्झित आहार।
श्रीवीर बखाण्यो धन्य धन्नो अणगार। ।।81।।
82. एक मास संथारे - सवार्थसिद्ध पहंत।
महाविदेह क्षेत्र मां करसे भव नो अन्त। ।।82।।
83. धन्नानी रीते, हुआ नवे ही संत।
श्री अनुत्तरोवाई माँ, भाखी गया भगवंत। ।।83।।
84. सुबाहु प्रमुख पाँच-पाँच सौ नार।
तजी वीर पे लीधा, पाँच महाव्रत धार। ।।84।।
85. चारित्र लेइने पाल्यो निरतिचार।
देवलोके पहुंच्या 'सुख-विपाके' अधिकार। ।।85।।
86. श्रेणिक ना पौत्रा पउमादिक हुआ दस।
वीर पे व्रत लेइने काढयो देह नो कस। ।।86।।
87. संयम आराधी देवलोक मां जइ बस।
महाविदेह क्षेत्र मां मोक्ष जासे लेई जस। ।।87।।
88. बलभद्रना नन्दन, निषधादिक हुआ बार।
तजी पचास-पचास अन्तेउरी, त्याग दियो संसार। ।।88।।
89. सहु नेम समीपे, चार महाव्रत लीध।
सर्वार्थसिद्ध पहुंच्या, होसे विदेह मां सिद्ध। ।।89।।
90. धन्नो ने शलिभद्र, मुनीश्वरो नी जोड़।
नारी ना बन्धन, तत्क्षण नाख्या तोड़। ।।90।।

91. घर कुटुम्ब क़बीलो, धन कंचन नी कोड़।
मास मासखमण तप, टालसे भवनी खोड़। ।।91।।
92. श्री सुधर्मा स्वामी ना शिष्य धन-धन जम्बू स्वाम।
तजी आठ अन्तेउरी माता-पिता धन-धाम। ।।92।।
93. प्रभवादिक तारी पहुंच्या शिवपुर ठाम।
सूत्र प्रवर्तावी, जग मां राख्यूं नाम। ।।93।।
94. धन्य ढंढण मुनिवर, कृष्णरायना नन्द।
शुद्ध अभिग्रह पाली, टाल दियो भव फंद। ।।94।।
95. वलि खन्दक ऋषिनी देह उतारी खाल।
परीषह सहीने, भव फेरा दिया टाल। ।।95।।
96. वलि खन्दक ऋषिना हुआ पाँच सौ शिष्य।
घाणी मां पील्या मुक्ति गया तजी रीश। ।।96।।
97. संभूतिविजय शिष्य, भद्रबाहु मुनिराय।
चौदह पूर्वधारी, चन्द्रगुप्त आण्यो ठाय। ।।97।।
98. वलि आर्द्रकुमार मुनि, स्थूलिभद्र नन्दिषेण।
अरणक अइमुत्तो, मुनिश्वरोनी श्रेण। ।।99।।
99. चौबीसे जिनना मुनिश्वर संख्या अठावीस लख।
ऊपर सहस्र अड़तालिस सूत्र परम्परा भाख। ।।99।।
100. कोई उत्तम वांचो मोंढे जयणा राख।
उघाड़े मुख बोल्या, पाप लगे इम भाख। ।।100।।
101. धन्य मरुदेवी माता, ध्यायो निर्मल ध्यान।
गज-होदे पायो, निर्मल केवलज्ञान। ।।101।।
102. धन्य आदीश्वर नी पुत्री, ब्राह्मी सुन्दरी दोय।
चारित्र लेइने मुक्ति गई सिद्ध होय। ।।102।।
103. चौबीसे जिननी बड़ी शिष्यणी चौबीस।
सती मुक्ति पहुंच्या, पूरो मन जगीश ।।103।।

104. चौबीसे जिननां सर्वसाध्वी सार।
अड़तालीस लाख ने आठ से सित्तर हजार। ।।104।।

105. चेड़ानी पुत्री राखी धर्म से प्रीत।
राजीमती विजया, मृगावती सुविनीत। ।।105।।

106. पद्मावती, मयणरेहा, द्रोपदी दमयन्ती सीत।
इत्यादिक सतियां, गई जमारो जीत। ।।106।।

107. चौबीसे जिनना साधु-साध्वी सार।
गया मोक्ष देवलो, हृदय राखो धार। ।।107।।

108. इण अढाई द्वीप मां, घरड़ा तपसी बाल।
शुद्ध पंचमहाव्रतधारी नमो-नमो त्रिकाल। ।।108।।

109. इन जतियों-सतियों ना लीजे नितप्रति नाम।
शुद्ध मन से ध्यावो एह तिरण नो ठाम । ।।109।।

110. इण जतियों-सतियों सूं राखो उज्ज्वल भाव।
इम कहे ऋषि जयमल एम तिरण नो दाव। ।।110।।

111. संवत अठारह ने वर्ष सातों सिरदार।
गढ़ जालोर मांही, एह कह्यो अधिकार। ।।111।।

विशेष- इस बड़ी साधु-वन्दना में जिन साधु-साध्वी महापुरुषों के नाम आये हैं, उनका जीवन परिचय नीचे लिखे सूत्रों में आया है-1. आचारांग, 2. सूयगडांग, 3. ठाणांग, 4 समवायाङ्ग, 5. भगवती, 6. ज्ञाताधर्म कथा, 7. अन्तगढदसा, 8. अनुत्तरोवाईय, 9. प्रश्नव्याकरण, 10. विपाक सूत्र, 11. जम्बूद्वीप पन्नती, 12. निरयावलिया, 13. कप्पवंडसिया, 14. वण्हिदशा, 15. उत्तराध्ययन, 16 दशवैकालिक, 17. दशाश्रुत स्कन्ध।

श्री शालिभद्र की लावणी

मिलत- शालिभद्र महाराज आप की रिद्धि को पार नहीं पाया।
श्रेणिक राजा आप खुद देखन काजे घर आया।। टेर।।

चालू - पूर्वभव ग्वाले के भव में संगम नामे एक शरीर।
माता पासे बहु हठ करके बनाई खावा को खीर।।
थाल भरी जीमन को बेठा मुनिवर एक महाशूरवीर।
मासखमण के पारणे आया कांई जागी तकदीर।।
उलट भाव से दान दिया तब बान्ध्यो पुण्य अखूट समीर।
उसी शर में बसे गोभद्र सेठ बड़ो धनधीर जी।

शेर - राजगृही नगरी बीच ऐसो नहीं कोई और जी।
महापुण्यव्रत भद्रिक भुद्रा जन्म लियो तिण ठोर जी।
स्वप्न अन्दर शुभ देख्यो पाको शाली खेत जी।
जन्म हुवो नाम दीधो शालिभद्र संकेत जी।।

खड़ी - कंचनवर्णी त्रिया बत्तीसो परणी 2।
मानो सुरदेव दोगुन्दक-सी ऋद्धिवर्णी ।।
माणक-मोती गहना रत्नां जड़िया 2।
सोना रूप कुण गिण अगणित यूं ही पड़िया।।

दौड़े - सेठ कर गयो काल, पहला स्वर्ग मंझार।
हुवो देव अवतार, अति राग धरो ?।।
वस्त्र आभूषण श्रृंगार, भरी मंजूस मंझार।
तेतीस-तेतीस प्रकार नित हाजिर करी ?।।

मिलत- भोगे पुण्य तणी या करणी हाथो आहार जो बहरायो।।
श्रेणिक राजा.।।1।।

चालू - रत्न कम्बल लेई आया व्यापारी, बेचण काजे फिर बाजार।
कोई नहीं लीनी, उदास होय चाले पाछे तत्काल।

शालिभद्रजी की आई है दासियाँ, जल भरने पनघट।
पणिहार देख व्यापारी, पूछीयो उदास तुम क्यों हो असवार।
कहे व्यापारी नहीं बिकाणी, सोलह कम्बल है मुझ लार।
माता भद्रा मोल ले, खोल दिया भरिया भण्डार।।

शेर - सवा-सवा लाख सौनैया, एक-एक कम्बल को मोल जी।
गिणती आई बीस लाख, मांड दिया तोल जी।
आधोआध करी कम्बल बत्तीस बहुआ काज जी।
सासू की मनवार जाणी, मोटा घरां की लाज जी।

खड़ी - वो रत्न कम्बल ले, नारियां सब ही पंहरी 2।
बांके अंग में चुभवा लागी, कंटक जिम वैरी।
तब स्नान करी, अंग लुई ने एकन्त नाखी 2।
ले गई महत्राणी नार, जतन कर राखी 2।।

दौड़ - एक दिन के मंझार, महत्तराणी ओढ़ी आय।
पूछे रानीजी बतलाय, कहाँ से ले आई 2।।
कहे मातंग की नार, सुनो रानीजी विचार।
शालिभद्र के दरबार, पाई जोगवाई 2।।

मिलत- रानी हकीगत सुणी पाछली राजन से फरमावे है।।
श्रेणिक राजा.।।2।।

चालू - अभय कुवंर और श्रेणिक राजा, सेठां के घर आवे है।
शालिभद्र को देख वो, मन में हर्ष उमावे है।
राय-आंगण बीच गिरी मुद्रिका, सोधा कियां नहीं पावे है।
तब माता भद्रा, भर एक थांबो नजर करावे है।
कहे माता सुनो पुत्र! आज मोतियन मेह वर्षायो है।
तुम नीचे आवो आज घर नाथ आप पधारिया हैं।

शेर - वचन मात का सुनि पुत्र, हुआ घणा उदास जी।
स्वप्न अन्दर नहीं सुनियो, यो वचन माता पास जी।

महलां सूं नीचे उतरिया, नार्‌यां तणा भरतार जी।
खमा-खमा करता थका हुवो घणो झणकार जी।

खड़ी - महलां सु उतरि ने आयो भूप के पासे 2।
देखीने नृपत मन में ऐम विमासे।।
यो देवलोक रो जीव, पुण्य प्रकाशे 2।
राजा घर अपने गोद लियो हुलासे ।।

दौड़ - आय बेठा खोला मांय जीव रह्‌यो घबराय।
कहे भद्रा मन लाय, हवे सीख दीजे 2।।
सकुमाल घणो अंग, तजी आयो नारियां संग।
हुओ रंग में बदरंग आप देख लीजिये 2।।

मिलत- हुक्म लेकर गये कुंवरजी राजा राज भवन आया।
श्रेणिक राजा.।।3।।

चालू - बैठ पलंग पर धरे ध्यान जब, दिल में बिचारे ऐसी बात।
नहीं कीधी करणी, जिन्हों से हुवा हमारे सिर पर नाथ।
विचरत-विचरत आये वीर जिन, चौदह सहस्र मुनिवर संग।
चन्दन काजे आवे केई नर-नारी जातों की जात।।
सुन उपदेश हुआ वैरागी, शालिभद्र कहे जोड़ी हाथ।
माता पासे पूछकर, लेसूं संयम जत सब साथ।।

शेर - घर आ इम कहे, मुझ हुक्म दो प्रकाश जी।
वीर पासे संयम लेसूं छोड़ के घर-बार जी।
वचन पुत्र का सांभली, माता गई मुर्च्छाय जी।
चेत लेई समझावे सुत को, मत काढ़ो ऐसी बात जी।

खड़ी - बत्तीसों ही नार्यां, कहे कुंवर कर-जोड़ी 2।
पहले क्यूं परण्या, थे हथलेवो जोड़ी।।
वा तरुण अवस्था, जोग कठिन है भारी 2।
चलणो खाण्डा की धार अर्ज यह म्हारी।।

एक-एक नार प्रतिदिन तजे निराधार।
लेणो संयम श्रेयकार, माता हुक्म करी 2।।
धन्नाजी घर नार, आय दियो है सवाल।
लेना संयम सुखकार, दोनों हर्ष धरी 2।।
मिलत- महोत्सव कीनों भद्रा जननी कहे मेरे एकण जाया।।
श्रेणिक राजा.।।4।।
चालू - कहे भद्रा सुणो वीर जिनेश्वर भूख प्यास खबरो लीजो।
मत जाजो भूली आप खुद करी खबर समता दीजो।
सुन मेरा जाया करणी करतां कोई प्रमाद मत कीजो।
मुझको छोड़ी और जननी घर जन्म मती लीजो।
मास-मास खमण की तपस्या करता सूख गई कोमल काया।
प्रभु विचरत-विचरत फेर वही राजगृही नगरी आया।
शेर - पारणे को दिन जाणी पूछे तो कृपानाथ सूं।
वीर भाखे नहीं है शंका होसी माता हाथ सूं।
भद्रा के घर गोचरी पहुंचिया है मुनिराज जी।
द्वारपाले दिया वर्जी नहीं है अवसर आज जी।।
खड़ी - पाछा फिरता - मैया ग्वालिन दूध बहरायो 2।
ले आया जिनवर पास हाल संभलायो 2।
प्रभु पूर्वभव को वृत्तांत सभी बतलायो 2।
अनशन करवा ने शैल शिखर पर धायो।।
दौड़ - आयो मास को संथारो कर दियो खेवो पार।
सर्वार्थसिद्ध अवतार, धन्नो मुगत गयो 2।।
'जवाहिरलालजी' गुरुदेव-करो जाकी नित सेव।,
'हीरालाल' स्वयमेव गुणग्राम किया-किया।
मिलत- शालिभद्राजी की गाई है लावणी, दिन-दिन ऋद्धि-सम्पत पावो ।।
श्रेणिक राजा. ।।5।।

1. परिवार में व्यक्ति की व्यावहारिक नीतियाँ

1. आजीविका आदि कार्य धर्म को आगे रखकर करना, जिससे कर्मों का बन्ध कम हो।
2. किसी को धोखा देना पाप है, किसी से धोखा खाना मूर्खता है।
3. अपनी प्रशंसा के पीछे कर्ज का उधार लेने वाला दुःख को मोल लेता है।
4. पैसा पाप से उपार्जित होता है, इसका दुरुपयोग नहीं, सदुपयोग होना चाहिये।
5. फिजूल खर्च से बचना, परिस्थिति योग्य घर आये मेहमान का स्वागत करना।
6. प्रत्येक कार्य में हानि–लाभ पहले देखना, बिना विचारे कार्य नहीं करना।
7. बड़ों का आदर करना, उनकी बातों की अपेक्षा नहीं करना विनीत के लक्षण हैं।
8. स्वयं को जो बात पसंद नहीं हो, उसको बिना सलाह के नहीं करना बुद्धिमत्ता है।
9. किसी के दिल को ठेस पहुँचे ऐसी बातों को छिपाने की कोशिश करना, जिससे शान्ति रहे।
10. जिन बातों में सबकी सलाह जरूरी हो, उन बातों को विना सलाह नहीं करना अच्छा है।
11. विशेष खर्च के लिये पैसों की बचत करना, आय से कम खर्च करने वाला सदा सुखी रहता है।
12. किसी के राजी–नाराजी होने की मालूम पड़ने पर पूछना मौन धारण नहीं करना।
13. भोजन सादा व सब सन्तुष्ट हों, ऐसा रुचिकर होना, इससे विशेष खर्च नहीं बढ़ता।

14. हमेशा हर बात में नीचे की तरफ देखना, ऊँचा देखने वाला हानि उठाता है।
15. स्वयं की गलती नजर नहीं आती, मालूम पड़ने पर विना जिद्द के छोड़ देना अति उत्तम है।
16. जिसको धूप-छाँव का अनुभव नहीं, वो क्या जाने दु:ख कैसा होता है?
17. पूरी-पूरी जानकारी किये बिना, प्रत्येक का विश्वास नहीं करना लाभदायक है।
18. बिना विवेक के विवाह शादी में आडम्बर युक्त पैसा खर्च करना ठीक नही।
19. जिन होटलों में मांसाहार होता है, ऐसी होटलों में विवाह आदि कार्य नहीं रखना।
20. विवाह आदि में सड़कों पर नाचना, यह कुलीन परिवारों को शोभा नहीं देता।
21. जुआ, वेश्यागमन, नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले अपने स्वस्थ पारिवारिक जीवन को नरक बनाते हैं।
22. धूम्रपान करने वाले, पानपराग, गुटका, जर्दा खाने वाले, केन्सर जैसी भयानक बीमारी को दावत देते हैं।
23. आरम्भ-परिग्रह, काम-भोगादि में अधिक ममत्व भाव से आत्मा का पतन होता है।
24. घर की परिस्थिति दूसरों के सामने प्रकट करने से प्रतिष्ठा में कमी आती है।
25. संकट के समय मित्र भी शत्रु बन जाते हैं, उस समय साहस नहीं खोना चाहिये।
26. चाहे तुच्छ बस्तु भी क्यों न हो, उसका व्यर्थ अपव्यय करना पाप को बढ़ाना है।

27. अपनी शक्ति के अनुसार अच्छे कार्यों में उदार दिल से खर्च करने की भावना रखना।
28. जीवन धर्म के बिना अधूरा है। जिन-अज्ञानुसार समय निकालकर धर्म में प्रवृत्ति करना।
29. धर्म ज्ञान के बिना अधूरा है। समय निकालकर आधयात्मिक ज्ञान सीखने का लक्ष्य रखे।
30. ज्ञान चारित्र के बिना अधूरा है, इसलिये समय आने पर चारित्र-साधना का लक्ष्य रखे।
31. चारित्र आचरण के बिना अधूरा है। शुद्ध आचरण का उपयोग रख शीघ्र मोक्ष प्राप्त करे।

2. साधना के चार बोल

1. सभी अड़चनों को दूर करके नियत समय से पहले गैं धर्म-स्थानक में जाऊँगा।
2. संसार सम्बन्धी जो भी कार्य करूँगा, वह मैं पराया समझूँगा। वो काम मेरे लिये नहीं है।
3. धर्म सम्बन्धी जो भी कार्य करूँगा, उरो गैं अपना कार्य समझूँगा।
4. किसी के साथ वैर, विरोध, झगड़ा, कषाय आदि का प्रसंग आने पर उनका दोप न समझता हुआ मेरे व उनके अशुभ कर्मों का दोप समझूँगा तथा क्रोध, निन्दा आदि नहीं करने का ध्यान रखूँगा।

3. हमारा मुख्य उद्देश्य

हमारी पुण्यवानी बहुत ऊँची है कि हमको जिन-वाणी का सुयोग प्राप्त हुआ। इसलिये धर्म की जानकारी करना, धर्म-कार्य में विशेष रुचि बढ़ाना, देव अरिहन्त, गुरुनिर्ग्रंथ क-केवली भापित

दयामय धर्म पर पूर्ण श्रद्धा होना, अपने सम्पर्क में आने वाले को ऐसा ही बोध देना। धर्म का प्रचार करना। मनुष्य-भव बार-बार मिलना दुर्लभ है। वह भी आर्यक्षेत्र, उत्तम कुल, सुत्र -सिद्धान्त सुनने का सुयोग महान पुण्य का उदय है। इसलिये पराक्रम फोड़कर व्रर्त-प्रत्याख्यानादि करना एवं मर्यादित जीवन बिताने का प्रयत्न करना।

अच्छे बुरे कार्यों का फल आत्मा को ही भुगतना पड़ेगा। हमेशा ऐसे विचार करते रहना और आत्मा ऊँची उठे, ऐसा कार्य करना। जिन्दगी का भरोसा नहीं। काल कब आ जाए। खाली हाथ नहीं चले जाए। अगर गफलत में रह गये तो आखिरी वक्त में पश्चात्ताप करना पड़ेगा।

अनन्त काल बीत गया। इस आत्मा को सही रास्ता नहीं मिलने से यह जन्म-मरण से छुटकारा नहीं पा सकी। अब नाव किनारे है। अगर सावधान नहीं रहे तो कषाय रुपि हवा का झोंका लगने पर आत्मा रूपी नाव भटक जायेगी। फिर उसे किनारे लाना बहुत कठिन होगा। इसका पूरा-पूरा खयाल रखे। हमेशा यही चिन्तन करता रहे कि कब वह दिन आवे जिस दिन मैं पण्डितमरण को प्राप्त करूँ।

ऐसा कब होगा कि जब हमारा सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र से आत्मा ओतप्रोत होवे। यही परमात्मा से अंतिम प्रार्थना है।

4. स्वाध्याय करने की सामान्य विधि

1. स्वाध्याय शुरू करने से पहले गुरुदेव को वन्दना अवश्य करनी चाहिये। यह ज्ञानप्राप्ति में सहायक होती है।
2. शास्त्र के मूल आशय को समझने के लिये पूर्ण श्रद्धा होनी चाहिये।
3. आगमकारों का अभिप्राय समझकर उसी दृष्टि से करना चाहिये।

4. ज्ञान-दान देने वालों को अपना आचरण ऊँचा बनाना चाहिये, ताकि श्रोताओं के मन में उनके प्रति सहज आदरभाव उत्पन्न हो जाए।
5. जो विषय बुद्धिग्राह्य न हो, उसे समझने की कोशिश करनी चाहिये। यदि समझ में नहीं आए तो उसका व्यर्थ उपहास नहीं करना चाहिये।
6. अस्वाध्याय के समय का ज्ञान करके उसका वर्जन करना चाहिये।

5. दैनिक आध्यात्मिक चिन्तन क्यों करें?

भगवान् ने आत्म-शिक्षा के लिये प्रतिदिन के पापों की आलोचना करने का सुन्दर मार्ग बताया है। अतः रात को सोते समय दिन-भर के पापों को अलोचना करें। 1. मै कौन हूँ? 2. मैं कहाँ से आया हूँ? 3. वास्तव में मेरा क्या है? 4. मृत्यु के बाद मैं कहाँ जाऊँगा? 5. इस जीवन की सफलता हेतु क्या करना चाहिये? 6.क्या नहीं करना चाहिये? 7. प्रतिदिन चिंतन करे कि मुझे कुछ नहीं चाहिये। 8. मेरा इस दुनिया में कुछ नहीं है। अभी मुझे बहुत-कुछ सीखना है।

आध्यात्मिक व्यक्ति अपने पापों की ही आलोचना करे, दूसरों की आलोचना करना महान पाप है। अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह से ही मानव मात्र का कल्याण संभव है - भगवान् महावीर।

6. स्वाध्याय : लाभ और विधि

स्वाध्याय का अर्थ बहुत व्यापक है। स्वयं को समझने का प्रयास करना ही स्वाध्याय है। सद्-साहित्य का अध्ययन, मनन-चिन्तन भी स्वाध्याय है। स्वाध्याय के माध्यम से मनुष्य अपने मन को ज्ञान की ओर प्रवृत्त कर सकता है-

चार पुरुषार्थ- भारतीय संस्कृति में चार पुरुषार्थों का विवेचन किया गया है:-1. धर्म, 2. अर्थ, 3. काम, 4. मोक्ष। इनमें से धर्म एवं मोक्ष के स्वरूप को बतलाने वाले आगमों के अध्ययन को स्वाध्याय तथा अर्थशास्त्र एवं कामशास्त्र का अध्ययन करने वाले को अस्वाध्याय कहा गया है। अर्थ और काम से निवृत्ति पाकर धर्म एवम् मोक्ष में प्रवृत्ति करना भी स्वाध्याय है। विनयपूर्वक वीतराग की वाणी का अध्ययन करना भी स्वाध्याय है।

स्वाध्याय से लाभ- 1. स्वाध्याय से शास्त्रों के प्रति श्रद्धा एवम् गुरु के प्रति भक्ति उत्पन्न होती है। 2. स्वाध्याय से आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है। 3. स्वाध्याय से मानव जीवन सफल हो सकता है। 4. स्वाध्याय से ध्यान की प्राप्ति होती है। 5. स्वाध्यायशील के सभी व्रत, नियम, तप, निर्मल होते हैं।

स्वाध्याय की विधि- 1. स्वाध्याय करने की कोई निश्चित विधि नहीं है। जब भी आप अपने को धर्म एवम् मोक्ष मार्ग की ओर प्रवृत्त, करेंगे आप स्वाध्याय की स्थिति में आने लगेंगे।

2. श्रद्धापूर्वक शास्त्रों का अध्ययन, मनन, चिंतन, बहुमान एवम् व्याख्यान श्रवण करना स्वाध्याय विधि की श्रेणी में आते हैं।

3. सद्गुरु के पास बैठकर धर्मचर्चा करना भी स्वाध्याय की विधि है।

4. यदि आँख पढ़ने का काम नहीं कर सकती है, तो धर्मग्रन्थों की चर्चा सुनना भी स्वाध्याय की विधि के अनतर्गत है।

5. सत्संग का रंग भी उन लोगों के लिये स्वाध्याय है जो पढ़ने लिखने में समर्थ नहीं हैं।

अध्यात्म विद्या के भेद-अध्यात्म विद्या के दो मुख्य भेद बतलाये गये हैं-1. स्वाध्याय और 2.ध्यान।

इन्द्रियों के व्यापार से रहित होकर मन से आत्मा के स्वरूप का

चिन्तन करना। यही प्रयत्न ध्यान रूप अध्यात्म विद्या है।

इस प्रकार स्वाध्याय अन्तरंग शान्ति के लिये कारणभूत है। अविद्या रूपी नदी को पार करने के लिये स्वाध्याय काष्ठ की नौका है। स्वाध्याय सम्यक्-ज्ञान रूपी नौका पर बिठाकर संसार-सागर से पार उतार सकता है। क्रोध रूपी अग्नि को स्वाध्याय रूपी जल से शान्त कर सकते हैं।

स्वाध्याय का मनोविज्ञान-स्वाध्याय एक ऐसा मीठे फल वाला वृक्ष है, जिसमें फल विलम्ब से आते हैं। ऐसे व्यक्ति, जो शीघ्र फल पाने के इच्छुक हों, उन्हें धैर्य की साधना करनी पड़ेगी। जो श्रेष्ठ व्यक्ति होते हैं वो मीठे फल वाले वृक्ष ही लगाते हैं और धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते हैं कि

"इनके श्रम का फल सब भोगें, सज्जन की बस चाह यही।।"

स्वाध्याय-चिन्तन-

1. स्वाध्याय एक ऐसी दिव्य ज्योति है जो हमारे अंतरंग जीवन को प्रकाशमान कर देती है। यह ज्योति जब तक जलती रहेगी, तब तक जीवन में अशान्ति का अन्धेरा टिक नहीं पायेगा।
2. स्वाध्याय में स्थिर रहने वाला व्यक्ति बहिर् जगत् से विमुख होकर अन्तर् जगत् मे पहुँच जाता है।
3. स्वाध्याय में तल्लीन व्यक्ति अपने जीवन की पुस्तक को पढ़ता है और वह अपने-आप का गहराई से निरीक्षण और परीक्षण भी कर लेता है।
4. स्वाध्याय एक ऐसा उद्यान है जिसमें ज्ञान के फूल अपनी सौरभ से महक रहे हैं। जिसने भी इस सौरभ को ग्रहण किया, उसका जीवन सुरभित हो उठा।
5. स्वाध्याय हमारे जीवन गें अज्ञान के साधन अन्धकार को दूर कर देता है और ज्ञान के प्रकाश को फैलाता है।

6. स्वाध्याय में संलग्न व्यक्ति मन में शान्ति का अनुभव करता है। जीवन में धार्मिक क्रान्ति करता है और भ्रांति को समाप्त कर देता है।

7. स्वाध्याय एक ऐसा राजमार्ग है जिस पर अग्रसर व्यक्ति मोक्ष-मार्ग की ओर बढ़ता है। मोक्ष-मार्ग ही उसका चरम एवम् परम लक्ष्य होता है।

8. स्वाध्याय जीवन जीने की सच्ची और अच्छी कला है जो व्यक्ति उस कला में पारंगत है, उसका जीवन सुन्दर बन जाता है।

9. स्वाध्याय एक ऐसी प्राचण्ड अग्नि है जो हमारे जन्म-जन्मान्तरों के कर्म रूपी घास को भस्मसात् कर देती है।

10. स्वाध्याय एक बढ़ती हुई अमृतधारा है। जो व्यक्ति उस धारा से लाभ उठा लेता है, उसका जीवन अमृतमय बन जाता है।

11. स्वाध्याय एक ऐसा जलाशय हैं, जिसमें स्नान करने वाला व्यक्ति अपने कर्म-मैल को धो डालता हे।

12. स्वाध्याय एक ऐसी संजीवनी बूटी है, जो हमारी आत्मा में अध्यात्म का प्राण संचार कर देती है।

13. स्वाध्याय एक ऐसा नन्दन वन है, जिसमें विचरण करने वाला व्यक्ति अधि-व्याधि और उपाधि के ताप से मुक्त हो समाधि को प्राप्त करता है।

14. स्वाध्याय एक ऐसी शक्ति है जिसके सन्मुख अन्य शक्तियाँ नगण्य हैं, तुच्छ हैं।

15. स्वाध्याय एक ऐसा मंगलमय मार्ग है जिस पर बढ़ने वाला व्यक्ति संसार से विमुख होता है और मोक्ष-मार्ग की ओर सन्मुख होता है।

16. स्वाध्याय मन को विशुद्ध करता है, जीवन को उज्ज्वल बनाता है और आत्मा को अपने स्वरूप में स्थिर कर देता है।

7. पावन वाणी के 6 प्रकार

1. सच्चा और शुद्ध उपवास शरीर, मन और आत्मा को शुद्ध बनाता है।
2. अटल श्रद्धा रखे बिना पूर्णतम जीवन असम्भव है।
3. आध्यात्मिकता की मुख्य शर्त निर्भयता है कायर पुरुष में कभी भी नैतिक बल हो ही नहीं सकता।
4. अगर हम अपने विरोधियों की स्थिति में अपने को रखकर उनके दृष्टिकोण को समझें तो संसार के तीन चौथाई कष्ट और गलतफहमियाँ दूर हो जायेंगे।
5. अधिकारों का सच्चा स्रोत कर्तव्य है। अगर हम सब अपने कर्तव्यों का पालन करें तो अधिकारों को खोजने के लिये कहीं दूर नहीं जाना पड़ेगा।
6. दुनिया में रहने का सबसे व्यावहारिक और सबसे गौरवपूर्ण मार्ग है, लोगों की बात पर तब तक विश्वास किया जाय, जब तक अविश्वास करने का कोई निश्चत कारण न मिल जाये।

8. नवतत्त्वों का क्रम

तत्त्व ज्ञान से साधना का मार्ग प्रशस्त होता है, दृष्टि निर्मल और निर्दोष बनती है। अतः अनन्त उपकारी तीर्थंकर भगवन्तों ने मुमुक्षु आत्माओं के जीवनोत्थान के लिये नवतत्त्वों की परूपणा की है उन्होंने नवनत्त्वों का क्रम निम्न प्रकार से निर्धारित किया है-

1.जीव, 2. अजीव, 3.पुण्य, 4. पाप, 5. आश्रव, 6. संवर, 7.निर्जरा, 8. बन्ध, 9. मोक्ष।

यहाँ प्रश्न उठ सकता है कि नवनत्त्वों का यह क्रम क्यों रखा

गया है? क्या यह क्रम अपेक्षित है? प्रश्न का निराकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है-

सभी तत्त्वों को जानने और समझने वाला तथा संसार और मोक्ष विषयक सभी प्रवृत्तियां करने वाला जीव है। जीव के विना अजीव तथा पुण्यादि तत्त्व संभव नहीं हो सकता, इसलिये सर्वप्रथम जीव तत्त्व का निरूपण किया है।

जीव की गति, स्थिति, अवगाहना, वर्तना आदि अजीव की सहायता के बिना संभव नहीं। इसलिये दूसरा स्थान अजीव तत्त्व का रख गया है।

जीव संसार में सुख-दुख भोगता है, उसके कारण रूप कर्म स्वरूप विकार हैं, वे ही पुण्य और पाप हैं। इसलिये तीसरे स्थान पर पुण्य तत्त्व और चौथे स्थान पर पाप तत्त्व का निरूपण किया गया है।

पुण्य, पाप आश्रव के बिना नहीं हो सकते इसके कारण शुभाशुभ कर्म-पुद्‌गल आत्मा की तरफ आते हैं, इसलिये पाँचवें स्थान पर आश्रव तत्त्व को निर्धारित किया गया है।

आश्रव तत्त्व का विरोधी तत्त्व संवर तत्त्व है, जो कर्मों को आने से रोकता है। कर्मों का आश्रव होता रहेगा तो आत्मा का परिभ्रमण कैसे रुकेगा? अतः आश्रव के तुरन्त बाद संवर तत्व का निर्देश किया गया है।

जिस प्रकार नये कर्मों का आगमन संवर से रूकता है, उसी प्रकार पुराने कर्मों की निर्जरणा निर्जरा तत्त्व से होती है। अतः संवर के बाद तत्त्व-शृंखला में निर्जरा तत्त्व को स्थान दिया गया है।

निर्जरा तत्त्व का विरोधी तत्त्व बन्ध है अर्थात् जिस प्रकार पुराने कर्म झड़ जाते हैं, उसी प्रकार नये कर्म का बन्ध भी होता जाता है। अतः आठवें स्थान पर बन्ध का विवेचन किया गया है।

जैसे कर्म का बन्ध होता है, वैसे छुटकारा भी होता है, इसलिये नौवाँ अंतिम उल्लेख मोक्ष तत्त्व का किया गया है।

जीव प्रथम तत्त्व है और मोक्ष अंतिम तत्त्व है। इसका तात्पर्य है कि जीव मोक्ष प्राप्त कर सके, इसके लिये बीच में सभी तत्त्वों का निरूपण है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि 'नवतत्त्वों' का उक्त क्रम बड़ा उपयुक्त, सार्थक और वैज्ञानिक है।

9. मेरी भावना

सदैव हमारी यह भावना रहे कि जब तक मैं मुक्ति प्राप्त न करूँ तब तक श्री जिनेश्वर भगवान् के प्रति मेरी भावना, भक्ति बनी रहे। धर्म में मेरी आस्था बनी रहे।

प्राणी मात्र के प्रति मित्रता के भाव बने रहें, हृदय में समभाव व सन्तोष का पूर्ण बल बना रहे, बुद्धि सदैव निर्मल रहे। धर्म-कार्यों में प्रवृत्ति तथा पाप के कार्यों में निवृत्ति बनी रहे, जिससे मिथ्यात्व के गहन अन्धकार को तोड़कर सम्यक्त्व रूपी दिव्य प्रकाश की भूति हो सके।

10. सच्चे जैन के लक्षण

सच्चा जैन वही कहलाता है जिसमें निम्नलिखित लक्षण हों-

1. मिथ्यात्वी न हो अर्थात् वस्तु के सच्चे स्वरूप को मानने वाला हो।
2. अन्यायी, अत्याचारी नहीं होना चाहिए।
3. अभक्ष्य वस्तु, जैसे मांस, मदिरा आदि का सर्वथा त्यागी हो।
4. देव, गुरु, धर्म पर दृढ़ श्रद्धा रखने वाला हो। कहा भी है-

ईर्या-भाषा-एषणा ओलखजे आचार,
गुणवन्त साधु देखकर वन्दूं बारम्बार।।

अर्थात् ईर्या-भाषा-एषणा आदि पाँच समिति का जो भली प्रकार से पालन करते हैं तथा पांच आचार आदि का पालन करते हैं, तीन गुप्ति का सम्यक् प्रकार से आराधन करते हैं, ऐसे गुणवान साधु को देखकर जो श्रद्धायुक्त बारम्बार नमस्कार करता है, वह सच्चा जैन है।

5. सप्त कुव्सनों का त्यागी हो। जैनियों को सातों कुव्यसनों को छोड़कर अपना जीवन सुखी बनाना चाहिये।

1. जुआ खेलना, मांस, मद्य-अरुवेश्या व्यसन शिकार।
चोरी, पर-रमणी को रमणो, सातों व्यसन निवार।।

2. जुआ खेलत होत है, सुख-सम्पत्ति नास।
राज-काजनल को छूटीयो पाण्डव कियो वनवास।।

3. पैसा लेकर जूते खाना, यह मजा शराब में देखा।
घर बैठे दुनिया को जाना, यह मजा किताब में देखा।।

इस प्रकार सच्चे जैन को उपरोक्त सातों व्यसनों को छोड़ना चाहिये।

6. सच्चा जैन बिना छाना पानी नहीं पीता है।
7. सच्चा जैन त्रस जीवों की घात हो, ऐसी वस्तु का सेवन नहीं करता है।
8. सच्चा जैन रात्रि-भोजन का त्यागी होता है।
9. सच्चा जैन फिल्म, सुरा, सिगरेट, जर्दा, अफीम व गुटका का सेवन नहीं करता है।
10. पर्व तिथियों पर हरी (साग) का सेवन नहीं करता है।

इन सभी गुणों का धारक ही सच्चा जैनी है। जो इन गुणो को धारण करता है, वो अपना जीवन मोक्षमार्ग की तरफ अग्रसर करता है। हमें भी अपने जीवन को सुखी बनाने का प्रयत्न करना चाहिये।

11. दैनिक नियमित धार्मिक प्रवृत्तियाँ क्या हों?

1. सुबह उठते ही कम से कम सर्वप्रथम पाँच नमस्कार सूत्र का ध्यान।
2. विनययुक्त अपने बड़ों के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लेवें।
3. गाय व कुत्ते आदि को रोटी तथा कबूतरों व चिड़ियों आदि पक्षियों को दाना।
4. अशक्त, अनाथ, अपंग, दुर्बल, निर्बल को कुछ-न-कुछ सहयोग करें।
5. प्रतिदिन सुबह के समय, सामायिक स्वाध्याय की आदत डालें।
6. परिवार को सामूहिक प्रार्थना हेतु तैयार करें।
7. प्रतिदिन प्रातःकाल गाँव में विराजित संत सतियों के दर्शन एवम् मांगलिक श्रवण का लाभ लें।
8. जीवन को व्रत-पच्चक्खाण के क्षेत्र में आगे बढ़ायें।
9. सुपात्र दान देने की प्रबल भावना पैदा करें।
10. गाँव में व्याख्यान या प्रवचन होता है, तो उसमें समय पर जाने की आदत डालें।
11. अच्छी धार्मिक पुस्तकों का कम से कम 15 मिनट स्वाधाय करें।

12. शिक्षा के 21 बोल

1. पर-द्रव्य हजम करने की इच्छा नहीं रखना। 2. किसी भी प्राणी का बुरा नहीं सोचना। 3. किसी भी असत्य बात को सत्य के रूप में नही आदरणा। 4. किसी को दुःख पहुँचे, ऐसा वचन नहीं बोलना। 5. किसी को भी खोटी सलाह नहीं देना। 6. किसी की भी निन्दा नहीं करना। 7. बिना मतलब के गप्पें मारकर समय वरवाद नहीं

करना। 8. किसी जीव की हिंसा नहीं करना। 9. विना दी हुई किसी की वस्तु को न लेना। 10. पराई स्त्री के साथ अयोग्य बरताव नहीं करना। 11. मन में खोटे विचार नहीं लाना। 12. हर समय सत्य वोलना। 13. पाँच इन्द्रियों को वश में रखना। 14. दूसरों के अपराध को क्षमा करना। 15. अपने किये हुए अपराधों की क्षमा माँगना। 16. दया एवम् परोपकार के कार्य करते रहना। 17. मन, वचन व काया की शुद्धता रखना। 18. देव, गुरु, धर्म एवं बड़ों को विनय करना। 19. अपनी शक्ति के अनुसार हमेश दान देना। 20. प्रतिदिन सामायिक एवं स्वाध्याय करना। 21. सब जीवों का कल्याण हो, ऐसी भावना रखना।

13. भवी जीवों पर छब्बीस बोल

1. घट-घट में अनुकम्पा होवे तो भवी जीव होवे। 2. हृदय में संतोष वाला भवी जीव होवे। 3. विनयवान भवी जीव होवे। 4. अरहन्त के वचनों पर आस्था रखने वाला भवी जीव होवे। 5. मिथ्यात्वी को भला नहीं समझने वाला भवी जीव होवे। 6. धर्म पर पूर्ण आस्था रखने वाला भवी जीव होवे। 7. किसी भी जीव को दुःख नहीं देने वाला भवी जीव होवे। 8. सभी जीवों को शाता पहुँचाने वाला भवी जीव होवे। 9. सत्ताईस गुणों के धारक साधु मुनिराज की सेवा-भक्ति करने वाला भवी जीव होवे। 10. समकित निर्मल पालने वाला भवी जीव होवे। 11. मन को मैला नहीं रखने वाला भवी जीव होवे। 12. समदृष्टि जीव भवी होवे। 13. चार कषायों को पतला करने वाला भवी जीव होवे। 14. क्षमा सहित निज गुण धारण करने वाला भवी जीव होवे। 15. पराये का
नहीं देखने वाला भवी जीव। 16. शुभ भाषा वोलने वाला

17. यत्नपूर्वक चलने वाला भवी जीव। 18. मान नहीं करने वाला भवी जीव। 19. आरम्भ-सम्भारम को भला नहीं जानने वाला भवी जीव। 20. शुद्ध भावना भाने वाला भवी जीव। 21. बारह व्रतों को शुद्ध पालने वाला भवी जीव। 22. किसी की धरोहर नहीं रखने वाला भवी जीव। 23. जैन धर्म का उद्योत करने वाला भवी जीव। 24. अरहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु की माला फेरने वाला भवी जीव। 25. जिन, मार्ग को दीपाने वाला भवी जीव । 26. खुद शील, संतोष पालने वाला एवम् दूसरों को पलाने वाला भवी जीव होवे।

14. तीन अंगुलियाँ किस ओर

एक बार महात्मा गाँधी के आश्रम में किसी सदस्य से दुराचार हो गया। एक व्यक्ति ने इसकी शिकायत करते हुए गुमनाम पत्र लिखकर गांधी के पास भेज दिया।

उस दिन प्रार्थना के समय गांधीजी गम्भीरतापूर्वक बोले-

"प्रथम तो इस प्रकार गुमनाम पत्र लिखना ही गलत है। दूसरा यह ध्यान रखना चाहिये कि किसी की ओर एक अंगुलि उठाते समय ।की की तीन अंगुलियाँ स्वयं अपने दिल की तरफ होती हैं।"

महात्मा कबीर ने अपने दोहे में भी यही कहा है-

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।
जो घट खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।

21. भोजन के समय मौन क्यों ?

मौन रहने से कई लाभ हैं, लेकिन भोजन के समय मौन रहने से हमें और भी अधिक लाभों की प्राप्ति हो सकती है, जिनमें कुछ लाभ निम्नलिखित हैं-

1. प्रायः घरों में देखा जाता है कि शाक-सब्जी रुचि के अनुरूप नहीं बनने पर हम आग-बबूला हो जाते हैं। मगर मौन रखने से हम गुस्से पर काबू पा जाते हैं और शारीरिक नुकसान से बच जाते हैं।
2. भोजन के समय मौन रखने से दाँतों के बीच जीभ दवने का भय भी नहीं रहता है।
3. भोजन के समय मौन रखने से हमारा ध्यान केन्द्रित रहता है। अतः भोजन में मक्खी-मच्छर आदि गिरने का डर नहीं रहता है।
4. भोजन करते समय बोलने से हमारे मुँह से छींटे पास वैठे व्यक्तियों की थालियों मे गिरते हैं। मौन रखने से इस अशोभनीय कार्य से बच जाते हैं।
5. भोजन के समय मौन रखने से हमारा पूरा ध्यान खाने की तरफ रहता है, जिससे पाचनशक्ति में रुकावट नहीं आती है।
6. भोजन के समय मौन रखने से मन केन्द्रित रहता है और मन केन्द्रित रहने से वैचारिक शक्ति का ह्रास नहीं होता है।

हमें उपरोक्त लाभों को देखते हुये भोजन के समय मौनव्रत धारण कर अपने तन व मन को प्रसन्न बनाना चाहिये। इससे शारीरिक लाभ के साथ-साथ हमें क्रोध पर विजय पाने का लाभ भी सहज ही मिल जाता है। अतः भोजन के समय मौनव्रत अवश्य ही करना चाहिये।

16. संमूर्च्छिम मनुष्यों का उत्पत्ति-स्थान

बिना माता-पिता के उत्पन्न होने वाले अर्थात् स्त्री-पुरुष के समागम के बिना ही उत्पन्न जीव "संमूर्च्छिम्" कहलाते हैं। पैंतालीस लाख योजन परिमाण मनुष्य क्षेत्र में ढाई द्वीप और दो समुद्रों में पन्द्रह कर्मभूमि, तीस अकर्मभूमि और छप्पन अंतरद्वीपों में गर्भज

मनुष्य रहते हैं, उनके मल–मूत्रादि मे संमूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न होते हैं। उनके चौदह उत्पत्ति–स्थान इस प्रकार हैं–

1. उच्चारेसुवा – विष्ठा में ।2. पासणेसुवा – मूत्र में। 3. खेलेसु – कफ में। 4. सिंघाड़ेसु – कफ में। 5.वंत्तेसु – वमन में। 6. पित्तेसु – पित्तमें। 7. पूएसु – पीप, राध और दुर्गन्धयुक्त बिगड़े घाव से निकले खून में। 8. सोणिएसु – शोणित खून में। 9. शुक्केसु-शुक्रवीर्य में। 10. सुक्क पुगल परिसाडेसु – वीर्य के त्यागे हुए पुद्गलों में। 11. विगय जीव क्लेवरेसु – जीवरहित शरीर में (मुर्दे में)। 12. स्त्री–पुरुष संजोएसु – स्त्री–पुरुष के समागम में। 13. णगरनिध मणेसु – नगर की मोरियो में (गटर में)। 14. सव्वे सुअसई ठाणेसु–सब अशुचि के स्थानों में।

उपरोक्त चौदह स्थानों में संमूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न होते हैं। इनकी अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग परिमाण होती है। इनकी आयु अन्तरर्मूहत की होती है। अर्थात् एक अन्तरर्मूहत के अन्दर ही मर जाते हैं। ये असंज्ञी (मनरहित), मिथ्यादृष्टि, अज्ञानी होते हैं। अपर्याप्त अवस्था में ही इनका मरण हो जाता है।

17. मौन के प्रकार

1. वाणी का मौन – चुप रहना।
2. इन्द्रियों का मौन – इन्द्रियों को चेष्टारहित रखना।
3. कष्ट मौन – शरीर में कष्ट होने पर भी उसे अभिव्यक्त न करना।
4. उत्तम मौन – आत्मनिश्चय में स्थित होना।
5. परम मौन – मौन समाधि से अहम् स्थिति।

18. पाँच इन्द्रियों की लोलुपता

1. श्रोत्रेन्द्रिय– के विषय में वशीभूत होकर हिरण प्राण गँवाता है।

2. चक्षु इन्द्रिय- के विषय में वशीभूत होकर पतंगा अपने प्राण गवाता है।
3. घ्राण इन्द्रिया- के विषय में वशीभूत होकर भँवरा अपना प्राण गँवाता है।
4. रसना इन्द्रिय- के विषय में वशीभूत होकर मछली अपने प्राण गँवाती है।
5. स्पर्श इन्द्रिय- के विषय में वशीभूत होकर हाथी विषम सुख की लोलुपता से अपने शरीर का नाश करता है। जरा विचार कीजिए कि जो मनुष्य पाँचों इन्दियों के विषय में लोलुप बनते हैं, उनकी क्या दुर्दशा होगी?

19. पाँच प्रकार के चतुर पुरुष

1. चतुर पुरुष खुशमिजाज, हंस मुख, हृदय से हँसता है।
2. चतुर पुरुष जानता है, माँग क़र लाये हुए आभूष्णों पर ममता क़ैसी?
3. चतुर पुरुष ज्यो -ज्यों ऊंचा उठता है, त्यों त्यों नम्र होता जाता है।
4. चतुर पुरूष पाठ पढ़ने से एक गुणा और अनुभव से हजार गुणा जाना जाता है।
5. चतुर पुरुष कभी अपने गुणों को प्रकट नहीं करते और न ही अपनी प्रशंसा सुनना पसंद करते हैं।

20. पाँच बोल शुद्धि पर

1. मकान की शुद्धि मिट्टी-पानी-चूने से।
2. वस्त्र की शुद्धि पानी से।

3. सोना-चाँदी-लोहे की शुद्धि अग्नि से ।
4. आत्मा की शुद्धि पाँच इन्द्रियों के काम-गुणों को छोड़ने से, ब्रह्मचर्य का पालन करने से, तप-संयम का पालन करने से।

21. पाँच प्रकार पापों के आने के मार्ग खुले रहते हैं

1. पाँच मिथ्यात्व - पहले गुणस्थान तक पाप आने के 50,000 मार्ग खुले हैं।
2. चार - अव्रत - चौथे गुण - स्थान तक पाप आने के 4,000 मार्ग खुले हैं।
3. तीन प्रमाद - छट्ठे गुण - स्थान तक पाप आने के 300 मार्ग खुले हैं।
4. दो कषाय - दंसवें गुण स्थान तक पाप आने के 20 मार्ग खुले हैं।
5. एक योग - तेरहवें गुण स्थान तक पाप आने का 1 मार्ग खुले हैं।

इस प्रकार 5,4,3,2,1 मार्ग से पाप आता है।

22. पाँच प्रकार अवधिज्ञान प्राप्त होता है

1. यतना से कार्य निकालने से। 2. सामुदानिक गोचरी करने से (अनुकूल ऊँच, नीच, मध्यम कुल से गोचरी लाला सामुदानिक गोचरी है व किनको क्या खपता है, वैसी वस्तु लाना) 3. कठिन तपस्या करने से। 4. धर्म-ध्यान करने से । 5. शुक्ल ध्यान ध्याने से।

22. छः प्रकार सर्वोतम के

1. सबसे बड़ा कौन ?-आकाश । 2. सबसे अच्छी वस्तु क्या? -अच्छा स्वभाव। 3. सबसे सुलभ काम क्या? - दूसरों को सलाह

देना। 4. सबसे अधिक गतिशील क्या ? - मन ।5. सबसे कठिन कार्य क्या है? - स्वयं को जानना। 6. सबसे उत्तम क्या ? -मोक्ष का सुख।

23. गृहस्थ के लिए 6 कार्य आवश्यक

1. नींद लेना, 2 श्वांस लेना, 3. खाना खाना, 4. पानी पीना, 5. लघुनीत, 6 बड़ीनीत।

25.आधुनिक श्रावक के 6 कार्य अनाश्यक

1. चाय-पूजा, 2 धूम्रपान, 3 बूँटपालिस, 4 चितरंजन, 5. भंगघोटन, 6. तास खेलना षट् कार्यन् दिने:-दिने:।।

26. श्रावक के नित्य करने योग्य आवश्यक कार्य

1. देवस्मरण, 2. गुरुसेवा, 3. स्वाध्याय, 4. संयम, 5. तप, 6 दान।

27. छः प्रकार के नहीं

1. धरती में सुख नहीं, 2. हथेली में रोंए नहीं, 3 जीभ में हड्डी नहीं, 4 आकाश में थम्भा नहीं, 5. मोक्ष में मसाण नहीं, 6. सूत्र में झूठ नहीं।।

28. छः प्रकार की डाकण

1. तृष्णा, 2.चिन्ता, 3. दीनता, 4. माया, 5 ममता, 6 नारी।

छः चीजों का बन्धन

1. गति, 2 जाति, 3 स्थिति, 4 अवगाहना, 5 प्रदेश 6 अनुभागवन्ध

29. छः प्रकार निष्फल जाने के

1. ज्ञान बिना क्रिया, 2 क्रिया बिना ज्ञान, 3 त्याग बिना जीवन, 4 दान बिना धन, 5. क्षमा बिना तप, 6. विनय बिना विद्या।

30. पौषध में छः कार्य अवश्य करो

1. शास्त्रों का स्वाध्याय, 2. आत्मचिन्तन, 3. उभध्यान, 4. शुभ संकल्प, 5. गुणग्रहण का भाव, 6. सद्पुरूषों का गुणकीर्तन।

31. पौषध में छः कार्य मत करो

1. असमय मत सोचो, 2. किसी की निन्दा मत करो, 3. सांसारिक चर्चा मत करो, 4. कलह मत करो, 5. पैसा पास में मत रखो, 6. अयतना, अविवेक से काम मत करो।

32. उपवास करो

1. आत्मशुद्धि के लिए, 2. अध्यात्मिक उन्नति के लिए, 3. वासना को जीतने के लिए, 4 कर्मों की निर्जरा के लिए, 5. सिद्धत्व भाव की प्राप्ति के लिए।

33. उपवास में त्याग करो

1.विषयों का त्याग करो, 2. कषायों का त्याग करो, 3. आहार का त्याग करो, 4 पर-निन्दा का त्याग करो, 5. आलस्य-प्रमाद का त्याग करो।

34. उपवासादि मत करो

1. देवलोक के सुखों के लिए, 2. धन-दौलत के लिए, 3. राज्य

- सुख की प्राप्ति के लिए, 4. सत्ता - शासन के लिए, 5 सन्तान - प्राप्ति के लिए, 6. मान - सम्मान के लिए, 7. प्रतिष्ठा - प्राप्ति के लिए, 8. दिखावे के लिए।

35. प्रेम और मोह के प्रकार

1. प्रेम दिव्य वरदान है, मोह महापिशाच है।
2. प्रेम सद्गुणों का संचार करता है, मोह समस्त गुणों का नाश करता है।
3. प्रेम तीव्र उत्साह आदि गुणों की वृद्धि करता है, मोह तीव्र उत्साह गुणों का नाश करता है।
4. प्रेम ज्ञान-गुण की वृद्धि करता है, मोह अज्ञान-अकर्मण्यता बढ़ाता है।
5. प्रेम मित्र बनाता है, मोह शत्रुता बढ़ाता है।
6. प्रेम संसार घटाता है, मोह संसार बढ़ाता है।

38. पाँच निश्रा स्थान

1. छ:काय, 2.गुण, 3. राजा, 4. गाथापति, 5. शरीर।

1. छः कायः- 1. पृथ्वीकाय - धरती-धारन। 2. अप्काय - धोवन पानी 3. तेऊकाय - खाद्य सामग्री तैयार करती है। 4. वायु काय - रोम आहार। 5. वनस्पतिकाय-वनस्पति के मुकेलक - आहार पाट आदि। 6. त्रसकाय-रजोहरण, त्रसकाय की ऊन से बनता है।
2. गुण - संयम स्वीकार करने वाले गच्छ में, समूह में रहते है। गण में नही रहने से संयम नहीं पलता ।
3. राजा - राजा न्यायप्रिय नहीं हो तो धर्म नहीं टिक सकता। न्यायप्रिय राजा से साधक की साधना अच्छी चलती है।

4. गाथापति - गृहस्थ न हो तो साधुओं को निर्दोष आहार - पानी मकान आदि की आज्ञा, गृहस्थ के आधार से धर्म का आराधन होता है।
5. शरीर - शरीर नहीं हो तो कुछ भी नहीं। शरीर द्वारा ही साधना करके अशरीरी बन सकता है। मोक्षप्राप्ति की साधना के लिए शरीर जरूरी है।

39. आत्मरक्षा के पाँच बोल

1. एकान्त स्थान का सेवन करे।
2. स्वार्थी संसारियों से ज्यादा परिचय नहीं रखे।
3. संसार का कार्य करते हुये भी अपनी आत्मा का काम करना नहीं भूले।
4. रात्रि को सोते समय आलोयण करे।
5. मन के भावों को शुद्ध रखने के लिए हमेशा प्रसन्नचन्द राजर्षि एवम् तन्हुलमच्छ की कथा याद रखे।

40. सुलभबोधि के पाँच कारण

1. अरहन्त भगवान् का गुण-ग्राम करने से जीव सुलभबोधि होवे।
2. अरहन्त भगवान् द्वारा प्ररूपित श्रुत-चरित्र धर्म का गुणानुवाद करने से जीव सुलभबोधि होवे।
3. आचार्य-उपाध्याय का गुणानुवाद करने से जीव सुलभबोधि होवे।
4. भवान्तर में उत्कृष्ट तप और ब्रह्मचर्य का सेवन किये हुए देवों का वर्णवाद-श्लाध करने से जीव सुलभबोधि योग्य कर्मों को बाँधता है।

5. चतुर्विध संघ की श्लाध एवम् वर्णवाद करने से जीव सुलभबोधि होता है।

41. दुर्लभबोधि के पाँच कारण

1. अरहन्त भगवान् का वर्णवाद बोलने से जीव दुर्लभबोधि होता है।
2. अरहन्त भगवान् द्वारा प्ररूपित श्रुत-चारित्र रूप धर्म का अवर्णवाद बोलने से जीव दुर्लभबोधि होता है।
3. आचार्य एवम् उपाध्याय का अवर्णवाद बोलने से जीव दुर्लभबोधि होता है।
4. भवान्तर मे उत्कृष्ट तप और बह्मचर्च का अनुष्ठान किये हुये देवो का अवर्णवाद बोलने से जीव दुर्लभबोधि योग्य कर्मों का बन्धन करता है।
5. चतुर्विध संघ का अवर्णवाद बोलने से जीव दुर्लभबोधि होता है।

42. आचरण योग्य पाँच बातें

1. पर-भव बिगड़े, ऐसा काम नहीं करना।
2. झगड़ा बढ़े, ऐसा वचन नहीं बोलना।
3. पेट से दर्द होवे, ऐसा भोजन नहीं करना।
4. सिर में दर्द हो, ऐसा वाचन (पठन) नहीं करना।
5. समाज में अपकीर्ति हो, ऐसा काम नहीं करना।

43. दृढ़ सम्यक्त्वी के पाँच बोल

1. दृढ़ सम्यक्त्वी की देव तो क्या, भगवान भी प्रशंसा करते हैं।
2. दृढ़ सम्यक्त्वी की समय-समय पर कसौटियाँ भी होती रहती हैं।
3. दृढ़ सम्यक्त्वी दूसरों को भी सम्यक्त्व में दृढ़ बनाता है।

4. दृढ़ सम्यक्त्वी मोक्ष को भी जल्दी प्राप्त करता है, इसलिए मिथ्यात्वियों का साथ और मिथ्यात्व की प्रवृत्ति को छोड़ो।

44. पाँच क्षमा-सूत्र

1. बदला लेने का आनन्द सिर्फ एक दिन का होता है, किन्तु क्षमा करने का गौरव सदा बना रहता है।
2. सच्ची क्षमा समस्त गाँठों को विदीर्ण करने का सामर्थ्य रखती है।
3. हर परिस्थिति में स्वयं को संभालकर संतुलित रखना-यही क्षमा है।
4. क्षमा वही कर सकता है जो आत्मनिरीक्षण कर सकता है और वही क्षमा माँग सकता है।
5. क्षमापना मात्र उत्सव नहीं, आत्मशुद्धि का महान् अनुष्ठान है। विनय सरलता और नम्रता से आत्मा को ओतप्रोत करने का अचूक अवसर है।

45. पाँच बोल धर्मरक्षा के

1. धर्म की उत्पत्ति कठे - सत्य कायम रेवे जठे।
2. धर्म की स्थापना कठे - जहाँ पर छ:काय के जीवों की रक्षा होवे, जठे।
3. धर्म की परीक्षा कठे - कष्ट पड़ने पर कायम रेवे जठे।
4. धर्म की बढ़ोतरी कठे- सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप की आराधना करे जठे।
5. धर्म की घटोतरी कठे- क्रोध-मान-माया-लोभ रूपी कषाय रेवे जठे।

46. पाँच प्रकार के मनुष्य सर्वश्रेष्ठ

1. जो मनुष्य प्राणी–मात्र के कल्याण की भावना रखता है, वह मनुष्य सर्वश्रेष्ठ।
2. जो मनुष्य दैनिक व्यवहार में सच्चाई का पालन करता है, वह मनुष्य सर्वश्रेष्ठ।
3. जो मनुष्य तस्कर वृत्ति और व्यभिचार वृत्ति से अपने को अलग रखने वाला है, वह मनुष्य सर्वश्रेष्ठ।
4. जो मनुष्य सुखी जीवन का अभिमान नहीं करता है, वह मनुष्य सर्वश्रेष्ठ।
5. जो मनुष्य दूसरों के दुःखों को दूर रखने की भावना रखता है, वह मनुष्य सर्वश्रेष्ठ।

47. पाँच प्रकार अज्ञानी बनने के

1. ज्ञान को छुपाकर रखने से, 2. ज्ञान में विघ्न डालने से, 3. ज्ञान के प्रति द्वेष रखने से, 4. ज्ञान की निन्दा करने से, 5. ज्ञान का अविनय करने से।

48. पाँच लक्षण शरीर में से जीव निकलने के

1. पाँव में से जीवन निकलता है तो 'नरक गति' में जाता है।
2. जंघा में से जीव निकलता है तो 'तिर्यंच गति' में जाता है।
3. हृदय से जीव निकलता है तो 'मनुष्य गति' में जाता है।
4. मस्तक में से जीव निकलता है तो 'तिर्यंच गति' में जाता है।
5. सर्व अंग से जीव निकलता है तो 'मोक्षगति' में जाता है।

49. पाँच बोल रक्षा पर

1. छोटे-से जीव की रक्षा करो।
2. पराए (दूसरे) की रक्षा वस्तुतः अपनी रक्षा है।
3. अशुभ दान का फल भयंकर है।
4. पाप सदा के लिए छुपा नहीं रह सकता है।
5. विशेष धर्म करना आज्ञाभंग नहीं है।

50. कौन सच्चे ?

जो पाँच महाव्रत, पाँच समिति, तीन गुप्ति का प्रभु-आज्ञानुसार शुद्ध निर्दोष पालन करते हैं, वे ही सच्चे 'साधु-साध्वी' हैं।

जो देव-गुरु-धर्म पर दृढ़ श्रद्धा रखते हैं और जिन-वचनानुसार आचरण करते हैं, वे ही सच्चे 'श्रावक श्राविका' हैं।

जो अपने बालक-बालिकाओं को सेवा, विनय आदि गुण सिखाकर धर्म-संस्कारों से संस्कारित करते हैं, वे ही सच्चे 'माता पिता' हैं।

जो अपने माता-पिता की निस्वार्थ भाव से सेवा करते हुए विनय -पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करते हैं, वे ही सच्चे 'पुत्र-पुत्री' हैं।

जो दुःखों को समझ कर उन्हें शाता पहुँचाते हैं, उपकारी का उपकार मानते हैं, धर्मकार्य में एक-दूसरे के सहयोगी बनते हैं, वे ही सच्चे 'पारिवारिकजन' हैं।

51. आनन्द के छः प्रकार

1. आनन्द भोग में नहीं, योग में।
2. आनन्द बाहर में नहीं, भीतर में।

3. आनन्द पर में नहीं, स्व में।
4. आनन्द राग में नहीं, त्याग में
5. आनन्द जड़ में नहीं, चेतन में।
6. आनन्द लाभ में नहीं, संतोष में

52. सामायिक पारते समय चिन्तन

1. फासियं- स्पर्शित-फरसना-गुरु से या स्वयं विधिपूर्वक प्रत्याख्यान लेना।
2. पालयं- प्रत्याख्यान को बार-बार उपयोग में लाकर सावधानी के साथ सतत उसकी रक्षा करना।
3. सोइयं- कोई दूषण लग जावे तो उसकी शुद्धि करना।
4. तीरयं- लिये हुए प्रत्याख्यान को तीर (आखिर) तक पहुँचाना।
5. कीटयं- मन में इस प्रकार का अहोभाव लाना कि मैंने प्रत्याख्यान करके बहुत अच्छा काम किया ।
6. अराहियं- सब दोषों से सर्वथा दूर रहते हुए, विधि-अनुसार प्रत्याख्यान की आराधना करना।

53. आदर्श घर की रूपरेखा

1. व्यवस्था ही घर की शोभा है।
2. सन्तुष्ट स्त्री ही घर की लक्ष्मी है।
3. समाधान ही घर का सुख है।
4. आतिथ्य ही घर का वैभव है।
5. धार्मिकता ही घर का शिखर है।
6. प्रेम और श्रद्धा ही घर का पाया है।

54. खा जाता है

1. क्रोध- बुद्धि को खा जाता है।
2. घमण्ड- ज्ञान को खा जाता है।
3. प्रायश्चित्त- पाप को खा जाता है।
4. लालच- ईमान को खा जाता है।
5. रिश्वत- इन्साफ को खा जाती है।
6. चिन्ता- आयु को खा जाती है।

55. मनन-सूत्र

1. दिशा बदलने से 'दशा' नहीं बदलती।
2. कारण बिना कोई कार्य नहीं होता।
3. उपादान जैसा निमित्त मिलता हैं।
4. अगर चाह है तो राह अवश्य मिलेगी।
5. वर्तमान को सुधारने पर भविष्य अपने-आप सुधरेगा।
6. दवाई के साथ-साथ परहेज जरूरी है।
7. कथनी और करनी में एकरूपता ही साधना का मूल आधार है।

56. सुख-प्राप्ति सप्तक

सुखी बनने के सात उपाय इस प्रकार हैं-

1. अपनी मर्यादा में रहना।
2. आवश्यकताओं को कभ करते रहना।
3. प्रतिदिन कम से कम वस्तुओं का भोगोपभोग करना।
4. अनधिकार चेष्टा न करना।
5. जितनी वस्तुओं का संयोग मिलता है, उनमें सन्तोष करना।
6. इच्छाओं को रोकना, चिन्तन रखना।
7. ममत्व का त्याग करना।

57. विनय

1. विनय करने से आत्मा को शान्ति मिलती है एवम् आत्मा शुद्ध बनती है।
2. विनय से उच्च पद प्राप्त किया जा सकता है।
3. विनयी सभी पर विजय प्राप्त करता है।
4. विनय से ज्ञान की प्राप्ति होती है।
5. विनय सब गुणों का मूल है।
6. विनय ही मोक्ष का दाता है।

इसलिये हमें अपने से बड़ों का विनय सदैव करना चाहिए।

58. सत्य की महिमा

1. सत्य जीवन की शोभा है।
2. सत्य बोलने से आत्मबल दृढ़ होता है।
3. सत्य का पालन जो अटलता से करता है, उसकी जय-जयकार होती है।
4. सत्य बोलने वाला व्यर्थ के कर्मबन्ध से बच जाता है, क्योंकि एक झूठ को छिपाने के लिए कई झूठ बोलने पड़ते हैं।
5. सत्य बोलने वाला विश्वासपात्र होता है। झूठे व्यक्ति पर कोई विश्वास नहीं करता। अतः सदैव सत्य ही बोलना चाहिए।
6. सत्यवादी इस लोक में आदर प्राप्त करता है और परलोक में उसे सद्गति प्राप्त होती है सत्य ही जीवन का सब-कुछ है।

59. सत्य तथा समय

1. सत्य देशातीत एवम् समयातीत होता है।
2. सत्य समय से भी महान् होता है।

3. सत्य को भलीभाँति जानने वाला ही समय का पूर्ण उपयोग करता है।
4. सत्य को कारण ही समय अत्यन्त मूल्यवान होता है।
5. सत्य का जिन्हें ज्ञान-भाव नहीं है, वे अपना समय निरर्थक वातों एवम् तुच्छ कार्यों में ही व्यतीत कर देते हैं।
6. समय का सदुपयोग अर्थात् सम्यक् पुरुषार्थ से सत्य के निकट पहुँचना, सत्य को पाना आसान हो जाता है।
7. निश्चय दृष्टि से सत्य व सत्यानुभूति असमान नहीं हैं, परन्तु व्यक्ति के करने की भाषा-शैली भिन्न-भिन्न होती है।
8. अनेकान्त के बिना सत्य की रक्षा असंभव हैं।
9. अहिंसा के बिना सत्य-साधना नहीं हो सकती।
10. अहिंसा साधन है, सत्य साध्य है।
11. सत्य-साधक में सम्यक्त्वता होती है, जिसकी अंतिम परिणति सर्वज्ञता है।
12. सर्वज्ञ समय से सर्वथा अप्रभावित, समयजयी होता है एवम् सत्य परमानन्द में लीन होता है।

60. आठ-भूषण

1. आकश का भूषण - सूर्य।
2. कमल का भूषण - भँवरा।
3. वाणी का भूषण - सत्य।
4. धन का भूषण - दान।
5. मन का भूषण - मैत्री भाव।
6. खानदान का भूषण - शुद्धचारित्र।
7. सज्जन का भूषण - प्रिय वाणी।
8. सम्पूर्ण गुणों का भूषण - विनय।

61. मूर्ख के आठ लक्षण

1. फिक्र नहीं होवे,
2. भोजन खूब खावे,
3. बातें खूब करे,
4. नींद खूब लेवे,
5. कार्य-अकार्य का विचार नहीं करे,
6. स्वस्थ रहे,
7. मान-अपमान में एक समान,
8. मजबूत शरीर।

62. एक बार झूठ बोलने से नौ बातों का नुकसान

1. लज्जा जावे,
2. प्रतीति जावे,
3. विवेक जावे,
4. संयम जावे,
5. दया जावे,
6. ज्ञान जावे,
7. चारित्र जावे,
8. आत्मा का सुख जावे,
9. मोक्ष का सुख जावे।

63. कम बोलने के नौ गुण

1. क्रोध आवे नहीं, 2. लड़ाई होवे नही 3. झूठ बोलीजे नहीं, 4. घमण्ड आवे नहीं, 5. समय खराब होवे नहीं, 6. बुद्धि घटे नहीं, 7. शक्ति घटे नहीं, 8. कर्मबन्ध होवे नहीं, 9. नीच गति में जावे नहीं।

64. सम्पूर्ण जीवन में प्राप्त पदवियां

1. चक्रवर्ती और बलदेव की पदवी – दो बार प्राप्त हो सकती है।
2. वासुदेव-प्रतिवासुदेव की पदवी – तीन बार प्राप्त हो सकती है।
3. अहारक लब्धि और 14 पूर्वो का ज्ञान – चार बार प्राप्त हो सकता है।

   (एक भव में आहारक लब्धि दो बार – अनेक भव आसरी चार बार – चौथी बार प्राप्त होने पर उसी भव में मोक्ष प्राप्त हो जाता है।)
4. उपशम श्रेणि – एक भव में दो बार – अनेक भव आसरी चार – बार पाँचवीं बार क्षपक श्रेणी प्राप्त करके उसी भव में मोक्ष।
5. दसमां गुणस्थान – एक भव आसरी चार बार, अनेक भव आसरी नौ बार प्राप्त हो सकता है।
6. मनःपर्यव ज्ञान – सम्पूर्ण संसार-काल में ज्यादा सें ज्यादा आठ बार।
7. ऋजुमति मनःपर्यव ज्ञान – एक भव में एक बार (अनेक भव आसरी 5 बार, क्योंकि विपुलमति वाले की जघन्य आराधना नहीं होती)।
9. सम्यक्त्व-एक भव में जघन्य एक बार, उत्कृष्ट प्रत्येक – 1000 बार।

65. भगवान् महावीर स्वामी के शासन में नौजीवों ने तीर्थंकर गोत्र बान्धां

1. श्रेणिक राजा, 2 सुपार्श्व (भगवान् के काका) 3. उदायी राजा (श्रेणिक का पौत्र), 4. पोटिल अणगार, 5. दृढ़ आयु, 6. शंख

श्रावक, 7. शतक श्रावक, 8. सुलसा श्राविका, 9. रेवती श्राविका (सात भरत क्षेत्र में अंतिम दो महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकर होंगे)।

66. बुद्धि के आठ गुण

1. शुश्रूषा- शास्त्र सुनने की इच्छा।
2. श्रवण- शास्त्र सुनना।
3. ग्रहण- शास्त्र के अर्थ को समझना।
4. धारण- याद रखना।
5. उह- उस पर विचार करना।
6. अपोह- जो बातें आगम-विरुद्ध हों, उनमें दोष होने के कारण प्रवृत्ति नहीं करना।
7. अर्थविज्ञान- उह-अपोह द्वारा ज्ञान में हुऐ सन्देह को दूर करना।
8. तत्त्वज्ञान- निश्चयज्ञान करना।

ये आठ गुण धारण करने से बुद्धि निर्मल रहती है और अहितकारी प्रवृत्ति से बचाव होता है।

67. क्षमा क्या है?

1. क्षमा परम धर्म है।
2. क्षमा परम कर्म है।
3. क्षमा परम तप है।
4. क्षमा परम सत्य है।
5. क्षमा परम तेज है।
6. क्षमा परम बोध है।
7. क्षमा परम शान्ति है।

शिक्षाएँ

1. दान देने से दालिदार जावे।
2. धर्म करने से पाप जावे।
3. जागते रहने से चोर जावे।
4. मौन रखने से क्लेश जावे।

68. सात जनों का देवता संहरण (संग्रहण) नहीं कर सकते

1. अवेदी, 2. पुलाकलब्धि, 3 परिहार विशुद्धि चारित्र वाला, 4. 14 पूर्वोंड का ज्ञान वाला, 5. आहारक शरीर वाला, 6. आर्याजी महाराज, 7. अप्रमत्त साधु।

69. सात सुख

1. पहला सुख निरोगी काया,
2. दूसरा सुख घर में माया,
3. तीसरा सुख पुत्र आज्ञाकारी
4. चौथा सुख पत्नी सन्नारी,
5. पाँचवाँ सुख पड़ोसी सखरो,
6. छठा सुख राज में पासो,
7. सातवाँ सुख मोक्ष में वासो।

70. सात जनों के दिन नहीं फिरते

1. आलसी मानव, 2. डरपोक मानव, 3. दुराचारी मानव, 5. दुर्बल मानव, 6. साहसहीन मानव, 7. कामचोर मानव।

71. सात तरह के मनुष्य मरे हुये के समान

1. अत्यन्त दरिद्री, 2. नित्य का रोगी, 3. बहुत विलासी, 4. अतीव बुड्ढा, 5. सन्तों का विरोधी, 6. प्रभु से विमुख 7. विद्या से रहित।

72. आठ प्रकार के दु:ख

1. पहला दु:ख घर में तोटा,
2. दूसरा दु:ख अलग हो बेटा,
3. तीसरा दु:ख आँगन में बोर का झाड़
4. चौथा दु:ख पड़ोसी चोर,
5. पाँचवाँ दु:ख दूर हो पानी,
6. छठा दु:ख मूर्ख के साथ सीर,
7. सातवाँ दु:ख पराई जोखम,
8. आठवाँ दु:ख हाथ में हुक्का।

73. सद्गृहिणी के लक्षण आठ

1. गृहकार्य में कुशल,
2. शान्त स्वभाव वाली,
3. कोमल हृदय वाली,
4. पवित्र विचार वाली,
5. विवेकयुक्त विचार वाली,
6. सादे लिबास वाली,
7. संतोष वृत्ति वाली,
8. मृदुवाणी बोलने वाली।

74. मानव-जीवन

1. मानव-जीवन चिन्तामणी सम चिन्ता दूर करने वाला है।
2. मानव-जीवन कामधेनु सम इच्छा पूरण करने वाला है।
3. मानव-जीवन कल्पवृक्ष सम चाहत पूर्ण करने वाला है।
4. मानव-जीवन नील गगन सम स्वावलम्बी बनना सीखाता है।
5. मानव-जीवन सूर्य-प्रकाश सम आत्म-ज्ञान का पुंज है।
6. मानव-जीवन चन्द्र सम शीतल बनाना सिखाता है।
7. मानव-जीवन वृत्ति से दानव बनता है, मानव अपनी वृत्ति से परमात्म पद पाता है।
8. मानव-जीवन वह चौराहा है, जहाँ से कार्मानुसार चारों गति में जन्म होता है और कर्मों का नाश कर मोक्ष की मंजिल में पहुंच जाता है।

75. सात कुव्सयन

1. जुआ खेलना, 2. मांस-भक्षण, 3. मदिरा एवम् धूम्रपान, 4. वेश्यागमन, 5. शिकार खेलना, 6. चोरी करना, 7. पराई स्त्री के साथ गमन करना।

76. रोग होने के नौ-कारण

1. अधिक बैठने या खेड़े होने से, 2. प्रतिकूल आसन से वैठने से, 3. अधिक नींद लेने से, 4. अधिक जागते रहने से, 5. वड़ी नीत रोकने से, 6. लघुनीत - मूत्र रोकने से, 7. अधिक चलने से, 8. अधिक भोजन करने से, 8. विषयों में अधिक गृद्ध रहने से।

77. संक्षिप्त बारह व्रत

हमारे धर्म के संस्कार मजबूत बनें, सुसंस्कार रूपी धन की वृद्धि हो, इसके लिए ज्ञानियों ने निम्न नियम बनाये हैं, जिनमे पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत के भाव आ जाते हैं-

1. पाँच अणुव्रत के भाव-
1. सदा जीवों की रक्षा करो।
2. मुख से सच्ची बातें करना।
3. माँग-पूछ कर वस्तु लेना।
4. ब्रह्मचर्य का पालन करना।
5. इच्छा अपनी सदा घटाना।

2. तीन गुणव्रत के भाव-
1. इधर-उधर व्यर्थ नहीं आना-जाना।
2. सीधा-सादा जीवन जीना।
3. कोई अनर्थ का काम न करना।

3. चार शिक्षाव्रत के भाव-
1. नित उठकर सामायिक करना।
2. जीवन में मर्यादा लाना।
3. बनते पौषध व्रत आदि करना।
4. अपने हाथों से साधु-साध्वियों को बहराना।

उपरोक्त निम्न सम्पूर्ण जैन समाज में बने हुए हैं। इन नियमों को आज संसार के जितने भी धर्म हैं, वे किसी-न-किसी रूप में धारण करते हैं। हमें अपने आप्रप्त पुरुषों के मुखारविन्द से निकले उपरोक्त (भावों) पर दृढ़ श्रद्धा रखते हुए, इनका पालन करना चाहिए।

यदि हम अपने धर्मरूपी संस्कारों को भविष्य में सुरक्षित देखना चाहते हैं तो हम अपने परिवार के बालक-बालिकाओं को उपरोक्त नियम सदैव प्रातःकाल 'प्रार्थना' के रूप में बोलना-धारण करना सिखाएँ। बालक-बलिकाओं को धार्मिक पाठशाला और धार्मिक

शिक्षण शिविरों में भेजकर वीतराग धर्म का पालन किस प्रकार हो, इसकी शिक्षा दें ताकि हमारे संस्कार धन की सुरक्षा हो सके।

78. काल की चक्की

एक दिन 'कबीरदासजी' गाँव में घूम रहे थे कि सहसा उनके कानों में चक्की (घट्टी) चलने की आवाज आई। वे रोने लगे। चक्की चलाने वाली बुढ़िया ने रोने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा-

''चलती चक्की देखकर दिया कबीरा रोय,
दो पाटन के बीच में बाकी बचा न कोय।''

इसका आशय है कि धरती और आसमान, इन दो पाटों, की काल चक्की चल रही है। इससे कोई प्राणी बच नहीं सकता। जो भी जन्म लेता है, कालरूपी चक्की में पिसकर मर जाता है। कबीरदासजी के दोहे के उत्तर में बुढ़िया बोली-

''चक्की चले तो चलन दे, पिस-पिस मांदा होय।
जो कील से लगा रहे, बाल न बांका होय।''

इसका आशय यह है कि जो व्यक्ति भगवान् की भक्ति-धर्म आराधना करता है वह उस कील के लगे दाने के समान दुःखों से बचा रहता है। ऐसा व्यक्ति संसार में रहते हुए भी, संसार से विरक्त रहता है।

79. हमारा चिन्तन

क्या आपको कोई शुभ कार्य करना है? दान देना है?......... तप करना है?......व्रत-जप करना है? तो आज ही करलो ! 'कल' के भरोसे मत रहो, 'कल करूँगा', कल करूँगा.....कल की बात मत करो। कल को कौन जानता है? आयुष्य आज पूर्ण हो सकता है, शरीर की शक्ति आज क्षीण हो सकती है। 'उत्साह आज ही समाप्त हो सकता है। कौन जाने कल की?' जो सुकृत करना है, आज ही करलो।

80. महामूढ़

1. स्वयं के काम को बिगड़ने दे और दूसरों का काम करने को दौड़े।
2. समर्थ होते हुए भी मित्र-स्वजनों की सहायता नहीं करे, परन्तु दूसरों से सहायता की आशा रखे।
3. उतावल (शीघ्रता) से कार्य करे।
4. हानि-लाभ का विचार किये बिना काम करे।
5. निर्धन होते हुए ऊँचे-ऊँचे कामों के करने के ख्वाल देखे।
6. खोटे धन्धे, रोजगार करके धन एकत्रित करे, परन्तु धर्म ध्यान का लक्ष्य न रखे।
7. स्वयं करने योग्य कार्य भी दूसरों से अथवा नौकरों से करवाए।
8. अपनी शक्ति पर अविश्वास रखने वाला।

81. महापापी

1. आत्मघाती-'महापापी'।
2. विश्वासघाती-'महापापी'।
3. गुरुद्रोही-'महापापी'।
4. उपकारी का उपकार भूलने वाला अथवा उसका अपकार (बुरा) करने वाला-'महापापी'।
5. झूठी सलाह देने वाला-'महापापी'।
6. हिंसा में धर्म बताने वाला-'महापापी'।
7. झूठी साक्षी देने वाला-'महापापी'।
8. सरोवर की पाल तोड़ने वाला-'महापापी'।
9. वन में आग लगाने वाला-'महापापी'।
10. हरा-भरा वन काटने वाला-'महापापी'।

11. बालहत्या करने वाला–'महापापी'।
12. सती–साध्वी का शील लूटने वाला–'महापापी'।

82. ज्ञान–वृद्धि के ग्यारह बोल

1. उद्यम करे तो ज्ञान बढ़े,
2. निद्रा तजे तो ज्ञान बढ़े,
3. तपस्या करे तो ज्ञान बढ़े,
4. कम बोले तो ज्ञान बढ़े,
5. ज्ञानी की संगत करे तो ज्ञान बढ़े,
6. विनय करे तो ज्ञान बढ़े,
7. कपटरहित तप करे तो ज्ञान बढ़े,
8. संसार को असार जाने तो ज्ञान बढ़े,
9. ज्ञानवंत के पास बैठे तो ज्ञान बढ़े,
10. ज्ञानियों के साथ ज्ञान–चर्चा करे तो ज्ञान बढ़े,
11. इन्द्रियों के स्वाद को तजे तो ज्ञान बढ़े।

83. श्रावकजी की भाषा

1. श्रावकजी थोड़ा बोले,
2. श्रावकजी काम पड़ने से बोले,
3. श्रावकजी मीठा बोले,
4. श्रावकजी चतुराई से या मौका देख कर बोलें,
5. श्रावकजी अहंकाररहित बोले,
6. श्रावकजी मर्मकारी भाषा नहीं बोले,
7. श्रावकजी सूत्र–सिद्धान्त के न्याय से बोले
8. श्रावकजी सभी जीवों के हितकारी सातवकारी भाषा बोले।

84. धर्म के पन्द्रह बोल

1. नीतिवान होवे,
2. हिम्मतवान होवे,
3. धैर्यवान होवे,
4. बुद्धिमान होवे,
5. सत्यवान होवें,
6. निष्कपटी होवे,
7. विनयवान होवे,
8. गुणग्राही होवे,
9. प्रतिपालक होवे,
10. दयावान होवे,
11. सत्यधर्म का अर्थी होवे,
12. जितेन्द्रिय होवे,
13. आत्म-कल्याण की इच्छा वाला होवे,
14. तत्त्वविचार में निपुण होवे,
15. जिसके पास से धर्म प्राप्त हुआ हो, उसका उपकार कभी नहीं भूले।

85. याद रखने योग्य बातें

1. ईश्वर से नम्रता,
2. सर्वसाधारण के साथ न्याय और शालीनता,
3. इन्द्रियों के साथ दमन,
4. विरक्तों के साथ सत्संग,
5. वृद्ध एवं बड़ों की सेवा,
6. छोटों के साथ प्रीति,
7. मित्रों के साथ सत्कार,

8. मूर्खों के साथ चुप,
9. वैरियों के साथ सहनशीलता,
10. बुद्धिमानों के साथ मान-प्रतीति,

86. तृप्ति नहीं होती

1. नेत्र-देखने से,
2. पृथ्वी-वर्ण से,
3. याचक-माँगने से,
4. स्त्री-परुष के संग से,
5. विद्याभिलाषी-विद्या से
6. कृपण-धनसंचय से,
7. नदी-जल से,
8. अग्नि-काष्ठ से,

87. शिक्षा - हो तो

1. धर्म का ज्ञान हो तो दया पाले,
2. ज्ञान का बल हो तो अवश्य बोले,
3. बुद्धिमान हो तो सभा जीते,
4. साधु-समागत हो तो संतोष की प्राप्ति करे,
5. सूत्र-सिद्धान्त का श्रवण करे तो धीरज धारे,
6. वैराग्य सच्चा हो तो इन्द्रियों को वश में करे,
7. छ:काय के जीवों की रक्षा करे तो निर्भयता पावे,
8. मद का त्याग करे तो इन्द्र की पदवी पावे,
9. चार-तीर्थों का शाता उपजावेतो तीर्थंकर पदवी पावे,
10. विशुद्ध शील-संयम का पालन करे तो मोक्ष के सुखों को पावे'

88. दसश्रमण-धर्म

1. क्षमा- क्रोध पर विजय प्राप्त कर शान्त रहना।
2. मुक्ति- लोभ-लालच से मुक्त रहना।
3. आर्जव- माया-कपट का त्याग कर सरल बनाना।
4. मार्दव- मान-अहंकार का त्याग कर नम्र होना।
5. लाघव- लघुता, हल्कापन, वस्त्रादि बाह्य उपधि और संसारियों के स्नेहरूपी आभ्यंतर भार से हल्का रहना।
6. सत्य- असत्य से सर्वदा दूर रहना और आवश्यक हो, तब सत्य एवं हितकारी वचनों का व्यवहार करना।
7. संयम- मन-वचन-काया की सावद्य प्रवृत्ति का त्याग करना।
8. तप- इच्छा का निरोध कर बारह प्रकार का सम्यक् तप करना।
9. त्याग- परिग्रह और संग्रह वृत्ति से दूर रहना।
10. ब्रह्मचर्य- नववाड़ सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन करना।

89 दस मुण्डन

1. श्रोत्रेन्द्रिय मुण्डन,
2. चक्षुरिन्द्रिय मुण्डन,
3. घ्राणेन्द्रिय मुण्डन,
4. रसनेन्द्रिय मुण्डन,
5. स्पर्शेन्द्रिय मुण्डन,
6. क्रोध मुण्डन - गुस्सा नहीं करना,
7. मान मुण्डन - घमण्ड अहंकार नहीं करना
8. माया मुण्डन - कपट नहीं करना,
9. लोभ मुण्डन - लालसाएँ छोड़ना,
10. शिर मुण्डन - केशललुंचन-लोच करना।

90. दस दुर्लभ

1. मनुष्य जन्म मिलना,
2. आर्यक्षेत्र मिलना,
3. उत्तम कुल मिलना,
4. पूर्णन्द्रिय मिलना,
5. लम्बा दीर्घ आयुष्य मिलना,
6. निरोगी काया का मिलना,
7. साधु-मुनिराजों की जोगवाई,
8. सूत्र-सिद्धान्त सुनना,
9. श्रद्धा प्रतीति एवं रुचि दुर्लभ,
10. धर्म में पराक्रम फोड़ना दुर्लभ।

91. नीति के दस बोल

1. सबका भला करना। 2. दस सत्य बोलना।
3. ईमानदारी रखना। 4. चाल चलन शुद्ध रखना।
5. सबका विनय करना। 6. क्षमा करना।
7. संतोष रखना। 8. एकता रखना।
9. उद्यमी बनना। 10. सबके अच्छे गुण लेना।

92. छद्मस्थ दस बोल जानने में असमर्थ

1. धर्मास्तिकाय, 2. अधर्मास्तिकाय, 3. आकाशास्तिकाय, 4. शब्द, 5. रूप, 6. वायु, 7. अशरीरी जीव (सिद्ध), 8. परमाणु पुद्गल, 9. यह जीव तीर्थंकर बनेगा या नहीं, 10 यह जीव सिद्ध होगा या नहीं।

93. नारकी जीवों की दस प्रकार की क्षेत्र-वेदना

1. अनंत भूख, 2. अनंत प्यास, 3. अनंत गरमी, 4. अनंत सर्दी, 5. अनंत रोग, 6. अनंत शोक, 7. अनंत भय, 8. अनंत खाज, 9. महाज्वर, 10. अनंत आश्रयपणा, पराधीनपना।

94. पुद्गल के दस लक्षण

1. शब्द, 2. अन्धकार, 3. उद्योत, 4. आतप, 5. प्रभा, 6. छाया, 7. वर्ण, 8. गन्ध, 9. रस, 10. स्पर्श।

95. कर्म की दस अवस्थाएँ

1. बन्ध, 2. सत्ता, 3. उदय, 4. उदीरणा, 5. उद्वर्तन, 6. अपवर्तन, 7. संक्रमण, 8. उपसम, 9. निर्घात, 10. निकाचित।

96. दस बोल – निष्फल जाने के

1. कड़ी धरती में बीज बोवे तो 'निष्फल जावे'।
2. अकाल में वर्षा न होवे तो 'निष्फल जावे'।
3. भयारे समुद्र में पानी बरसे तो "निष्फल जावे"।
4. दिन में दीपक की ज्योत्ति करे तो "निष्फल जावे"।
5. अज्ञानी को ज्ञान देवे तो "निष्फल जावे"।
6. गोबर का पुतला करके पूजे तो "निष्फल जावे"।
7. कपूत बेटे को धन देवे तो "निष्फल जावे"।
8. विधवा स्त्री के गर्भ? तो "निष्फल जावे"।
9. फटा हुआ दूध बिलोवे तो "निष्फल जावे"।
10. संसार में सुख नहीं तो जीवन "निष्फल जावे"।

97. दस प्रकार के अन्धे

1. क्रोध का अन्धा, 2. मान का अन्धा, 3. माया का अन्धा, 4. लोभ का अन्धा, 5. राग का अन्धा, 6. द्वेष का अन्धा, 7. दिन का अन्धा, 8. रात का अन्धा, 9. जन्म का अन्धा, 10. विषय- वासनाओं का अन्धा।

98. दस प्रकार के कसाई

क्रोध-कसाई- क्रोध करने वाला कसाई।
मान-कसाई- मान-अभिमान करने वाला कसाई।
माया-कसाई- माया-कपटाई करने वाला कसाई।
लोभ-कसाई- लोभ-लालच करने वाला कसाई।
बकर-कसाई- बकरी-काटने वाला कसाई।
तकर-कसाई- खोटा तोल व खोटा माप करने वाला कसाई।
लकर-कसाई- लकड़ी-जंगल काटने वाला कसाई।
कलम-कसाई- खोटा लेख लिखने वाला कसाई।
कण-कसाई- चक्की चलाने वाला कसाई।
पत्थर-कसाई- पत्थर फोड़ने वाला कसाई।

99. दस बोल का निर्णय करने में कोई भी समर्थ नहीं

1. जीव की आदि बताने में,
2. सिद्धों का निर्णय निकालने में,
3. अभवी को समझाने में,
4. अभवी को भवी बनाने में,
5. एक समय में दो उपयोग रखने में,
6. दूसरों के पापों को हटाने में,

7. अजीव को जीव बनाने में,
8. परमाणु पुद्गल का छेदन कराने में,
9. अलोक का भेद निकालने में,
10. अलोक में जाने में।

100. दस बोल, बड़ा कौन ?

1. उम्र में बड़ा कौन?......गुणवान।
2. अग्नि से बड़ा कौन?.........मोहनीय कर्म।
3. हवा से बड़ा कौन?....................मन के विचार।
4. तलवार से तेज कौन?............कठोर वचन।
5. स्वयं-भूरमण समुद्र से बड़ा कौन?.............सत्य वचन।
6. मेरु पर्वत से बड़ा कौन ?................अभयदान।
7. चन्द्रमा से निर्मल कौन?..............तपस्या।
8. धन से बड़ा कौन?..........संतोष।
9. देवलोक से बड़ा कौन?..............केवल-ज्ञान।

101. दस खड्डे कभी नहीं भरते।

1. पेट का खड्डा खाने से, 2. समुद्र का खड्डा पानी से, 3. घर का खड्डा सामान से, 4. श्मशान का खड्डा लाशों से, 5. जन्म का खड्डा जन्म लेने वालों से, 6. राजकोष का खड्डा कितने भी टेक्स लगाने से, 7. आकास का खड्डा सभी जीवों को स्थान देने से भी नहीं भरता, 8. तृष्णा का खड्डा कितना भी धन-संचय से, 9. अग्नि का खड्डा कितनी भी लकड़ी डालो, नहीं भरता, 10. मरण का खड्डा मरने वालों से नहीं भरता।

102. दस व्यापार कभी मत करना

1. मांस का, 2. मछली का, 3. अण्डों का, 4. शराब का, 5. विष का, 6. शस्त्रों का, 7. अफीम का, 8. चरस का, 9. गांजे का, 10. नशीले पदार्थों का।

103. निम्न व्यक्ति समाधि को प्राप्त नहीं कर सकते

1. जो सुख-सुविधा के पीछे दौड़ते हैं,
2. जो आसक्त जीवन जीते हैं,
3. जो काम-भोगों से मूर्च्छित रहते हैं,
4. जो अपने दोषों का परिमार्जन करने में कृपण हैं।

104. शिक्षाएँ

1.दीजे दान, 2. टालजे कुसंगत, 3. लीजे यश, 4. छोड़जे पाप, 5. आदरजे धर्म, 6. खाईजे गम, 7. ध्यायजे अरहंत देव, 8. पीजे प्रेम रस, 9. सेवजे निर्ग्रन्थ गुरुदेव, 10. पालजे शील, 11. कीजे परोपकार, 12. रमण करजे स्वाध्याय-ध्यान में।

105. है-तो-

1. पीने की कोई चीज है तो - क्रोध।
2. खाने की लिए कोई चीज है तो - गम।
3. लेने के लिए कोई चीज है तो - ज्ञान।
4. देने के लिए कोई चीज है तो - दान।
5. कहने के लिए कोई चीज है तो - सत्य।
6. पालने के लिए कोई चीज है तो - दया।
7. रखन के लिए कोई चीज है तो - इज्जत।

8. हारने के लिए कोई चीज है तो - अनीति।
9. जीतने के लिए कोई चीज है तो - प्रेम।
10. छोड़ने के लिए कोई चीज है तो - मोह।
11. फेंकने के लिए कोई चीज़ है तो - ईर्ष्या।

106. भव घटने के चार बोल

1. शुद्ध समकित निर्मल पाले तो भव घटे।
2. लिए हुए व्रत-प्रत्याख्यान शुद्ध पाले तो भव घटे।
3. शुद्ध मन से ब्रह्मचर्य का पालन करे तो भव घटे।
4. साधु-मुनिराजों को निर्दोष आहार-पानी देवे तो भव घटे।

107. धर्म-श्रवण की दुर्लभता

निम्नलिखित तेरह कारणों से अति दुर्लभ मनुष्य जन्म पाकर भी यह जीव आत्म-हितकारी एवं संसा-से पार पहुँचाने वाला धर्म श्रवण प्राप्त नहीं करता-

1. आलस्य- मनुष्य आलस्यवश साधु के समीप नहीं जाता और शास्त्र-श्रवण नहीं करता ।
2. मोह- मोहवश गृहस्थी के झंझटों में फँसा मानव धर्मश्रवण के लिए समय़ नहीं निकालता।
3. अवज्ञा- संत, साधु व महात्माओं के प्रति अवज्ञा होने से ये लोग क्या जानते हैं? इसकी अपेक्षा कर उनके पास नहीं जाता।
4. मान- जाति आदि के अभिमान के कारण अपने को सबसे बड़ा समझने वाला मनुष्य भी साधु-समागम नहीं करता।
5. क्रोध- कोई साधु को देखकर क्रोध करता है, जिससे पास जाकर धर्म-श्रवण नहीं करता।

6. प्रमाद- पाँच प्रमादों में फँसा हुआ जीव धर्म-श्रवण नहीं करता।
7. कृपणता- साधु के पास व्याख्यान आदि में जाने से धर्म-कार्यों में कुछ समय व्यय करना पड़ेगा। इस कारण से कृपण स्वभाव वाला व्यक्ति धर्म-श्रवण नहीं करता।
8. भय- साधु लोग नरकादि का भयावना वर्णन करते हैं, इस आशंका से कोई डरपोक व्यक्ति धर्म-श्रवण को नहीं जाता।
9. शोक- इष्ट वस्तु के वियोगजन्य शोक से व्याकुल व्यक्ति धर्म-श्रवण को नहीं जाता।
10. अज्ञान- कुदशर्नियों से बहकाया हुआ बाल-अज्ञानी व्यक्ति भी सत्य-धर्म का श्रवण नहीं करता।
11. व्याक्षेप- विविध कृतव्यों से व्याकुल चित्त वाला व्यक्ति भी धर्म-श्रवण को नहीं जाता।
12. कुतूहल- नाट्यादि विषयक कुतूहल के कारण वाला व्यक्ति भी धर्म-श्रवण को नहीं जाता।
13. रमण- पाँच इन्द्रिय विषयों में रमण करने वाला व्यक्ति भी धर्म-श्रवण को नहीं जाता।

(हरीभद्रीयावश्यक निर्युक्ति, गाथा 841-842)

108. संगति का प्रभाव

जितेन्द्रिय, व्रतधारी, प्रतिव्रता स्त्री, वीर पुरुष, सूर पुरुष, त्यागी पुरुष और बहुश्रुत की संगति करने से व्यक्ति उनके जैसा ही गुणवान बन जाता है।

धर्म उत्कृष्ट मंगल है अहिंसा, संयम और तप उसके लक्षण हैं जिसका मन सदा धर्म में रमा होता है, उसे देव भी नमस्कार करते हैं।

109. अपरिग्रह - वर्तमान का

1. कहाँ से कहाँ पहुँच गए वीर के भक्त गण! ताक पर रख दी सीखर अपरिग्रही बनने की।
2. शादी में बुलाये अगणित रात को नौ बजे, गाजर और आलू के बनाये पकवान दस।
3. मण्डप की साज-सज्जा, बिजली की जगमग में लाख रुपये फूंक दिये - फोटू और भाड़े पर।
4. सेवा के काम में, रोवे दान देने में, धर्म की सभा में बात करे अपरिग्रह की।

110. आदर्श खानदान

1. खा- खाते हैं जहाँ गम सभी, नहीं जहाँ पर क्लेश, कल-कल गंगा बह रही प्रेम की जहाँ विशेष।
2. न- नहीं व्यसन वृत्ति कोई, खान-पान विवेक, शयन जागरण समय पर, करे कमाई नेक।
3. दा- दाता जिस घर में सभी, निन्दक नहीं नर-नार, नहीं धर्म -ध्यान के बाद हो, जहाँ और व्यवहार।
4. न- नमन गुणीजनों को करे, दु:खी जनों के दुख दूर, सेवा की शुभ भावना, मुखड़े हो सूर नूर।।

111. सोना-चिरमी संवाद

1. सोना- सोना कहे सुनार से, सुनो हमारी बात।
काले मुँह की चिरमी तुली हमारे साथ।।
2. चिरमी- हरी हमारी बेलड़ी, और ऊँची जात।
काला मुँह तब हुआ तुल नीचे के साथ।।

3. सोना- सोना कहे सुन चिरमी, यही हमारी बात।
जो तुझ में गुण हो तो जलो हमारे साथ।।

4. चिरमी- चिरमी कहै स्वर्ण सुन, एक ही ध्यान लगाय।
अवगुण होवे सो जले, मेरी जले बलाय।।

112. मन को कैसे वश में रखें

गणधर गौतम स्वामी से प्रश्न पूछते हुए केशी स्वामी कहते हैं-
अयं साहसिओ भीमो दुट्ठोस्सो परिधावई,
जसि गोयम! आरुढ़ो कहं तेव न हीरसि?

महर्षि गौतम ! एक भयंकर दुस्साहसिक चंचल और दुष्ट अश्व है। प्रतिपल बड़ी तेजी से दौड़ता रहता है। आप इस पर चढ़े हुए हो, किन्तु आश्चर्य है, वह आपको उन्मार्ग में कैसे नहीं ले जाता?

कृपया बतलाइये वह घोड़ा कौन है? और आप उस घोड़े को किस प्रकार रोक सकते हैं ?

माणो साहसियों भीमो। दुट्ठक्सो परिधावई,
तंसम्मं णिगिण्हामि, धम्म सिक्खाए कथंग।।

हे केशी ! मन ही साहसिक, भयंकर, चंचल, दुष्ट प्रकृतिवाला घोड़ा है, मैं धर्म-शिक्षा की लगाम डालकर उसे अपने वश में लिए रखता हूँ।

मन को नियंत्रण में रखने के लिए धर्म-शिक्षा, सतत अभ्यास एवम् वैराग्य की जरूरत है। मन को एक विषय पर स्थिर करना, यही मन-निरोध का उपाय है।

113. आठ कर्मों की अल्पताबहुत्व

आयुष्य कर्म के पुद्गल सबसे थोड़े, नाम कर्म के पुद्गल उससे कम। गोत्र कर्म के पुद्गल परस्पर तुल्य विशेषाधिक। ज्ञानावर्णाय .

दर्शनावरणीय अन्तराय कर्म के पुद्गल परस्पर तुल्य विशेषाधिक । मोहनीय कर्म के पुद्गल इनसे विशेषाधिक। वेदनीय कर्म के पुद्गल उनसे विशेषाधिक।

114. आठ अनंत की अल्पताबहुत्व

1. सबसे थोड़ा अभवी जीव,
2. उससे पडवाई समदृष्टि समदृष्टि जीव अनंतगुणा,
3. उससे सिद्धौं के जीव अनंतगुणा,
4. उससे संसारी जीव अनंतगुणा,
5. उससे पुद्गल गुणा,
6. उससे काल अनंतगुणा,
7. उससे आकाश प्रदेश अनंतगुणा,
8. उससे केवल-ज्ञान, केवल-दर्शन के पज्जवे अनंतगुणा।

115. मृतवत् जीवन

शक्ति होते हुए भी किसी का उपकार नहीं करना, धन होते हुए भी सुकृत कार्यों में खर्च नहीं करना, बल-पराक्रम होते हुए भी तपस्या, व्रत, प्रत्याख्यान नहीं करना, और प्रत्येक कार्य करते हुए जीवों की यतना नहीं रखना, ऐसे मनुष्यों का जीवन मृत वत् जानना चाहिए।

116. जम्बू स्वामी के मोक्ष जाने के बाद दस बोलों का विच्छेद

1. परम अवधिज्ञान, 2. मनः पर्यवज्ञान, 3. केवलज्ञान, 4. पुलाक लब्धि 5. आहारक लब्धि, 6. क्षायक समकित, 7. जिनकल्प,

8. परिहार विशुद्धि चारित्र, 9. सूक्ष्मसंपराय चारित्र, 10 यथाख्यात चारित्र।

117. तीन-बातें

1. तीन बातें ध्यान में रखो (1) भगवान का नाम, (2) दूसरों का सम्मान, (3) अपने दोषों का देखो।
2. तीन बनों- (1) नम्र बनो, (2) सरल बनो, (3) सुशील बनो।
3. तीन बातें याद रखो-(1) व्यापार के बना धन नहीं बढ़ता, (2) चर्चा के बिना ज्ञान नहीं बढ़ता, (3) प्रभाव के बिना शासन नहीं चलता।
4. तीन का सम्मान करो-(1) वृद्धजनों का, (2) विद्वानों का, (3) निर्धनों का।
5. तीन को मत रोको-(1) दान देने वाले दाता को, (2) धर्म -प्रचार करने वाले संत को, (3) सेवा करने वाले सेवक को।
6. तीन को पाकर कभी मत फूलो- (1) धन-सम्पत्ति (2) अपनी प्रशंसा, (3) पराई निन्दा।
7. तीन में देरी करो-(1)मुकदमेंबाजी में, (2) लड़ाई-झगड़े में, (3) दोषों के निर्णय में।
8. तीन कार्य नित्य करो- (1) श्रेष्ठ धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय, (2) प्रभु का ध्यान, (3) निज दोषों का चिन्तन।
9. तीन कभी मत बनो-(1) कृतघ्नी, (2) अभिमानी, (3) मायावी।
10. तीन नम्रता के लक्षण -(1) कड़वी बात का मीठा उत्तर, (2) क्रोध आने पर चुप रहना, (3) अपराधी को दण्ड देते समय कोमल रहना।

11. तीन बातें सबसे ऊँची-(1) तीर्थंकर सबसे ऊँचे, (2) वाणी उससे भी ऊँची, (3) श्रद्धा उससे भी ऊँची।
12. तीन पर अंकुश रखो- (1) अपने वचनों पर, (2) अपने तन पर, (3) अपनी इच्छाओं पर।
13. तीन चीजें किसी की प्रतीक्षा नहीं करती (1) समय, (2) मृत्यु, (3) ग्राहक।
14. तीन चीजें जीवन में एक बार मिलती हैं-(1) माता, (2) पिता, (3) यौवन।
15. तीन चीजें वापस नहीं आतीं- (1) कमान से निकला तीर, (2) जबान से निकला बोल, (3) शरीर से निकला प्राण।
16. तीन चीजों को वश में करो- (1) मन को, (2) काम को, (3) लोभ को।
17. तीन गुणों से परभव नहीं बिगड़ता- (1) नीतिमान का (2) भोगो में संयमी, (3) सर्वत्र दयाभाव।
18. तीन मार्ग मोक्ष जाने के- (1)सच्ची श्रद्धान, (2) सच्चा ज्ञान, (3) सच्चा आचरण।
19. तीन बातें नम्रता की - (1) कम खाना, (2) गम खाना, (3) नम जाना।
20. तीन सरल उपाय मोक्ष जाने के (1) आत्मनिन्दा करना, (2) परनिन्दा छोड़ना, (3) आत्मचिन्तन करना।

118. धर्म

1. शान्ति के समान कोई तप नहीं, संतोष से बढ़कर कोई सुख नहीं, तृष्णा से बढ़कर कोई व्याधि नहीं, दया के समान कोई धर्म नहीं।

2. धर्म अंत:प्रकृति है। वह सारी वस्तुओं का ध्रुव सत्य है। धर्म ही परम लक्ष्य है, जो हमारे अन्दर काम करता है।
3. यदि मनुष्य धर्म की उपस्थिति में इतना दुष्ट है तो धर्म की अनुपस्थिति में उसकी क्या दशा होगी ?

119. समय

1.भूतकाल - स्वप्न, 2. वर्तमानकाल - अपना 3. भविष्यकाल - कल्पना।

1. भूतकाल –यस्टरडे इज केन्सल चेक।
2. भविष्यकाल–टुमारों इज क्रोस चेक विज केनोट बी केश टुडे।
3. वर्तमान काल–टुडे इज रेडी चेक यू ट्रीट वाएजली(बुद्धिमानी से)

120. समय व्यर्थ खोने के तीन कारण

मनुष्य का अधिकांश समय व्यर्थ की बातों में चला जाता है। इसके मुख्य तीन कारण हैं:–1. बीती हुई घटनाओं का चिन्तन, 2. वर्तमान का दुरुपयोग, 3. भविष्य की आशा।

प्राप्त शक्ति का सदुपयोग करने से वर्तमान में हाने वाली व्यर्थ चेष्टा और चिन्तन मिट सकता है। तथा वर्तमान के सदुपयोग से भविष्य भी उज्ज्वल हो जाता है। अत: भविष्य की आशा भी अनावश्यक है। यह विश्वास होने से भविष्य की आशा भी मिट सकती है। अत: साधक को चाहिए कि भूतकाल की घटनाओं के अर्थ को समझे और भविष्य की आशा नहीं करे।

121. चार बोल शिक्षा पर

1. खावणो कई? पीवणो कई? – खावणो खिम्या। पीवणो भगवान री वाणी।

2. देवणो कई? लेवणो कई?–देवणो सुपात्रदान, लेवणो अरहन्त रो नाम।
3. पैरणो कई? ओढ़णो कई? पैरणो शीलं, – ओढ़णो लज्जा।
4. आवणो कठे? जावणो कठे? – आवणो स्थानक में. जावणो मोक्ष में।

122. तैंसठ श्लाघा पुरुष

61 माता, 52 पिता, 59जीवा, 60 शरीरा।
नव नव तीना (9,9,9) बारह, चौबीसा.
63 श्लाघा पुरुष जगीश।

1. 61 माता– श्री शान्तिनाथजी, श्री कुन्थुनाथजी, श्री अरनाथ जी, तीनों चक्रवर्ती भी हुए इसलिए तीनों की माता कम हुई (63–3–60), भगवान महावीर स्वामी की माता दो होने से 60+1=61 माता।
2. 52 पिता– 9 बलदेव, 9 वासुदेव, एक ही पिता के पुत्र होने से 9 कम करने पर (61–9–52) पिता हुए।
3. 59 जीवा– श्री शान्तिनाथजी, श्री कुन्थुनाथजी, श्री अरनाथजी तीनो चक्रवर्ती और तीर्थकर हुरे भगवान महावीर वासुदेव और तीर्थकर हुवे=63–4=59।
4. 60 शरीरा– श्री शान्तिनाथजी, श्री कुन्थुनाथजी, श्री अरनाथजी–तीनों का चक्रवर्ती और तीर्थकर रूप में एक ही शरीर। 63–3=60 शरीर।

123. चार खन्ध

1. ब्रह्मचर्य–सम्पूर्ण रूप से ब्रह्मचर्य का पालन सब तपों में श्रेष्ठ तप लिया है। ब्रह्मचर्य पालन करने वाला 9 लाख संज्ञी जीवों

को अभयदान देता है और अतुल सुखों की प्राप्ति करता है। इस प्रकार सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य की मर्यादा करने रूप प्रथम खन्ध।

2. **सचित्त पानी का त्याग-** एक बूँद पानी में भगवान् ने असंख्यात जीव बताये हैं - सचित्त पानी का त्याग करने वाला असंख्यात जीवों को अभयदान (बचाने) रूप दूसरा खन्ध।
3. **हरी वनस्पति का त्याग-** हरी वनस्पति में अनंत-असंख्यात जीव होते हैं, तो इसका त्याग करता है, वह अनंत-असंख्यात जीवों को अभयदान देने रूप तीसरा खन्ध।
4. **रात्रि-भोजन का त्याग-** रात्रि में सूक्ष्म जीवों की बहुलता होती है। रात्रि भोजन का त्याग करने वाला इन सब जीवों को अभयदान देने रूप चारों आहार का त्याग रूप चौथा खन्ध।

- समता का जैसा व्यवहार व्यक्ति दूसरों से स्वयं के प्रति चाहता है, वैसा ही व्यवहार वो दूसरों के प्रति करे।

124. चौभंगिया

1. (i) अपने शरीर में वह कौनसी वह चीज है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक न तो घटती है व न बढ़ती है - आँख की काली कीकी।

   (ii) अपने शरीर में वह कौनसी चीज है जो जन्म से लकेर मृत्यु तक बढ़ती ही बढ़ती है - केश, नाखुन।

   (iii) अपने शरीर में वह कौनसी चीज है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक घटती ही घटतीहै-ओज आहार।

   (iv) अपने शरीर में कौन सी वह चीज है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक घटती भी है और बढ़ती भी है-हाड़, मांस।
2. (i) आहार नहीं करने निहार नहीं करे - गर्भ का जीव।

   (ii) आहार नहीं करे, निहार करे- संथारे का जीव।

(iii) आहार भी करे, निहार भी करे - मनुष्य।

(iv) आहार भी नहीं करे, निहार भी नहीं करे - सिद्ध भगवान्।

3. (i) दिखती है पकड़ी नहीं जाती - छाया।

(ii) दीखता नहीं मगर पकड़ा जाता है - शब्द।

(iii) दीखता भी है पकड़ा भी जाता है - पुद्गल।

(iv) दीखता भी है नहीं पकड़ा भी नहीं जाता - जीव।

4. (i) केवली क्या नहीं देते - अभवी को दीक्षा।

(ii) केवली क्या नहीं लेते - नींद।

(iii) केवली क्या नहीं करते - प्रमाद।

(iv) केवली क्या नहीं देखते - स्वप्न।

5. (i) जहाँ पर जीव न जाता है न आता है - आलोक में।

(ii) जहाँ पर जीव जाता नहीं, आता है - अव्यवहार राशि से।

(iii) जहाँ जीव जाता भी है, आता भी है - चार गति

(iv) जहाँ जीव जाता है आता नही - सिद्धगति।

6. (i) दान देकर संसार किसने घटाया - धन्नाशालिभद्रर्जी ने।

(ii) शील पाल पर संसार किसने घटाया - विजयकेवर और विजयाकंवरी ने।

(iii) जीवदया पाल पर संसार किसने घटाया - गजसकुमाल और मेघरथ राजा ने।

(iv) क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त कर संसार किसने घटाया - कृष्णवासुदेव, श्रेणिक राजा ने।

7. (i) रूपसहित पर शीलरहित - ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती।

(ii) शीलसहित पर रूपरहित - हरकेशी बाल मुनि।

(iii) रूपसहित और शीलसहित - भरत चक्रवर्ती।

(iv) रूपरहित और शीलरहित - कालशोकरिक कसाई।।

8. (i) सिंह के समान दीक्षा ली, सिंह के समान दीक्षा पाली - चक्रवर्ती भरतेश्वर।

(ii) सिंह के समान दीक्षा ली, सियार के समान दीक्षा पाली - कुण्डरीक राजा।

(iii) सियार के समान दीक्षा ली, सिंह के समान दीक्षा पाली-मेतारज-मुनि।

(iv) सियार के समान दीक्षा ली, सियार के समान दीक्षा पाली-कालिकाचार्य का शिष्य

9. (i) अधिक वेदना, थोड़ी निर्जरा - सांतवीं नारकी के जीव।

(ii) थोड़ी वेदना अधिक निर्जरा - सामान्य साधु।

(iii) अधिक वेदना, अधिक निर्जरा - जिनकल्पी साधु।

(iv) थोड़ी वेदना, थोड़ी निर्जरा - अणुत्तर विमान के देव।

10. (i) सुख-दुख को जाने और वेदे - चार गति के जीव।

(ii) सुख-दुख को जाने पण वेदे नहीं - सिद्ध भगवान्।

(iii) सुख-दुःख को वेदे पण जाणे नहीं - असन्नी जीव।

(iv) सुख-दुःख को जाने नहीं, वेदे भी नहीं - अजीव।

11. (i) आठ कर्मों में 'मोहनीय कम' को जीतना दुर्लभ।

(ii) पाँच इन्द्रियों में रसना इन्द्रिय' को जीतना दुर्लभ।

(iii) पाँच स्थावर में 'वायुकाय' की दया पालना दुर्लभ।

(iv) तीन योगों में 'मनयोग' को वश में करना दुर्लभ।

12. (i) बिच्छू का जहर 'भरत क्षेत्र' के बराबर।

(ii) साँप का जहर 'महाविदेह क्षेत्र' के बराबर।

(iii) मेढ़क का जहर 'जम्बू द्वीप' के बराबर।

(iv) मनुष्य का जहर 'अढ़ाई द्वीप' के बराबर।

13. (i) क्रोध का निवास 'कपाल' में।

(ii) मान का निवास 'गर्दन' में।

(iii) माया का निवास 'हृदय में।

(iv) लोभ का निवास 'सर्वाङ्ग.' में।

14. (i) क्षमा मे शूर 'अरिहन्त', 2. तप में शूर 'अणगार', 3. दान मे शूर 'वैश्रमण' 4. युद्ध मे शूर वासुदेव।

15. 1. मनोमन समझने वाला 'देवता', 2. कहने से समझने वाला 'मनुष्य', 3. कहने से भी नहीं समझने वाला 'मूर्ख', 4. मारने सेभी नहीं समझने वाला 'पशु'।

16. (i) खुद के कर्मों का अंत करे एवम् दूसरों के कर्मों का भी अन्त करें तीर्थंकर।

(ii) खुद के कर्मों का अन्त करे परन्तु दूसरों के कर्मों का अन्त नहीं करे - प्रतिमाधारी श्रावक।

(iii) खुद के कर्मों का अन्त नहीं करे, मगर दूसरों के कर्मों का अन्त करे - चौथे गुणस्थान का जीव।

(iv) खुद के कर्मों का अन्त नहीं करे और दूसरों के कर्मों का भी अन्त नहीं करे - पाँचवें आरे के साधु।

17. (i) खुद का भरण-पोषण करे, मगर दूसरों का भरण-पोषण नहीं करे - जिनकल्पी साधु।

(ii) खुद का भरण-पोषण नहीं करे, मगर दूसरों का भरण-पोषण करे - (परोपकारी तपस्वी) साधु तपस्वी।

(iii) खुद का भी भरण-पोषण करे एवम् दूसरों का भी भरण-पोषण करे - सामान्य साधु।

(iv) खुद का भी भरण-पोषण नहीं करे एवम् दूसरों का भी भरण-पोषग नहीं करे - दरिद्री।

18. 1. तेज मेरी 'आँख, का' 2. बल मेरी 'भुजा' का, 3. उपकार मेरे 'गुरु' का, 4. सुख मेरा 'मोक्ष' का।

19. 1. क्रोध के समान 'विष' नहीं, 2. क्षमा के समान 'अमृत' नहीं, 3. लोभ के समान 'दु:ख' नहीं,
4. संतोष के समान 'सुख' नहीं।

20. 1. पाप के समान 'वैरी' नहीं, 2. धर्म के समान 'मित्र' नहीं, 3. कुशील के समान 'भय' नहीं, 4. शील के समान 'शरणभूत' नहीं।

21. 'दान' देने में लक्ष्मी गई तो गई नहीं समझें, 2.शील पालने में 'यौवन' गया तो गया नहीं समझें, 3. 'तपस्या' करने में स्वास्थ्य गया तो गया नहीं समझें, 4. 'संथारा' करने से काया गई तो गई न समझें।

22. 1. कृपण से दान देना दुर्लभ, 2. यौवनवय में शील पालना दुर्लभ, 3. कायर से संयम पालना दुर्लभ, 4. समर्थ से क्षमा करना दुर्लभ।

23. 1. दर्शन करने से दरिद्रता जावे, 2. वाणी सुनने से पाप जावे, 3. जागते रहने से चोर जावे, 4. क्षमा करने से क्लेश जावे।

24. 1.क्रोध मेरा क्षय हो 'क्षमा' गुण प्रकट हो, 2. मान तेरा क्षय हो 'विनय' गुण प्रकट हो, 3. माया, मेरी क्षय हो 'सरलता' गुण प्रकट हो, 4. लोभ मेरा क्षय हो 'संतोष' गुण प्रकट हो,

25. 1. पर दु:ख दुखिया थोड़े, 2. परोपकारी थोड़े, 3. गुणग्राही थोड़े, 4. गरीबो से स्नेह करने वाले थोड़े।

26. 1. शुद्ध समकित निर्मल पाले तो भव घटे, 2. लिया हुआ प्रत्याख्यान शुद्ध पाले तो भव घटें, 3. शुद्ध मन से ब्रह्मचर्य पाले तो भव घटे, 4. साधु-मुनिराजों को निर्दोष आहार-पानी देवे तो भव-घटे।

125. चातुर्मास-सन्देश

च-चंचलता को दमन करने का। आ-आत्मा में रमण करने का।
त-तपस्या की साधना करने का। उ-उपासना प्रभु की करने का।
र-रसना इन्द्रिय को वश में रखने का। म-ममता भाव को जीतन का।
आ-आकाक्षाएँ कम करने का। स- समभाव को धारण करने का।

126. धन और धर्म

धन- प्रथम अक्षर 'ध'-धकार-धारण करना। न - नकार नरक ले जाने वाला।

धर्म- प्रथम अक्षर 'ध' धकार धारण करना। म - मकार मोक्ष की तरफ ले जाने वाला।

धन- धन को धारण किया तो समय बरबाद, धारण करने वाला नरक में जाता है।

धर्म- धर्म को धारण करने वाला एक दिन मोक्ष के सुखों को प्राप्त करता है।

धकार को धारण करो। नकार को छोड़ो । मकार को पकड़ो।

127. धर्म का परिवार

1. धर्म का पिता-'ज्ञान' 2. धर्म की माता- 'दया'
3. धर्म का भाई-'सत्य' 4. धर्म की बहिन-'सुबुद्धि'
5. धर्म की स्त्री-'सुक्रिया' 6. धर्म का पुत्र 'संतोष'
6. धर्म की पुत्री -'सरलता' 8. धर्म का मूल-'विनय','क्षमा'।

128. निम्न व्यक्ति समाधि को प्राप्त नहीं कर सकते

1. जो सुख-सुविधा के पीछे दौड़ते हैं।
2. जो आसक्त जीवन जीते हैं।

3. जो काम-भोग में मूर्च्छित हैं।
4. जो अपने दोषों का परिमार्जन करने में कृपण हैं।

129. दस बोल

1. पहले बोले चिन्ता करिया शरीर सूखे।
2. दूसरे बोले मान करिया लक्ष्मी जावे।
3. तीसरे बोले गर्व करिया घर जावे।
4. चौथे बोले कुस्त्री की संगत कुल लजावे।
5. पाँचवें बोले लाडलो पुत्र घन गवाँवे।
6. छठे बोले मांग्यां सूं मर्यादा घटे।
7. सातवें बोले कुवचन से स्नेह जावे।
8. आठवें बोले कुसंगत से राज जावे।
9. नौवें बोले ना को मेल्या राजपूती जावे।
10. दसवें बोले लड़ने से प्रीति जावे।

130. प्रकृति से शिक्षा

1. हवा कहती है- सदैव गतिशील बने रहो, मौन रहकर अपना काम स्वयं ही करते रहो, परोपकार ही सर्वोतम कार्य हैं
2. धरती कहती है- सहिष्णु बनो, सबको क्षमा प्रदान करो, कोई अपने साथ भले ही बुरा व्यवहार करे, परन्तु हमें बदले में उसके साथ अच्छा बर्ताव ही करना चाहिए।
3. पानी कहता है- सदैव दूसरों की मदद करो, दुर्गुण रूपी मैल को सद्गुण रूपी निर्मल जल से धो डालो।
4. अग्नि कहती है- हर वस्तु का उपयोग समझ-बूझकर करो लापरवाही से किया काम मुसीबत उत्पन्न कर देता है।

131. नित्य मनोरथ चिन्तन

1. वो दिन मेरा परम धन्य होगा, जिस दिन मैं आरम्भ परिग्रह से निवृत्त होऊँगा।
2. वो दिन मेरा परम धन्य होगा, जिस दिन मैं अठारह पापों का त्याग करके संयम अंगीकार करुंगा। पाँच महाव्रत, पाँच समिति, तीन गुप्ति की शुद्ध आराधना करूँगा।
3. वो दिन मेरा परम धन्य होगा, जब मै अंतिम समय में चारों ही आहार का एवम् 18 पापस्थान कर त्याग का 84 लक्ष जीवाजोनि से क्षमायाचना करके संलेखना संथारा सहित पण्डितमरण को प्राप्त करूँगा।

सुख पैसा नहीं माँगता, सुख संग्रह नहीं मांगता, लेकिन सुख सन्तोष माँगता है।

132. पानी छानना क्यों?

पुराण आदि लैकिक शास्त्रों में भी पानी को छानने का कितना माहात्म्य बताया गया है, यह बात कालिकाल सर्वज्ञ पू. हेमाचन्द्राचार्य सूरिस्वरजी म.सा. बताते हुए कहते हैं-

1. त्रैलोक्यमखिलं दत्वा यत्पुण्यं वेदे पारगे।
   ततः कोटिगुणं पुण्यं वस्त्र पूतेन वारिणा।।1।।
2. ग्रगाणां सप्तके दगंधे, यत्पापं यायेते किल।
   ततः पापं जायते राजन नीरस्यागलिते घटे।।2।।
3. संवत्सरेण यत्पापं कैवर्तस्येह जायते।
   एकान्तेन तदाप्नोति अपूत ज़ल संग्रही ।।3।।
4. यः कुर्यात् सर्व कार्याणि, वस्त्रपूतेन वारिणी।
   स भुनि स गहासाधुः स योगी स महाव्रती।।4।।

5. प्रियते मिष्ट तोयेन, पूतराः क्षारः संभवाः।
क्षारंतो येन मिष्टानां न कुर्यात सकुलं ततः।।5।।

अर्थात्-

1. वेदों के पारगामी ब्राह्मण को समग्र विश्व का दान करने से जो पुण्य होता है, उससे क्रोड़ गुणा पुण्य पानी छानकर इस्तेमाल करने वाले को होता है।
2. सात गाँव जलाने से जो पापकर्म का बन्ध जीव का होता है, उतना ही पाप बिना छाने हुए पानी के एक घड़े का उपयोग करने से होता है।
3. मच्छीमार का धन्धा करने वाले मच्छीमार को एक साल में जितना पापकर्म का बन्ध होता है, उतना पाप का बन्ध बिना छाने हुए पानी का संग्रह करने वाले को होता है।
4. जो छाने हुए पानी से सब कार्य करता है, वह मुनि है, वह महा-साधु है, वह योगी है, वह महाव्रती है।
5. क्षार वाले मीठे पानी का सम्मिश्रण नहीं करना चाहिए, क्योंकि क्षार वाले पानी में उत्पन्न हुए जीव स्वादिष्ट जल से मर जाते हैं, और स्वादिष्ट जल में उत्पन्न हुए जीव क्षार वाले जल से मर जाते हैं।

- अठारह देशों के स्वामी राजा कुमारपाल ने अपने ग्यारह लाख घोड़े, हाथी आदि जानवरों को पानी छानकर पिलाने का प्रवन्ध किया था।
- सिन्ध पदार्थ विज्ञान संस्था ने भी 'पानी की एक बूँद में 36450 चलते-फिरते त्रस जीव हैं' ऐसा सिद्ध किया है।
- आर्यों आपसे आपके गृह में पानी के चलते-फिरते जीवों की रक्षा की अपेक्षा क्यों की जाती है?

- पानी छानकर पीने का एवम् उपयोग में करने का खयाल रखे ! जीवों की रक्षा करें।
- बिना छाने पानी के इस्तेमाल में भयंकर पाप है, इससे वचिये।
- याद रहे–हमें धर्म का रक्षण करना और कराना है, रक्षा किया हुआ धर्म ही हमारी रक्षा करेगा।

133. दुर्जन की संगति

1. जैसे मणिधर सर्प को भंयकर जानकर कोई भी मनुष्य अपने घर में प्रवेश नहीं करने देता है। वैसे ही दुर्जन मनुष्य यदि विद्या आदि गुणों से युक्त हो तो भी उसकी संगति कोई पसन्द नहीं करता है।
2. इस संसार मे दुर्जन काँटे के समान है। जहाँ काँटे बिखरे होते हैं, वहाँ मनुष्य पगरखी से उसका मुख भंग करके जाते है। वैसे ही सज्जन पुरुष सज्जनता से दुर्जन को सज्जन बनाते हैं, या दुर्जन से दूर रहते हैं।
3. सेस सर्प को पिलाया हुआ दूध विष–रूप बन जाता है, वैसे ही दुर्जन मनुष्य पर किया हुआ उपकार भी दुःखदाता हो जाता है।
4. दुर्जन और सर्प में बहुत बड़ा अंतर है, सर्प कदाचित डसता है, जबकि दुर्जन हर समय दुःख देने–रूप डसता रहता है, इसलिए सर्प से भी दुर्जन बहुत बुरा है।
5. सर्प और दुर्जन दोनो क्रूर व खराब ही होते हैं, किन्तु अन्तर इतना है कि सर्प का जहर तो मंत्र से उतर जाता है, परन्तु दुर्जन के ह्दय से भरा हुआ द्वेष–रूपी जहर किसी भी उपाय से दूर नहीं होती है।
6. सर्प के दाढ़ में जहर होता है, मधु–मक्खी के मधु मे जहर होता है, बिच्छु की पूँछ में जहर होता है, जबकि दुर्जन के रोम–रोम

में अर्थात् सम्पूर्ण शरीर में जहर होता है, अतः दुर्जन सबसे बुरा है। दुर्जन की संगति हेय अर्थात् छोड़ने योग्य है।

134. आत्मज्ञान मुक्तावली

1. विनय केवल मानसिक आस्था नहीं, वरन् आत्मिक और व्यावहारिक विशेषताओं की अभिव्यंजना है।
2. तप एक दिव्य रसायन है जो शरीर और आत्मा के यौगिक भावों को मिटाकर आत्मा को अपने मूल स्वभाव में स्थापित करता है।
3. आत्मा विभाव में ज्यादा देर तक नहीं रह सकती, किन्तु स्वभाव में तो जीवन-भर रह सकती है। जैसे हम पड़ोसी के यहाँ जाते हैं तो ज्यादा नहीं ठहरते, पुनः स्वघर लौटने की लगी रहती है।
4. जिस प्रकार सूर्य की बिखरी किरणों को यंत्र आदि में केन्द्रित कर दिया जाए जो उनसे रसोई आदि बनाई जा सकती है। वैसे ही मन की बिखरी शक्ति को ध्यान द्वारा केन्द्रित करने पर आत्मशक्ति का अद्भुत तेज प्रकट होता है।
5. जीवन में तीनों अवस्थाओं का एक साथ प्रयोग करना ही श्रेष्ठ है, आचरण में बालक के समान स्फूर्ति और निश्चलता, सत्य का प्रयोग करने में युवक के समान साहस, दृढ़ता, ज्ञान का उपयोग करने में वृद्ध के समान दीर्घ चिन्तन और अवलोकन।
6. आलोचना भूलों के परिष्कार के लिए की जाती है, भूलों के प्रचार के लिए नहीं।
7. पर्वत की चोटी पर खड़ा होकर जो मनुष्य तलहटी में खड़े मनुष्यों को क्षुद्र प्राणियों की भान्ति देखकर हँसता है, उन्हें तुच्छ समझता है, उसे विश्वास करना चाहिए कि तलहटी वालों की नजर में वह कौआ और चील की भान्ति क्षुद्र ही दिखाई देता

है, जो जिस दृष्टि से जगत् को देखता है जगत् उसी दृष्टि से उसका आकलन करता है।

8. जो कोई अपनी जितनी बाह्य वैभव से बड़ाई (प्रशंसा) चाहता है, उसकी उतनी ही आत्मिक अधोगति होती है।
9. जहाँ राग और द्वेष है, वहाँ सदा ही कलह है, क्लेश है।
10. जहाँ सांसारिक सुखों के प्रति उदासीनता का वास है, वहाँ सब दुखों का नाश है।
11. जीव सांसारिक अवलम्बन, विडम्बनाएँ छोड़ता तो है नहीं और कहता है कि-"मेरे से कुछ बनता नहीं"। ऐसे बहाने लेकर जीव पुरुषार्थ करता नहीं, फिर संसार से मुक्त हो भी तो कैसे ?
12. सम्यक् श्रद्धा के साथ सम्यक् ज्ञान का उदय होता हैं। सम्यक् ज्ञानपूर्वक जो त्याग है वही सम्यक् चारित्र को पाता है। सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र ही मोक्ष-मार्ग हैं।
13. हम अनादि काल से मोक्ष-मार्ग के अभाव से संसार में भटक रहे हैं।
14. जैसे भोजन का उपयोग क्षुधानिवृत्ति के लिये है, वैसे ही ज्ञान का उपयोग रागादि निवृत्ति के लिये है, केवल अज्ञान मिटाने के लिए नहीं।
15. शास्त्र-ज्ञान एक बात है- भेद ज्ञान होना दूसरी बात है, परन्तु त्याग इन दोनों से भी भिन्न वस्तु है, क्योंकि इसके बिना परमार्थ-लाभ संभव नहीं ।
16. जो मनुष्य संसार को प्रसन्न करने का प्रयत्न करते हैं, वे मनुष्य अपनी आत्मा को गर्त में डालने का प्रयास कर रहे हैं।
17. जैसे दियासलाई से उत्पन्न हुई अग्नि दियासलाई को, लोहे से उत्पन्न जंग लोहे को नष्ट करते हैं, उसी प्रकार आत्मा से उत्पन्न काम-क्रोधादिक अशुद्ध भाव आत्मगुणों को नष्ट कर डालते हैं।

18. जोंक सड़े हुए खून को पीकर आनन्द मनाती है, उसी प्रकार अज्ञानी विषय-कषायों में आनन्द मानते हैं और अपना भव-भ्रमण बढ़ाते हैं।

19. पत्थर से कोई मनुष्य अपना सिर फोड़े तो इसमें पत्थर का क्या दोष? इसी प्रकार जीवन-विषय-कषाय में फँसे और नरक तिर्यंच गति के द्वार खोले तो उसमें विषय-कषायों के संयोगों का क्या दोष? वे तो पत्थर की भान्ति निर्दोष हैं।

20. अच्छा कार्य करते हुए यदि हमें कोई बुरा कहे तो वह बुरा कहलवाना भी अच्छा ही है। परन्तु अच्छा कहलाने के लिए बुरा बने रहना तो और भी बुरा है।

21. व्यभिचारी पुरुष को पशु कहना पशु का अपमान करना है, क्योंकि पशु तो प्रकृति के अनुकूल संयमं रखता ही है।

22. बाह्या वस्तुओं का त्याग कठिन नहीं है, किन्तु आभ्यान्तर कषायों की निवृत्ति का त्याग कठिन हैं।

23. पर-वस्तु में इष्ट-अनिष्ट की कल्पना नहीं होने देना, यही राग-द्वेष दूर करने का सच्चा पुरुषार्थ है।

135 चिंतन-कण

1. मैं देह नहीं, देह-रूप नहीं और देह मेरा नहीं, मैं सिद्ध भगवान जैसा पूर्ण निर्मल हूँ। सिर्फ कर्म-मल की बाधा है। कहा भी है- "सिद्धा जैसो जीव है, जीव सोही सिद्ध होय, कर्म मैल का अंतरा, बूझे बिरला कोय।।"

2. मेरे अन्दर में एक ऑटोमेटिक (स्वचालित) वी.डी.ओ. कैमरा है, जो भीतर मेरे मानसिक, वाचिक और कायिक व्यवहार की रील तैयार कर रहा है। मुझे चाहिए कि मेरा ऐसा फोटू नहीं आ

जाये, जिसके कारण मुझे लज्जित होना पड़े। अतः सदैव सजग रहे और मन-वचन-काया को निर्मल बनाये रखे।

3. मन में किसी के प्रति बुरे विचार न आने दे।
4. कभी भी अकर्तव्य वाली अकरणीय और अकल्पनीय प्रवृत्ति न करे।
5. एक युवा स्वस्थ, सुन्दर महिला, अच्छे बहुमूल्य वस्त्रों से, बेशकीमती आभूषणों व सभी उच्चतम श्रृंगारों से सुसज्जित होकर हाथ में सोने का कटोरा(जिसमें हीरे-जवाहरात जड़े हों) लेकर भिक्षा माँगे तो आम व्यक्ति आश्चर्य करेगा। वह कहेगा कि- "जवान और सम्पन्न होकर भीख माँगते इससे शर्म नहीं आती है, लेकिन क्या हम उससे भी अधिक शर्मनाक और पागलपन का काम तो नहीं कर रहे हैं। बेशकीमती आभूषणों के समान तीर्थंकर और गणधरों को प्राप्त होने वाला मानव भव, औदारिक शरीर व जिन-वाणी हमें प्राप्त हुई है जिनके माध्यम से संसार से पार हो सकते हैं। शीघ्र मोक्ष के अधिकारी बन सकते हैं। उसके स्थान पर राग द्वेष-कषाय-निन्दा-अहंकार आदि दुष्ट प्रकृति रूपी भिक्षा में हम रच-पच रहे हैं। और उस ही जीवन समझ रहे हैं
6. दूसरों की बेईमानी के तर्क में अपनी बेईमानी उचित नहीं ।
7. विश्व में आज विश्वास पर से विश्वास उठता जा रहा है।
8. मानव मरने का साहस तो आज बना लेता है, मगर गलत आदतें छोड़ता नहीं है।
9. आपके प्रागंण में फल लगेंगे यदि आप सुख का पौधा पड़ोसी के घर में उगायेंगे।
10. पहले अपनी बुराई मिटाओ, फिर दूसरों की मिटाने की वात कहो।

11. आध्यात्मिक व्यक्ति अपने पापों की ही आलोचना करे, दूसरों की आलोचना करना महान पाप है।
12. अहिंसा-सत्य-अचौर्य-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रह से ही मानव मात्र का कल्याण संभव है।
13. धर्म उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम और तप उसके लक्षण हैं, जिसका मन सदा धर्म में रमा रहता है उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।
14. मन से शुद्ध सोचना, वचन से मधुर बोलना और कर्मों से युद्ध लड़ना मानव जीवन के आदर्श मूलभूत पाये हैं।
15. यदि हिंसा करने से धर्म हो तो जल का मंथन करने से घी भी निकल सकता है, किन्तु यह जगत्-विख्यात है कि जल को मथने से घी नहीं निकलता, उसी तरह प्रकट हिंसा करने से ध र्म नहीं हो सकता।
16. एक बार हल्का आहार करने वाला 'महात्मा' है, दो बार संभलकर थोड़ा-थोड़ा आहार करने वाला 'समझदार' है, बार-बार खाने वाला 'महामूर्ख', अभागा और पशु का पशु है।
17. काम-भोग क्षण-मात्र सुख देने वाले और बहुत काल तक दुःख देने वाले हैं। थोड़ा सुख और महान दुःख वालों को सुख-रूप कैसे कहा जाए? ये काम-भोग संसार-वर्धक, मोक्ष विरोधी, अनर्थों की खान के समान हैं।
18. बात को नही पचा सकता है जो 'गंभीर' हो, कुट वचन को वही सुन सकता है जो धीर हो, बाहर के दुश्मनों को पराजित करने वाले आत्म-शत्रु को वही जीत सकता है जो सच्चा 'वीर' हो।
19. सरल हृदय द्वारा भोगी गई क्षमा ही सच्ची क्षमा है। अपी गलती को प्रकट करना महानता है। अपनी गलती को छुपाना 'मूर्खता' है।

20. जिस प्रकार समस्त पापों में हिंसा, समस्त कर्मों में मिथ्यात्व और सभी रोगों में राजक्षय (क्षय रोग) बड़ा है, उसी प्रकार सभी कषायों में लोभ कषाय बड़ा है।
21. जिस प्रकार मनुष्यों में चक्रवर्ती और देवों में इन्द्र सर्वश्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार गुणों में संतोष गुण महान है।

136. आत्म-विकास की पगडंडिया

1. वीर-वाणी का मात्र सुनकर आनन्द प्राप्त कर लेना ही पर्याप्त नहीं है, उस वाणी का जीवन में उपयोग करना व आचरण में लाना ही सुनने की सार्थकता है।
2. जीवन की वास्तविक उन्नति श्रद्धा पर ही निर्भर है।
3. जिसने आत्मा के सही स्वरूप को समझा है, वह अपनी उपलब्धि पर अहंकार नहीं करता है। दूसरों की बढ़ती हुई आत्मोन्नति से ईर्ष्या नहीं करता है। अपने व्रत-नियमों का प्रदर्शन नहीं करता है।
4. तीर्थंकरों के आदर्श को सामने रखकर सदा अपने लक्ष्य की प्राप्ति के प्रति जाग्रत रहते हुए साधना करने से ही आत्म-विकास संभव होता है।
5. काल निर्दयी है और शरीर दुर्बल है, अतः काल और शरीर पर भरोसा करके मोहग्रस्त होना उचित नहीं है। प्राप्त अवसर का सदुपयोग करने में ही बुद्धिमत्ता है।
6. जिसे प्रशंसा की भूख होती है, उसे ही निन्दा की चिन्ता रहती है।
7. साधक की साधना में जो बाधाएं आती हैं, वे ही साधक को अपने लक्ष्य के प्रति और अधिक जाग्रत बनाती हैं।
8. ज्ञान जीवन-रूपान्तरण की प्रथम प्रक्रिया है, अतः जिससे विनम्रता आदि सद्गुण बढ़े, वही सच्चा ज्ञान है।

9. जिस साधक की साधना के साथ गुरु-कृपा हो, वह अपनी मंजिल सानन्द पा लेता है, किन्तु जिस साधक की साधना के साथ साधना का अहंकार हो, प्रशंसा की भूख हो, उसे अन्ततः हारकर अपने गुरु-चरणों में झुकना ही पड़ता है।
10. भौतिक सुख पानी के परपोटे के समान है। प्राप्त हो जाने पर भी कुछ अच्छा परिणाम प्राप्त नहीं होता, क्योंकि परपोटे को पकड़ते ही फूट-टूट जाता है, उसी तरह भौतिक सुख नहीं मिलने पर अज्ञानी जीव दुखी बने रहते है।
11. मौलिक मुख्य दुर्गुणों को दूर कर देने से शुद्र दुर्गुण स्वतः चले जाते हैं। वृक्ष की जड़ निकल जाने पर पत्ते आदि स्वतः नष्ट हो जाते हैं।
12. "मेरे" के चक्कर में रहने वाला नहीं जान पाता कि "मै कौन हूँ?"
13. आचरण शब्दों की अपेक्ष ज्यादा जोर से बोलता है।
14. आध्यात्म की साधना का रस, जीवन की सब विकृतियों को जलाकर सहजता प्रदान करता हैं
15. हमारी अपनी अपेक्षाएँ ही दुःख का कारण हैं।
16. जीवन में असफलता का एक ही कारण है-पुरुषार्थ नहीं करना।
17. 'कल' कभी नही आता है, जो भी आता है वह आजी ही आता है। जो 'कल' के लिए 'आज' को न्यौछावर कर देता है, उसका सारा जीवन व्यर्थ हो जाता है।
18. वैर भाव में जीने वाला व्यक्ति सदा भयातुर रहता है।
19. कषाय रूपी शत्रु को क्षमा आदि सद्‌गुणों से जीता जा सकता है।
20. साधना जीवन का कोई अंश या खण्ड नहीं है, वह तो समग्र जीवन है। प्रतयेक प्रकृति (उठने-बैठने आदि की) में साधना हो, तभी वह सार्थक व सहज होती है।

137. दया पालो

हमारी परम्परा एक छोआ सा सन्देश देती आई है, केवल अपने अनुयायियों को ही नहीं, उन सभी को जो मनन कर सकते हैं और मनन किये हुए, विचारों को आचरण में उतार सकते हैं, वह है- "दया पालो" । इन चार अक्षरों में सभी शास्त्रों का सार अन्तर्निहित है-मानव का नवनीत निहित है और इनमें वतीराग का अमर सन्देश गूँज रहा है।

"**दया पालो**" अर्थात् अपने और अन्य प्राणियों के वीच सम्बन्ध को निर्दोष और मधुर बनाओ।

"**दया पालो**" अर्थात् स्वयं भय से मुक्त हो जाओ और दूसरे प्राणियों को अपने आतंक से मुक्त कर दो।

"**दया**" का स्वरूप विशाल है। वह जीवन के प्रत्येक अंग में व्याप्त है। दया मन, वचन और कर्म तीनों को प्रकाशित करती है। 'दया' अपने पर भी होती है। और दूसरे प्राणियों पर भी। अपने आत्म-गुणों की घात न हो इसलिए अन्य पर दया करना आवश्यक है। दया की पृष्ठभूमि पर ही गुण पनपते हैं। जहाँ दया नहीं है वहाँ गुण की कल्पना सिर्फ कल्पना ही है।

"**दय नही महातीरेसर्व धर्मास्तृणांकुराः।**"

सच्ची दया वही पाल सकता है जिसे ज्ञान हो। कहा भी है-"पढमं नाणं-तओ दया।"

जीव और अजीव के स्वरूप को और उसके आपसी संयोग-वियोगात्मक सम्बन्ध को सही रूप में जानने का नाम ही ज्ञान है। ऐसा ज्ञान ही बुद्धि का परम फल है। "बुद्धे फलं तत्त्व विचारणम्।"

ज्ञान का सार ही यह है कि ज्ञानी मनसा-वाचा-कर्मणा किसी की घात न करे-"एवं खुणाणियों सारं जां न हिंसई किंचण।"

"दया" ही कल्याण कर सकती है, दया ही दुर्गति से बचा सकती है और दया ही संसार के दुःखों से पार कर सकती है।

"कल्याण कोडि कारणी दुग्गई दुह निढवणी, संसार जल तारिणी, एगंत होई जीव दया।"

138. क्षमा

'क्षमा न करना और प्रतिशोध करने की इच्छा रखना अनेक कष्टों के आधार हैं। जो व्यक्ति इन बुराइयों क़ो पालते रहते हैं वे जीवन के सुख और आनन्द से वंचित रह जाते हैं और आध्यात्मिक प्रकाश का लाभ नहीं ले पाते हैं। जिसके हृदय में क्षमा नहीं, उसका हृदय कठोर हो जाता है। वह दूसरों से मेल-जोल, प्रेम-प्रतिष्ठा एवं आत्म-संतोष से वंचित रह जाता है। बुद्धिमत और विचारशीलता का तकाजा है कि मनुष्य छोटी-छोटी गलतियों पर क्षमा करने की आदत बना ले।

139. सामायिक क्या है

1. 'सामायिक' समता और साम्यता की साधना है।
2. 'सामायिक' आवश्यक क्रिया का प्रथम चरण है।
3. 'सामायिक' सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् की चाबी है।
4. 'सामायिक' जैन धर्म का प्रारम्भ है।
5. 'सामायिक' आत्मधर्म का दर्शन है।
6. 'सामायिक' बच्चों का संस्कार है।
7. 'सामायिक' युवकों का पुरुषार्थ है।
8. 'सामायिक' नारी काश्रृंगार है।
9. 'सामायिक' मानव का आदर्श है।
10. 'सामायिक' आत्मा का स्वास्थ्य है।

137. दया पालो

हमारी परम्परा एक छोआ सा सन्देश देती आई है, केवल अपने अनुयायियों को ही नहीं, उन सभी को जो मनन कर सकते हैं और मनन किये हुए, विचारों को आचरण में उतार सकते हैं, वह है- ''दया पालो'' । इन चार अक्षरों में सभी शास्त्रों का सार अन्तर्निहित है-मानव का नवनीत निहित है और इनमें वतीराग का अमर सन्देश गूँज रहा है।

''दया पालो'' अर्थात् अपने और अन्य प्राणियों के बीच सम्बन्ध को निर्दोष और मधुर बनाओ।

''दया पालो'' अर्थात् स्वयं भय से मुक्त हो जाओ और दूसरे प्राणियों को अपने आतंक से मुक्त कर दो।

''दया'' का स्वरूप विशाल है। वह जीवन के प्रत्येक अंग में व्याप्त है। दया मन, वचन और कर्म तीनों को प्रकाशित करती है। 'दया' अपने पर भी होती है। और दूसरे प्राणियों पर भी। अपने आत्म-गुणों की घात न हो इसलिए अन्य पर दया करना आवश्यक है। दया की पृष्ठभूमि पर ही गुण पनपते हैं। जहाँ दया नहीं है वहाँ गुण की कल्पना सिर्फ कल्पना ही है।

''दय नही महातीरेसर्व धर्मास्तृणांकुराः।''

सच्ची दया वही पाल सकता है जिसे ज्ञान हो। कहा भी है-''पढमं नाणं-तओ दया।''

जीव और अजीव के स्वरूप को और उसके आपसी संयोग-वियोगात्मक सम्बन्ध को सही रूप में जानने का नाम ही ज्ञान है। ऐसा ज्ञान ही बुद्धि का परम फल है। ''बुद्धे र्फलं तत्त्व विचारणम्।''

ज्ञान का सार ही यह है कि ज्ञानी मनसा-वाचा-कर्मणा किसी की घात न करे-''एवं खुणाणियों सारं जां न हिंसई किंचण।''

"दया" ही कल्याण कर सकती है, दया ही दुर्गति से बचा सकती है और दया ही संसार के दुःखों से पार कर सकती है।

"कल्याण कोडि कारणी दुग्गई दुह निढवणी, संसार जल तारिणी, एगंत होई जीव दया।"

138. क्षमा

'क्षमा न करना और प्रतिशोध करने की इच्छा रखना अनेक कष्टों के आधार हैं। जो व्यक्ति इन बुराइयों को पालते रहते हैं वे जीवन के सुख और आनन्द से वंचित रह जाते हैं और आध्यात्मिक प्रकाश का लाभ नहीं ले पाते हैं। जिसके हृदय में क्षमा नहीं, उसका हृदय कठोर हो जाता है। वह दूसरों से मेल-जोल, प्रेम-प्रतिष्ठा एवं आत्म-संतोष से वंचित रह जाता है। बुद्धिमत और विचारशीलता का तकाजा है कि मनुष्य छोटी-छोटी गलतियों पर क्षमा करने की आदत बना ले।

139. सामायिक क्या है

1. 'सामायिक' समता और साम्यता की साधना है।
2. 'सामायिक' आवश्यक क्रिया का प्रथम चरण है।
3. 'सामायिक' सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् की चावी है।
4. 'सामायिक' जैन धर्म का प्रारम्भ है।
5. 'सामायिक' आत्मधर्म का दर्शन है।
6. 'सामायिक' बच्चों का संस्कार है।
7. 'सामायिक' युवकों का पुरुषार्थ है।
8. 'सामायिक' नारी काश्रृंगार है।
9. 'सामायिक' मानव का आदर्श है।
10. 'सामायिक' आत्मा का स्वास्थ्य है।

11. 'सामायिक' आत्मा की औषधि है।
12. 'सामायिक' पवित्रता का प्रतीक है।
13. 'सामायिक' वीतरागता का दर्शन है।
14. 'सामायिक' मुक्ति का महामार्ग है।
15. 'सामायिक' निजानद की मस्ती है।

140. सामायिक से क्या लाभ हैं?

1. 'सामायिक' से व्यसन-मुक्ति होती है।
2. 'सामायिक' से चिन्ता चली जाती है।
3. 'सामायिक' से बैर समाप्त होता है।
4. 'सामायिक' से घर नन्दनवन बनता है।
5. 'सामायिक' से प्रेम प्रकट होता है।
6. 'सामायिक' से साधना आती है।
7. 'सामायिक' से सच्चा बल मिलता है।
8. 'सामायिक' हर कार्य को सफल बनाती है।
9. 'सामायिक' से आत्मशुद्धि होती है।
10. 'सामायिक' से परिवारिक शान्ति होती है।
11. 'सामायिक' से बुद्धि में वृद्धि होती है।
12. 'सामायिक' से सौभाग्य की प्राप्ति होती है।
13. 'सामायिक' से दुश्मन मित्र हो जाता है।
14. 'सामायिक' से सर्वत्र सम्मान मिलता है।
15. 'सामायिक' से रोग का नाश होता है।
16. 'सामायिक' से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

141. सामायिक में क्या करना चाहिए?

1. 'सामायिक' में समता रखनी चाहिए ।

2. 'सामायिक' में सादे वस्त्र पहनने चाहिएँ।
3. 'सामायिक' में एक स्थान पर बैठना चाहिए।
4. 'सामायिक' में शुद्धि रखनी चाहिए।
5. 'सामायिक' में प्रार्थना करनी चाहिए।
6. 'सामायिक' में वन्दना करनी चाहिए।
7. 'सामायिक' में काउस्गग करना चाहिए।
8. 'सामायिक' में जाप करना चाहिए।
9. 'सामायिक' में प्रवचन सुनना चाहिए।
10. 'सामायिक' में ध्यान करना चाहिए।
11. 'सामायिक' में आनुपूर्वी फेरनी चाहिए।
12. 'सामायिक' में धर्म-कथा करनी चाहिए।
13. 'सामायिक' में भक्ति-भजन करना चाहिए।
14. 'सामायिक' में माला फेरनी चाहिए।
15. 'सामायिक' में स्वाध्याय करना चाहिए।
16. 'सामायिक' में नया ज्ञान सीखना चाहिए।
17. 'सामायिक' में आत्म-चिन्तन करना चाहिए।
18. 'सामायिक' में सर्वत्र शान्ति की कामना करनी चाहिए।

142. सामायिक में क्या नहीं करना चाहिए ?

1. 'सामायिक' में मिटिंग नहीं करनी चाहिए।
'सामायिक' में कषाय नहीं करना चाहिए।
'सामायिक' में निन्दा-विकथा नहीं करनी चाहिए।
4. 'सामायिक' में व्यर्थ की बातें नहीं करनी चाहिए।
5. 'सामायिक' में प्रभावना नहीं लेनी चाहिए।
6. 'सामायिक' में सोना नहीं चाहिए।
7. 'सामायिक' में आलस्य-प्रमाद नहीं करना चाहिये।

8. 'सामायिक' में बार-बार चलना-दौड़ना नहीं चाहिये।
9. 'सामायिक' में बार-बार घड़ी में समय नहीं देखना चाहिए।
10. 'सामायिक' में खराब विचार नहीं करना चाहिए।
11. 'सामायिक' में असत्य नहीं बोलना चाहिए।
12. 'सामायिक' में गन्दा काम नहीं करना चाहिए।
13. 'सामायिक' में खाने की इच्छा नहीं करनी चाहिए।
14. 'सामायिक' में झाड़ू नहीं निकालना चाहिए।
15. 'सामायिक' में आर्त-रौद्र ध्यान (रोना-पीटना) नहीं करना चाहिए।
16. 'सामायिक' में लड़ना नहीं चाहिए।
17. 'सामायिक' में चोरी नहीं करनी चाहिए।
18. 'सामायिक' में सावद्य भाषा नहीं बोलनी चाहिए।
19. 'सामायिक' में संग्रह की कामना नहीं करनी चाहिए।
20. 'सामायिक' श्रृंगार करके नहीं करनी चाहिए।

संवर की छाँव में समता की नाव में,
सामायिक पहुचा देती है विभाव से स्वभाव में।

143. सामायिक के सन्दर्भ में चिन्तन-कण

1. **सामायिक साधना**- एक विशिष्ट साधना है, जो संसार-कानन में आत्मा को परिभ्रमण से एवम् जन्म-मरण के चक्कर से छुटकारा दिलाती है।
2. **सामायिक साधना**- में अवस्थित साधक सुख और दुख में समभाव रखता है। राग व द्वेष से अपनी आत्मा को प्रभावित नहीं होने देता। वह यह चिन्तन करता है कि कर्मों का कर्ज मेरे सिर पर से जितना जल्दी उतरता है, उतना ही शीघ्र में, कर्म मैं मुक्त बनूँगा।
3. **सामायिक साधना**- एक ऐसी दिव्य कला है जिसके हस्तगत

हो जाने पर पूर्वकृत कर्मवश या अन्यथा आया हुआ दुःख भी सुख में परिणत हो जाता है।

4. सामायिक साधना- का महान् चमत्कार है कि मानव प्राणिमात्र के प्रति आत्मौपम्य दृष्टि पा जाता है और चैतन्य की अनुभूति हो जाती है।

5. सामायिक साधना- में संलग्न व्यक्ति विवेक और वैराग्य की तुला पर संसार के प्रत्येक प्रदार्थ को तोलता है, उसके वाद उसे ग्रहण करता है।

6. सामायिक साधना- समभाव के संस्कारों को दृढ़मूल करती है और वह जीवन का आमूल-चूल परिवर्तन करने की प्रभावपूर्ण प्रक्रिया है।

7. सामायिक साधना- एक ऐसी मौलिक साधना है, जो ममत्व या अस्मिता का विसर्जन का उपाय है, अन्तर्मन की निर्मलता का उपक्रम है और आत्मा की स्वाधीनता का उद्घोष है।

8. सामायिक साधना- वस्तुतः जीवन के शिवत्त्व का प्रतीक है, आत्मा की अनुप्रेक्षा ही उसका केन्द्रबिन्दु है और वह आत्मा के शुद्धत्व का राजमार्ग है।

9. सामायिक साधना- एक ऐसी पावन भूमिका है, जहाँ इन्द्रियों की सीमा एवम् सामर्थ्य सर्वथा रूप से समाप्त होती है और आत्मदर्शन का सूत्रपात होता है।

10. सामायिक साधना- में आत्म-ज्ञान की यात्रा निर्वाध रूप से विकासोन्मुख है, आत्मा के स्वरूप-उद्घाटन का यथार्थ उसके व्यक्तित्व बोध का चिन्तन है।

11. सामायिक साधना- में आत्मानुशासन एवम् जीवन के समग्र सन्दर्भों के लिये एक विधायक दृष्टिकोण समाया हुआ है।

12. सामायिक साधना- साधक की आत्मा को ज्ञान की दिशा में

प्रवृत्ति करती है। उसके मन को निर्मल बनाती है और उसे अलौकिक आनन्द की ओर अग्रसर करती है।

13. **सामायिक साधना**- ममत्व के अन्तर्मुख अभ्युदय का स्वर्णिम शिखर है। उस पर समारूढ़ व्यक्ति की आत्म-आस्था प्रशस्त होती है और यही मोक्ष तक उसे स्फूर्त रखती है।
14. **सामायिक साधना**- में समता का संगीत निनादित होता है, इससें मन का नियमन मुख्य है। आत्मा स्व-स्वरूपानुभूति की मुद्रा में आ जाती है।
15. **सामायिक साधना**- में संस्थित साधक यही चिन्तन करता है कि मैं अकेला हूँ, किन्तु असहाय नहीं हूँ। सर्वथां स्वाधीन हूँ । जो मुझे चहुँ ओर से घेरे हुए हैं ये पर हैं।
16 **सामायिक की मुद्रा**- जिस धर्माचरण में पुरुषार्थ पर लग जाते हैं, वह पुरुषार्थ सामायिक के प्रभाव से मोक्षाभिमुखी या आत्माभिमुखी होता है।
17. **सामायिक धर्म**- आत्मान्वेषण का धर्म है। आत्मोपलब्धि का अभिक्रम और चित्त शुद्धि का पराक्रम है।
18. **सामायिक आराधना**- की आँच पर चढ़ा मन निर्मल हो उठता है। उसका कालुष्य धुल जाता है और वह राग एवम् द्वेष से ऊपर उठ जाता है।
19. **सामयिक**- राग और द्वेष में मध्यस्थ रहना 'सम' है- समता है। साधक को समरूप मध्यस्थ भाव आदि का जो आय अर्थात लाभ है वह सामायिक है।
20. **सामायिक**- राग और द्वेष के प्रसंगों में विषय न होना । अपने आत्मभाव में सम रहना ही सच्चा 'सामायिक' व्रत, है।
21. **सामायिक**- अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की जो उत्कृष्ट साधना की जाती है, वह सामायिक है।

22. सामायिक- समुचित समय पर करने योग्य आवश्यक कर्तव्य को सामायिक कहते हैं।

23. सामायिक- समभाव रखना- पाँच इन्द्रियों का संयमन करना, शुभ संकल्प रखना, दुर्ध्यान का त्याग कर सुध्यान का चिन्तन करना सामायिक साधना का संलक्ष्य है।

24. सामायिक- का निर्दोष लक्षण है- समता। समता का शब्दार्थ है- राग और द्वेष की अपरिणति, सुख-दुख में निश्चलता, मन की स्थिरता इत्यादि। समता आत्मा का भव्य स्वरूप है।

25. समता सामायिक साधना-का महाप्रयाण है। जो साधक अपनी आत्मा को विभाव से हटाकर स्वरूप में रमण करता है, उसकी सामायिक विशुद्धता की ओर अग्रसर होती है।

26. जो साधक सामायिक साधना- का सर्वथा सफल उपासक है, उसके जीवन में सांसारिक वासनाओं का सघन अन्धकार तिरोहित हो जाता है। जीवन का प्रत्येक पहलू ज्ञानलोक से जगमगा उठता है।

27. सामायिक- एक पापरहित साधना हे। इस साधना में पाप का अंश नहीं होता, चित्तवृर्ती प्रशान्त रहती है। नवीन कर्मों का बन्ध नहीं होता। मन, वचन और शरीर रूप सावद्य योगों की विशुद्धि हो जाती है, अतएव परमार्थ दृष्टि से यह सामायिक।

28. साधना- एकान्त निरवद्य पापविहीन साधना है।

29. सामायिक- प्राणिमात्र के प्रति समत्व की उदात्त भावना से समन्वित आत्म-अभ्युदय के लिये प्रशान्त वृत्तिता और तपशीलता ही सामायिक है।

30. सामायिक का साधक- अपने सर्वोच्च संलक्ष्य 'मोक्ष' को प्राप्त कर लेता है। वह कर्ममुक्त तथा सिद्ध-बुद्ध हो जाता है। अपने ज्योर्तिमय स्वरूप में प्रतिष्ठित हो जाता है।

31. सामायिक साधक-के अन्तर्मन में समदर्शिता का सरोवर लहराता है, जहाँ संसार की समग्र आत्माओं के लिए शीतलता का सुख समाया हुआ है।
32. सामायिक साधक्-के जीवन में समता का दर्शन होता है। समभाव जाग्रत होता है तभी समानता की दिव्य दृष्टि की संरचना होती है तथा जो जैसा है, वह जो जहाँ है, वह उसी रूप में दिखाई देता है।
33. सामायिक आत्मा- की सर्वतोमुखी विकास यात्रा का नाम है। इस मंगलमयी यात्रा में समता मिलती है। विषमता का कुहरा छँटता है। और दृष्टि-मति और गति में समता का संचर होता है।
34. सामायिक साधना- आदर्श साधक को अगाध-अपार महासागर में इतना गहरा उतार देती है कि विषमता की प्रचण्ड ज्वालाएँ उसको दग्ध नहीं कर सकती।
35. सामायिक- जीवन के समस्त सद्गुणों की प्रधान आधार भूमि है।
36. सामायिक- समतारूपी अमूल्य धन की प्राप्ति ही सामायिक है।
37. सामायिक- मन और पाँच इन्द्रियों को एकाग्र करने का अभ्यास ही सामायिक हैं।
38. सामायिक- दो घड़ी के लिए गृहस्थ जीवन में भी साधु जीवन का आस्वादन करना।
39. सामायिक- मोक्षगामिनी जिनवाणी को हृदयंगम करने का स्वर्णिम अवसर है।
40. सामायिक- दो घड़ी के लिए द्रव्य भाव से आत्म-विशुद्धि अर्थात् स्व-स्वरूप में रमण करना।
41. सामायिक- एक मुहूर्त के लिये छह-काय जीवों को अभयदान देना।

42. सामायिक- दो घड़ी के लिए आत्मा को धर्म-ध्यान की प्राप्ति ही सामायिक है।

43. सामायिक- कर्मवृन्दों को तोड़कर संसार परित करने की दो घड़ी की साधना है।

44. सामायिक- स्वदोष-दर्शन परदोष-विसर्जन रूप वर्णन ही सामायिक है।

45. सामायिक- दो अशुभ ध्यान (आर्त-रौद्र) को अत:करण से एक मुहूर्त के लिए दूर करना।

46. सामायिक- दीर्घ काल की अकाम निर्जरा में दो घड़ी सकाम निर्जरा ही सामायिक है।

47. सामायिक- अष्ट कर्म रूप महामारी को मिटाने वाली विशिष्ट रामबाण औषधि सामायिक है।

48. सामायिक- कर्म-मल को दूर करने वाली जिनवाणी-नीर गंगा की विशुद्ध जलधारा सामायिक है।

49. सामायिक- असार संसार में सारभूत सामायिक ही है।

50. सामायिक- स्वाध्याय-भजन-भक्तिमाला-ध्यान आदि आध्यात्मिक शस्त्रों से लेस (युक्त) पाप-पिशाच का दमन करने वाली सैन्यशक्ति सामायिक है।

51. सामायिक- नरकादि दुर्गतियों के महाविदारक आयुष्य तोड़ने वाली मशीनगन है।

52. सामायिक- मोक्ष के शाश्वत सुखों को शीघ्र प्राप्त कराने वाली सामायिक है।

53. सामायिक-दरिद्रनारायण को भी नवखण्डी सोने के तुल्य लाभ प्राप्त कराने वाली है।

54. सामायिक- असीम-अक्षय-अवर्णनी शान्ति का अक्षय भण्डार सामायिक है।

144. सामायिक का फल

प्रतिदिन निर्दोष सामायिक करने के लाभ इस प्रकार हैं-

1. सामायिक समभाव की साधना है। सामायिक करने से समभाव की आराधना होती है।
2. धर्म-ग्रन्थों का अध्ययन हो जाता है।
3. सामायिक से शक्ति का सदुपयोग होता है, कर्मों की निर्जरा होती है।
4. सामायिक करने से सादा जीवन, उच्च विचार का अभ्यास होता है।
5. सामायिक से मस्तिष्क का सन्तुलित विकास होता है।
6. सामायिक से आत्मविश्वास एवम् आत्मनिर्भरता उत्पन्न होती है।
7. सामायिक से शान्ति मिलती है एवम् साहस का उदय होता है।
8. सामायिक से अनासक्त भाव जाग्रत होते हैं।
9. सामायिक करने से व्यक्ति अपने कर्तव्यों के प्रति सजग बनता है।
10. सामायिक से उसके समस्त कार्य विवेकपूर्वक होते हैं और सद्गुणों का विकास होता है।
11. कोई दाता प्रतिदिन लाख-लाख स्वर्णखण्डी का दान करे और कोई अन्य व्यक्ति सामायिक करे तो दाता का वह दान सामायिक से बढ़कर नहीं होता ।
12. दो घड़ी समभावपूर्वक सामायिक करने वाला जीव 92 करोड़ 59 लाख 25 हजार 925 पल्योपम और एक पल्योपम के आठ भाग में से तीन भाग सहित सुरायु को बाँधता है।
13. कोटि जन्म तक तीव्र तपता हुआ जीव जितने कर्मों का क्षय नहीं कर सकता, उतने कर्म सामायिक सहित जीव अर्द्धक्षण में क्षय कर सकता है।

14. भूतकाल में जितने मोक्ष में गये, वर्तमान में जितने भी जा रहे हैं, आगामी काल में जितने भी जीव मोक्ष में जाएँगे, यह सब सामायिक में ही जाएँगे।

145. सामायिक के चार प्रकार

श्रुत सामायिक- सम्यक् श्रुत का अध्ययन व अभ्यास करना।

सम्यक्त्व सामायिक- मिथ्यात्व निवृत्ति और यथार्थ श्रद्धान का प्रकटीकरण।

देशविरत सामायिक- अल्प काय के लिये समभाव में स्थिर रहना।

सर्वविरत सामायिक- पंचमहाव्रतादि का ग्रहण, सर्वथा प्रकार से हिंसा आदि से निवृत्त होना।

सम्यक्त्व की प्राप्ति से आरंभ करके सिद्धत्व की प्राप्ति तक उत्तरोत्तर सभी के सामायिक व्रत ही है। यह सामायिक एक दिन मोक्ष रूपी अजर-अमर पद प्राप्त कराती है।

146. सामायिक साधना

सामायिक आत्मार्थियों के लिये उत्तम् एवम् उपयोगी साधना है। इससे आध्यात्मिक शक्ति जाग्रत होती है और अन्त में परमात्म पद प्राप्त होता है:-

1. सामायिक साधना- परमात्म प्रेम में सलंग्न होने का सरल मार्ग है।
2. सामायिक साधना- मानसिक समस्याओं का समाधान करने वाला 'सुपर कम्प्युटर' है।
3. सामायिक साधना- आत्मा के चलचित्र का दर्शक 'टी.वी.' है।

4. सामायिक साधना- एक अन्तरर्मुहूर्त में मोक्ष नगर के ऐरोड्रम पर पहुँचाने वाला सुपर हवाई जहाज है।
5. सामायिक साधना- राग-द्वेष-काम-क्रोध-छल-कपट-ईर्ष्या मोह रूपी आंतरिक शत्रुओं को नष्ट करने वाली श्रेष्ठ मशीनगन है।
6. सामायिक साधना- मोक्ष मंजिल तक पहुँचाने वाली आध्यात्मिक लिफ्ट है।
7. सामायिक साधना- कर्म रोग को मिटाने वाली रामवाण दवा है।
8. सामायिक साधना- आत्मा के मैल को दूर करने वाली जल-धारा है।
9. सामायिक साधना- ज्ञान-ध्यान-तप-संयम तथा आत्मिक शान्ति समाधि का निर्मल जल पीने की प्याऊ है।
10. सामायिक साधना- चेतन राजा के साथ साथ 48 मिनट तक की जाने वाली पिकनिक है।
11. सामायिक साधना- आत्म-सुख रूपी मेवा-मिष्टान्न-प्राप्त कराने वाली दुकान है।
12. सामायिक साधना- पाप रूपी पिशाच को वश में करने वाली अपूर्व मंत्रशक्ति है।

147. उपदेश-कण-श्रीमान् प्रेमचन्दजी सा. कोठारी की डायरी से

1. दुश्मनी, ऋण, रोग, चिन्ता-ये सुख को नष्ट करने वाले हैं अतः इनसे दूर रहना चाहिए।
2. दूसरों का दृष्टि में निर्द्रोष, धर्मात्मा और पवित्र दिखाई देना आसान है, लेकिन स्वयं की दृष्टि में निर्दोष व धर्मात्मा रहना

मुश्किल है, जब कि स्वयं की पवित्रता के बिना कल्याण भी नहीं हो सकता ।

3. क्रोध का निमित्त साधारण होता है, लेकिन परिणाम भयंकर व असाधारण होता है।
4. अधिक बोलने वाला कम सोचता है। अतः उसे शर्मिन्दा होना पड़ता है। इसलिए कम बोलने की आदत डोलनी चाहिए।
5. प्रशंसा, जो दूसरों के द्वारा की जाती है, वह तब जहर बन जाती है जब वह अपने-आप को प्रशंसनीय मान लेता है।
6. सत्संग संस्कारी वातावरण धार्मिक प्रवृत्ति को सब सुविधाएँ मिलना अनेक पूर्वजन्मों की सुकृत कमाई का प्रतिफल है, अतः इसका सदुपयोग करना ही बुद्धिमत्ता है।
7. तेरा भाग्य तेरा साथ देता है तो दूसरों को खेदित-पीड़ित करने में निमित्त मन बन।
8. परिस्थितियों मे अशान्ति या शान्ति नहीं है। शान्ति-अशान्ति का कारण तो अपने मन (विचारों) में है।
9. मन व इन्द्रियों का सदुपयोग जिन-वाणी की आराधना करने के लिए है। कर्म-बन्धन करने के लिए नहीं है।
10. सुबह की लाली अन्धकार को मिटाती है, जबकि शाम की लाली अन्धकार लाती है। वैस ही ज्ञानी मिले हुए पुद्‌गलों को छोड़ने की सोचता है, जबकि अज्ञानी नहीं मिले हुए पुद्‌गलों को प्राप्त करने की सोचता है।
11. कर्म, काल, साइड सिगनल देने वाली ऑटोमैटिक लाइट कानून किसी का लिहाज नहीं रखते हैं, अतः समय रहते सावधान होकर जीवन को धर्म-साधना करके सफल बनाना।
12. विनय और निःस्वार्थ सेवा से जीभ पर सरस्वती नाचती है। पैरां के नीचे ऋद्धियां-सिद्धियां लोटती हैं। विनयवान सबका प्रिय (हृदय का हार) बन जाता है।

13. जब कोई प्रवृत्ति करना हो तो पूर्ण सावधान-सजग रहे, लेकिन परिणाम जो भी प्राप्त हो उसमें सदैव प्रसन्न रहे।

14. माली को नहीं देखकर फूल देखा जाता है, हलवाई को नहीं देखकर मिठाई देखी जाती है। इसी तरह साधक के रंग, रूप, आकार, प्रकार का महत्त्व नहीं है, उनकी ज्ञान-आराधना का महत्त्व है।

15. साधारण मानव वातावरण से बनता है, परन्तु असाधारण मानव वातावरण बनाता है।

16. क्षमा, सज्जनता और आचरण-सम्पन्नता का दिखावा करना मात्र ढोंग है, धोखे का धन्धा है।

17. चिनगारी बारूद पर विस्फोट करती है, रेत-पानी आदि पर नहीं। यदि अपने भाव रेत-पानी आदि की तरह गंभीर रखें तो आगंतुक के क्रोध आदि अशुभ विचार हमें विकारित नहीं कर सकते।

18. अपने शिष्य या पुत्र के अपराध को छिपाना, उसे गौण करना, उसके साथ शत्रुता करना है।

19. एक श्वास के साथ अनंत पुण्यवानी क्षय हो जाती है, जीवन के विकास का समय कम हो जाता है। अतः एक-एक श्वास का मूल्य समझो और कषाय, अशुभ प्रवृत्ति में उसका दुरुपयोग मत करो।

20. जो व्यक्ति समय को पहचान कर दूसरों की घटित घटना से शिक्षा लेकर और अपने अनुभव से सुधर जाए या अपने-आप को बदल दे, वह चतुर है।

21. जो दूसरों का परोपकार करता है, किसी का अपकार नहीं करता, वह सज्जन कहलाता है।

22. सबका शुभ चिन्तन करने वाला अथवा किसी का अशुभ चिन्तन नहीं करने वाला सर्वत्र पूज्य होता है।
23. दुर्योधन, रावण, कंस आदि की तरह सत्ता, सम्पत्ति, बल, ऋद्धि आदि का गर्व मानव को मानव स्तर से नीचे गिरा देता है, यहाँ तक कि उसका नामोनिशान भी मिट जाता है।
24. दूसरो की सेवा करना, अनाथों, असहायों का दुःख निवारण करना, तड़फते हुए के आँसू पोंछना, ये सब अहिंसा के अन्तर्गत हैं।
25. सच्चा साधक वहीं है जिसे दूसरों के सामान्य गुण से प्रसन्नता हो और स्वयं की सामान्य भूल भी पहाड़ जैसी लगे।
26. मानव को अपने, अपने परिवार के व अपने संप्रदाय के अलावा दूसरों के हित के बारे में भी अवश्य सोचना चाहिये, क्योंकि केवल अपने बारे में तो पशु भी सोचते हैं फिर मनुष्य भव पाने की क्या विशेषता हुई ?
27. जिसे जिन-वाणी पर श्रद्धा-विश्वास नहीं, उसे चतुर्विध संघ का सदस्य कहलाने का भी अधिकार नहीं है।
28. जहाँ माया है वहाँ धर्म नहीं, क्योंकि सरल और निर्मल हृदय में ही धर्म ठहरता है।
29. प्रमादी को सब तरह से भय होता है, अप्रमादी को नहीं। अप्रमत्त अवस्था ही आत्मा को निर्भयता प्राप्त कराती है, अव्याबाध सुख दिलाती है।
30. अपराध केवल वाणी (जीभ) या चेहरे से ही प्रकट नहीं होता, अपितु पूरी देह से प्रकट होता है।
31. जहाँ परिग्रह है वहा आरंभ है, जहाँ ममता है वहाँ संसार है।
32. जो जिन-वाणी और सुगुरुओं की वाणी की अवहेलना करता है, उसके शब्दों व विचारों में निस्तेजपना आ जाता है, जबकि

जिन-वाणी व गुरु-भगवंतों की आज्ञानुसार जीवन जीने वाले के वचनों और विचारों में चमत्कार प्रगट होने लगता है अर्थात् विचार वाणी और आचरण प्रभु-आज्ञानुसार होना ही श्रेयस्कर है।

33. निम्न कार्य अविलम्व करने चाहिएँ (1) धर्म का प्रारम्भ, (2) कर्ज से मुक्त होना, (3) सुपात्र दान देना, (4) रोग-दमन और, (5) कर्म-दमन।

34. श्वास के अभाव में शरीर शव (मुर्दा) है। उसी प्रकार मानवता के अभाव में मानव शरीर भी भाव-शव है।

35. श्रद्धा और विनय की परीक्षा तो प्रतिकूलता में ही होती हैं। अपना स्वार्थ, इच्छा, अधिकार आदि पूरा होने पर तो सभी श्रद्धावान और विनयवान दिखाई देते है।

36. अच्छा गुरु, अच्छा वक्ता, अच्छी सास और अच्छा पिता बनने के लिए क्रमशः अच्छा शिष्य, अच्छा श्रोता, अच्छी वहू और अच्छा पुत्र बनना आवश्यक है।

37. मार्गदर्शन देने वाले और द्रव्य से धर्म करने वालों की कमी नहीं है, लेकिन मार्ग पर चलने वाले, अधर्म से वचने वाले और भाव से धर्मात्मा बनने वालों की कमी है।

38. दूसरों की कमी (कमजोरी) और अज्ञान की जानकारी होना अपने हित में नहीं है, परन्तु अपनी कमी और अज्ञान की जानकारी होना और उनका निवारण करने का पुरुषार्थ करना ही अपने हित में है।

39. साँप की डाढ़ में रहा हुआ विष, विच्छू के डंक रहा हुआ विष और वोतल में भरा हुआ विष उनकी हानि नहीं करता, लेकिन क्रोध आदि कषाय रूप जहर तो प्रकट होते ही उसी समय और अनेकों भवों तक हानि पहुँचाता है।

40. बहुत से कहते है कि द्रव्य वेश व द्रव्य क्रिया का महत्त्व है? भाव शुद्ध हाने चाहिएँ, लेकिन भाव-शुद्धि के लिए द्रव्य वेश भी बहुत उपयोगी है। रावण से कुम्भकर्ण ने कहा- "भैया ! तुम सीता को वश में करने के लिए इतने परेशान क्यों होते हो? तुम तो राम का स्वरूप बनाकर सीता के सामने उपस्थित हो जाओ। सीता वश में हो जाएगी।"

रावण ने कहा- "मैंने ऐसा अनेक बार किया लेकिन राम का रूप बनाने पर मेरे विचारों में से विकृति ही निकल जाती है।"

41. जब भी अवकाश मिले, सावधान होकर ऐसा मानस बनावें कि "मैं देह नहीं, देह रूप नहीं, देह मेरा नहीं, मैं देह का नहीं हूँ।

42. संसार के कामों से सुख या दुःख न खरीदें अर्थात् ट्रस्टी बनकर, कर्तव्यपरायण होकर कार्य करें, परिणाम जो भी हो, उन्हें समभाव से स्वीकार करों।

43. संसार की, दृश्यमान जगत् की किसी भी वस्तु या घटना को अपनी नहीं समझें। पानी में से मटके को निकालने में ताकत की खास आवश्यकता नहीं है, जबकि पानी के बाहर मटके को उठाने में ताकत लगती है। इसी प्रकार संसार की किसी भी वस्तु को अपनी समझने से जीव भारीकर्मा होता है। संसार में रहे लेकिन मन में संसार नहीं रहे, इसका पूरा ध्यान रखें।

44. भूतकाल में मेरे द्वारा की हुई शुभ प्रवृत्ति को भूल जाऊँ, लेकिन अशुभ प्रवृत्ति को सदैव याद रखूँ ताकि वर्तमान या भविष्य में पुनः अशुभ प्रवृत्ति नहीं हो जावे।

45. भविष्य के लिए अनुकूल की आशा नहीं करूँ, प्रतिकूल की सम्भावना से भयभीत न होऊँ अर्थात् सदैव निर्भय रहकर जिन-वाणी के अनुकूल साधना करता रहूँ।

46. भूतकाल या भविष्यकाल को सुधारना मेरे हाथ में है, वर्तमान में अगर पवित्र आगमानुकूल आराधना की तो भूतकाल के भी कर्म क्षय हो जाएँगे, भूतकाल में लगे अपयश भी धुल जाएँगे और भविष्य अपने-आप सर्वांगीण आनन्ददायक हो जाएगा। वास्तव में वर्तमान क्षण तो अमूल्य है जिसे तीन लोक की समपदा से भी नहीं खरीदा जा सकता। अनन्त शक्तिसम्पन्न तीर्थंकर भी वर्तमान क्षण नहीं रोक सकते। सच्चा साधक वही है जो वर्तमान में जीना सीखे! इसीलिए-

47. भूतकाल सपना, भविष्यकाल कल्पना, वर्तमान अपना कहा जाता है। भूतमाल में दूसरों के द्वारा मेरा अशुभ-अनिष्ट हुआ हो तो उसको भूल जाऊँ। मेरे अशुभ कर्मों का फल समझूँ और समभाव से सहन करूँ (मन में, वाणी में व व्यवहार में उससे गाँठ न रखूँ)। लेकिन किसी ने मेरा शुभ किया हो तो उसको जीवन-भर याद रखूँ अर्थात् कृतज्ञ होऊँ।

48. परमपिता परमात्मा मेरा है, मेरे में है, सदा है, अभी है, तेजस-कार्मण शरीर से भी निकट है, अतः उसको ध्यान में रखकर प्रत्येक मानसिक, वाचिक, कायिक, प्रवृत्ति करूँ। परमात्मा से कुछ भी छिपाया नहीं जा सकता। जैसे-अन्धेरी कोठरी में भी गीजर या फ्रीज या फोन का उपयोग करे तो मीटर मे रीडींग अवश्य आयेगा। वैसे ही हमारे वी.डी.ओ. कैसेट लग रही है जो शुभ अशुभ कर्मों की फिल्म बना रही है। अतः सावधान रहें, हर एक प्रवृत्ति का भुगतान सिर्फ मुझको अकेले को ही करना पड़ेगा।

49. जिनाज्ञा, जिनागम, जिन-शासन के प्रति पूर्ण आत्मीयता से, अन्तर्मन से समर्पित रहकर उस अनुसार ही आत्मीयता से (बेगारी की तरह नहीं) प्रत्येक धार्मिक प्रवृत्ति करता रहे।

50. साधक को अशुभ प्रवृत्ति और अशुभ प्रकृति को आत्मसाक्षी से बदलना चाहिए। अशुभ प्रकृति व अशुभ प्रवृत्ति के रहते आत्म-कल्याण संभव नहीं ।

51. दूसरों की दृष्टि में निर्दोष दिखाई देना अत्यन्त सरल है, लेकिन अपनी दृष्टि में निर्दोष हुए बिना कल्याण संभव नहीं हो सकता।

52. सदैव अपने अधिकारों का त्याग करे, लेकिन दूसरों के अधिकारों की रक्षा अवश्य करें।

53. किसी से कभी भी कोई अपेक्षा न करें, लेकिन दूसरों की उचित अपेक्षा अपने से बने जितनी पूरी करने का प्रयास करें।

54. सेवा भाषण या लेख से प्रगट नहीं की जाती है, सेवा तो आचरण से प्रगट की जाती है। सदैव अपने से बने जितनी दूसरों की सेवा करें, लेकिन बदले में कुछ भी न चाहें और न सेवा गिनावें। सेवा तो रोम-रोम कण-कण में बैठकर बोलती है।

55. प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक सेवा करने के सुअवसर हर व्यक्ति के पास सदा आते रहते हैं। आवश्यकता है सूझ-बूझ की।

56. यह ध्यान रहे कि परमात्मा की अन्तर्मन से, आत्मीयता से मानसिक-वाचिक-कायिक आराधना करने वाले को संसार की किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं रहती है। लेकिन संसारियों को उसकी सदैव आवश्यकता महसूस होने लगती है। वह सबको प्यारा लगने लगता है, सब उसके हितचिन्तक हो जाते हैं।

57. सदैव विनम्र रहने के लिए निम्न सूत्रों को जीवन में अवश्य उतारना चाहिए-"मैं कुछ नहीं, मेरा कुछ नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए, संसार में मुझे कुछ नहीं करना है, संसार में मेरे लिए कुछ भी नहीं है। जिन-वाणी और गुरुदेव ही सब-कुछ हैं, जिन-वाणी, गुरुदेव का ही मैं सेवक हूँ। जिन-वाणी, गुरुदेव

की सेवा ही मुझे चाहिए, जिन-वाणी, गुरुदेव की आज्ञा के विपरीत मुझे कुछ नहीं करना है, जिनवाणी गुरुदेव के अलावा संसार में मेरे लिए कुछ नहीं है।

58. सदैव सत्साहित्य-आगम का स्वाध्याय करें, अनुप्रेक्षा भी करें व अन्तर से प्रयास करें कि इन बातों को अपने जीवन में भी कैसे उतारूँ। स्वाध्याय मात्र वाणी से ही नहीं होना चाहिए, बल्कि जीवन में स्वाध्याय बोलना चाहिए।

59. दूसरों को उपदेश देने की प्रवृत्ति खतरे से खाली नहीं है स्वयं सुधरे बिना दूसरों को उपदेश देने वाला खाली हो जाता है अर्थात् उसका जीवन अंधकारमय हो सकता है। अतः उपदेश देने के पूर्व अपना जीवन उपदेश योग्य बनावें, लोक-व्यवहार में कभी उपदेश देना भी पड़े तो यह समझें कर देवें कि सिर्फ महापुरुषों की वाणी श्रोताओं तक पहुँचा रहा हूँ। अपने को कभी उपदेशक नहीं समझे, शिष्य या विद्यार्थी ही समझें।

60. मैं आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ रहा हूँ या नहीं, इसका निरीक्षण निम्न बिन्दुओं से करता रहे - अगर मन में निर्मलता बढ़ रही है, अन्दर से प्रसन्नता टपक रही है, चित्त निर्भय बनता जा रहा है, दुःखी-पापी प्राणियों को देखकर करुणा, अनुकंपा टपक रही है, सुखी-धर्मात्मा को देख कर प्रसन्नता-प्रमोदभाव आ रहे हैं, तो समझना चाहिए कि मेरा विकास हो रहा है। अन्यथा अगर ऊपर से उल्टा हो रहा है तो समझना चाहिए कि मैं भाव-साधना का कलेवर ढो रहा हूँ। मेरी साधना सफल नहीं हो रही हैं।

61. साधक को यह मानस बना लेना चाहिए कि प्रत्येक परिस्थिति, जो मुझे प्राप्त है, अनुकूल हो या प्रति कूल उससे मैं कर्म-निर्जरा कर सकता हूँ। अनुकूल अवसर पर ...

प्रतिकूल प्रसंग आवे तब चन्दनबाला, गजसकुमाल आदि को ध्यान में लाकर समभाव बनाए रखूँ अर्थात् सुख में द्रवित होना व दुःख में प्रसन्न होना साधकों का स्वभाव है।

62. दूसरों से जो भी वस्तु प्राप्त हो- ज्ञान उपदेश-वस्त्र-पात्र आहार आदि- उन सबका बहुत सावधानी से व उन्हें अमूल्य समझ कर उपयोग करना चाहिए। जो दूसरों द्वारा दी हुई वस्तु की लापरवाही नहीं करता, उस व्यक्ति की संसार लापरवाही नहीं करता है।

63. ऐसा मानस बना लेना चाहिए कि मुझे तो इसी भव में वीतराग बनना है। प्रत्येक प्रकृति में सजग रहकर ध्यान रखें कि उस प्रसंग पर वीतरागी क्या करते ? वही मुझे करना व बोलना है।

64. वास्तव में सच्चा ध्यान उसी का माना जाता है कि जिसको ध्यान करना नहीं पड़ता है, बल्कि प्रत्येक प्रसंग पर ध्यान बना रहता है।

65. अगर तीनों योगों में किसी भी योग से कोई भी अनुचित प्रवृत्ति हो जाए (भले ही दूसरों को मालूम भी न पड़े) तो सरलता से उसे अपने बड़ों के आगे प्रकट कर प्रायश्चित्त लेवें तथा की हुई भूल की आगे भविष्य में पुनरावृत्ति नहीं हो, उसका पूरा ध्यान रखें।

66. जिस किसी के प्रति मन में बुरे विचार आ गए हों, वाणी से बुरा बोल दिया हो, काया से बुरा कर दिया हो, उसके सामने उपस्थित होकर निःसंकोच प्रकट कर क्षमायाचना करें। (इससे मन पवित्र होता है। भविष्य में दोषों की पुनरावृत्ति नहीं होती है।) गौतम भगवान् और आनन्द श्रावक का व्यवहार याद करें।

67. सदैव इस बात का ध्यान रहे कि की हुई भूल की गलत प्रकृति

की भविष्य में पुनरावृत्ति न हो। सदैव अपना ही निरीक्षण करता रहे।

68. सदैव यह ध्यान रहे कि मैं प्रतिक्षण(आवीचि मरण से) मृत्यु के निकट जा रहा हूँ। किसी भी समय आयु बन्ध सकता है, किसी भी क्षण मृत्यु आ सकती है, जिस लेश्या में आयु बन्धेगा, मृत्यु के समय वही लेश्या आवेगी, आगे उसी लेश्या में पैदा होना पड़ेगा। अगर अशुभ लेश्या में आयु बन्ध गया तो अगले भव में लम्बे समय तक कष्ट उठाना पड़ेगा, अतः कभी भी अशुभ विचार, अशुभ लेश्या नहीं आने दे।

69. चाहे जैसे चाहे जितने भोजन करें, जीभ कुछ समय बाद सूखी व स्वाद से रहित हो जाती है, उसी प्रकार साधक को बाहर की परिस्थिति से, घटनाओं से निर्लेप भाव रखना चाहिए।

70. जैसे मछली समुद्र में रहती हुई प्यास लगने पर मीठा पानी ही पीती है, उसी प्रकार संसार के प्रपंच रूपी खारे पानी में रहने पर भी जब भी प्रवृत्ति करें मीठे पानी रूपी वीतराग-वाणी के अनुरूप ही प्रवृत्ति करें।

71. जैसे मगशेलिया पत्थर को लम्बे समय तक पानी में पड़ा रखें, लेकिन बाहर निकलते ही वह पानी की बूँदों से निर्लेप हो जाता है। ऐसे ही जब भी धार्मिक प्रवृत्ति करें, वीतराग-वाणी के अनुरूप पूर्ण तन्मयता से करें, ताकि सांसारिक प्रक्रियाओं की छाप उन पर न रहे।

72. ज्ञान का विकास करने के लिए पाँच आंतरिक बातें आवश्यक हैं:- (i) आरोग्यशरीर, (ii) बुद्धि, (iii) विनय, (iv) उद्यम और (v) रुचि

73. ज्ञान का विकास करने के लिए पाँच बाह्य साधनों की अनुकूलता आवश्यक हैं - (i) अध्यापन कराने वाला, (ii) सत्साहित्य,

(iii) शान्त एकान्त स्थान, (iv) सहायक- सब तरह की सुविधा बिठाने वाला और, (v) साथी- ज्ञान फैराने वाला, चौलना-पचौलना करने वाला।

74. ज्ञानवृद्धि के लिए पाँच प्रवृत्तियाँ आवश्यक हैं-(i) काक चेष्टा- कौए की तरह बार-बार घोखता रहे, (ii) बको ध्यान- बगुले की तरह सब काम करते हुए लक्ष्य दृष्टि ज्ञान सीखने में रहे, (iii) श्वान निद्रा- कुत्ते की तरह चमक नींद लेवे, (iv) अल्पाहारी और (v) ब्रह्मचर्य का पालन। कहा भी है-

विनय सहित गुरु से पढ़े, सब दोषों को टाल।
घो. चि. पू. लि. नित करे, ज्ञान बढ़े तत्काल।।

(घो-घोखना, चि-चितारना, पू-पूछना और लि. लिखना।)

नवमा सामायिक

मन की आकुलता को मिटाकर मन-वचन-काया से सावद्य कर्मों को त्यागकर मुहूर्त-भर समभाव बिताने का अभ्यास करना, गृहस्थ का नवमा सामायिक व्रत है।

148. चौरासी लाख जीवा-योनी-मूल जाती

5 संठाण × 5 वर्ण =25
25 को × 2 गन्ध =50
50 को × 5 रस=250
250 × 8 स्पर्श=2000 भेद

1. 7 सात लाख पृथ्वीकाय 700000 » 2000 भेद से = 350 मूल जाति
2. 7 सात लाख अपूकाय 700000 » 2000 भेद से = 350 मूल जाति

3. 7 सात लाख तेउकाय 700000 » 2000 भेद से = 350 मूल जाति
4. 7 सात लाख वायुकाय 700000 » 2000 भेद से = 350 मूल जाति
5. 10 लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय 1000000 » 2000 भेद से = 500 मूल जाति
6. 14 लाख साधारण वनस्पतिकाय 1400000 » 2000 भेद से =700 मूल जाति
7. 2 लाख बेइन्द्रिय 200000 » 2000 भेद से =100 मूल जाति
8. 2 लाख तेइन्द्रिय 200000 » 2000 भेद से =100 मूल जाति
9. 2 लाख चौरेन्द्रिय 200000 » 2000 भेद से =100 मूल जाति
10. 4 लाख तिर्यंच पंचेन्द्रिय 400000 » 2000 भेद से 200 मूल जाति
11. 4 लाख नारकी 400000 » 2000 भेद से =200 मूल जाति
12. 4 लाख देवता 400000 » 2000 भेद से =200 मूल जाति
13. 14 लाख मनुष्य 1400000 » 2000 भेद से =700 मूल जाति

84 लाख जीवो योनि 8400000 मूल जाति = 4200 मूल जाति

149. भव-भ्रमण

1. एक मुर्हूत में निगोद-65536 भव करते हैं।
2. एक मुर्हूत में चार स्थावर -12824 भव करते हैं।
3. एक मुर्हूत में बेइन्द्रिय-80 भव करते हैं।
4. एक मुर्हूत में तेइन्द्रिय-60 भव करते हैं।
5. एक मुर्हूत में चौरेन्द्रिय-40 भव करते हैं।
6. एक मुर्हूत में असन्नी पंचेन्द्रिय-24 भव करते हैं।

7. एक मुहूर्त में सन्नी पंचेन्द्रिय-1 भव करते हैं।

॥ निगोद का जीव एक श्वास में 17-18 भव करता हैं॥

150. कुल रोग

गले के नीचे 2 करोड़ 51 लाख रोम, गले के ऊपर 99 लाख रोम, सब मिलाकर 350क्रोड़ रोम हैं व 5, 68, 99, 584 छोटे रोग हैं।

151. चौदह प्रकार सिद्ध

उत्तराध्ययन सूत्र के 36 वें अध्ययन की 49-50वीं गाथा में, 3 लिंग (स्त्रीलिंग, पुरुषलिंग, नपुंसक लिंग), 3 वेद, 3 लोक (नीचा, मध्यम ऊँचा), 3 अवगाहना (जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट) = 3 × 4 = 12 + 13, समुद्र 14, शेषजल।

152. मूल स्वरूप

मूर्ति पर मालिपना, सिन्दूर आदि लेप चढ़ा होने से उसका मूल स्वरूप छिपा रहता है, वैसे ही जाति, नाम, गोत्र आदि कर्मों के आवरण के कारण हमारा मूल स्वरूप छिपा हुआ है।

जैसे लेप हटने पर मूर्ति का मूल स्वरूप प्रकट होता है, वैसे ही कर्मों की खोली (आवरण) उतरने पर हमारा (आत्मा का) मूल स्वरूप प्रकट होगा।

153. आत्म दर्शन

जब कोई बरात आती है तो दर्शक उत्सुकता से बरात देखते हैं, किन्तु जब तक दूल्हे को नहीं देख लेते, जब तक बरात देखना सार्थक नहीं मानते हैं। आत्मा रूपी दुल्हे के जप-तप-दान-तीर्थ। व्रत आदि

धार्मिक कृत्य बराती हैं। जब तक आत्मा के दर्शन नहीं होते, तब तक सार्थकता नहीं है।

154. चौबीस दण्डक का अल्पत्वबहुत्व

1. सबसे थोड़ा मनुष्य 21वें दण्डक वाले जीव।
2. उससे असंख्यात गुणा अधिक वैमानिक देव 24वें दण्डक वाले जीव।
3. उससे असंख्यात गुणा अधिक भवनपति देव 2 से 11वें दण्डक तक वाले जीव।
4. उससे असंख्यात गुणा अधिक नारकी 1 दण्डक वाले जीव।
5. उससे असंख्यात गुणा अधिक वाणण्यतंर देव 22 वें दण्डक वाले जीव।
6. उससे असंख्यात गुणा अधिक ज्योतिषी देव 23वें दण्डक वाले जीव।
7. उससे असंख्यात गुणा अधिक तिर्यंच पंचेन्द्रिय 20वें दण्डक वाले जीव।
8. उससे विशेषाधिक चौइन्द्रिय 19वें दण्डक वाले जीव।
9. उससे विशेषाधिक तेइन्द्रिय 18वें दण्डक वाले जीव।
10. उससे विशेषाधिक बेइन्द्रिय 17वें दण्डक वाले जीव।
11. उसे असंख्यात गुणा अधिक तेऊकाय 14वें दण्डक वाले जीव।
12. उससे विशेषाधिक पृथ्वीकाय 12वें दण्डक वाले जीव।
13. उससे विशेषाधिक अप्काय 13वें दण्ड वाले जीव।
14. उससे विशेषाधिक वायुकाय 15वें दण्डक वाले जीव।
15. उससे अनंत गुणा अधिक 16वें दण्डक वनस्पतिकाय के जीव।

155. चौदह गुणस्थान में जीव के भेद

1. पहले गुणस्थान में जीव के भेद:- 280(1भेद 7वीं नरक का अ.प्र. 30 भेद तिर्यंच 24 तिर्यंच के अपर्याप्ता (11 एकेन्द्रिय 3विकलेन्द्रिय, 5 सन्नी, 5 असन्नी) मनुष्य के 213(101 समु. 56 अन्तरद्वीप के पर्याप्त-अपर्याप्त) देवता के 36(15 परमाधामी 3 क्लवीसी के अ.प.)।
2. दूसरे गुणस्थान में जीव के भेद:- 68 (तिर्यंच 8 (5सन्नी तिर्यंच 3 विकलेन्द्रिय के अप. मनुष्य के 60 (15 कर्म भूमि के प.अ. 30 अकर्मभूमि के अ.)।
3. तीसरे गुण स्थान में जिव के भेद 102:- नारकी के 6 (छठी नारकी तक के अप.) 5 सन्नी तिर्यंच के अप. 15 कर्मभूमि मनुष्य के अ. देवता के 76(10 भवनपति 26 बांणव्यंतर 10 ज्योतिषी, 12 वैमानिक 9 ग्रेवेक 9 लोकान्तिक के अप.)।
4. चौथे गुणस्थान में जीव के भेद 83:- नारकी 7 के पर्याप्त, देवता के 76 पर्याप्त (5 पाँचवें गुणस्थान में जीव के भेद 20(सन्नी तिर्यंच 5 के पर्याप्त 15 कर्म. के पर्याप्त)।
6. छठे गुणस्थान से 14 गुणस्थान तक जीव के भेद 15(15 कर्म भूमि मनुष्य के पर्याप्त)

156. नरक के जीव के 1 से 14 भेद कहाँ-कहाँ ?

जीव का 1 भेद - एकान्त मिथ्यादृष्टि 7 वीं नरक का अपर्याप्ता।

जीव का 2 भेद - एकान्त नील लेशी में 4वीं नरक का प.अ.।

जीव का 3 भेद - नील लेशी मिश्र दृष्टि में 3-4-5 नरक का पर्याप्ता।

जीव का 4 भेद - एकान्त कापोत लेशी में 1 व 2 की नरक का प.अ.।

जीव का 5 भेद - कृष्ण लेशी समदृष्टि में 5वीं, छठी नरक का प. अ. 7वीं नरक का पर्याप्ता।

जींव का 6 भेद - दो दृष्टि में 1 नारकी से छठी नारकी तक का अप.।

जीव का 7 भेद - मिश्र दृष्टि एवं अभाषक में सातों नारकी का पर्याप्ता।

जीव का 8 भेद - क्षायक समकित में 1 से 4वीं नारकी का प.अ.।

जीव का 9 भेद - एक लेशी समदृष्टि में 1-2-4-6 नरक का प. अ.। 7वीं का पर्याप्ता।

जीव के 10 भेद - एक लेशी में 1-2-4-6-7 नारकी का प. अ।

जीव के 11 भेद - स्त्री की गत एकान्त सन्नी में 1 नारकी का अ. 2-3-4-5-6 का प.अ.।

जीव के 12 भेद - स्त्री की गत में 1 से 6 नारकी का प. अ।

जीव के 13 भेद - समदृष्टि में अवधिज्ञान में एकान्त सन्नी 1 से 6 का प. अ. 7वीं का पर्याप्ता।

जीव के 14 भेद-नपुंसकं वेद में, अवधिदर्शन में, सातों नरक का अ.प.।

157. पच्चीस बोलों का अल्पत्वबहुत्व

1. सबसे थोड़ा जीव 23वें और 25वें बोल में साधु की की अपेक्षा।
2. (तेथकी) असंख्यात गुण अधिक 22वाँ 24वाँ बोल तिर्यंच श्रावक की अपेक्षा।

3. (तेथकी) असंख्यात गुण अधिक 19वें बोल वाले सन्नी की अपेक्षा।
4. (तेथकी) अनंत गुण अधिक 13 बोल वाले मिथ्यात्वी की अपेक्षा।
5. (तेथकी) विशेषाधिक 4 और 12 बोल वाले सइन्द्रिय की अपेक्षा।
6. विशेषाधिक 8वें और 17वें बोल वाले सयोगी सलेशी की अपेक्षा।
7. (तेथकी) विशेषाधिक 1-2-3-5-6-7-11-16 बोल वाले संसारी जीवों की अपेक्षा।
8. (तेथकी) विशेषाधिक 15-18वें बोल सिद्ध संहित सभी जीवों की अपेक्षा।
9. (तेथकी) अनंत गुण अधिक 14-20-21वें बोल के जीव-अजीव की अपेक्षा।

158. तीन गति कहाँ-कहाँ पाई जाती हैं

1. नरक गति को छोड़कर शेष तीन गति - तिर्च्छालोक में।
2. तिर्यंच गति को छोड़कर शेष तीन गति - एकान्त त्रस में।
3. मनुष्य गति को छोड़कर शेष तीन गति - एकान्त छद्मस्थ में।
4. देवगति को छोड़कर शेष तीन गति - नपुंसक वेद में।

159. चौबीस दण्डक पर फलावट

1. 1 दण्डक- साधुजी-मनुष्य 21वाँ (नारकी में 1ला)
2. 2 दण्डक- श्रावक में (मनुष्य 21-तिर्यंच 20 वाँ)
3. 3 दण्डक- पदमशुक्ल लेश्या-तीन विकलेन्द्रिय में (वैमानिक 24 मनुष्य 21 सन्नी तिर्यंच 20)

4. 4 दण्डक- त्रस में (बेइन्द्रिय 17, तेइन्द्रिय 15, चोइन्द्रिय 19, पंचेन्द्रिय 20)
5. 5 दण्डक- एकेन्द्रिय में (पाँच स्थावर 12-13-14-15-16 वाँ)
6. 6 दण्डक- एकान्त नपुंसक वेद तीन लेश्या में (तेऊ-14, वायु.-15, बेइ. 17, तेई. 18, चौ. 19, नाकी-1)
7. 7 दण्डक- एक दर्शन-तीन लेश्या में (तेउ. 14, वायु. 15, बेई. 17, तेइ-18, चो-19, नारकी वैमानि.24)
8. 8 दण्डक- एकांत असन्नी में (पाँच स्थावर 12-3-14-15-16 तीन विकेन्द्रीय 17-18-19।
9. 9 दण्डक- तिर्यंच में (पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय-तिर्यंच पंचेन्द्रिय)।
10. 10 दण्डक- औदारिक शरीर में (पाँच स्थावर-तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय-मनुष्य ।
11. 11 दण्डक- नपुंसक वेद में (पाँच स्थावर-तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंचेन्द्रिय-मनुष्य-नारकी।
12. 12 दण्डक- तिर्च्छालोक में पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय-मनुष्य-वाण-ज्योति।
13. 13 दण्डक- दो वेद में (10 भवनपती वाण.ज्योति.वैमानिक)।
14. 14 दण्डक- चार लेश्या में (10 भवनपती-वाणव्यतेर-पृथ्वी-पानी-वनस्पति)
15. 15 दण्डक- स्त्री-पुरुष वेद में (10 भव. वाण. ज्यो. वैमा. सन्नी तिर्यंच सन्नी मनुष्य)।
16. 16 दण्डक- मन जोगी में (पाँच स्थावर-तीन विकलेन्द्रिय को छोड़कर शेष)
17. 17 दण्डक- वैक्रिय शरीर में (देवता के 13-नारकी, स.मनुष्य, स. तिर्यंच वायुकाय)
18. 18 दण्डक- तेजो लेश्या में (13 देवता, मनुष्य, तिर्यंच, पृथ्वी, पानी, वनस्पति)।

19. 19 दण्डक- त्रस में (पाँच स्थवार टलिया)।
20. 20 दण्डक- पदवीं में (चार स्थावर टलिया)।
21. 21 दण्डक- नीचा लोक में (1 नारकी 10 भवनपति 10 तिर्यंच के 9 मनुष्य।
22. 22 दण्डक- (नो, णर्भेज में) तथा अव्रती में (सनि मनुष्य, सन्नी तिर्यंच का टलिया)।
23. 23 दण्डक- एकान्त छद्मस्थ में (मनुष्य का टला 'बाकी तेवीस')
24. 24 दण्डक- समुचय जीव में ।

160. शिक्षाएँ

1. भूल न करने वाला 'अरिहन्त देव' है।
2. भूल सुधारने वाला 'साधक' है।
3. भूल करने वाला 'मानव' है।
4. भूल को छिपाने वाला 'अज्ञानी' है।

161. नित्य प्रतिक्रमण क्यों करें?

जैन संस्कृति में प्रतिक्रमण जीवन रूपी खाताबही का सूक्ष्म अंकेक्षण कर तथा मानव जीवन के लक्ष्य की साधना में कहाँ तक आगे बढ़े, यह ज्ञात करा कर पाप आचरण के प्रति घृणा व्यक्त कर पाप-कार्य छुड़ाता है, भविष्य में पापकर्मों को न रहने का संकल्प कराता है।

मनुष्य जैसा विचार करता है, वैसा ही बनता है। प्रतिक्रमण में मानव के विचार-विशुद्धि का लक्ष्य रहने से कर्म में पवित्रता स्वतः हो जाती है। जहाँ उत्तम विचारों का उदय और व्यवहार में माधुर्यता आ जाए तो मानव जीवन पल्लवित-पुष्पित और फलित हो उठता है।

प्रतिक्रमण द्वारा साधकों ने अपना जीवन सुधारा है, वासनाओं पर विजय प्राप्त की है।

प्रतिक्रमण में मुख्य तीन कार्य करने पड़ते हैं-(1) भूतकाल में लगे हुए दोषों की आलोचना करना। (2) वर्तमानकाल में संवर द्वारा आने वाले दोषों से बचना। (3) भविष्य में दोषों को रोकने में लिए प्रत्याख्यान करना।

162. वीतराग का वास्तविक मार्ग

एक संसारी मरकर स्वर्ग में गया और एक साधु मरकर नरक में गया। जब ये बात देवताओं ने सुनी तो उनकी आँखों में भी आँसू छलक आए।

किसी जिज्ञासु व्यक्ति ने एक चिन्तक को इसका कारण पूछा, "ऐसा क्यों हुआ? नीचे जाने वाला ऊपर गया और ऊपर जाने वाला नीचे गया ?"

चिन्तक ने स्पष्ट किया-"संसारी रोग में रहकर भी त्यागियों की संगति करता था और साधु त्याग में रहकर भी रागियों की संगति के लिए लालायित रहता था, अतः रागी अन्तरात्मा से त्यागी हुआ और त्यागी अन्तरात्मा से रागी हुआ।"

वीतराग का वास्तविक मार्ग है- राग का त्याग और त्याग का राग।

163. मानव किसे कहते हैं ?

एक था फकीर। दिन के समय हाथों में दो मसालें लेकर बाजार में चला जा रहा था। एक-एक दुकान के सामने ठहरता। ठहरने के पश्चात् चल पड़ता। एक व्यक्ति ने पूछा, "बाबा ! तुम यह दिन के समय मशाल लेकर क्या देखते (ढूंढते) हो ?"

फकीर ने कहा-"बच्चां ! मैं मनुष्य को खोज रहा हूँ।" उस व्यक्ति ने आश्चर्य से कहा-इतने लोगों में तुम्हें कोई मनुष्य नहीं

मिला ? तुम मनुष्य किसे कहते हो ?'' फकीर बोला- ''नहीं बच्चे ! मुझे कोई मनुष्य नहीं मिला।''

पूछने वाले ने कहा-''तुम मनुष्य किसे कहते हो?'' फकीर ने उत्तर दिया-''जिसमें काम की वासना और क्रोध की आग नहीं, जो इन्द्रियों का दास नहीं, और क्रोध के वश में होकर अपने लिए और दूसरों के लिए आग की लपटें उभारने का यत्न नहीं करता, उसको मैं मनुष्य कहता हूँ।''

164. विरले ही होते हैं

1. आग लगाना सभी जानते हैं, परन्तु बुझाने वाला कोई विरला ही होता है।
2. साँप पकड़ना सभी जानते हैं, परन्तु बचाने वाला कोई विरला ही होता है।
3. खाना खाना सभी जानते हैं, परन्तु खिलाने वाला कोई विरला ही होता है।
4. गाना गाना सभी जानते हैं, परन्तु गाना बनाने वाला कोई विरला ही होता है।
5. मचलना सभी जानते हैं, परन्तु मनाने वाला कोई विरला ही होता हैं
6. पशु चराना सभी जानते हैं, परन्तु मनुष्य को चलाने वाला कोई विरला ही होता है।
7. महल में रहना सभी जानते हैं, परन्तु महल बनाने वाला कोई विरला ही होता है।
8. वस्त्र धारणा करना सभी जानते हैं, परनतु वस्त्र वनाने वाला कोई विरला ही होता है।
9. सज्जन कहलाना सभी चाहते हैं, परन्तु सज्जन बनने वाला कोई विरला ही होता है।

10. बाह्य नेत्रों से देखना सभी जानते हैं, परन्तु ज्ञान नेत्र से देखने वाला कोई विरला ही होता है।
11. मोक्ष-मोक्ष सभी पुकारते हैं, परन्तु मोक्ष जाने वाला कोई विरला ही होता है।
12. कुमित्र बनाना सभी जानते हैं, परन्तु सुमित्र बनाने वाला कोई विरला ही होता है।

165. सतरह तरह के मूर्ख

1. दान देने में अंतराय करने वाला।
2. धर्म-चर्चा के समय व्यर्थ बात करने वाला।
3. भोजन करते समय क्रोध करने वाला।
4. बिना कारण के लड़ाई-झगड़ा करने वाला।
5. सज्जन पुरुषों का अपमान करने वाला।
6. दान देकर अंहकार भाव करने वाला।
7. दान देकर के पश्चात्ताप करने वाला।
8. उपकारी का उपकार नहीं मानने वाला।
9. अपनी खुद की खूब प्रशंसा करने वाला।
10. शान्त हुए क्लेश को वापस कहने वाला।
11. संकरे मार्ग पर दौड़ने वाला।
12. शक्ति होते हुए भी सेवा नहीं करने वाला।
13. बिना कारण के हँसने वाला।
14. मार्ग में चलते हुए खाने वाला।
15. बीती हुई बातों को फिर से सोचने वाला।
16. बिना बतलाए बोलने वाला।
17. दो मनुष्य बात कर रहे हों, तो बीच में बोलने वाला।

166. चिंतन कण

गुणों को नहीं अवगुणों को प्रकट करो-

जो व्यक्ति समझदार होता है, वह अशुद्ध रक्त, मवाद (पीप) को नहीं छिपाकर उस स्थान पर चीरा आदि लगाकर उसे बहार निकालता है, पर शुद्ध खून को चीरा देकर निकलवाना नहीं चाहता है क्योंकि शुद्ध रक्त-मांस आदि पर ही उसका जीवन टिका हुआ है। अतः उसका प्रदर्शन अच्छा नहीं समझता। यही बात हमारे जीवन के लिए भी है। हम अपने अवगुणों को नहीं छिपाकर उन्हें बाहर निकालने का प्रयत्न करें और गुणों को छिपाकर रखें। उनका प्रदर्शन नहीं करें। जितने हमारे गुण छिपे रहेंगे उतना ही हमारा जीवन ऊँचा बनेगा। पर व्यक्ति अपने अवगुणों को प्रकट नहीं कर, गुणों का प्रदर्शन करता है, जिससे उसके गुणों में वृद्धि नहीं हाकर कमी होती है।

वृक्ष की जड़ें मिट्टी में जितनी गहरी छिपी रहती हैं, उतना ही वृक्ष दृढ़ रहता है, दीर्घकाल तक टिकता है, वृद्धि को प्राप्त होता हैं। वैसे ही गुण भी जितने छिपे रहेंगे, वे वट वृक्ष की भान्ति बढ़ते रहेंगे और जीवन को विकसित एवम् महान बनायेंगे अतः अपने गुणों को प्रकट नहीं करके, अवगुणों को प्रकट करना चाहिए।

(श्रुतधर पण्डितरत्न पूज्यश्री प्रकाशचन्द्रजी म.सा. के प्रवचन से संकलित)

167. ईमानदार

एक बाग का मालिक नौकर के भरोसे अपना आप का बाग छोड़कर पाँच साल के लिए अपने गाँव चला गया। नौकर ने पाँच वर्ष तक बाग की रखवाली की और आम बेचकर उसकी आमदनी मालिक के पास भेजता रहा। पाँच साल बाद मालिक अपनी पत्नी

सहित उस बाग को देखने आया और नौकर से कहा -"अपनी मालकिन के लिए मीठे आम तोड़कर लाओं।"

नौकर ने उत्तर दिया-"आपने मुझे बगीचे की रखवाली करने और आम बेचकर पैसा भेजने का अधिकार दिया था, न कि आम खाने का। अतः यह मेरी सामर्थ्य से बाहर है कि मैं यह जान सकूँ कि किस पेड़ के आम मीठे हैं, किस पेड़ के खट्टे हैं।"

168. पच्चीस बोल की फलावट

अजीव में- बोल पावे तीन, -14-20-21वाँ।

असन्नी में- बोल पावे बीस, 19-22-23-24-25 इन पाँच को छोड़कर।

सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में- बोल पावे तेबीस 23वें और 25वें बोल को छोड़कर।

सन्नी मनुष्य में- सभी पच्चीस बोल पाये जाते हैं।

नारकी व देवता मैं- बोल पावे इक्कीस 22-23-24-25 इन 4 बोल को छोड़कर।

श्रावक में- बोल पावे बावीस,- 13-23-25 इन 3 बोलों को छोड़कर।

साधुजी में- बोल पावे बावीस,- 13-22-24 इन 3 बोलों को छोड़कर।

अरहन्त भगवन्त में- बोल पावे बीस,- 4-12-13-22-24 इन 5 बोलों को छोड़कर।

सिद्ध भगवान् में- बोल पावे छः, 9-14-15-18-20-21 ये छः बोल पाये जाते हैं।

तीन बोल में सभी 25 बोलों को समावेश हो जाता है- 14-20-21मैं सभी का समावेश हो जाता है।

रूपी में- बोल पावे ग्यारह, 1-2-3-4-5-6-7-8-10-12-13 ये ग्यारह बोल।

अरूपी में- बोल पावे आठ, 9-11-18-19-22-23-24-25 ये आठ बोल।

रूपी-अरूपी में- बोल पावे छः, 14-15-16-17-20-21 ये छः बोल।

केवली भगवन्त में- बोल पावे बीस, 4-12-13-22-24 को छोड़कर बीस बोल।

चौबीसी स्तवन

(तर्ज-देख तेरे संसार की हालत.....)

जय जिनवर जय तीर्थंकर, जय चौबीसी भगवान्
साधु श्रावक करे प्रमाण।
आप तिने औरों को तारे, भरत क्षेत्र भगवान्
साधु श्रावक करे प्रणाम 2 ।। ध्रुव.।।

ऋषभ देव का कीर्तन करते, अजित नाथ को वन्दन करते।
संभवनाथ का नाम सुमरते, अभिनन्दन को चित्त में धरते।
जय सुमति जय पद्म प्रभु, जय चौबीसी भगवान्।।साधु.।।1।।
सुपार्श्वनाथ का कीर्तन करते, चन्द्रप्रभु को वन्दन करते।
सुविधिनाथ का नाम सुमरते, शीतल प्रभु को चित्त में धरते।
जय श्रेयांस जय वासुपूज्य, जय चौबीसी भगवान्।।साधु.।।2।।
विमलनाथ का कीर्तन करते, अनंतनाथ को वन्दन करते।
धर्मनाथ का नाम सुमरते, शान्तिनाथ को चित्त में धरते।
जय कुन्थु जय अरनाथ, जय चौबीसी भगवान्।। साधु.।।3।।
मल्लिनाथ का कीर्तन करते, मुनिसुव्रत को वन्दन करते।

नमिनारथ का नाम सुमरते, अरिष्टेनेमि को चित्त में धरते।
जय पारस जय महावीर, जंय चौबीसी भगवान्।। साधु.।।4।।
अनन्त सिद्ध का कीर्तन करते, विहरमान को वन्दन करे।
गणधर प्रभु का नाम सुमरते, गुरुदेव को चित्त में धरते।
'केवल' शिष्य विनय करता, जय चौबीसी भगवान्।। साधु।।5।।

चौबीसी

अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय , साधुजी सुमिरणा।
तीर्थंकर रत्नों की माला, सुमिरण नित्य करना।
सुमरिये माला-मेरी जान सुमरिये माला।
ज्यों कटे कर्मों का जाला, ए जीव तणा रखवाला-
ध्यान तीर्थंकर का धरना रे, ध्यान तीथ;कर धरना।।
पाँच पद चौबीस जिनंदजी का नित्य लीजे शरणा।।
श्रीऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन अति आनन्द करना।
सुमति, पद्म-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभु दास रहूँ चरणा।
चरण नित वन्दूं, मेरी जान चरण नित वन्दूं।
ज्यों कटे कर्म का फंदा, तुम तजोनी जगत का धन्धा।
दीठा होय नयन अमीय तो ढरनारे2।।
पाँच पद चौबीस जिनन्दजी का. ।।1।।
सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य हृदय मांहे धरना।
विमल, अनंत धर्मनाथ शान्ति जिनदास रहूँ चरणा।।
जिनन्द मोहे तारो, मेरी जान जिनन्द मोहे तारो।
संसार लगे मोहे खारो, वैराग्य लगे मोहे प्यारो।
मैं सदा दास चरणों रो, नाथजी अब कृपा करना रे 2।।
पाँच पद चौबीस जिन्दजी का. ।।2।।

कुन्थु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रतजी प्रभु तारण तरणा।
नमि-नेम-पार्श्व, महावीरजी पाप परा हरणा।
तिरे भव्य प्राणी, मेरी जान तिरे भव्य प्राणी।
संसार समुद्र जाणी, सुणो सूत्र सिद्धान्त की वाणी।
पाप कर्मों से अब डरना रे 2॥
पाँच पद चौबीस जिनन्दजी का.॥3॥
ग्यारह गणधर, विहरमान वान्द्यां सूं मिटे मरणा।
अनंत चौबीसी ने नित नित वन्दूं दुर्गति नहीं पड़ना।
मिथ्या अन्ध मेटो रहो धर्म-ध्यान में सैंठा।
जिनराज चरण नित मेटो, दुःख दारिद्र सब हरणा रे 2॥
पाँच पद चौबीस जिनन्दजी का. ॥4॥
जिन धर्म पाया बिन प्राणी पाप सूं पिण्ड भरना।
नीठ नीठ मानव भव पायो धर्म-ध्यान करना।
करो शुद्ध करणी, मेरी जान करो शुद्ध करनी।
निर्वाण तणी निसरणी, तुम तजो नी पराई परणी।
एक चित्त धर्म-ध्यान करना रे 2॥
पाँच पद चौबीस जिनन्दजी का. ॥5॥
विहरमान-तीर्थंकर गणधर मनमां शुद्ध करना।
पल पारधी कहे कल्याणी किया तवन वरणा।
मेरी जान वरण गुण कीना, जैसे अमृत प्याला पीना।
एक शरण धर्म का लीना।
एक 'लालचन्द्र' गुण कीना, करो नव तत्त्व का निरणा रे 2॥
पाँच पद चौबीस जिनन्द का. ॥6॥

